अनुक्रम

अनुवादक डॉ० मदनलाल 'मधु'

Александр Пушкин

ИЗБРАННЫЕ ПРОИЗВЕДЕНИЯ В 2-Х ТОМАХ

Том II. Проза

на языке хинди

Pushkin A

Selected Works. In two volumes.

Volume Two. Prose
in Hindi

सोवियत संघ में मुद्रित

П $\frac{70301-467}{014(01)-82}$ 758-82 4702010100

9320

अनुक्रम

दिवंगत इवान पेत्रोविच बेल्किन की कहानियां

श्रीमती प्रोस्ताकोवा

उसे बचपन से ही कहानियां सुनने का बड़ा चाव था।

स्कोतीनिन

मित्रोफान तो पूरी तरह मुझ पर गया है।

घोंघावसन्त*

सम्पादक की ओर से

इवान पेत्रोविच बेल्किन की कहानियों के प्रकाशन के लिये यत्न करते हुए, जो अब पाठकों के हाथों में है, हमने चाहा कि दिवगत लेखक के जीवन का संक्षिप्त विवरण भी इनके साथ जोड़ दिया जाये और इस तरह राष्ट्रीय गद्य साहित्य-प्रेमियों की सर्वथा तर्क-संगत जिज्ञासा की भी कुछ सीमा तक तुष्टि हो जायेगी। इसी उद्देश्य से हमने इवान पेत्रोविच बेल्किन की एक नज़दीकी रिश्तेदार और उनकी सम्पत्ति की वारिस मारिया अलेक्सेयेव्ना त्राफ़ीलिना से उनके बारे में बताने का अनुरोध किया। किन्तु खेद की बात है कि वह हमें इवान पेत्रोविच बेल्किन के सम्बन्ध में कुछ भी जानकारी नहीं दे पायी, क्योंकि उनसे परिचित तक नहीं थी। उन्होंने हमें सलाह दी कि इस सिलसिले में हम एक अन्य महानुभाव से, जो इवान पेत्रोविच के मित्र रहे थे, सम्पर्क स्थापित करें। हमने ऐसा ही किया और हमें वांछित उत्तर भी मिला। इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन न करके और अपनी ओर से कोई टीका-टिप्पणी जोड़े बिना गहरी समझ और मर्मस्पर्शी मैत्री के एक मूल्यवान स्मारक तथा साथ ही जीवनी के सर्वथा पर्याप्त वक्तव्य के रूप में हम इसे यहां प्रकाशित कर रहे हैं।

माननीय महानुभाव!

इस महीने की १५ तारीख़ का लिखा हुआ आपका कृपापत्र २३

---

* आदर्शवाक्य १८वीं शताब्दी के प्रमुखतम नाटककार और पत्रकार देनीस इवानोविच फ़ोनवीज़िन (१७४५–१७९२) द्वारा लिखे गये 'घोंघावसन्त' सुखान्ती नाटक से लिया गया है। — स०

सारीन को पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस पत्र मे आपने मेरे मृत
सच्चे मित्र और गाव के पडोसी दिवगत इवान पेत्रोविच बेल्किन
जन्म और मृत्यु उनके काम-काज, घरेलू जीवन, उनकी रुचियों त
आचार-व्यवहार के बारे मे विस्तृत जानकारी पाने की इच्छा प्र
की है। मैं सहर्ष आपकी यह इच्छा पूरी कर रहा हू। प्रिय महानुभाव
मुझे उनकी जो बातचीत याद है तथा जिस रूप मे मैं उन्हें अपन
स्मृति मे सहेज पाया हू वह सब कुछ आपकी सेवा मे लिखकर भे
रहा हू।

इवान पेत्रोविच बेल्किन का गोर्यूखिनो गाव के एक प्रतिष्ठि
कुलीन घराने मे सन् १७९८ मे जन्म हुआ। उनके स्वर्गीय पिता प्योत
इवानोविच बेल्किन ने, जो सेना मे सेकण्ड-मेजर थे, त्राफीलिन परिवा
की कन्या पेलागेया गव्रीलोव्ना से शादी की थी। वह धनी तो नहीं
किन्तु अपनी चादर के अनुसार पाव फैलानेवाले व्यक्ति थे और अपने
काम-काज को बहुत अच्छे ढग से सम्भालने की क्षमता रखते थे। उनके बेटे
ने गाव के पादरी से ही अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पाई। मुझे लगता है
कि इसी भले व्यक्ति के ससर्ग से इवान पेत्रोविच बेल्किन को पुस्तकें
पढने और मातृभाषा में सृजन करने का शौक पैदा हुआ। १८१५ में
वे येगेर पैदल सेना मे भर्ती हुए (रेजिमेंट का नम्बर मुझे याद नहीं)
और १८२३ तक उसी मे रहे। माता-पिता की मृत्यु के बाद, जो
कुछ ही अन्तर के बाद चल बसे थे, उन्हे सेना से अवकाश लेना पड़ा
और वे गोर्यूखिनो गाव की अपनी पैतृक जागीर पर आकर रहने लगे।

जागीर का सचालन-भार अपने हाथ में लेने के कुछ ही समय बाद
अपनी अनुभवहीनता और कोमलहृदयता के फलस्वरूप इवान पेत्रोविच
ने उसकी देख-भाल मे ढील दे दी और वह कडा अनुशासन गडबडा
गया, जो उनके दिवगत पिता ने लागू किया था। गाव के सुयोग्य और
ईमानदार मुखिया को, जिससे किसान (अपनी आदत के मुताबिक)
नाखुश थे, उन्होंने छुट्टी कर दी और जागीर की देख-भाल का सारा
काम अपनी बूढी भडारिन को सौंप दिया। इस भडारिन ने किस्से-
कहानियां सुनाने की कला-दक्षता से उनके दिल मे अपनी जगह बना
ली थी। पचीस और पचास रूबल के नोटों के बीच फर्क न जाननेवाली
यह वृद्ध बुढ़िया अनेक किसानो के बच्चों की धर्म-मा थी और किसान

उससे जरा भी नही डरते थे। किसानो द्वारा चुना गया नया मुखिया उन्हे हर तरह की मनमानी करने और साथ ही मालिक की आखो मे धूल झोकने मे इतनी अधिक सीमा तक मदद देता था कि इवान पेत्रोविच को जल्द ही बेगार की प्रथा से इन्कार करके हल्का-सा लगान लागू करना पड़ा। इतना होने पर भी किसानो ने उनकी दुर्बलता से लाभ उठाते हुए पहले साल अतिरिक्त रियायते हासिल कर ली और अगले वर्ष लगान का दो तिहाई से भी अधिक भाग अखरोटो-गिरियो तथा बिल-बेरियो के रूप मे निबटा दिया और फिर भी पूरा लगान नही चुकाया।

चूकि मैं इवान पेत्रोविच के स्वर्गीय पिता का भी मित्र रहा था इसलिये बेटे को सलाह-मशविरा देना भी अपना कर्तव्य मानता था। बहुत बार मेरा मन हुआ कि फिर से पहले जैसी व्यवस्था स्थापित करने मे, जिसे उन्होने गड़बड़ कर दिया था, उनकी मदद करू। इसी भावना से प्रेरित होकर मैं एक दिन उनके यहा गया, हिसाब-किताब के रजिस्टर मगवाये, मक्कार मुखिया को बुलवाया और इवान पेत्रोविच की उपस्थिति मे उनकी जाच-पड़ताल करने लगा। जवान मालिक ने शुरू मे तो बहुत ध्यान और बड़ी लगन से मेरे काम मे रुचि ली। किन्तु जैसे ही हिसाब देखने से यह पता चला कि पिछले दो सालो मे किसानो की सख्या मे वृद्धि हुई है और मुर्गे-मुर्गियो तथा ढोर-डगरो की सख्या को जान-बूझकर घटा दिया गया है, तो वे इन प्रारम्भिक तथ्यो की जानकारी से ही इतने सन्तुष्ट हो गये कि आगे मेरी बात पर कान ही नही दिया। ठीक उसी क्षण मे, जब छानबीन करने और मामले की तह मे जानेवाले मेरे प्रश्नो से मक्कार मुखिया बदहवास हो गया और उसकी जबान पर ताला पड़ गया मैंने इवान पेत्रोविच को अपनी आरामकुर्सी पर बड़े चैन से खर्राटे लेते पाया। जाहिर है कि मुझे इससे बहुत दुख हुआ। उस दिन से मैंने उनके काम-काज मे दिलचस्पी लेना बन्द कर दिया और उन्हे भगवान के भरोसे पर (जैसा कि उन्होने स्वय भी कर रखा था) छोड़ दिया।

इस सबके बावजूद हमारे मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो मे कोई फर्क नही पड़ा। कारण कि उनकी दुर्बलता और हमारे कुलीन युवाजन की सामान्य काहिली की भर्त्सना करते हुए भी मैं सच्चे मन से इवान पेत्रोविच को प्यार करता था। ऐसे विनम्र और ईमानदार युवक को प्यार न

करना सम्भव ही नहीं था। दूसरी ओर इवान पेत्रोविच मेरी बूढ़ी की इज्जत करते थे और मुझे हृदय से चाहते थे। जीवन-लीला समाप्त होने तक वे मुझ से लगभग हर दिन मिलते रहे, मेरी मीठी-मीठी बातों को मूल्यवान मानते रहे यद्यपि स्वभाव, विचार-चिन्तन और आचार-व्यवहार की दृष्टि से हम दोनों के बीच कोई समानता नहीं थी।

इवान पेत्रोविच बहुत ही सादा जीवन बिताते थे, सभी प्रकार की अतिशयता से दूर रहते थे। मैंने उन्हें कभी शराब के नशे में धुत्त नहीं देखा (यह हमारे क्षेत्र में अनसुना-अनदेखा चमत्कार है)। नारियों की ओर वे बहुत खिंचते थे, किन्तु स्वयं भी लड़कियों जैसे शर्मीले थे।*

उन कहानियों के अतिरिक्त, जिनका आपके पत्र में उल्लेख है, इवान पेत्रोविच अनेक अन्य पाण्डुलिपियां भी छोड़ गये हैं। उनमें से कुछ मेरे पास हैं और कुछ का उनकी भद्रारिन ने विभिन्न घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये उपयोग कर लिया है। उदाहरण के लिये पिछले जाड़े में घर के जिस भाग में वह स्वयं रहती है उसकी सभी खिड़कियों पर इवान पेत्रोविच बेल्किन के उस उपन्यास के पहले भाग के कागज चिपके हुए थे जिसे उन्होंने कभी समाप्त नहीं किया। जहां तक मुझे याद है, जिन कहानियों का आपने उल्लेख किया है, वे उनकी पहली रचनायें थीं। इवान पेत्रोविच के कथनानुसार, इनमें से अधिकांश कहानियां सच्ची हैं और उन्होंने किसी न किसी के मुंह से सुनी हैं।** किन्तु सभी पात्रों के नाम कल्पित हैं और गांव-बस्तियों के नाम हमारे क्षेत्र से लिये गये हैं। इसीलिये कहीं मेरे गांव का भी नाम आ गया है। किन्तु किसी दुर्भावना से ऐसा नहीं हुआ, बल्कि कल्पना के अभाव के फलस्वरूप।

१८२८ की शरद ऋतु में इवान पेत्रोविच को ठण्ड लग गयी और

---

* इस सम्बन्ध में एक किस्से का भी उल्लेख किया गया है जिसे हम अनावश्यक मानते हुए यहां छाप नहीं रहे हैं। साथ ही अपने पाठक को यह विश्वास दिलाते हैं कि इस किस्से में ऐसा कुछ नहीं, जिससे इवान पेत्रोविच बेल्किन की स्मृति पर किसी प्रकार की काली छाया पड़ती हो। (अ० स० पुश्किन की टिप्पणी।)

** वास्तव में ही श्री बेल्किन की पाण्डुलिपि में हर कहानी के ऊपर स्वयं लेखक के हाथ से यह लिखा हुआ है—फलां-फलां व्यक्ति से

बहुत ज़ोर के बुखार ने उन्हे धर दबाया। बहुत ही अच्छे और गोखरू आदि पुराने रोगो की चिकित्सा मे विशेष रूप से दक्ष हमारे क्षेत्र के चिकित्सक की सभी कोशिशो के बावजूद वे कूच कर गये। तीस वर्ष की आयु मे उन्होंने मेरी बाहो मे ही अपनी अन्तिम सास ली। उन्हे गोर्यूखिनो गाव के गिरजाघर के अहाते मे उनके माता-पिता की कब्रो के निकट ही दफनाया गया है।

मझोला कद, भूरी आखे, ललौहे बाल, तीखी नाक, गोरा रग और छरहरा बदन – ऐसे थे इवान पेत्रोविच।

प्रिय महानुभाव, अपने दिवगत पडोसी और मित्र के जीवन-ढग, उनकी रुचियो, आचार-विचार और रग-रूप के बारे मे मुझे यही कुछ याद है। यदि आप मेरे इस पत्र को कही उद्धृत करना उचित समझे, तो आपसे यह बिनती करता हू कि मेरे नाम का उल्लेख न करे। यद्यपि यो तो मैं लेखको का बडा आदर करता हू और उनके प्रति स्नेह-भाव भी रखता हू, तथापि अपने को उनकी पात मे शामिल नही करना चाहता और अपनी आयु को ध्यान मे रखते हुए मुझे यह शोभा भी नही देगा।

हार्दिक सम्मान-भावनाओं सहित आपका

१६ नवम्बर, १८३०
नेनारादोवो गाव

हमारे लेखक के सम्मानित मित्र की इच्छा का आदर करना अपना कर्त्तव्य मानते हुए हम उनके द्वारा दी गयी जानकारी के लिये आभार-प्रदर्शन करते है और हमे आशा है कि पाठक उनकी निश्छलता तथा नेकदिली का ऊचा मूल्याकन करेगे।

अ० पु०

सुनी गयी (यह या उपाधि और नाम तथा कुलनाम के प्रथम अक्षर)। जिज्ञासु पाठक के लिये कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं – 'डाक-चौकी का मुशी' कहानी टिट्युलर कौसिलर अ० ग० न० ने सुनाई, 'पिस्तौल का निशाना' लेफ्टीनेट कर्नल इ० ल० प० ने, 'ताबूतसाज़' दुकान के एक विक्रेता ब० व० ने, 'बर्फीली आधी' और 'प्रेम-मिलन' कुमारी क० इ० त० ने। (**अ० स० पुश्किन की टिप्पणी।**)

पिस्तौल का निशाना

हमने एक-दूसरे पर गोलियां चलाईं

बरातीन्स्की*

द्वन्द्व-युद्ध के नियमानुसार मैंने उसकी हत्या कर डालने का प्रण किया था (गोली चलाने की मेरी बारी अभी शेष थी)।

'पड़ाव की एक शाम'**

(१)

एक बस्ती में हम तैनात थे। फौजी अफसर की जिन्दगी कैसी होती है, यह सब जानते हैं। सुबह सैनिक-शिक्षा, घुड़सवारी, रेजिमेंट के कमाण्डर के घर या किसी यहूदी के भटियारखाने में दिन का भोजन, शाम को शराब और ताश। उस बस्ती में न तो किसी घर के दरवाजे हमारे लिये खुले थे और न मुहब्बत करने लायक कोई जवान लड़की ही थी। हम एक-दूसरे के यहां एकत्रित होते, जहां अपनी वर्दियों के अलावा और कुछ भी देखने को न होता।

हमारे हलके के लोगों में सिर्फ एक ही असैनिक व्यक्ति था। उसकी उम्र लगभग पैंतीस साल थी और हम उसे बुजुर्ग मानते थे। जीवन के कहीं अधिक अनुभव की दृष्टि से वह हम से बढ़-चढ़कर था।

---

* येव्गेनी बरातीन्स्की (१८००–१८४४) – पुश्किन के कवि-मित्र। उनकी 'बॉल-नृत्य' कविता से उद्धृत पंक्ति। – सं०

** अलेक्सान्द्र बेस्तुजेव-मार्लीन्स्की की 'पड़ाव की एक शाम' कहानी से उद्धृत पंक्ति। इस लेखक ने १४ दिसम्बर, १८२५ के सशस्त्र विद्रोह में भाग लिया था और उसकी कहानी के उद्धरण द्वारा पुश्किन ने यह स्पष्ट कर दिया कि उनकी सहानुभूति दिसम्बरवादियों के साथ थी। – सं०

इसके अलावा उस पर छाई रहनेवाली सामान्य उदासी, उसकी तुनुक-मिज़ाजी और ज़हरीली ज़बान ने भी हम जवान लोगों के दिल-दिमाग पर उसकी काफी धाक जमा दी थी। उसका जीवन किसी रहस्य से घिरा-सा था। वह रूसी प्रतीत होता था, मगर उसका नाम विदेशी था। कभी वह हुस्सार घुड सेना में रह चुका था और वहा उसने अच्छी सफलता भी पायी थी। किस कारण उसने सेना से इस्तीफा दिया और इस छोटी-सी बस्ती मे आ बसा, यह कोई नही जानता था। यहा वह एकसाथ ही फटेहाल और बडे ठाठ से भी रहता। हमेशा पैदल चलता, फटा-पुराना काला फ्राककोट पहनता, मगर हमारी रेजिमेंट के सभी अफसरो के लिये अपने घर के दरवाजे खुले रखता। यह सही है कि उसके यहा खाने की मेज पर दो या तीन चीज़े ही होती, जिन्हे एक भूतपूर्व सैनिक तैयार करता था, मगर दूसरी ओर शैम्पेन की नदी बहती रहती थी। किसी को यह मालूम नही था कि उसकी हैसियत क्या है, उसकी आमदनी कितनी है और कोई भी उससे यह पूछने की जुर्रत नही करता था। उसके यहा बहुत-सी किताबे थी, अधिकतर सेना-सम्बन्धी और उपन्यास। वह खुशी से उन्हे पढने के लिये दूसरो को देता, मगर कभी वापिस न मागता और खुद भी किसी से ली हुई पुस्तक न लौटाता। पिस्तौल से गोलिया चलाना – यही उसकी सबसे बडी दिलचस्पी थी। उसके कमरो की दीवारे गोलियो से छलनी हो गयी थी और मधुमक्खियो के छत्तो की भांति लगती थी। वह जिस कच्चे घर मे रहता था, उसमे सिर्फ बढिया पिस्तौलो का बडा सग्रह ही विलासिता का द्योतक था। निशानेबाज़ी मे तो उसने ऐसा कमाल हासिल कर लिया था कि अगर वह किसी की टोपी पर नाशपाती रखकर उसे बेधने की इच्छा प्रकट करता, तो हमारी रेजिमेंट का कोई भी अफसर किसी प्रकार की दुविधा के बिना उसके सामने अपना सिर पेश कर देता। हमारे बीच बहुधा द्वन्द्व-युद्ध की चर्चा चलती, किन्तु सील्वियो (हम उसे यही नाम देंगे) उसमे कभी दिलचस्पी ज़ाहिर न करता। यह पूछने पर कि उसे कभी द्वन्द्व-युद्ध करना पडा या नही, वह रुखाई से हामी भरता, मगर कभी भी उसकी तफसीलो मे न जाता। उसके चेहरे के भाव से यह स्पष्ट हो जाता कि ऐसे सवाल उसे नापसन्द हैं। हम ऐसा मानने लगे थे कि कोई किस्मत का मारा उसकी निशाने-

के लिये भगवान को धन्यवाद दीजिये कि यह घटना मेरे घर में घटी है।

इस किस्से का क्या नतीजा होगा, हमें इसके बारे में कोई सन्देह नहीं था और हम यह जानते थे कि हमारे इस नये साथी की मौत पत्थर की लकीर है। अफ़सर यह कहकर बाहर चला गया कि सफ़ाची महोदय, जब और जैसे भी चाहें, अपने इस अपमान का बदला ले सकते हैं। खेल कुछ देर तक और चलता रहा, किन्तु यह अनुभव करते हुए कि हमारे मेज़बान का मन अब खेल में नहीं लग रहा, हमने एक-एक करके उनसे विदा ली और शीघ्र ही रिक्त होनेवाले स्थान की चर्चा करते हुए अपने-अपने क्वार्टरों की ओर चले गये।

अगले दिन हम घुड़सवारी के मैदान में यह पूछ-ताछ कर ही रहे थे कि किस्मत का मारा लेफ़्टिनेण्ट ज़िन्दा है या नहीं कि तभी वह ख़ुद सामने आ गया। हमने उससे भी यही पूछा कि उसके साथ क्या बीतनेवाली है। उसने उत्तर दिया कि सील्वियो की ओर से उसे कोई सूचना नहीं मिली है। हमें इससे बड़ी हैरानी हुई। हम सील्वियो के यहां गये, उसे अहाते में पाया और देखा कि वह फाटक पर चिपकाये हुए इक्के पर एक के बाद एक गोली दागता जा रहा है। वह हर दिन की तरह हम से मिला और पिछले दिन की घटना के बारे में उसने एक भी शब्द मुंह से नहीं निकाला। तीन दिन बीत गये और लेफ़्टिनेण्ट अभी भी ज़िन्दा था। हम हैरान होते हुए एक-दूसरे से पूछते – क्या सील्वियो उसे द्वन्द्व-युद्ध के लिये चुनौती नहीं देगा? किन्तु उसने ऐसा नहीं किया। अफ़सर के मामूली-सी माफ़ी मांग लेने पर ही वह सन्तुष्ट हो गया और उसने उससे सुलह कर ली।

युवाजन की दृष्टि में यह सील्वियो के सम्मान को बड़ा धक्का लगानेवाली बात थी। जवान लोग कायरता को सबसे कम क्षमा करते हैं, वीरता को सबसे बड़ा गुण मानते है और सभी तरह की कमज़ोरियों-त्रुटियों को इसके लिये माफ़ कर देते है। किन्तु धीरे-धीरे यह भूली-बिसरी बात हो गयी और सील्वियो ने हमारे बीच फिर से पहले जैसी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली।

एक मैं ही ऐसा था जो उसके निकट नही हो पाया। स्वभाव से ही रोमानी कल्पना का धनी होने के कारण मैं औरो की तुलना में इस व्यक्ति के प्रति, जो किसी रहस्यमय उपन्यास का नायक प्रतीत

तत्काल यहां से चल दू। इसलिये मैं आज रात को ही रवाना हो जाऊगा। आशा करता हू कि आज शाम को आखिरी बार मेरे साथ भोजन करने का अनुरोध आप अस्वीकार नही करेगे। आपकी भी प्रतीक्षा रहेगी मुझे," उसने मुझसे कहा, "अवश्य ही आइयेगा।" इतना कहकर वह जल्दी से बाहर चला गया और हम लोग सील्वियो के यहा मिलने की बात तय करके अपने-अपने रास्ते चले गये।

मैं नियत समय पर सील्वियो के यहा पहुचा और रेजिमेट के लगभग सभी अफसरो को वहा पाया। उसका सारा सामान बधा हुआ था और गोलियो से छलनी हुई नगी दीवारो के सिवा वहा कुछ भी नजर नही आ रहा था। हम लोग खाने की मेज के गिर्द बैठ गये, मेजबान बडे रग मे था और जल्द ही हम सब भी उसके रग मे बह गये। शैम्पेन की बोतले फटाके के साथ लगातार खुलती जाती थी, सू-सू करती और फेन उगलती शैम्पेन गिलासो मे डाली जाती तथा हम जानेवाले के लिये खूब बढ-चढकर शुभ-यात्रा और सभी तरह की सफलताओ की कामनाए करते। शाम को काफी देर से हम मेज पर से उठे। सभी लोग अपनी फौजी टोपिया पहन-पहनकर उससे विदा लेने और जाने लगे। जब मैं चलने को तैयार हुआ, तो उसने मेरा हाथ पकडकर मुझे रोक लिया और धीरे-से कहा, "मुझे आपसे कुछ बात करनी है।" मैं रुक गया।

मेहमान चले गये, हम दोनो ही रह गये, एक-दूसरे के सामने बैठ गये और अपने-अपने पाइप से धुआ उडाने लगे। सील्वियो विचारो मे डूबा हुआ था और कुछ ही देर पहले की खुशी और मस्ती का चिह्न तक भी उसके चेहरे पर नही रहा था। उदासी मे डूबा पीला चेहरा, चमकती आखे और मुह से निकलता हुआ घना धुआ, यह सब कुछ उसे शैतान-सा बना रहा था। चन्द क्षण बीत जाने पर सील्वियो ने खामोशी तोडी।

"बहुत मुमकिन है कि हमारी फिर कभी मुलाकात न हो," उसने मुझसे कहा, "जुदा होने से पहले मैं आपसे कुछ कहना चाहता हू। आपने शायद इस बात की ओर ध्यान दिया होगा कि दूसरे लोग मेरे बारे मे क्या सोचते हैं, मैं इस चीज की खास परवाह नही करता। किन्तु मैं आपको चाहता हू और आपके दिमाग मे यदि मेरे बारे मे

2-847

कोई गलत धारणा जड़ जमाये रहेगी, तो मेरे मन पर एक बोझ-सा बना रहेगा।"

वह रुका और पाइप में तम्बाकू भरने लगा। मैं नज़र झुकाये चुपचाप बैठा रहा।

"आपको यह अजीब-सा लगा होगा," उसने अपनी बात आगे बढ़ाई, "कि मैंने उस झक्की शराबी र मे बदला लेकर अपना जी ठण्डा करने की माग क्यो नही की। आपको मानना पड़ेगा कि पहले गोली चलाने का हक मेरा था और इसलिये उसकी जान मेरी मुट्ठी मे बन्द थी, जबकि मेरी जान के लिये लगभग कोई खतरा नही था। अपने ऐसे सयत व्यवहार को मैं अपनी उदारता भी कह सकता था, मगर मैं झूठ नही बोलना चाहता। अगर मैं अपनी जिन्दगी को बिल्कुल खतरे में न डाले बिना उस र को सजा दे सकता, तो मैंने किसी भी हालत मे उसे माफ न किया होता।"

मैं बडे आश्चर्य से सील्वियो को देख रहा था। उसकी ऐसी आत्म-स्वीकृति से मैं स्तम्भित रह गया था। सील्वियो कहता गया—

"बिल्कुल यही बात है। मुझे अपनी जान को खतरे में डालने का कोई अधिकार नही है। छ साल पहले किसी ने मेरे मुह पर तमाचा मारा था। और मेरा वह शत्रु अभी तक जीवित है।"

मेरी उत्सुकता की अब कोई सीमा नही थी। "आपने उससे द्वन्द्व-युद्ध नहीं किया?" मैंने पूछा, "शायद किन्ही परिस्थितियो के कारण आपका उससे आमना-सामना नही हो सका?"

"मैंने उससे द्वन्द्व-युद्ध किया था," सील्वियो ने जवाब दिया, "और हमारे द्वन्द्व-युद्ध की निशानी भी मेरे पास है।"

सील्वियो उठा और उसने गत्ते के डिब्बे मे से सुनहरे गुच्छे और फीतेवाली लाल टोपी निकाली (वैसी ही जिसे फ्रासीसी bonnet de police* कहते हैं), उसे सिर पर पहन लिया। वह माथे से तनिक ऊपर गोली से छिदी हुई थी।

"यह तो आपको मालूम ही है," उसने अपनी बात जारी रखी, "कि मैं हुस्सारो की रेजिमेंट न मे काम करता रहा हू। मेरे स्वभाव

---

* पुलिस की टोपी (फ्रासीसी)।

से भी आप परिचित है – सबसे आगे रहना मेरी आदत है और चढती जवानी के दिनो मे तो यह मेरे लिये जनून ही था। हमारे जमाने मे हुल्लडबाजी का फैशन था और मैं इस काम मे सेना मे सब का गुरु था। कौन ज्यादा शराब पी सकता है – इस बात की हम डीग हाका करते थे और एक बार तो मैंने विख्यात बुर्त्सोव से भी, जिसे कवि देनीस दवीदोव* ने अपनी रचनाओ मे अमर कर दिया है, बाजी मार ली थी। हमारी रेजिमेंट मे द्वन्द्व-युद्ध तो हर दिन ही होते थे और मैं उन सब मे या तो साक्षी होता या खुद हिस्सा लेता। साथी तो मुझे पूजते थे और निरन्तर बदलते रहनेवाले रेजिमेंट-कमाडरों के लिये मैं हमेशा सिर पर बनी रहनेवाली मुसीबत था।

"मैं बडे चैन (या बेचैनी) से अपनी ख्याति का मजा ले रहा था कि तभी एक धनी और जाने-माने परिवार (मैं उसका कुलनाम नही बताना चाहता हू) का नौजवान अफसर हमारी रेजिमेंट मे आया। अपने जीवन मे कभी ऐसा तकदीर का सिकन्दर और इतना होनहार आदमी मैंने नही देखा! जरा कल्पना कीजिये – जवानी की मस्ती, समझ-बूझ, रूप का जादू, खुशी से उमडता दिल, खतरे से आख मिलानेवाली दिलेरी, गूजता हुआ कुलनाम, बेहिसाब और कभी न खत्म होनेवाला पैसा – आप स्वयं ही सोच सकते हैं कि कैसा असर डाला होगा उसने हम सब पर। मेरा सिहासन डोल उठा। मेरी ख्याति से मेरी ओर खिचकर पहले तो उसने मेरे साथ दोस्ती करनी चाही, किन्तु मैंने उसे सीधा मुह न दिया। उसने किसी प्रकार के अफसोस के बिना मुझसे किनारा कर लिया। मैं उससे नफरत करता था। रेजिमेंट और औरतो के बीच उसकी बढती प्रतिष्ठा से मैं बिल्कुल जल-भुन गया। मैं उससे झगडा मोल लेने के मौके ढूढने लगा। मैं

---

* देनीस दवीदोव – कवि और सैनिक विषयो के लेखक तथा पुश्किन के मित्र थे। १८१२ मे दवीदोव ने किसान छापामारो के साथ मिलकर एक छापामार टुकडी का नेतृत्व किया और आक्रमणकारी फ़ासीसी सेना के विरुद्ध लडाई लडी। बुर्त्सोव ने भी १८१२ के देशभक्तिपूर्ण युद्ध मे भाग लिया था और दवीदोव की कविताओ मे उसका अक्सर उल्लेख मिलता है। – सं०

२*

उस पर कोई मज़ाकी कल्पना भी वह भी बैठा ही करता और इससे उसकी चुटकी हमेशा मेरे से ज्यादा तीखी और सही चुटीली होती और मज़ेदार भी वे निःसंदेह ही मुझसे अधिक होती। वह मजाक करता और मैं बहुत जलता। आखिर एक पोलैंडी जमींदार के घर नाच के मौके उसे सभी महिलाओं और विशेषकर गृह-स्वामिनी के भी मन का हू बना देखकर जिसके साथ मेरा अपना भी प्रेम-नाटक चल रहा था, मैंने उसके कान में कोई भद्दी-सी बात कह दी। उसने गुस्से में आकर मेरे मुंह पर तमाचा जड़ दिया। हमने म्यान से तलवारें खींच लीं, महिलाएं बेहोश हो गयीं और हम दोनों को जबर्दस्ती अलग कर दिया गया। हमने उसी रात को द्वन्द्व-युद्ध के लिये एक-दूसरे को ललकारा।

"पौ फटनेवाली थी। मैं तीन साथियों को साथ लिये हुए नियत स्थान पर खड़ा था। ऐसी बेचैनी से मैं अपने प्रतिद्वन्द्वी की राह देख रहा था कि बयान से बाहर। बसन्त के दिनों का सूरज निकल आया था और कुछ-कुछ गर्मी भी हो गयी थी। मैंने उसे दूर से आते देखा। वह पैदल आ रहा था, अपनी फौजी कमीज को तलवार की नोक पर टांगे था और सिर्फ एक गवाह उसके साथ था। हम उसकी ओर बढ़े। वह चेरियों से भरी टोपी हाथ में लिये हुए हमारे निकट आया। गवाहों ने हमें बारह कदमों की दूरी पर एक-दूसरे के सामने खड़ा कर दिया। मुझे पहले गोली चलानी थी, किन्तु मैं गुस्से से ऐसे आग-बबूला हो रहा था कि गोली चलाते वक्त मेरा हाथ नहीं डोलेगा, मुझे इसका विश्वास नहीं था। इसलिये अपने को शान्त करने के ख्याल से मैंने उसे पहले गोली चलाने का अधिकार देना चाहा। किन्तु मेरा प्रतिद्वन्द्वी इसके लिये राजी नहीं हुआ। चुनांचे सिक्का उछालकर बारी तय की गयी। जन्म से ही तकदीर के उस सिकन्दर को पहले गोली चलाने का हक मिला। उसने गोली चलाई और वह मेरी टोपी को छेदती हुई निकल गयी। अब मेरी बारी थी। आखिर तो उसकी जिन्दगी पूरी तरह मेरी मुट्ठी में थी। मैंने यह जानने की कोशिश करते हुए बहुत गौर से उसको देखा कि उसके चेहरे पर घबराहट का कोई निशान भी है या नहीं... वह पिस्तौल के निशाने के सामने खड़ा था, टोपी में से चुन-चुनकर पकी हुई चेरियां खा रहा था और गुठलियां थूकता था, जो मुझ तक पहुंच रही थीं। उसकी ऐसी लापरवाही से

मैं बौखला उठा। मैंने सोचा कि ऐसे आदमी की जान लेने से भला क्या फायदा जो उसकी ज़रा भी परवाह नही करता? एक क्रूर विचार मेरे मस्तिष्क मे कौंध गया। मैंने पिस्तौल नीचे कर ली। 'मुझे लगता है कि इस समय आपको मौत से कोई मतलब नही,' मैंने उससे कहा, 'आप अपना नाश्ता करने मे मस्त हैं। मैं आपके इस मजे मे खलल नही डालना चाहता।' – 'आपके ऐसा करने से ज़रा भी खलल नही पडेगा,' उसने मेरी बात काटी, 'गोली चलाइये। वैसे, आपकी मर्जी। मुझ पर गोली चलाने का आपका यह हक हमेशा बना रहेगा। आप जब चाहेगे, मैं आपके सामने हाजिर हो जाऊगा।' मैंने साथियो से कहा कि इस समय गोली नही चलाना चाहता और द्वन्द्व-युद्ध यही खत्म हो गया।

"मैं सेना से मुक्त होकर इस छोटी-सी जगह पर आ बसा। तब से एक दिन भी ऐसा नही बीता कि उससे बदला लेने का ख्याल मेरे दिमाग मे न आया हो। अब वह घडी आ गई है ..."

इतना कहकर सील्वियो ने अपनी जेब से उसी सुबह को उसे प्राप्त हुआ एक पत्र निकाला और मुझे पढने को दिया। मास्को से किसी ने (सम्भवत उसके वकील ने) उसे सूचित किया था कि "अमुक व्यक्ति" शीघ्र ही एक सुन्दर युवती से विवाह करनेवाला है।

"आपने अनुमान लगा लिया होगा," सील्वियो ने कहा, "कि 'अमुक व्यक्ति' कौन है। मैं मास्को जा रहा हू। देखेगे कि शादी से पहले भी वह उसी तरह मौत का सामना करेगा या नही, जैसे कभी चेरिया खाते हुए उसने किया था।"

इन शब्दो के साथ ही सील्वियो उठकर खडा हो गया, उसने अपनी टोपी फर्श पर फेक दी और पिजरे मे बन्द शेर की तरह कमरे मे इधर-उधर आने-जाने लगा। मैं बुत बना-सा उसकी बाते सुनता रहा था – अजीब और एक-दूसरी के प्रतिकूल भावनाए मेरे मन को विह्वल कर रही थी।

नौकर ने कमरे मे आकर बताया कि घोडे जुत गये हैं। सील्वियो ने बहुत स्नेहपूर्वक मुझसे हाथ मिलाया और हमने एक-दूसरे को चूमा। वह घोडा-गाडी मे जा बैठा जिसमे दो सूटकेस रखे हुए थे – एक मे पिस्तौले थी और दूसरे मे उसका निजी सामान। हमने एक बार फिर एक-दूसरे से विदा ली और घोडे सरपट दौडने लगे।

(२)

कई साल बीत गये और घरेलू परिस्थितियों से मजबूर होकर मैं न जिले के एक गरीब गाव मे बस गया। जागीर की देख-भाल करता, किन्तु पहले की मस्त और हगामो से भरी हुई अपनी जिन्दगी को याद करके दबी-घुटी टीस अनुभव किये बिना न रह पाता। निपट एकाकीपन मे पतझर और जाडे की शामे बिताने का आदी हो पाना मेरे लिये सबसे ज्यादा मुश्किल था। दोपहर के खाने तक तो मैं किसी तरह वक्त बिता लेता, मुखिया से बातें करता, काम-काज से घोडा-गाडी में इधर-उधर आता-जाता, नये धन्धो को देखने के लिये चक्कर लगाता, किन्तु जैसे ही झुटपुटा होने लगता, मेरी समझ में यह न आता कि मैं क्या करू। अलमारियो के नीचे और सामान के कमरे में मुझे जो थोडी-सी किताबे मिली थी, वे तो बार-बार पढने से मुझे ज़बानी याद हो गयी थी। भण्डारिन किरीलोव्ना को जितने भी क़िस्से-कहानिया याद थे, उन्हें वह दसियो बार सुना चुकी थी और देहाती औरतो के गीतो-गानो से मैं गहरी उदासी मे डूब जाता था। मैंने शराब का सहारा लेना चाहा, लेकिन इससे मेरे सिर मे दर्द होने लगता था। इसके अलावा मुझे यह भी मानना चाहिये कि ऊब के कारण कही शराबी न बन जाऊ, मैं इस चीज से भी डरता था। मेरा मतलब ऐसे "गये-बीते" शराबियो से था, जिनकी बहुत-सी मिसाले हमारे इलाके में मौजूद थी। इसी तरह के दो-तीन "गये-बीते" पियक्कडो के अलावा मेरे कोई अन्य पडोसी थे नही और उनकी बातचीत का ज्यादा हिस्सा हिचकिया लेने और आहे भरने में ही गुज़रता था। इनकी सगत से तो अकेले रहना ही कही बेहतर था।

मेरे यहा से चार वेर्स्ता यानी लगभग छ किलोमीटर की दूरी पर काउटेस ब की सम्पन्न जागीर थी। किन्तु वहा केवल कारिन्दा ही रहता था और काउटेस तो अपनी शादी के पहले साल सिर्फ एक बार ही जागीर पर आई थी और सो भी एक महीने से अधिक वहा नहीं रही थी। ऐसा होने हुए भी मेरे एकाकीपन के दूसरे वसन्त मे यह अफवाह फैली कि काउटेस अपने पति के साथ पूरी गर्मी के लिये गाव आनेवाली है। वास्तव में ही जून महीने के शुरू मे वे गाव आ गये।

धनी पडोसी का आगमन गाववासियो के लिये एक युगान्तरकारी घटना होता है। जमीदार और उनके घर-बार के लोग ऐसे पडोसी के आने के दो महीने पहले से और जाने के तीन साल बाद तक इसकी चर्चा करते रहते है। जहा तक मेरा सम्बन्ध है, तो मैं खुलकर मानता हू कि जवान और खूबसूरत पडोसिन के आने की खबर ने मेरे दिल मे बडी हलचल पैदा कर दी। मैं बडी बेचैनी से उसे देख पाने का इन्तज़ार करने लगा और इसलिये उसके आने के पहले ही इतवार को दोपहर का खाना खाने के बाद गाव की ओर रवाना हो गया ताकि निकटतम पडोसी और विनम्र सेवक के रूप मे अपने को उनके सामने पेश कर सकू।

नौकर ने मुझे काउट के अध्ययन-कक्ष मे ले जाकर बिठा दिया और स्वय मेरे बारे मे सूचना देने के लिये अन्दर चला गया। बडा-सा कमरा खूब बढिया ढग से सजा हुआ था। दीवारो के करीब किताबो से भरी अलमारिया रखी थी, हर अलमारी पर कासे की मूर्ति सजी थी, सगमरमर के आतिशदान के ऊपर खासा बडा दर्पण टगा था, हरे रग की बनात से मढे हुए फर्श पर कालीन बिछे थे। अपने गरीबी के वातावरण मे रहते हुए मैं इस तरह के ठाठ-बाट का आदी नही रहा था, बहुत समय से मैंने परायी दौलत का ऐसा रग भी नही देखा था, इसलिये मैं कुछ सहम-सा गया और ऐसे धडकते दिल से काउट की राह देखने लगा, जैसे किसी छोटे-से नगर से आनेवाला प्रार्थी मन्त्री के बाहर निकलने का इन्तज़ार करता है। दरवाज़ा खुला और कोई बत्तीस साल का सुन्दर पुरुष कमरे मे दाखिल हुआ। काउट अपनत्व और मैत्री का भाव लिये मेरे निकट आया। मैंने अपनी घबराहट पर काबू पाने की कोशिश की और अपना परिचय देना चाहा, किन्तु इसी बीच उसने अपना परिचय दे दिया। हम दोनो बैठ गये। उसके बातचीत के सहज और स्नेहपूर्ण अन्दाज़ से एकाकी जीवन बिताने के कारण मुझमे पैदा हुई झेप शीघ्र ही दूर हो गयी और मैं अपनी सामान्य-स्वाभाविक स्थिति मे आने लगा कि काउटेस ने कमरे मे प्रवेश किया और पहले से भी कही अधिक घबराहट ने मुझे दबोच लिया। वह तो सचमुच ही बडी सुन्दर थी। काउट ने मेरा परिचय दिया। मैंने अपने को बेतकल्लुफ ज़ाहिर करना चाहा, लेकिन मैं बेतकल्लुफी का जितना

अधिक ढोंग करता था, उतना ही ज्यादा अटपटापन महसूस करता था। मेरे साथ किसी प्रकार की औपचारिकता न बरतने और अच्छे पड़ोसी का सा व्यवहार करते हुए उन्होंने मुझे सम्भलने और नये परिचय का अभ्यस्त होने का समय देने के लिये आराम से बातचीत शुरू कर दी। इसी बीच मैं किताबों और तस्वीरों पर नजर दौड़ाने लगा। तस्वीरों की मुझे कोई खास जानकारी हो, ऐसी बात नहीं है, लेकिन एक तस्वीर ने मेरा ध्यान अपनी ओर खींच लिया। उसमें स्विट्जरलैंड का कोई दृश्य अंकित था, पर मुझे चित्र ने नहीं, बल्कि इस बात ने आश्चर्यचकित किया कि यह एक के ऊपर एक दो गोलियों से छिदा हुआ था।

"यह हुआ न बढ़िया निशाना," मैंने काउंट को सम्बोधित करते हुए कहा।

"हां, बहुत बढ़िया निशाना है," उसने जवाब दिया। "आप भी अच्छे निशानेबाज हैं क्या?" काउंट ने पूछा।

"हां, कुछ बुरा नही," मैंने इस बात से खुश होते हुए कि बातचीत का सिलसिला आखिर तो मेरे मनपसन्द विषय की ओर मुड़ गया है, उत्तर दिया। तीस कदम की दूरी से तो ताश के पत्ते के बिन्दु को छेद डालूगा। जाहिर है कि ऐसी पिस्तौल से जिस पर मेरा हाथ सधा हुआ हो।"

"सच?" काउंटेस ने बड़ी गम्भीरता से जानना चाहा और फिर पति से पूछा, "मेरे प्यारे, क्या तुम भी तीस कदम की दूरी से ऐसा निशाना लगा सकते हो?"

"कभी आजमाकर देखेंगे," काउंट ने जवाब दिया। "अपने जमाने मे मैं भी कुछ बुरा निशानेबाज नही था, लेकिन अब तो पिछले चार साल से कभी पिस्तौल हाथ मे नहीं ली।"

"ओह, तब तो मैं शर्त लगाकर यह कह सकता हू कि, हुजूर, बीस कदम की दूरी से भी ताश के पत्ते को नहीं छेद सकेंगे – पिस्तौल तो इस बात की माग करती है कि हर दिन उससे अभ्यास किया जाये। अपने तजरबे से मैं यह जानता हूं। अपनी रेजिमेंट मे मुझे एक बहुत अच्छा निशानेबाज माना जाता था। एक बार ऐसा हुआ कि पूरे एक महीने तक मैं पिस्तौल हाथ मे नही ले पाया – मेरी पिस्तौलें मरम्मत

लिये गयी हुई थी। जानते हैं, हुजूर, कि इसका क्या नतीजा निकला? इसके बाद जब मैंने पहली बार निशानेबाज़ी शुरू की, तो पच्चीस कदम की दूरी से ही मैं लगातार चार बार बोतल का निशाना भी न साध सका। बडी फडकती हुई बात कहने और चुटकिया लेनेवाला हमारा कप्तान वहा मौजूद था। वह बोला, 'मेरे भाई, बात साफ है। तुम्हे बोतल से इतना लगाव है कि उस पर गोली नही चला पाते।' नही, हुजूर, निशानेबाज़ी का अभ्यास तो लगातार करते रहना चाहिये, नही तो मामला चौपट हो जायेगा। अपनी ज़िन्दगी मे जिस सबसे अच्छे निशानेबाज से मेरा वास्ता पडा, वह दोपहर के खाने के पहले कम से कम तीन गोलिया हर रोज चलाता था। उसके लिये यह वैसा ही नियम था, जैसे भोजन के पहले वोदका का जाम।"

काउट और काउटेस इस बात से खुश थे कि मैं झेप-मुक्त होकर बातचीत करने लगा था।

"किस तरह की निशानेबाज़ी करता था वह?"

"किस तरह की? कभी-कभी ऐसा होता था, हुजूर, कि वह किसी मक्खी को दीवार पर बैठे देखता – आप हस रही है काउटेस? कसम खाकर कहता हू कि यह बिल्कुल सच बात है। वह मक्खी को देखता और नौकर को पुकारता, 'कूज्का, मेरी पिस्तौल लाओ!' कूज्का भरी हुई पिस्तौल लाता। वह गोली दागता और मक्खी का दीवार पर ही भुरकस हो जाता।"

"यह तो कमाल की बात है!" काउट ने कहा, "उसका नाम क्या था?"

"सील्वियो, हुजूर।"

"सील्वियो!" अपनी कुर्सी से उछलकर खडा होता हुआ काउट चिल्ला उठा, "आप सील्वियो को जानते थे?"

"जानता कैसे नही था, हुजूर। हम तो अच्छे दोस्त थे। हमारी रेजिमेट मे उसे अपना साथी, बन्धु ही माना जाता था। अब पिछले पाच साल से मुझे उसके बारे मे कोई खबर नही मिली। तो हुजूर, मतलब यह हुआ कि आप भी उसे जानते थे?"

"जानता था, खूब अच्छी तरह से जानता था। उसने आपको कभी यह नही बताया था लेकिन नही, शायद ही उसने ऐसा

किया हो – उसने आपको एक बहुत ही अजीब किस्सा नहीं सुनाया था?

'शाम-धुंध के वक्त किसी छैले ने उसके मुंह पर तमाचा जड़ दिया था यही तो नहीं हुजूर?"

उसने आपको उस छैले का नाम बताया था?"

'*नहीं हुजूर, नाम तो नहीं बताया* ओह, हुजूर," सामने की तरह से छिपी सचाई का अनुमान लगाते हुए मैं कहता गया, "माफी चाहता हूं मैं नहीं जानता था कहीं आप ही तो वह नहीं हैं?."

'हां, वह मैं ही हूं,' काउट ने बड़ी खिन्नता से उत्तर दिया, "और गोली से छिदी हुई *यह तस्वीर हमारी आखिरी मुलाकात की* निशानी है"

"ओ, मेरे प्यारे," काउटेस ने कहा, "भगवान के लिये यह किस्सा नहीं सुनाओ। उसे सुनते हुए मेरा दिल *कांपने लगता है।*"

"नहीं," काउट ने काउटेस की बात काटी, "मैं सब कुछ बताऊगा। इन्हे यह मालूम है कि कैसे मैंने इनके दोस्त की बेइज्जती की थी। अब इन्हे यह भी मालूम हो जाना चाहिये कि सील्वियो ने किस *तरह मुझसे इसका बदला लिया।*"

काउट ने एक आरामकुर्सी मेरी ओर बढ़ा दी और मैंने बड़ी उत्सुकता से यह कहानी सुनी।

"पाच साल पहले मैंने शादी की थी। पहला महीना, *the honey*-moon, यानी मधुमास मैंने यहा इस गाव मे बिताया। मेरे जीवन के मधुरतम क्षण और एक बहुत ही कटु स्मृति इस घर के साथ जुड़ी हुई है।

"एक शाम को हम दोनो एकसाथ घुड़सवारी के लिये निकले। मेरी पत्नी का घोड़ा कुछ अड़ने और बिदकने लगा। यह डर गयी, इसने घोड़े की लगामे मुझे दे दी और पैदल ही घर को चल दी। मैं अपने घोड़े पर ही आगे-आगे बढ चला। अहाते मे मुझे एक घोड़ागाड़ी खड़ी दिखाई दी। मुझे बताया गया कि मेरे अध्ययन-कक्ष मे एक व्यक्ति बैठा है, जो अपना नाम नही बताना चाहता, किन्तु जिसने सिर्फ इतना ही कहा है कि उसे मुझसे कुछ काम है। मैं कमरे मे *गया* और वहा अंधेरे मे धूल से लथपथ और बढ़ी हुई दाढ़ीवाले एक व्यक्ति को

अपने सामने पाया। वह यहा, आतिशदान के करीब खड़ा था। उसके चेहरे-मोहरे को पहचानने की कोशिश करते हुए मैं उसके निकट गया। 'काउट, तुमने मुझे नही पहचाना?' उसने कापती-सी आवाज मे पूछा। 'सील्वियो!' मैं कह उठा और स्वीकार करता हू, मैंने अनुभव किया कि कैसे मेरे रोंगटे खड़े हो गये है। 'हा, मैं वही हू,' उसने जवाब दिया, 'मैं अपना हिसाब चुकाने आया हू, मुझे अपनी पिस्तौल को गोली से मुक्त करना है। तुम तैयार हो?' उसकी बगलवाली जेब में पिस्तौल दिखाई दे रही थी। मैंने बारह डग भरे और वहा कोने में जाकर खड़ा हो गया। मैंने उससे अनुरोध किया कि वह झटपट, मेरी पत्नी के लौटने से पहले ही गोली चला दे। किन्तु उसने जल्दी नही की, रोशनी लाने के लिये कहा। मोमबत्तिया जला दी गयी। मैंने दरवाजे को ताला लगा दिया, किसी के भी भीतर आने की कड़ी मनाही कर दी और फिर उससे गोली चलाने का अनुरोध किया। उसने पिस्तौल निकालकर निशाना साधा   मैं हर क्षण गिन रहा था   अपनी पत्नी के बारे मे सोच रहा था   बहुत ही भयानक एक मिनट बीता! सील्वियो ने हाथ नीचे कर लिया। 'बड़े दुख की बात है,' उसने कहा, 'कि पिस्तौल मे चेरियो की गुठलिया नही भरी हैं गोली बहुत भारी है। मुझे लग रहा है कि यह द्वन्द्व-युद्ध नही है, बल्कि मैं आपकी हत्या कर रहा हू। निहत्थे पर निशाना साधने की मुझे आदत नही। हम फिर से शुरू करते हैं, पर्चियां डाल लेते है कि कौन पहले गोली चलायेगा।' मेरा सिर चकरा रहा था... जहा तक मुझे याद है, मैं राजी नही हुआ   आखिर हमने एक अन्य पिस्तौल मे गोली भरी और दो पर्चियो की गोलियां-सी बनायी। उसने उन्हें उसी टोपी मे डाल दिया जिसे मैंने कभी छेद डाला था। फिर से मुझे ही पहले गोली चलाने का अधिकार मिल गया। 'काउंट, तुम तकदीर के बड़े सिकन्दर हो,' उसने ऐसी व्यग्यपूर्ण मुस्कान के साथ कहा जिसे मैं कभी नही भूल पाऊंगा। मेरे लिये यह समझ पाना कठिन है कि उस समय मुझे क्या हो गया था और कैसे मैं यह सब करने को विवश हो गया था... किन्तु मैंने गोली चलाई और वह इस तस्वीर मे जा लगी।" (काउंट ने गोलियो से छिदे चित्र की ओर उगली से इशारा किया। उसका चेहरा तमतमाया हुआ था, काउटेस के चेहरे का रग

उसके दुपट्टे से भी अधिक सफेद पड़ गया था और मैं स्तम्भित-सा होकर चीखे बिना न रह सका।)

"मैंने गोली चलाई," काउंट ने अपनी बात जारी रखी, "और भला हो भगवान का, मेरा निशाना चूक गया। तब सील्वियो... (इस क्षण वह सचमुच बहुत भयानक प्रतीत हो रहा था) सील्वियो मेरी ओर निशाना साधने लगा। अचानक दरवाजा खुल गया, माशा भागती हुई भीतर आई और चीख मार कर मेरे गले से लिपट गयी। इसके आने से मैं फौरन सम्भल गया। 'मेरी प्यारी,' मैंने पत्नी से कहा, 'क्या तुम देख नही रही हो कि हम यो ही मजाक कर रहे हैं। देखो तो तुम कैसे सहम गयी हो! जाओ, पानी का एक गिलास पीकर वापस आ जाओ। मैं अपने पुराने दोस्त और साथी से तुम्हारा परिचय करवा दूगा।' माशा को मेरी बात पर विश्वास नही हुआ। 'यह बताइये कि मेरे पति सच कह रहे हैं न?' माशा ने रौद्र रूप धारण किये सील्वियो को सम्बोधित करते हुए पूछा, 'क्या यह सच है कि आप दोनो मजाक कर रहे हैं?'—'यह तो हमेशा मजाक करते हैं, काउंटेस,' सील्वियो ने माशा को उत्तर दिया। 'एक बार मजाक मे ही इन्होंने मेरे मुह पर तमाचा मारा था, मजाक करते हुए ही मेरी इस टोपी को छेद डाला था, मजाक मे ही अभी मुझ पर चलाई गयी गोली का निशाना चूक गया। अब मैं मजाक करना चाहता हू' इतना कहकर उसने मुझ पर निशाना साधना चाहा . पत्नी के सामने ही! माशा उसके कदमो पर जा गिरी। 'माशा, उठो, कुछ शर्म करो!' मैं पागलो की तरह चिल्ला उठा। 'और आप, महानुभाव, इस बेचारी औरत से खिलवाड करना बन्द करेंगे या नही? गोली चलायेंगे या नही?'—'नही चलाऊगा,' सील्वियो ने जवाब दिया। 'मेरे लिये इतना ही काफी है—मैंने तुम्हे घबराये और सहमे हुए देख लिया, मुझे अपने पर गोली चलाने को मजबूर कर दिया, मेरे लिये इतना ही बहुत है। याद रखोगे मुझे। अब तुम जानो और तुम्हारी आत्मा।' इतना कहकर वह बाहर जाने लगा, लेकिन दरवाजे के पास रुका, उसने उस चित्र की ओर देखा जिसे मैंने छेद डाला था, लगभग निशाना साधे बिना उस पर गोली चलाई और गायब हो गया। मेरी पत्नी बेहोश पड़ी थी, नौकरों-चाकरों को उसे रोकने की हिम्मत

ही हुई, वे सब भयभीत-से उसे देखते रहे। बाहर जाकर उसने अपने कोचवान को पुकारा और मेरे सम्भल पाने से पहले ही गायब हो गया।"

काउट ने इससे आगे कुछ नही कहा। इस तरह मुझे उस कहानी के अन्त का पता चला, जिसके आरम्भ ने कभी मेरे मन पर गहरी छाप छोडी थी। इसके नायक से मेरी फिर कभी भेट नही हुई। कहते हैं कि अलेक्सान्द्र इप्सिलान्ती* के विद्रोह के समय सील्वियो ने एक फ़ौजी दस्ते की कमान सम्भाली और स्कुल्यानी के निकट हुए युद्ध मे खेत रहा।

बर्फ़ीली आंधी

करते हुए हवा से बातें, ऊबड-खाबड धरती पर
रौंद-रौंद हिम-परतो को
घोडे दौडे जाते हैं
नज़र घूमती एक तरफ़ को
गिरजाघर हम पाते हैं।

सहसा उठी बर्फ़ की आधी
ढेरो बर्फ़ गिराती है,
सरसर पख हिलाता काला कौवा उडता जाता है
उस स्लेज के ऊपर, जो तेज़ी से दौडी जाती है।
काय-काय मे उसकी दुख है,
है सकेत अशुभ कोई
घोडे इसको अनुभव करते, और तेज होते जाते,
दूर अधेरे को हैं उनकी आखे मानो चीर रहीं
भय से ऊपर उठे अयालो को हैं वे तो लहराते

जुकोव्स्की**

---

* अलेक्सान्द्र इप्सिलान्ती – रूसी सेना के एक जनरल, जिन्होंने तुर्क कब्ज़ावरो से यूनान की मुक्ति के लिये लडनेवाले एक गुप्त क्रान्तिकारी सगठन का नेतृत्व किया। तुर्क सेना ने प्रूत नदी के तटवर्ती स्कुल्यानी स्थान पर २९ जून, १८२१ को इस पलटन को कुचल दिया था। – स०

** प्रसिद्ध रूसी कवि और अनुवादक वसीली जुकोव्स्की (१७८५–१८५२) की 'स्वेत्लाना' कविता से। – स०

हमें कभी न भूलनेवाले सन् १८११ के अन्त में गव्रीला गव्रीलोविच र॰ नाम के एक सज्जन व्यक्ति नेनारादोवो गाव की अपनी जागीर पर रहते थे। बड़ी खुशमिजाजी और मेहमाननवाजी के लिये वे अपने सारे इलाके में मशहूर थे। उनके पड़ोसी खाने-पीने और पाच कोपेक की बाजी लगाकर उनकी पत्नी के साथ बोस्टन खेलने के लिये लगातार उनके घर आते रहते। कुछ उनकी सुघड़-सुडौल, चम्पई रग की सत्रह वर्षीया बेटी मारिया गव्रीलोव्ना को एक नजर देख लेने के लिये भी आते। वह धनी भावी पत्नी थी और बहुतों के दिल उसे अपने या अपने बेटो के लिये पा लेने को ललकते।

मारिया गव्रीलोव्ना फ्रांसीसी उपन्यासों के रग मे रगकर बड़ी हुई थी और इसलिये स्वाभाविक था कि जल्द ही मुहब्बत के जाल मे फस गयी। एक मामूली और गरीब फौजी अफसर को, जो छुट्टी पर अपने गाव आया हुआ था, उसने अपना दिल दे दिया। जाहिर है कि उस नौजवान के दिल में भी प्रेम की वैसी ही आग सुलग रही थी। उसकी प्रेम-पात्री के माता-पिता ने ज्योंही एक-दूसरे के प्रति उनके आपसी झुकाव को देखा, त्योंही बेटी से कह दिया कि वह उसका ध्यान तक दिमाग मे निकाल दे और अब वे अपने घर आने पर उस नौजवान का अवकाश-प्राप्त छोटे न्यायाधीश से भी बुरी तरह स्वागत करते।

हमारे इन दोनो प्रेमियो के बीच पत्र-व्यवहार चलता और वे हर दिन सनोबरो के झुरमुट या पुराने गिरजे के करीब एकान्त मे मिलते। वहा वे जीवन के अन्तिम क्षण तक प्रेम करने की कसमे खाते, क़िस्मत का रोना रोते और तरह-तरह की योजनाये बनाते। इसी तरह से एक-दूसरे को चिट्ठिया लिखते और बातचीत करते हुए वे इस नतीजे पर पहुचे (जो सर्वथा स्वाभाविक था) – अगर हम एक-दूसरे के बिना जिन्दा नही रह सकते और कठोर माता-पिता की इच्छा हमारे सुखी जीवन के मार्ग मे बाधा बनती है, तो क्यो हम इसके बिना ही काम न चला ले? स्पष्ट है कि यह विचार फौजी नौजवान के दिमाग में ही आया और मारिया गव्रीलोव्ना की रोमानी कल्पना को भी यह बहुत अच्छा लगा।

जाडा आने पर इन दोनो की मुलाकाते बन्द हो गयी और इसलिये पत्र-व्यवहार में अधिक सजीवता आ गयी। व्लादीमिर निकोलायेविच

पने हर पत्र मे उससे अनुरोध करता कि वह उसकी पत्नी बन जाये, ोरी-छिपे उससे शादी कर ले, कुछ समय के लिये वे दोनो छिपे रहे, सके बाद उसके मा-बाप के कदमो पर जा गिरे, जिनका दिल आखिर ेमियो की ऐसी सच्ची निष्ठा तथा दुख से पिघल जायेगा और वे वश्य ही उनसे यह कहेगे, "बच्चो, आओ, हमारे गले से लग जाओ।"

मारिया गव्रीलोव्ना बहुत समय तक डावाडोल रही, घर से भाग ाने की बहुत-सी योजनाओ से उसने इन्कार कर दिया। आखिर वह ाज़ी हो गयी। योजना यह बनी कि नियत दिन पर शाम का भोजन र करे और सिर दर्द का बहाना करके अपने कमरे मे चली जाये। उसकी नौकरानी को भी षड्यन्त्र मे शामिल किया जाये, पिछले दरवाज़े े दोनो बाग मे चली जाये, जहा उन्हे घोडा-गाडी तैयार खडी मिलेगी और वे दोनो उसमे बैठकर नेनारादोवो गाव से पाच वेर्स्ता* की दूरी पर जाद्रिनो गाव के गिरजे मे पहुच जाये। व्लादीमिर वही पर उनका इन्तज़ार करेगा।

नियत दिन की पूर्ववेला मे मारिया गव्रीलोव्ना को सारी रात नीद नही आई – अपने कपडो-लत्तो को बाध कर तैयार करती रही और उसने दो पत्र लिखे। एक तो अपनी भावुक-सवेदनशील सहेली को और दूसरा अपने मा-बाप को। उसने बहुत ही मर्मस्पर्शी शब्दो मे उनसे विदा ली, अदम्य प्रेम-प्रवाह के वश मे होकर ऐसी हरकत करने के लिये माफी मागी और अन्त मे लिखा कि उसके जीवन का सबसे सुखद क्षण वह होगा, जब उसे अपने प्यारे माता-पिता के पैरो पर गिरने का सौभाग्य प्राप्त होगा। दोनो पत्रो को उसने तूला की वह मुहर लगाकर बन्द किया, जिसपर एक अच्छे आलेख के साथ दो दहकते हुए दिल अकित थे। इसके बाद वह बिस्तर पर जा गिरी और पौ फटने के समय उसे झपकी आ गयी। किन्तु भयानक सपनो के कारण रह-रहकर उसकी आख खुल जाती। उसे सपने मे दिखाई देता कि जब वह शादी के लिये रवाना होने को स्लेज मे जाकर बैठी, उसी क्षण उसके पिता ने उसे रोक लिया, बडी तेज़ी और निर्दयता से बर्फ पर घसीटते हुए ले गये और ले जाकर अधेरे, अतल तहखाने मे

---

* वेर्स्ता – एक किलोमीटर से कुछ अधिक। – अनु०

फेर दिया और वह बड़ी तेज़ी से अंधेरे में नीचे ही नीचे धसकती चली गयी तथा उसके दिल की गति मानो बन्द हो गयी। या फिर उसे पीले-ज़र्द चेहरेवाला तथा खून से लथपथ व्लादीमिर घास पर पड़ा नज़र आता। वह दम तोड़ता हुआ हृदय-विदारक स्वर में यह अनुनय विनय करता सुनाई देता कि उसके साथ जल्दी से शादी कर ले... एक के बाद एक इसी तरह के दूसरे, अटपटे और बेमानी सपने उसके सामने आते रहे। आखिर वह अन्य दिनों की तुलना में कहीं अधिक पीला मुख और सिर में सचमुच ही दर्द लिये हुए बिस्तर से उठी। माता-पिता से उसकी परेशानी की यह हालत छिपी न रह सकी। प्यार और चिन्ता से उनके लगातार यह पूछने पर कि "माशा, तुम्हें क्या हुआ है? तुम बीमार तो नहीं हो?" उसका दिल टुकड़े-टुकड़े हुआ जाता था। उसने उन्हें शान्त करना चाहा, अपने को खुश ज़ाहिर करने का प्रयास किया, किन्तु सफल न हो सकी। शाम हो गयी। इस ख्याल से कि वह अपने परिवारवालों के बीच आज आखिरी दिन बिता रही है, उसका हृदय द्रवित हुआ जाता था। वह मुश्किल से सांस ले पा रही थी और मन ही मन अपने माता-पिता, घर की सभी चीज़ों और पूरे घरेलू वातावरण से विदा ले रही थी।

शाम का भोजन परोसा गया, माशा का दिल ज़ोर से धड़कने लगा। उसने कांपते होंठों से यह कहा कि उसका भोजन करने को मन नहीं है और वह माता-पिता से विदा लेने लगी। उन्होंने बेटी को चूमा और हर दिन की भांति उसे आशीर्वाद दिया। माशा बड़ी मुश्किल से अपने आंसू रोक पायी। अपने कमरे में आकर वह कुर्सी पर ढह पड़ी और फूट-फूटकर रोने लगी। नौकरानी ने उसे शान्त करने और उसमें प्रफुल्लता लाने का प्रयास किया। पूरी तैयारी हो चुकी थी। आध घंटे बाद माशा को अपने माता-पिता के घर, अपने कमरे और एक युवती के शान्त जीवन से सदा के लिये विदा ले लेनी थी बाहर ज़ोर की बर्फ़ीली आंधी चल रही थी, हवा चीखती-चिल्लाती थी, पट ज़ोर से हिलते और बजते थे। हर चीज़ मानो आतंक और अशकुन का संकेत कर रही थी। शीघ्र ही घर में सब कुछ शान्त हो गया, सब सो गये। माशा ने शाल लपेटी, गर्म गाउन पहना, हाथ में अपनी मंजूषा ली और पिछले दरवाज़े से बाहर आ गयी। दो पोटलियां उठाये हुए नौकरानी

उसके पीछे-पीछे बाहर निकल आई। वे बाग मे गयी। बर्फीली शान्त नही हुई थी, तेज़ हवा सामने से थपेड़े मार रही थी युवा अपराधिनी को बरबस रोक रही हो। ये दोनो बडी कठिनाई ाग के सिरे तक पहुंची। सड़क पर स्लेज घोड़ा-गाड़ी इनकी राह रही थी। बुरी तरह से ठिठुरे हुए घोडे निश्चल नही खडे रह पा थे। बमो के सामने इधर-उधर लपकता हुआ व्लादीमिर का कोचवान किसी तरह से काबू मे रखने की कोशिश कर रहा था। कोचवान मारिया और उसकी नौकरानी को बैठने, पोटलियो तथा मजूषा रखने मे उनकी मदद की, लगामे सम्भाली और घोडे मानो उड । मारिया को उसके भाग्य और कोचवान तेर्योश्का की होशियारी छोड़कर अब हम अपने जवान प्रेमी की ओर मुड़ते हैं।

व्लादीमिर का पूरा दिन घोड़ा-गाडी मे इधर-उधर दौड-धूप ते ही बीता। सुबह वह जाद्रिनो के पादरी के पास गया – किसी ह उसे शादी करवाने के लिये राज़ी किया और इसके बाद आस-प के ज़मीदारो मे गवाहों की खोज करने गया। वह सब से पहले सवार सेना के सेवानिवृत्त छोटे फौजी अफसर, जिसकी उम्र चालीस ल थी, द्राविन के यहा पहुचा। द्राविन खुशी से गवाह बनने को ार हो गया। उसने राय ज़ाहिर की कि ऐसे साहसिक कार्य ने उसके ल मे पुराने वक्तो और हुस्सारो के हगामो-शरारतो की याद ताज़ा र दी है। उसने व्लादीमिर से दोपहर का भोजन करने के लिये रुक ाने का अनुरोध किया और उसे विश्वास दिलाया कि बाकी दो गवाहो ी समस्या भी हल हो जायेगी। वास्तव मे ही भोजन समाप्त होते न ोते बड़ी-बड़ी मूछोवाला श्मीत नाम का पटवारी, जो एड़दार जूते हने था, और उसके साथ ज़िले के पुलिस अफ़सर का सोलह वर्षीय बेटा भी यहा आ गये। यह नौजवान कुछ ही समय पहले घुड़सवारो की रेजिमेंट मे भर्ती हुआ था। इन दोनो ने न केवल गवाह बनने के व्लादीमिर के प्रस्ताव को स्वीकार किया, बल्कि यह कसम भी खाई कि उसके लिये अपना जीवन तक न्योछावर कर देगे। व्लादीमिर ने बड़े जोश से उन्हें गले लगाया और तैयारी करने के लिये घर चला गया।

दिन ढले काफी देर हो चुकी थी। उसने अपने भरोसे के कोचवान तेर्योश्का को तफसील से सारी बात समझाकर अपनी तीन घोडोवाली

3-697

बर्फ-गाड़ी से नेनारादोवो भेज दिया और अपने लिये एक घोड़ेवाली छोटी बर्फ-गाड़ी जोतने को कहा। यह कोचवान के बिना ही जाद्रिनो के लिये, जहाँ दो घण्टे बाद मारिया गव्रीलोव्ना को भी पहुंचना था, रवाना हो गया। रास्ता उसका जाना-पहचाना था और वहाँ पहुंचने के लिये उसे केवल बीस मिनट दरकार थे।

किन्तु ब्लादीमिर गांव से बाहर खेतों में पहुंचा ही था कि इतने ज़ोर की हवा चली, ऐसी बर्फ़ीली आंधी आई कि उसे कुछ भी नज़र नहीं आता था। आन की आन में रास्ता बर्फ़ से ढक गया। इर्द-गिर्द का सभी कुछ अंधेरे की धुंधली और पीली चादर में खो गया, जिसमें से बर्फ़ के सफ़ेद फाहे-से उड़ते आ रहे थे। धरती और आकाश एकाकार हो गये थे। ब्लादीमिर ने अपने को खेत में पाया और उसने फिर से सड़क पर लौटने का व्यर्थ ही प्रयास किया। घोड़ा रास्ते में भटक गया और वह कभी बर्फ़ के ढेर पर चढ़ जाता, कभी किसी गड्ढे में धंस जाता तथा बर्फ़-गाड़ी बार-बार उलट-पलट जाती। ब्लादीमिर ने यह कोशिश की कि वह ठीक दिशा को न खो दे। किन्तु उसे लगा कि आध घण्टे से अधिक समय बीत चुका है और वह जाद्रिनो गांव के बाहर वृक्ष-झुरमुट तक नहीं पहुंच पाया है। लगभग दस मिनट और बीत गये तथा वृक्ष-झुरमुट की अभी झलक भी नहीं मिली थी। ब्लादीमिर गहरे गड्ढों से कटे-फटे मैदान में से बर्फ़-गाड़ी बढ़ा रहा था। बर्फ़ का तूफ़ान शान्त नहीं हो रहा था, आसमान साफ़ होने का नाम नहीं ले रहा था। घोड़ा थकने लगा और इस चीज़ के बावजूद कि ब्लादीमिर हर क्षण कमर तक बर्फ़ में धंस जाता था, पसीने से तर-बतर था।

आखिर वह समझ गया कि ठीक दिशा में नहीं जा रहा है। वह रुककर सोचने, याद करने और स्थिति को समझने लगा और इस परिणाम पर पहुंचा कि उसे दायीं ओर जाना चाहिये। उसने दायीं ओर गाड़ी बढ़ाई। उसका घोड़ा बड़ी मुश्किल से ही कदम उठा पा रहा था। एक घण्टा हो गया था उसे घर से रवाना हुए। जाद्रिनो को कहीं नज़दीक ही होना चाहिये था। किन्तु वह स्लेज बढ़ाता जा रहा था, बढ़ाता जा रहा था और मैदान का कोई ओर-छोर ही नज़र नहीं आता था। बस, बर्फ़ के बड़े-बड़े ढेर और गड्ढे ही सामने दिखाई दे रहे थे। रह-रहकर उसकी बर्फ़-गाड़ी उलट जाती और बार-बार

वह उसे सीधी करता। समय बीतता जा रहा था और व्लादीमिर बहुत परेशान हो उठा था।

अन्त में एक ओर को कुछ काला-सा उभरने लगा। व्लादीमिर ने उसी दिशा में घोड़ा मोड़ दिया। निकट आने पर उसे झुरमुट नज़र आया। शुक्र है भगवान का, उसने अपने मन में सोचा, अब गिरजाघर दूर नहीं है। वह मन में यह आशा लिये हुए कि तत्काल जानी-पहचानी सड़क पर पहुंच जायेगा या झुरमुट के गिर्द चक्कर लगाकर सड़क पर पहुंचेगा – जाद्रिनो ठीक उसी के पीछे था। सड़क उसे जल्द ही मिल गयी और जाड़े में सिपटे हुए वृक्षों के अंधेरे में घोड़े को आगे बढ़ाने लगा। हवा यहां इतनी अधिक तेज़ नहीं थी, सड़क समतल थी, घोड़े में भी फुर्ती आ गयी और व्लादीमिर शान्त हो गया।

वह घोड़े को बढ़ाता जा रहा था, बढ़ाता जा रहा था, किन्तु जाद्रिनो कहीं दिखाई नहीं दे रहा था, झुरमुट का अन्त नहीं हो रहा था। यह देखकर कि वह किसी अपरिचित जंगल में पहुंच गया है, व्लादीमिर का दिल बैठ गया। हताशा उस पर हावी हो गयी। उसने घोड़े पर चाबुक बरसाया – बेचारा जानवर दुलकी चाल में दौड़ने लगा, किन्तु जल्द ही उसकी गति धीमी होने लगी और बदकिस्मत व्लादीमिर की सारी कोशिशों के बावजूद पन्द्रह मिनट बाद वह कदम-कदम चलने लगा।

धीरे-धीरे वृक्ष कम होने लगे और व्लादीमिर जंगल से बाहर निकला – जाद्रिनो का कहीं नाम-निशान नहीं था। लगभग आधी रात हो गयी थी। व्लादीमिर की आंखें डबडबा आईं। बेशक किसी तरफ़ भी चला जाये, यह सोचकर उसने घोड़ा आगे बढ़ा दिया। मौसम कुछ शान्त हो गया था, बादल छंट गये थे और सफ़ेद लहरदार क़ालीन से ढका हुआ समतल मैदान उसके सामने था। रात अब काफ़ी साफ़ हो गयी थी। कुछ ही दूरी पर उसे चार-पांच घरोंवाला एक छोटा-सा गांव दिखाई दिया। व्लादीमिर ने उधर ही स्लेज बढ़ा दी। पहले घर के पास पहुंचकर वह बर्फ़-गाड़ी से नीचे कूदा, भागकर खिड़की के पास गया और उसे खटखटाने लगा। कुछ मिनट बाद खिड़की का पट खुला और एक बूढ़े की सफ़ेद दाढ़ी नज़र आई।

"क्या बात है?" – "जाद्रिनो दूर है क्या?" – "जाद्रिनो दूर

3*

है या नहीं ?" – "हां, है।" "दूर है क्या ?" – "बहुत दूर तो नहीं, [illegible]
कोई दसेक वेर्स्ता होगा।" यह जवाब सुनकर व्लादीमिर ने अपना
सिर थाम लिया और उस आदमी की तरह [illegible],
जिसे इसी वक्त मौत की सजा सुनाई गयी हो।

"तुम इस वक्त कहां से आ रहे हो ?" बूढ़े ने पूछा। उसके इस सवाल का जवाब देने को व्लादीमिर का मन नहीं हो रहा था। "बाबा, क्या तुम मुझे जाद्रिनो तक पहुंचाने के लिये घोड़ों का प्रबन्ध कर सकते हो ?" उसने बूढ़े से पूछा। "हमारे पास कहां से आयेंगे घोड़े!" बूढ़े ने जवाब दिया। "कोई रास्ता दिखानेवाला तो मिल सकता है या नहीं ? वह जितने चाहेगा मैं उसे उतने ही पैसे दे दूंगा।" – "ठहरो," बूढ़े ने खिड़की का पल्ला नीचे करते हुए कहा, "अभी अपने बेटे को भेज देता हू, वह तुम्हें पहुंचा देगा।" व्लादीमिर इन्तजार करने लगा। एक मिनट भी नहीं बीता होगा कि वह फिर से खिड़की को खटखटाने लगा। खिड़की खुली और दाढ़ी दिखाई दी। "क्या बात है ?" – "कहा है तुम्हारा बेटा ?" – "अभी बाहर आ जायेगा, जूते पहन रहा है। शायद तुम ठिठुर गये हो ? भीतर आकर तन गर्मा लो।" – "नही, धन्यवाद, तुम जल्दी से बेटे को भेज दो।"

फाटक चरमराया – लाठी लिये हुए एक नौजवान बाहर निकला और कभी रास्ता दिखाता, तो कभी बर्फ के ढेरों में ढके रास्ते को ढूंढता हुआ आगे-आगे चलने लगा। "क्या वक्त हुआ होगा ?" व्लादीमिर ने पूछा। "जल्द ही पौ फटनेवाली है," नौजवान किसान ने जवाब दिया। इसके बाद व्लादीमिर ने एक भी शब्द नही कहा।

ये लोग जब जाद्रिनो पहुचे, तो मुर्गे बाग दे रहे थे और उजाला हो चुका था। गिरजाघर को ताला लगा हुआ था। व्लादीमिर ने रास्ता दिखानेवाले नौजवान देहाती को पैसे दिये और पादरी के घर की ओर चल पडा। पादरी के घर के सामने उसकी तीन घोड़ोंवाली बर्फ-गाड़ी नही थी। कौन जाने, अभी और क्या जानना-सुनना बदा था उसके भाग्य मे!

किन्तु अब हम नेनारादोवो गाव के भले जमीदार के घर की ओर चलते हैं और यह देखेगे कि वहा क्या हो रहा है।

कुछ खास नही।

मारिया के बुजुर्ग माता-पिता जागे और मेहमानखाने में आ गये। गव्रीला गव्रीलोविच रात को पहनने की टोपी और गर्म जाकेट पहने थे और प्रास्कोव्या पेत्रोव्ना रूई का अस्तर लगा गाउन। समोवार लाया गया और गव्रीला गव्रीलोविच ने यह जानने के लिए नौकरानी को मारिया गव्रीलोव्ना के पास भेजा कि उसकी तबीयत कैसी है तथा रात कैसे बीती। नौकरानी ने लौटकर बताया कि कुमारी जी को नींद अच्छी नहीं आई, किन्तु अब तबीयत कुछ बेहतर है और अभी मेहमानखाने में आ जायेगी। सचमुच ऐसा ही हुआ, दरवाजा खुला और माता-पिता का अभिवादन करने के लिये मारिया गव्रीलोव्ना उनके निकट आई।

"तुम्हारा सिर-दर्द कैसा है?" गव्रीला गव्रीलोविच ने पूछा। "पहले से कम है, पापा," माशा ने जवाब दिया। "जरूर अंगीठी के पास बैठे रहने से ही तुम्हारे सिर में दर्द हुआ है," प्रास्कोव्या पेत्रोव्ना ने कहा। "हो सकता है, अम्मा," माशा ने उत्तर दिया।

दिन तो अच्छे ढंग से बीत गया, लेकिन रात को माशा बीमार हो गयी। शहर से डाक्टर को बुलवाया गया। वह शाम को आया और उसने रोगिनी को सरसाम में बड़बड़ाते पाया। इसके बाद उसे खूब जोर का बुखार चढ़ा और बेचारी माशा दो हफ्ते तक मृत्यु-द्वार पर दस्तक देती रही।

घर से भाग जाने की माशा की योजना के बारे में किसी को कुछ मालूम नहीं था। पिछली शाम को लिखे गये पत्र आग की नजर किये जा चुके थे। अपने मालिकों के गुस्से से डरनेवाली नौकरानी ने किसी से एक शब्द नहीं कहा। पादरी, घुड़सेना का सेवानिवृत्त छोटा अफसर, मूछोंवाला पटवारी और घुड़सवार सेना का नौजवान सैनिक भी किन्हीं कारणों से अपनी जबान को ताला लगाये हुए थे। नशे में धुत्त होने की हालत में भी तेर्योश्का कोचवान ने कभी कोई फालतू शब्द मुह से नहीं निकाला। इस तरह षड्यंत्र में भाग लेनेवाले आध दर्जन से भी अधिक लोगों ने इस रहस्य को छिपाये रखा। किन्तु मारिया गव्रीलोव्ना ने लगातार चलनेवाली सन्निपात की हालत में स्वय ही अपना भंडाफोड़ कर दिया। मगर उसके शब्द इतने असम्बद्ध थे कि दिन-रात बेटी के सिरहाने बैठी रहनेवाली मा केवल इतना ही समझ

पाई कि उसकी बेटी व्लादीमिर निकोलायेविच को जी-जान से चाहती है और सम्भवत प्रेम ही उसकी बीमारी का कारण है। उसने अपने पति और कुछ पडोसियो से सलाह-मशविरा किया, आखिर सभी इस नतीजे पर पहुचे कि मारिया गव्रीलोव्ना के भाग्य में शायद यही लिखा है, कि किस्मत का लिखा होकर रहेगा, कि गरीबी कोई गुनाह नही है, कि धन-दौलत के साथ नही, बल्कि आदमी के साथ जिन्दगी बितानी होती है, आदि, आदि। जब हम अपनी सफ़ाई में कुछ नही कह पाते, तो इस तरह की धर्म-कर्म की बाते बहुत उपयोगी सिद्ध होती हैं।

इसी बीच मारिया गव्रीलोव्ना स्वस्थ होने लगी थी। व्लादीमिर बहुत दिनो से गव्रीला गव्रीलोविच के घर मे नही आया था। जिस उपेक्षा भाव से उसका यहा स्वागत होता था, वह उससे आतंकित-सा हो गया था। आखिर उसे बुलवाया गया और बेटी के साथ विवाह की सहमति के अप्रत्याशित सौभाग्य की सूचना दी गयी। किन्तु जब अपने निमत्रण के उत्तर मे माशा के माता-पिता को नीम-पागलो जैसा उसका पत्र मिला तो उनकी हैरानी का कोई ठिकाना न रहा! उसने लिखा था कि वह कभी इस घर में पाव नही रखेगा और यह अनुरोध किया था कि वे उस किस्मत के मारे को भूल जाये, जिसके लिये अब मृत्यु ही एकमात्र आशा थी। कुछ दिनो के बाद उन्हे पता चला कि व्लादीमिर सेना मे चला गया है। यह १८१२ की बात है।

स्वस्थ हो रही माशा को बहुत समय तक यह सब कुछ नही बताया गया। माशा ने भी व्लादीमिर का कभी नाम नही लिया। कुछ महीने बाद बोरोदिनो के निकट लड़ाई में विशेष वीरता दिखाने और घायल होनेवालो की सूची मे उसका नाम पढकर माशा बेहोश हो गयी और घरवालो को यह चिन्ता हुई कि कही पहले की तरह बुखार उसे फिर से न धर दबाये। किन्तु भगवान की कृपा ही कहिये कि बेहोशी का कोई बुरा परिणाम नही हुआ।

माशा को एक अन्य दुखद आघात सहना पड़ा – उसके पिता गव्रीला गव्रीलोविच इस दुनिया से चल बसे और बेटी को ही अपनी सारी सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी बना गये। किन्तु उत्तराधिकार पाकर उसके मन की व्यथा दूर नहीं हुई। अपनी मा, बेचारी प्रास्कोव्या पेत्रोव्ना के दुख को वह सच्चे मन से अनुभव करती थी, उसने कसम

खाई कि कभी उससे जुदा नही होगी। इन दोनों ने नेनारादोवो को छोड़ दिया, जिसके साथ बडी करुण स्मृतिया जुडी हुई थी और गाव मे अपनी जागीर पर जा बसी।

सुन्दर और धनी माशा के गिर्द विवाह के इच्छुको की भीड लगी रहती थी, किन्तु वह किसी को तनिक भी आशा नही बधवाती थी। मा कभी-कभी उसे समझाती कि वह अपना जीवन-साथी चुन ले, किन्तु मारिया गव्रीलोव्ना सिर हिलाकर इन्कार कर देती और सोच मे डूब जाती। व्लादीमिर इस दुनिया मे नही रहा था, फ़ासीसियो के मास्को मे दाखिल होने की पूर्ववेला मे वही उसका देहान्त हो गया था। माशा उसकी स्मृति को पुण्य मानती थी। कम से कम वह उन सभी चीज़ो को सहेजे थी जो व्लादीमिर की याद दिलाती थी – उसके द्वारा कभी पढी गयी पुस्तके, उसके रेखाचित्र, स्वर-लिपिया और वे कवितायें, जिन्हे उसने उसके लिये नकल किया था। पडोसी यह सब कुछ जानकर उसकी प्रेम-निष्ठा से आश्चर्यचकित होते थे और बडी उत्सुकता से उस नायक की प्रतीक्षा कर रहे थे जो इस सतवन्ती आर्तेमीज़ा * के ऐसे शोकपूर्ण लगाव पर विजय प्राप्त करेगा।

इसी दौरान जीत के साथ जग का अन्त हो गया था। हमारी फ़ौजे विदेशो से लौट रही थीं। लोग उनके स्वागत को उमडे पडते थे। बैड बाजे दुश्मन से छीनी हुई धुने – Vive Henri-Quatre**, तिरोली वाल्ज़ और जोकोन्द ऑपेरा के प्रेमगीत *** – बजाते थे। लगभग तरुणावस्था मे मोर्चे पर गये अफ़सर युद्ध-क्षेत्र की हवा में तगडे जवान होकर तथा पदक लगाये हुए लौट रहे थे। सैनिक बडी खुशमिज़ाजी से आपस में बाते करते थे और अपनी बातचीत मे रह-रहकर

---

* आर्तेमीज़ा – सीता-सावित्री की भाति यूनानी पौराणिक साहित्य मे पवित्र नारी का प्रतीक। – स०

** फ़ासीसी नाटककार शार्ल कोल्ले (१७०६–१७८३) के 'हेनरी चतुर्थ का आखेट-गमन' (१७६४) सुखान्ती नाटक के गाने। – स०

*** निकोलो इज़ुआर (१७७५–१८१८) के हास्यपूर्ण ऑपेरा 'जोकोन्द, या जोखिमी कारनामों का इच्छुक' के गीत, जो १८१४ में पेरिस मे लोकप्रिय था, जब रूसी सेनायें वहा तैनात थी। – स०

जर्मन और फ्रांसीसी शब्दों का पुट देते जाते थे। वह कैसा समय था जो कभी भुलाये नहीं भूलता! यश कीर्ति और हर्षोल्लास का समय था! 'मातृभूमि' शब्द सुनते ही सभी रूसियों के हृदय कैसे जोर से धड़कने लगते थे! कितने मीठे थे मिलन के आंसू! राष्ट्रीय गौरव और जार-प्रेम की भावना को हम कैसे एकमत होकर घुला-मिला देते थे! और कितना मधुर समय था वह जार के लिये!

नारियाँ, रूसी नारियों का भी तब कोई जवाब नहीं था। उनकी सामान्य उदासीनता उन दिनों हवा हो गयी थी। उनका उल्लास तो उस समय सचमुच मदहोश करनेवाला होता था जब वे विजेताओं का स्वागत करते हुए चिल्लाती थीं – हुर्रा और

उछाल देती थीं अपनी टोपियां हवा में।*

उस समय के अफसरों में से भला कौन यह स्वीकार नहीं करेगा कि अपने सर्वश्रेष्ठ और सबसे अधिक मूल्यवान पुरस्कार के लिये वह रूसी नारी का आभारी है?

ऐसे अनूठे समय में मारिया गव्रीलोव्ना अपनी मां के साथ गुबेर्निया में रहती थी और वह यह नहीं देख पाई कि कैसे दोनों राजधानियों ने सेनाओं के लौटने का सोत्साह स्वागत किया। किन्तु उल्लास की यह भावना जिलों और गांवों में सम्भवतः और अधिक तीव्र थी। ऐसी जगहों पर किसी फौजी अफसर का आ जाना तो मानो विजय-अभियान होता था और उसके सामने असैनिक प्रेमी पर तो बहुत भारी गुज़रती थी।

हम पीछे कह चुके हैं कि मारिया गव्रीलोव्ना की उदासीनता के बावजूद वह पहले की भांति विवाह-इच्छुकों से घिरी रहती थी। किन्तु जब वक्ष पर सन्त जार्ज का पदक लगाये तथा स्थानीय युवतियों के शब्दों में "आकर्षक पीतवर्णवाला" हुस्सार सेना का घायल कर्नल बुर्मीन उसके गढ़ में आया, तो बाकी सभी को मैदान छोड़कर भागना पड़ा। कोई छब्बीस साल की उम्र थी उसकी। वह अपनी जागीर पर,

---

* १६वीं शताब्दी के प्रसिद्ध रूसी नाटककार और कूटनीतिज्ञ अलेक्सान्द्र ग्रिबोयेदोव के सुखान्ती नाटक 'अक़्ल से मुसीबत' (१८२४) से। –सं०

जो मारिया गव्रीलोव्ना के गाव के निकट थी, छुट्टी बिताने आया था। मारिया गव्रीलोव्ना ने उसमे बडी दिलचस्पी ली। उसकी उपस्थिति मे उसकी सामान्य उदासी जाती रहती और उसमे सजीवता आ जाती। यह कहना उचित नही होगा कि वह किसी तरह की चचलता दिखाती थी, किन्तु कवि उसके हाव-भाव को देखकर यह कहे बिना नही रह सकता था –

Se amor non è, che dunque?..*

बुर्मीन वास्तव मे ही बहुत प्यारा जवान आदमी था। उसमे वास्तव मे ही वह सब कुछ था जो नारियो को अच्छा लगता है – सलीकेदार, हर बात की ओर ध्यान देनेवाला, किसी भी तरह की बनावट से मुक्त और व्यग्यपूर्ण मस्ती लिये हुए। मारिया गव्रीलोव्ना के साथ उसका व्यवहार सहज-स्वाभाविक और उन्मुक्त था। किन्तु वह चाहे कुछ भी कहती या करती, उसका मन और उसकी दृष्टि उसी की ओर खिचती रहती। वह शान्त और विनम्र-सा प्रतीत होता, किन्तु सुनने मे यह आया था कि कभी वह बहुत चचल और तेज रहा था। इससे मारिया गव्रीलोव्ना के मन पर कोई बुरा प्रभाव नही पडा था और उसने (जैसा कि सभी युवा महिलाओं ने किया होता) बडी खुशी से साहस और गर्ममिजाजी को जाहिर करनेवाली उसकी शरारतो को माफ कर दिया।

किन्तु सबसे अधिक (उसकी शालीनता, मधुर बातचीत, आकर्षक पीतवर्ण और पट्टी मे बधे हुए हाथ से भी बढकर) जवान हुस्सार की खामोशी ने मारिया गव्रीलोव्ना की जिज्ञासा और कुतूहल को उकसाया। उसे इस बात की चेतना हुए बिना न रह सकती थी कि वह बुर्मीन को अच्छी लगती है। दूसरी ओर, अपनी सूझबूझ और अनुभव से वह भी इस बात की तरफ ध्यान दिये बिना नही रह सकता था कि मारिया उसमे दिलचस्पी लेती है। तो फिर क्यो उसने अभी तक उसके सामने घुटने टेककर प्रेम-निवेदन नही किया था? कौन-सी चीज उसके आडे आ रही थी? भीरुता, जो सच्चे प्रेम की चिर-

* अगर नही यह प्रेम, कहो तो और क्या? (इतालवी)।

मगिनी है, गर्व की भावना या मंजे हुए प्रेम-खिलाड़ी का खिलवाड़? उसके लिये यह चीज एक रहस्य थी। अच्छी तरह से सोच-विचार करने के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुंची कि भीरुता ही इसका एकमात्र कारण थी और वह उसकी ओर अत्यधिक ध्यान देकर तथा अनुकूल परिस्थितिया पाकर स्नेह-प्रदर्शन द्वारा भी उसे प्रोत्साहित करने लगी। वह सर्वथा अप्रत्याशित स्थिति के लिये जमीन तैयार कर रही थी और बड़ी बेचैनी से प्रणय-स्वीकृति के रोमानी क्षणों की प्रतीक्षा करने लगी। रहस्य, वह किसी भी प्रकार का क्यो न हो, नारी-हृदय के लिये बहुत बोझल होता है। मारिया गव्रीलोव्ना की व्यूह-रचना को वाछित सफलता मिली – कम से कम बुर्मीन विचारो में ऐसे डूबा रहता और उसकी काली आखे ऐसे चमकती हुई उसपर जम जाती कि निर्णायक क्षण बिल्कुल निकट ही प्रतीत होता। पड़ोसी तो इनकी शादी की ऐसे चर्चा करते मानो वह तयशुदा बात हो और भले दिल की प्रास्कोव्या पेत्रोव्ना खुश होती कि उसकी बेटी को आखिर तो सुयोग्य वर मिल गया।

मारिया गव्रीलोव्ना की बूढ़ी मा एक दिन मेहमानखाने में बैठी हुई ताश के ग्राण्डपेशेस खेल से अपना मन बहला रही थी कि बुर्मीन कमरे में दाखिल हुआ और उसने यह पूछा कि मारिया गव्रीलोव्ना कहा है। "वह बाग में है," बूढ़ी मा ने जवाब दिया, "वही चले जाइये और मैं यहा आप दोनों की राह देखूगी।" बुर्मीन बाग की ओर चला गया, बूढ़ी मां ने सलीब का निशान बनाया और सोचा – शायद आज मामला तय हो जायेगा!

बुर्मीन को मारिया गव्रीलोव्ना तालाब के किनारे बेद-वृक्ष की छाया मे बैठी मिली। सफेद फ़ाक पहने और हाथ में किताब लिये हुए वह किसी उपन्यास की नायिका जैसी लग रही थी। अभिवादन करने और हाल-चाल पूछने के बाद मारिया गव्रीलोव्ना ने जान-बूझकर बातचीत आगे नही बढ़ाई और इस तरह उसने दोनो की वह आपसी बेचैनी बढ़ा दी, जिसका केवल आकस्मिक और दृढ़तापूर्ण प्रेम-निवेदन से ही अन्त हो सकता था। ऐसा ही हुआ भी – बुर्मीन ने अपनी स्थिति का बेतुकापन अनुभव करते हुए कहा कि बहुत दिनो से उसके सामने अपना दिल खोलना चाहता था और यह अनुरोध किया कि वह थोड़ी देर के लिये बहुत ध्यान देकर उसकी बात सुने। मारिया गव्रीलोव्ना

ने किताब बन्द कर दी और यह जाहिर करने के लिये कि उसकी बात सुनने को तैयार है, पलकें झुका ली।

"मैं आपको प्यार करता हूं," बुर्मीन ने कहा, "मैं आपको जी-जान से प्यार करता हू ..." (मारिया गव्रीलोव्ना के गालो पर लाली दौड़ गयी और उसने अपना सिर और नीचे झुका लिया।) "यह मेरी असावधानी थी कि मैंने आपको हर दिन देखने और हर दिन आपकी बात सुनने की प्यारी आदत डाल ली ..." (मारिया गव्रीलोव्ना को St.-Preux* के प्रथम पत्र की याद आ गयी।) "किन्तु अब मैं अपनी किस्मत से नही लड सकता – आपकी याद, आपकी प्यारी और अनुपम छवि अब मेरे जीवन की यातना और सबसे बडी खुशी बनी रहेगी। किन्तु मुझे अभी एक बडी बोझल जिम्मेदारी पूरी करनी है – आपके सामने एक भयानक रहस्य का उद्घाटन करना है और हम दोनो के बीच एक ऐसी दीवार खडी करनी है, जिसे लाघना सम्भव नही होगा ..." – "वह दीवार तो हमेशा ही बनी रही है," मारिया गव्रीलोव्ना ने झटपट बीच मे ही उसकी बात काट दी, "मैं कभी भी आपकी पत्नी नही बन सकती थी ..." – "मैं जानता हू," बुर्मीन ने उसे धीरे से जवाब दिया, "मुझे मालूम है कि आपने कभी प्यार किया था, किन्तु उस व्यक्ति की मृत्यु और आहों-आसुओं के तीन वर्ष ... दयालु और प्यारी मारिया गव्रीलोव्ना, मुझे इस आखिरी खुशी, इस विचार के सुख से तो वचित नही कीजिये कि आप मेरा सौभाग्य बन सकती थी, यदि ... आप चुप रहे, भगवान के लिये कुछ न बोले। आप मेरी यातना को बढा रही हैं। हा, मैं जानता हू, मैं अनुभव करता हू कि आप मेरी हो सकती थी, किन्तु मैं – मैं एक बड़ा बदकिस्मत इन्सान हू ... मैं शादीशुदा हू।"

मारिया गव्रीलोव्ना ने हैरानी से उसकी तरफ देखा।

"मैं शादीशुदा हू," बुर्मीन कहता गया, "चार साल हो गये मेरी शादी हुए और मुझे यह तक मालूम नही है कि मेरी बीवी कौन है, वह कहा है और उससे कभी मेरी मुलाकात भी होगी या नही।"

---

* रूसो के उपन्यास 'जूलिया या नई एलोइज़ा' के पात्र की चिट्ठी से आशय है। – स०

'यह क्या कह रहे हैं आप !' मार्या गव्रीलोव्ना ऊंचे स्वर में कह उठी। 'कैसी अजीब बात है यह ! आप आगे कहिये, मैं अपनी बात बाद में बताऊंगी ... आगे कहिये, मेहरबानी कीजिये।'

'सन् १८१२ के आरम्भ की बात है,' बूर्मिन ने अपनी कहानी शुरू की, 'मैं विल्ना पहुंचने की जल्दबाजी में था, जहां उन दिनों हमारी रेजिमेंट थी। एक दिन काफ़ी देर से पहुंचने पर मैं डाकचौकी पर रुका और मैंने आदेश दिया कि जल्दी से घोड़े बदल दिये जायें। किन्तु तभी अचानक बहुत जोर की बर्फ़ीली आंधी आ गयी। डाकचौकीवाले और कोचवानों ने भी यही सलाह दी कि मैं कुछ देर को रुक जाऊं। मैं उनकी बात मान गया, किन्तु एक अबूझ सी बेचैनी मुझ पर हावी हो गयी। मुझे ऐसे प्रतीत होता था मानो कोई मुझे चलने के लिये मजबूर कर रहा है। बर्फ़ीली आंधी का जोर कम नहीं हो रहा था, मुझसे और सब्र नहीं हुआ, मैंने फिर से घोड़े जोतने का हुक्म दिया और अंधड़-गुबार में ही रवाना हो गया। कोचवान ने अपनी सूझ दिखाई और नदी के किनारे-किनारे बर्फ़-गाड़ी बढ़ा दी जिससे हमारा रास्ता कोई तीन वेर्स्त कम हो जाता था। नदी-तट बर्फ़ से बेहद ढका हुआ था। कोचवान उस मोड़ से चूक गया जहां सड़क पर पहुंचा जा सकता था और इस तरह हम एक अनजान-अपरिचित क्षेत्र में जा निकले। बर्फ़ीली आंधी पहले की तरह अपना जोर बांधे थी। इसी समय मुझे रोशनी दिखाई दी और मैंने बर्फ़-गाड़ी को उधर ही बढ़ाने का आदेश दिया। हम एक गांव में पहुंच गये, जहां लकड़ी के गिरजाघर में बत्ती जल रही थी। गिरजाघर का दरवाजा खुला था, बाड़ के करीब कई बर्फ़-गाड़ियां खड़ी थीं और कुछ लोग बाहर-भीतर आ-जा रहे थे। 'इधर ! इधर आओ !' कुछ लोग एकसाथ चिल्लाये। मैंने कोचवान को उधर ही चलने का हुक्म दिया। 'अरे भई, कहां रह गये थे तुम?' किसी ने मुझसे कहा, 'दुलहन बेहोश पड़ी है, पादरी की समझ में नहीं आ रहा कि वह क्या करे, हम वापस लौटने की सोच रहे थे। जल्दी से उतरो न।' मैं चुपचाप स्लेज से नीचे कूदा और दो-तीन मोमबत्तियों से हल्के-से उजालेवाले गिरजाघर में दाखिल हुआ। एक लड़की गिरजाघर के अंधेरे कोने में बेंच पर बैठी थी और दूसरी उसकी कनपटी सहला रही थी। 'भला हो भगवान का,' इस दूसरी

ताबूतसाज़

क्या हमें हर दिन ताबूत नहीं दिखाई देते हैं,
हमारी इस खूसट दुनिया के पके बाल?

देर्जाविन*

ताबूतसाज अद्रियान प्रोखोरोव की घर-गिरस्ती का आखिरी सारा सामान मुर्दे ले जानेवाली गाड़ी पर लाद दिया गया और मरियल-से घोडो की जोडी ने बस्मान्नाया गली से निकीत्स्काया गली तक का, जहा ताबूतसाज़ अपने पूरे घरबार के साथ जा बसा था, चौथी बार चक्कर लगाया। उसने दुकान का ताला बन्द किया, दरवाज़े पर यह तख्ती लगायी कि घर बिकाऊ है, भाडे पर भी चढाया जा सकता है और पैदल ही अपने नये घर की तरफ़ चल दिया। पीले रंग के इस छोटे-से घर के निकट पहुचने पर, जो एक अर्से से उसके दिल में जगह बनाये हुए था, और जिसे उसने खासी बडी रकम देकर खरीदा था, उसे इस बात की हैरानी हुई कि उसका दिल खुशी से तरंगित नही हो रहा है। अनजानी-अपरिचित दहलीज़ को लाघने पर जब उसने अपने नये घर मे सभी ओर गडबड देखी, तो पुराने और टूटे-फूटे घर को याद करके, जहा अठारह वर्ष तक उसने कड़ी व्यवस्था बनाये रखी थी, गहरी सास ली। उसने अपनी दोनो बेटियों और नौकरानी को बहुत धीरे-धीरे काम करने के लिये भला-बुरा कहा और खुद उनके काम मे हाथ बटाने लगा। जल्द ही सब कुछ ढंग से सज गया, देव-प्रतिमा, चीनी के बर्तनो की अलमारी, मेज़, सोफा और पलग – इन सब के लिये पिछले कमरे के कोनो मे स्थान बना दिये गये और रसोईघर तथा मेहमानखाने मे मालिक के हाथो की बनी चीज़े – सभी रंगो और आकारो के ताबूत तथा मातमी टोपियो, लबादों और मशालो मे भरी

---

* एक प्रमुख रूसी कवि गव्रीला देर्जाविन (१७४३–१८१६) की 'जल प्रपात' कविता में। – स०

हुई अलमारियां टिका दी गयी। दरवाज़े पर एक साइन बोर्ड लटका दिया गया था, जिस पर हाथ मे उल्टी मशाल लिये आमूर* का चित्र बना हुआ था और उसके नीचे यह लिखा था – "यहां सादे और रंगे हुए सभी तरह के ताबूत बेचे तथा बनाये जाते हैं, किराये पर दिये जाते हैं और पुराने ताबूतो की मरम्मत भी की जाती है"। ताबूतसाज़ की बेटियां अपने कमरे मे चली गयी। अद्रियान ने अपने घर का चक्कर लगाया, खिड़की के पास बैठ गया और समोवार गर्माने का आदेश दिया।

पढ़े-लिखे पाठक को यह ज्ञात है कि शेक्सपियर और वाल्टर स्कॉट – इन दोनो ने ही क़ब्र खोदनेवालो को खुशमिज़ाज और विनोदी व्यक्तियो के रूप मे चित्रित किया है** ताकि उनके काम और स्वभाव की तुलना द्वारा हमारे दिलो पर अधिक गहरी छाप अंकित कर सके। किन्तु सचाई का आदर करते हुए हम उनका अनुकरण नही कर सकते और यह मानने को विवश है कि हमारे ताबूतसाज़ का मिज़ाज उसके मनहूस धंधे के बिल्कुल अनुरूप था। अद्रियान प्रोखोरोव आम तौर पर गुमसुम और अपने ही ख्यालो मे खोया रहता था। वह अपनी खामोशी तभी तोड़ता था जब निठल्ली बेटियो को खिड़की से राहगीरो को झांकते हुए देखकर डांटता या फिर जब उसे अपनी हस्त-रचनाओ के लिए उनसे कमकर पैसे लेने होते, जिन्हे बदकिस्मती (कभी-कभी खुशकिस्मती से) उन्हे खरीदने की ज़रूरत आ पड़ती। तो खिड़की के क़रीब बैठा और चाय का सातवां प्याला पीता हुआ अद्रियान सदा की तरह मनहूस ख्यालो मे डूबा हुआ था। वह उस मूसलधार बारिश के बारे में सोच रहा था जिसने सेवा-निवृत्त ब्रिगेडियर के मातमी जुलूस को नगर-द्वार के निकट अपनी लपेट मे ले लिया था। नतीजा यह हुआ था कि बहुत-से लबादे सिकुड़ गये थे और मातमी टोपियो के किनारे टेढ़े-मेढ़े हो गये थे। वह जानता था कि अगले कुछ समय में उसे अनिवार्य रूप से

---

* आमूर – कामदेव, किन्तु जब उसके हाथ मे उल्टी मशाल हो, तो वह यमदूत या मृत्यु का प्रतीक हो जाता है। – अनु०

** पुश्किन का अभिप्राय शेक्सपियर के 'हेमलेट' (१६००–१६०१) दुखान्ती नाटक और वाल्टर स्कॉट के 'लामेरमूर की दुलहन' उपन्यास में ताबूतसाज़ो के बिम्बो मे है। – म०

भारी रकम खर्च करनी पड़ेगी, क्योंकि मातमी कपड़ों के उसके पुराने स्टाक की हालत काफी खराब थी। उसे उम्मीद थी कि बूढ़ी सेठानी त्र्यूखिना के मरने पर, जो लगभग एक साल से कब्र में टांगें लटकाये थी, उसका सारा घाटा पूरा हो जायेगा। किन्तु त्र्यूखिना राजगुल्याई गली में अपनी आखिरी घड़ियां गिन रही थी और प्रोखोरोव को इस बात की शंका थी कि अपने वादे के बावजूद उसके वारिस उसे इतनी दूर से बुलवा भेजने के मामले में काहिली न कर जायें और अपने नजदीक के किसी ठेकेदार से ही मामला तय न कर लें।

अद्रियान प्रोखोरोव इसी तरह के विचारों में खोया हुआ था कि अचानक फ्रीमेसनों* की भांति दरवाजे पर किसी के अचानक तीन बार दस्तक देने से उसकी विचार-शृंखला टूटी। "कौन है?" ताबूतसाज ने पूछा। दरवाजा खुला और एक ऐसा व्यक्ति भीतर आया जिसे देखते ही एक जर्मन कारीगर के रूप में पहचाना जा सकता था। वह प्रफुल्ल मुद्रा में ताबूतसाज के निकट आया। "मेरे कृपालु पड़ोसी, मैं माफी चाहता हूं," उसने ऐसी अटपटी रूसी भाषा में कहा, जिसे सुनकर हम आज भी हंसे बिना नहीं रह सकते, "माफी चाहता हूं कि आपके काम-काज में खलल डाल दिया... लेकिन मैं आपके साथ जल्दी से जान-पहचान कर लेना चाहता था। मैं मोची हूं, मेरा नाम गोत्लिब शूल्त्स है और गली पार आपके सामनेवाले घर में रहता हूं। कल मैं अपने विवाह की रजत-जयंती मना रहा हूं और आपसे तथा आपकी बेटियों से अनुरोध करता हूं कि मेरे यहां मित्र के नाते खाना खायें।" निमंत्रण सहर्ष स्वीकार कर लिया गया। ताबूतसाज ने मोची से बैठने और चाय का प्याला पीने को कहा। गोत्लिब शूल्त्स की मिलनसार तबीयत की बदौलत जल्द ही दोनों घुल-मिलकर बातें करने लगे। "आपका काम-धंधा कैसा चल रहा है?" अद्रियान ने पूछा। "अजी, क्या कहा जाये," शूल्त्स ने उत्तर दिया, "कभी अच्छा और कभी बुरा। शिकवा-शिकायत नहीं कर सकता। वैसे, इतना जरूर है कि मेरा

---

* १८वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में रहस्यवादी संगठन जिसका लक्ष्य मानव का नैतिक पुनरुत्थान था। दरवाजे पर तीन बार दस्तक इस के सदस्यों का एक गुप्त संकेत था। – सं०

में नजदीक रहनेवाले अधिकतर जर्मनों से उसकी अच्छी जान-पहचान थी और उनमें से कुछेक तो कभी-कभी इतवार की शाम भी उसी बेंची पर ही बिताते थे। अद्रियान ने झटपट यूर्को से परिचय कर लिया, क्योंकि वह ऐसा आदमी था जिसकी कभी और किसी को समय जरूरत पड़ सकती थी। मेहमान जब खाने की मेजों पर पहुंचे, तो वे दोनों एक-दूसरे की बगल में बैठे। शुल्त्स दम्पति और उनकी सत्रह वर्षीया बेटी लोत्खेन मेहमानों के साथ भोजन करते हुए खाना परोसने और दूसरी बातों में बावर्चिन का लगातार हाथ बटा रहे थे। बियर तो खूब बह रही थी। यूर्को चार आदमियों के बराबर अकेला ही खा रहा था और अद्रियान उससे उन्नीस नहीं रह रहा था। उसकी बेटियां बड़े सलीके से बैठी थीं। जर्मन भाषा में होनेवाली बातचीत लगातार बहुत ऊंची होती जा रही थी। मेजबान ने अचानक अपनी ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया और कोलतार पुती बोतल का कार्क खोलते हुए रूसी भाषा में चिल्लाकर कहा, "अपनी दयालु लुईज़ा के स्वास्थ्य के लिये!" और शैम्पेन का फेन उड़ने लगा। मेजबान ने अपनी चालीस साल की जीवन-संगिनी का चेहरा, जिस पर ताजगी बनी हुई थी, प्यार से चूमा और मेहमानों ने शोर मचाते हुए दयालु लुईज़ा के स्वास्थ्य का जाम पी लिया। मेजबान ने "प्यारे मेहमानों के स्वास्थ्य के लिये!" कहते हुए शैम्पेन की दूसरी बोतल खोली और मेहमानों ने उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए फिर से अपने गिलास खाली कर दिये। इसके बाद तो स्वास्थ्य के जाम पीने का दौर चल पड़ा – हर मेहमान की सेहत का जाम पिया गया, मास्को तथा एक दर्जन जर्मन नगरों, सभी दस्तकारियों और हर दस्तकारी के लिये अलग-अलग तथा कारीगरों और उनके शागिर्दों के लिये जाम उठाये और चढ़ाये गये। अद्रियान खूब डटकर पी रहा था और इस हद तक रंग में आ गया कि उसने स्वयं भी एक विनोदपूर्ण जाम पीने का प्रस्ताव पेश किया। सहसा एक अतिथि, मोटे-से नानबाई ने जाम ऊपर उठाया और चिल्लाकर कहा, "उनकी सेहत का जाम, जिनके लिए हम काम करते हैं, unserer Kundleute!"* इस [illegible] भी सभी ने खुशी

* अपने ग्राहकों के लिये! (जर्मन)

और एकमत होकर स्वागत किया। मेहमान एक-दूसरे के सामने सर झुकाने लगे – दर्ज़ी मोचियों के सामने, मोची दर्ज़ी के सामने, नानबाई इन दोनों के सामने और सभी नानबाई के सामने इत्यादि। इस प्रकार के पारस्परिक अभिवादन के बीच यूर्को ने अपने पड़ोसी को सम्बोधित करते हुए चिल्लाकर कहा, 'लो मेरे भाई, आओ तुम्हारे मृतकों के नाम पर भी जाम पियें।' सभी ठहाका हंस पड़े किन्तु ताबूतसाज़ को लगा कि उसका अपमान किया गया है और उसके माथे पर बल पड़ गये। इस बात की ओर किसी का भी ध्यान नहीं गया, मेहमानों ने पीना जारी रखा और जब वे मेज़ पर से उठे तो रात की अन्तिम प्रार्थना की घण्टियां बज रही थीं।

अतिथि काफ़ी रात गये विदा हुए और अधिकतर नशे में बुरी तरह धुत थे। मोटा नानबाई और जिल्दसाज़, जिसका चेहरा 'लाल चमड़े की जिल्द जैसा"* प्रतीत होता था, यूर्को की दोनों बाहों में बाहें डालकर उसे उसकी चौकी की ओर ले जा रहे थे और इस रूसी कहावत को सही सिद्ध करते प्रतीत होते थे – असली मज़ा तो ऋण की वसूली में ही है। ताबूतसाज़ बेहद पिये हुए और झल्लाया हुआ घर लौटा। "आख़िर दूसरों के मुक़ाबले में मेरा धन्धा किसलिये बुरा है?" वह ऊंचे-ऊंचे सोच रहा था। "क्या ताबूतसाज़ और जल्लाद भाई हैं? किसलिये हंसते हैं ये काफ़िर? क्या ताबूतसाज़ रंग-बिरंगी पोशाक पहने हुए कोई मसखरा है? मैं तो इन्हें इस घर में आने की दावत पर बुलाना और ख़ूब खिलाना-पिलाना चाहता था – मगर अब यह नहीं होने का! मैं उन्हीं को दावत में बुलाऊंगा जिनके लिये काम करता हूं – ईसाई धर्म को माननेवाले मृतकों को।" – "अरे मालिक, यह आप क्या कह रहे हैं?" नौकरानी ने कहा जो इस समय उसके जूते उतार रही थी। "सलीब का निशान बनाइये! घर में आने की दावत के लिये मुर्दों को बुलायेंगे! कैसी भयानक बात है यह!" – "क़सम भगवान की, ज़रूर बुलाऊंगा," अद्रियान कहता गया, "और वह भी कल ही। मेरे हित-चिन्तको, कल शाम को मेरे यहां दावत

---

* या० ब० क्न्याज़निन के सुखान्ती नाटक 'सेबीतोर' (१७८६) की कुछ परिवर्तित काव्य-पंक्ति। – स०

से [illegible] अद्रियान [illegible] से [illegible]
की और उसी से [illegible] कभी-कभी [illegible] की [illegible]
[illegible] पर ही [illegible] थे। अद्रियान के [illegible]
[illegible] और [illegible]
मुफ्त कफ़न पड़ सकती थी। मेहमान जब खाने की मेज़ों पर बैठे,
तो वे दोनों एक दूसरे की बगल में बैठे। शूल्त्स दम्पति और उनकी
सत्रह वर्षीया बेटी लोत्खेन मेहमानों के साथ भोजन करते हुए सब
परोसते और दूसरी बातों में बावर्चिन का हाथ बटा रहे थे।
बियर भी खूब बह रही थी। यूर्को चार आदमियों के बराबर अकेले
ही खा रहा था और अद्रियान उससे पीछे नहीं रह रहा था। उसकी
बेटियां बड़े सलीके से बैठी थीं। जर्मन भाषा में होनेवाली बातचीत
लगातार अधिक ऊंची होती जा रही थी। मेज़बान ने अचानक अपनी
ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया और कोलतार पुती बोतल का कार्क
खोलते हुए रूसी भाषा में चिल्लाकर कहा, "अपनी दयालु लुईज़ा
के स्वास्थ्य के लिये!" और शैम्पेन का फेन उठने लगा। मेज़बान ने
अपनी चालीस साल की जीवन-संगिनी का चेहरा, जिस पर ताज़गी
बनी हुई थी, प्यार से चूमा और मेहमानों ने शोर मचाते हुए दयालु
लुईज़ा के स्वास्थ्य का जाम पी लिया। मेज़बान ने "प्यारे मेहमानों के
स्वास्थ्य के लिये!" कहते हुए शैम्पेन की दूसरी बोतल खोली और
मेहमानों ने उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए फिर से अपने गिलास
खाली कर दिये। इसके बाद तो स्वास्थ्य के जाम पीने का दौर चल
पड़ा – हर मेहमान की सेहत का जाम पिया गया, मास्को तथा एक
दर्जन जर्मन नगरों, सभी दस्तकारियों और हर दस्तकारी के लिये
अलग-अलग तथा कारीगरों और उनके शागिर्दों के लिये जाम उठाये
और चढ़ाये गये। अद्रियान खूब डटकर पी रहा था और इस हद तक
रंग में आ गया कि उसने स्वयं भी एक विनोदपूर्ण जाम पीने का प्रस्ताव
पेश किया। सहसा एक अतिथि, मोटे-से नानबाई ने जाम ऊपर उठाया
और चिल्लाकर कहा, "उनकी सेहत का जाम, जिनके लिए हम काम
करते हैं, unserer Kundleute!"* इस जाम का भी सभी ने खुशी

* अपने ग्राहकों के लिये! (जर्मन)।

से और एकमत होकर स्वागत किया। मेहमान एक-दूसरे के सामने सिर झुकाने लगे – दर्जी मोची के सामने, मोची दर्जी के सामने, नानबाई इन दोनों के सामने और सभी नानबाई के सामने इत्यादि। इस प्रकार के पारस्परिक अभिवादन के बीच यूर्को ने अपने पड़ोसी को सम्बोधित करते हुए चिल्लाकर कहा, "लो मेरे भाई, आओ तुम्हारे मृतकों के नाम पर भी जाम पियें।" सभी ठहाका हंस पड़े, किन्तु ताबूतसाज को लगा कि उसका अपमान किया गया है और उसके माथे पर बल पड़ गये। इस बात की ओर किसी का भी ध्यान नहीं गया, मेहमानों ने पीना जारी रखा और जब वे मेज पर से उठे तो रात की अन्तिम प्रार्थना की घण्टियां बज रही थीं।

अतिथि काफी रात गये विदा हुए और अधिकतर नशे में बुरी तरह धुत थे। मोटा नानबाई और जिल्दसाज, जिसका चेहरा 'लाल चमड़े की जिल्द जड़ा"* प्रतीत होता था, यूर्को की दोनों बांहों में बांहें डालकर उसे उसकी चौकी की ओर ले जा रहे थे और इस रूसी कहावत को सही सिद्ध करते प्रतीत होते थे – असली मज़ा तो ऋण की वसूली में ही है। ताबूतसाज बेहद पिये हुए और झल्लाया हुआ घर लौटा। "आखिर दूसरों के मुकाबले में मेरा धन्धा किसलिये बुरा है?" वह ऊंचे-ऊंचे सोच रहा था। "क्या ताबूतसाज और जल्लाद भाई हैं? किसलिये हंसते हैं ये काफिर? क्या ताबूतसाज रंग-बिरंगी पोशाक पहने हुए कोई मसखरा है? मैं तो इन्हें इस घर में आने की दावत पर बुलाना और खूब खिलाना-पिलाना चाहता था – मगर अब यह नहीं होने का! मैं उन्हीं को दावत में बुलाऊंगा जिनके लिये काम करता हूं – ईसाई धर्म को माननेवाले मृतकों को।" – "अरे मालिक, यह आप क्या कह रहे हैं?" नौकरानी ने कहा जो इस समय उसके जूते उतार रही थी। "सलीब का निशान बनाइये! घर में आने की दावत के लिये मुर्दों को बुलायेंगे! कैसी भयानक बात है यह!" – "कसम भगवान की, जरूर बुलाऊंगा," अद्रियान कहता गया, "और वह भी कल ही। मेरे हित-चिन्तको, कल शाम को मेरे यहां दावत

---

* या० व० क्न्याजनिन के सुखान्त नाटक 'शेखीखोर' (१७८६) की कुछ परिवर्तित काव्य-पंक्ति। – सं०

पर आओगे। भगवान करे ऐसे ही मौका मैं हाज़िर कर दूँ।" इतना कहकर ताबूतसाज़ बिस्तर पर चला गया और जल्द ही खर्राटे लेने लगा।

अगले दिन मुँह अँधेरे ही अद्रियान को जगा दिया गया। सेठानी त्र्युखिना इसी रात को चल बसी थी और उसके कारिन्दे ने एक तेज़ घुड़सवार को यह खबर देने के लिये उसके पास भेजा था। अद्रियान ने हरकारे को दस कोपेक वोदका पीने को इनाम के तौर पर दिये, जल्दी से कपड़े पहने, किराये की बग्घी ली और राज़्गुल्याई गली में पहुँच गया। [illegible] गुज़र गई बुढ़िया के दरवाज़े पर पुलिसवाले खड़े थे और सेठ-व्यापारी लोग वहाँ ऐसे मँडरा रहे थे, जैसे लाश की गंध पाकर कौए मँडराते हैं। मोम की तरह पीली बुढ़िया का शव मेज़ पर रखा था, किन्तु शरीर अभी बिगड़ने नहीं लगा था। रिश्तेदार, पड़ोसी और नौकर-चाकर उसके करीब भीड़ लगाये थे। सभी खिड़कियाँ खुली थीं, मोमबत्तियाँ जल रही थीं और पादरी मृतक की आत्मा की शान्ति के लिये पाठ कर रहे थे। अद्रियान मृतक के भानजे के पास गया, जो फैशनदार फ्राक-कोट पहने जवान व्यापारी था और उसे यह बताया कि ताबूत, मोमबत्तियाँ, कफ़न और मातम की बाक़ी सारी चीज़ें भी अच्छी हालत में फौरन पहुँचा दी जायेंगी। वारिस ने बेध्यानी से उसे धन्यवाद दिया, यह कहा कि पैसों के बारे में वह किसी तरह की सौदेबाज़ी नहीं करेगा और उसी की ईमानदारी पर सारी बात छोड़ देगा। ताबूतसाज़ ने अपनी आदत के मुताबिक़ कसम खाकर यह कहा कि एक पैसा भी फालतू नहीं लेगा और इसके बाद अर्थपूर्ण ढंग से कारिन्दे से नज़र मिलाकर सामान की तैयारी करने चला गया। वह दिन भर राज़्गुल्याई से निकीत्स्की सड़क तक घोड़ागाड़ी पर चक्कर काटता रहा। शाम तक उसने सारा प्रबन्ध कर दिया और घोड़ागाड़ी छोड़कर पैदल घर लौटा। रात चाँदनी थी। ताबूतसाज़ निकीत्स्की सड़क तक सही-सलामत पहुँच गया। गिरजे के पास उसके परिचित हमारे यूर्को ने उसे ललकारा, किन्तु पहचानकर शुभरात्रि की कामना की। काफी रात बीत चुकी थी। ताबूतसाज़ अपने घर के निकट पहुँच गया था, जब अचानक उसे लगा कि कोई उसके फाटक के निकट आया और दरवाज़ा खोलकर अन्दर गायब हो गया है। "यह क्या किस्सा है?" अद्रियान ने सोचा। "किसको फिर से मेरी ज़रूरत हो

सकती है? कही कोई चोर तो भीतर नही चला गया? मेरी बुद्ध बेटियो के पास कोई प्रेमी तो नही आते?" ताबूतसाज ने यह भी सोचा कि अपने दोस्त यूर्को को मदद के लिये पुकारना चाहिये। इसी क्षण एक अन्य व्यक्ति फाटक के निकट आया, उसने भीतर जाना चाहा, किन्तु घर के मालिक को भागा आता देखकर रुक गया और उसने अपना तिकोना टोप उतार लिया। अद्रियान को उसका चेहरा परिचित-सा प्रतीत हुआ, किन्तु उतावली के कारण वह उसे बहुत ध्यान से नही देख पाया। "आप मेरे यहा आये है," अद्रियान ने हाफते हुए पूछा, "कृपया पधारिये, भीतर चलिये।" – "आप औपचारिक्ता के फेर मे नही पडे," आगन्तुक ने दबी-घुटी आवाज मे जवाब दिया, "मेहमानो को रास्ता दिखाते हुए आगे-आगे चलिये!" अद्रियान के पास औपचारिकता के फेर मे पडने का समय ही नही था। घर का फाटक खुला हुआ था, अद्रियान आगे-आगे और उसका अतिथि उसके पीछे-पीछे चल दिया। अद्रियान को ऐसे लगा मानो उसके कमरो मे लोग चल-फिर रहे हो। "यह क्या माजरा है!" उसने सोचा और जल्दी से कदम बढाता हुआ भीतर गया वहा उसकी टागे लडखडा गयी। कमरा प्रेतो से भरा हुआ था। खिडकी मे से छनती हुई चादनी उनके पीले और नीले चेहरो, सिकुडे-टेढे होठो, धुधली-अधमुदी आखो और उभरी हुई नाको को रोशन कर रही थी अद्रियान ने दहलते दिल से इन प्रेतो के रूप मे उन लोगो को पहचान लिया जो उसके योग-सहयोग से दफनाये गये थे और उसके साथ आनेवाला मेहमान तो वह ब्रिगेडियर था जो मूसलधार बारिश के वक्त दफनाया गया था। इन सभी स्त्री-पुरुषो ने ताबूतसाज को घेर लिया और सिर झुका-झुकाकर वे उसका अभिवादन करने लगे। किस्मत का मारा केवल एक ही, जो कुछ समय पहले मुफ्त दफनाया गया था मानो अपने चिथडे को छिपाता और शर्म से गडा जाता हुआ एक कोने मे चुपचाप खडा था। उसे छोडकर बाकी सभी बढिया कपडे पहने थे – महिलाओ के सिरो पर रिबन वाली टोपिया थी, मृत अफसर वर्दिया डाटे थे, किन्तु उनकी दाढिया बढी हुई थी, व्यापारी-सेठ लोग समारोही अगरखों में खूब जच रहे थे। "देखो प्रोखोरोव," ब्रिगेडियर ने सभी आदरणीय अतिथियो की ओर से बोलते हुए कहा, "हम सभी तुम्हारे निमत्रण

पर अपनी कब्रों से उठकर आये हैं। वहां केवल वही रह गये हैं जिनमें बिल्कुल शक्ति शेष नहीं रह गयी, जो पूरी तरह गल-सड़ गये हैं, जो त्वचा के बिना केवल हड्डियों का पंजर हैं। किन्तु इनमें से भी एक तुम्हारे यहां आने का मोह संवरण नहीं कर सका – इतना अधिक उसने तुम्हारे यहां आना चाहा " इसी समय एक छोटा-सा पंजर औरों को कोहनियाता और भीड़ को चीरता हुआ अद्रियान के निकट आया। उसकी खोपड़ी ताबूतसाज़ की ओर स्नेहपूर्वक मुस्करायी। उजले हरे और लाल रंग के चिथड़े और तार-तार हुए गाढ़े के टुकड़े उसपर ऐसे लटक रहे थे मानो डंडे पर लटके हुए हों तथा घुटनों तक के बूटों में टांगों की हड्डियां ऐसे बज रही थीं जैसे ऊखल में मूसल। "तुमने मुझे पहचाना नहीं, प्रोखोरोव," कंकाल ने कहा। "गार्ड सेना के भूतपूर्व सार्जेण्ट उसी प्योत्र पेत्रोविच कुरील्किन को भूल गये हो जिसे तुमने १७९९ में अपना पहला ताबूत बेचा था और सो भी चीड़ का, जिसे बलूत की लकड़ी का बताया था?" इतना कहकर उसने अद्रियान को अपनी बांहों में भरने के लिये अपनी कंकाली बांहें उसकी ओर फैला दीं। किन्तु अद्रियान अपनी सारी शक्ति बटोरकर चिल्ला उठा और उसने उसे परे धकेल दिया। प्योत्र पेत्रोविच लड़खड़ाया, गिरा और हड्डियों का ढेर बनकर रह गया। मुर्दों में गुस्से की लहर-सी दौड़ गयी, सभी अपने साथी की इज़्ज़त की रक्षा के लिये डट गये, अद्रियान को भला-बुरा कहने और डराने-धमकाने लगे। बेचारे मेज़बान के होश-हवास गुम हो गये। इनकी चीख़-चिल्लाहट से बहरा और इनके द्वारा लगभग कुचला हुआ मेज़बान बिल्कुल घबरा गया, खुद गार्ड सेना के भूतपूर्व सार्जेण्ट की हड्डियों पर गिर गया और बेहोश हो गया।

सूरज की किरणें ताबूतसाज़ के बिस्तर को कभी की आलोकित कर रही थीं। आखिर उसने आंखें खोलीं और नौकरानी को अपने सामने समोवार गर्माते देखा। रात की घटनाओं को याद करके अद्रियान भय से कांप उठा। उसे अपनी कल्पना में त्र्यूखिना, ब्रिगेडियर और सार्जेंट कुरील्किन का धुंधला-सा आभास हो रहा था। वह चुपचाप इस बात की प्रतीक्षा करता रहा कि नौकरानी उसके साथ बातचीत शुरू करे और उसे रात की घटनाओं का बाकी हाल बताये।

"बहुत देर तक सोये रहे आज तो आप, अद्रियान प्रोखोरोविच,"

मालिक को गाउन देते हुए नौकरानी अक्सीन्या ने कहा। "पडोसी दर्जी भी मिलने के लिये आ चुका है, हमारे हलके का पुलिसवाला भी यह बता गया है कि आज इन्स्पेक्टर का जन्मदिन है, मगर आप सो रहे थे और हमने यह ठीक नही समझा कि आपको जगाये।"

"भगवान को प्यारी हो गयी त्रूखिना के यहा से कोई आया था क्या?"

"भगवान को प्यारी हो गयी त्रूखिना? क्या वह मर गयी?"

"कैसी उल्लू हो तुम भी! उसके कफन-दफन की तैयारी मे क्या कल तुम्ही ने मेरा हाथ नही बटाया था?"

"क्या कह रहे हैं आप, मालिक? कही आपका दिमाग तो नही चल निकला या कल के नशे का खुमार अभी तक बाकी है? कल किसी को दफनाया ही कब गया था? आप दिन भर जर्मन के यहा दावत के मजे लूटते रहे, नशे मे धुत्त होकर घर लौटे, बिस्तर पर ढह पडे और अब तक सोते रहे। गिरजे मे प्रार्थना की घण्टिया भी कभी की बज चुकी।"

"अरे, सच!" ताबूतसाज ने खुश होकर कहा।

"बिल्कुल सच," नौकरानी ने जवाब दिया।

"अगर ऐसा ही है, तो झटपट चाय दो और मेरी बेटियो को भी बुला लो।"

डाक-चौकी का मुंशी

छोटा-सा कर्मचारी, भई वाह!
वह तो पूरा तानाशाह!

प्रिंस व्याज़ेम्स्की*

डाक-चौकी के मुशियो को भला किसने नही कोसा होगा, किसकी उनसे तू-तू मैं-मैं नही हुई होगी? किसने गुस्से से आग-बबूला होकर

* १९वी शताब्दी के कवि प्योत्र व्याज़ेम्स्की की 'डाक-चौकी' कविता (१८२५) की कुछ परिवर्तित काव्य-पंक्तिया। ज़ारशाही रूस मे

यह किस्मत की मारी हुई शिकायत की कापी नहीं मांगी होगी, ताकि उसमें उनकी हठधर्मी, अशिष्टता और मारकाटी के बारे में बेकार ही एक शिकायत और लिख दे? कौन उन्हें दरिन्दों जैसा नहीं मानता, गये-बीते घटिया अफसरों जैसा या कम से कम "मुरोम के लुटेरों" के समान नहीं समझता? लेकिन हमें इन्साफ से काम लेना होगा, अपने को उनके स्थान पर रखकर देखना होगा, तब शायद हम उनके बारे में ऐसी कठोर राय जाहिर नहीं करेंगे। डाक-चौकी का मुंशी आखिर है क्या? एक बहुत ही छोटा कर्मचारी जिसके भाग्य में खटना ही खटना है और अगर वह लातों-घूंसों की मार से बच जाता है (सो भी हमेशा नहीं), तो सिर्फ इसलिये कि सरकारी कर्मचारी है (मेरे पाठक, अपनी आत्मा से भाप ले)। प्रिंस व्याज़ेम्स्की ने मज़ाक में उसे तानाशाह कहा है, वह भला कहां का तानाशाह है? क्या वास्तव में उसका काम जेल की चक्की पीसने के समान नहीं है? न दिन को चैन, न रात को आराम। ऊबभरी यात्रा के दौरान यात्री को जो दुख-दर्द सहने पडते हैं, उनका सारा गुस्सा डाक-चौकी के मुंशी पर निकलता है। मौसम खराब है, सडक टूटी-फूटी है, कोचवान ज़िद्दी है, घोडे अडियल हैं – इन सब के लिये दोषी है डाक-मुंशी। उसके मामूली-से घर के अहाते मे दाखिल होने पर आगन्तुक एक दुश्मन की तरह उसकी तरफ देखता है। इस बिन बुलाये मेहमान से अगर उसे जल्दी ही निजात मिल जाये, तो बडी गनीमत है। लेकिन अगर घोडे तैयार न मिलें? तो हे भगवान, कैसी-कैसी गालियां और कैसी-कैसी धमकियां सुननी पडती हैं उसे! बारिश और कीचड-गन्दगी में उसे पराये अहातो मे भागते फिरना पडता है, बुरी तरह झल्लाये हुए यात्री की चीख-चिल्लाहट और धक्को-मुक्को से क्षण भर को चैन पाने के लिये उसे तूफान और कडाके की सर्दी मे ड्योढी मे जा छिपना पडता है। कोई जनरल आ जाता है, तो थर-थर कांपता हुआ डाक-मुंशी उसे तीन घोडोंवाली आखिरी दो घोडागाडियां दे देता है, जिनमे एक डाक की घोडागाडी भी होती है। जनरल तो धन्यवाद का एक शब्द कहे बिना चल देता है। पांच मिनट बाद घण्टी की टनटन सुनाई पड़ती है ... और

सभी सरकारी कर्मचारियों को श्रेणियों मे विभाजित किया गया था और ६. ... का मुंशी सबसे नीची, चौदहवीं श्रेणी में आता था। – सं०

सरकारी हरकारा उसकी मेज़ पर आदेशपत्र पटक देता है आइये, इन सब बातो की गहराई मे जाये, तो गुस्से के बजाय हमारा हृदय सच्ची सहानुभूति से भर जायेगा। कुछ शब्द और भी – बीस वर्षों के दौरान मैं सभी दिशाओ मे रूस की यात्रा कर चुका हू, डाक-घोड़ागाडियो के लगभग सभी रास्ते जानता हू, कोचवानो की कई पीढ़ियो से परिचित हू, शायद ही कोई ऐसा डाक-चौकी मुशी होगा जिसे मैं पहचानता न होऊ, शायद ही कोई ऐसा होगा जिससे मेरा वास्ता न पड़ा हो। निकट भविष्य मे मैं अपने यात्रा-अनुभवो को प्रकाशित करने की आशा करता हू। फिलहाल केवल इतना ही कहूगा कि आम तौर पर डाक-चौकी के मुशियो को बहुत गलत रग मे पेश किया गया है। इतने अधिक बदनाम ये डाक-मुशी कुल मिलाकर बडे शान्त स्वभाव के लोग होते हैं, दूसरो के काम आना उनके मिज़ाज मे है, दूसरो से घुलने-मिलने का उनमे झुकाव होता है, अपने बारे मे किसी प्रकार की गलतफ़हमी के बिना वे विनयशील होते हैं और निन्यानवे के फेर मे भी बहुत अधिक नही पडते। उनकी बातचीत से (जिसे कुछ आगन्तुक महानुभाव बकवास से अधिक कुछ नही मानते) बहुत कुछ जिज्ञासापूर्ण और शिक्षाप्रद प्राप्त किया जा सकता है। जहा तक मेरा सम्बन्ध है, तो मैं ऊचे दर्जे के किसी सरकारी कर्मचारी की तुलना मे उनकी बातचीत को कही अधिक बेहतर मानता हू।

इस बात का आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है कि डाक-चौकी के मुशियो की सम्मानित श्रेणी मे भी मेरे कुछ मित्र हैं। वास्तव मे उनमे से एक की स्मृति को मैं बहुत मूल्यवान मानता हू। परिस्थितिया हमे निकट ले आयी और अपने कृपालु पाठको के साथ मैं अब उसी की चर्चा करना चाहता हू।

१८१६ के मई महीने की बात है कि मुझे गुबेर्निया के उस मार्ग पर यात्रा करनी पडी जो अब नही रहा। मैं छोटा-सा अफसर था, एक डाक-चौकी से दूसरी डाक-चौकी तक जाता था और दो घोडो से अधिक किराये पर लेने के लिये मेरी जेब मे पैसे नही होते थे। नतीजा यह कि डाक-मुशी भी मेरा कोई लिहाज नही करते थे और अक्सर मुझे जोर-ज़बर्दस्ती से वह लेना पडता था जिसे मैं अपना हक समझता था। तब मैं जवान और बहुत गर्ममिज़ाज था और उन

डाक-मुंशियो के घटियापन और नीचता से जल-भुन उठना जो मेरे लिये तैयार किये गये घोड़ों को ऊंचे अफ़सरो के हवाले कर देते। इसी तरह मैं बहुत अर्से तक इस बात का आदी नही हो पाया था कि राज्यपाल की मेज़ पर खाना परोसने के समय बड़े लोगो का ध्यान रखनेवाला बैरा मेरी अवहेलना कर देता था। अब तो दोनो बातें मुझे ठीक लगती है। आप ही सोचे, अगर सामान्य रूप से स्वीकृत इस नियम की जगह कि "नीची पदवीवाला ऊंची पदवीवाले के सामने झुके" यह नियम लागू हो जाये कि "कम समझदार समझदार के सामने सिर झुकाये" तो क्या होता? अच्छी खासी मुसीबत खड़ी हो जाती। नौकर-चाकर पहले किसकी सेवा करने दौड़ते? खैर, मैं अपनी कहानी सुनाता हू।

बहुत गर्म दिन था चौकी से तीन वेर्स्ता इधर हल्की बूदा-बादी शुरू हुई और एक मिनट बाद इतने ज़ोर की बारिश होने लगी कि मैं बिल्कुल भीग गया। डाक-चौकी पर पहुचते ही मैंने झटपट कपड़े बदले और चाय लाने के लिये कहा। "अरी दून्या!" मुंशी ने आवाज़ दी, "समोवार गर्म करो और कुछ क्रीम ले आओ!" इन शब्दो के साथ ही बीच की दीवार के पीछे से कोई चौदह साल की लड़की सामने आयी और ड्योढ़ी की ओर भाग गयी। उसके सौन्दर्य से मैं दंग रह गया। "यह तुम्हारी बेटी है?" मैंने डाक-मुंशी से पूछा। "जी, मेरी बेटी है," उसने गर्व से प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया, "बड़ी समझदार, बड़ी ही चुस्त-फुर्तीली है, बिल्कुल अपनी दिवगता मा जैसी।" वह रजिस्टर में मेरा यात्रा-पत्र दर्ज करने लगा और मैं चित्रो को देखने लगा जिनसे उसका साधारण, किन्तु साफ-सुथरा घर सजा हुआ था। उन चित्रो मे एक उड़ाऊ-खाऊ बेटे का किस्सा बयान किया गया था। पहले चित्र में ड्रेसिंग-गाउन और रात की टोपी पहने बूढ़ा एक चचल किशोर को विदा कर रहा था जो बड़ी उतावली से बाप का आशीर्वाद और उसके हाथ से धन की थैली ले रहा था। दूसरे चित्र में उस नौजवान की ऐयाशी को खूब उभारा गया था – वह मतलबी दोस्तो और वेश्या औरतो मे घिरा हुआ मेज़ पर बैठा था। तीसरे चित्र मे तबाह हुए इसी युवक को फटा चोगा पहने और सिर पर टेढ़ी टोपी लगाये सूअर चराता और उन्ही की सगत में भोजन करते दिखाया गया था।

उसके चेहरे पर गहरे सन्ताप और पश्चाताप की छाप थी। अन्तिम चित्र मे उसका पिता के पास लौटना चित्रित था – नेक बुजुर्ग वही ड्रेसिंग-गाउन और रात की टोपी पहने हुए बेटे के स्वागत को बाहर भागा आता है, ऐयाश बेटा बाप के पैरो पर गिरा हुआ है, चित्र की पृष्ठभूमि मे बावर्ची एक मोटे-ताजे बकरे को काट रहा है और बड़ा भाई उससे इस खुशी, इस जश्न का कारण पूछ रहा है। हर चित्र के नीचे मैंने जर्मन भाषा मे लिखी ढग की कविता भी पढी। यह सब कुछ मेरी स्मृति मे आज भी वैसे ही सजीव है, जैसे फूलोवाले गमले, पलग और चटक रग का पर्दा तथा मेरे इर्द-गिर्द की अन्य सभी चीजे। घर के स्वामी को भी ज्यो का त्यो अपनी आखो के सामने देखता हू – उम्र कोई पचास साल, प्रफुल्ल और ताजगी लिये, हरे रग का फ्राक-कोट पहने जिसपर बदरग फीतो के साथ तीन तमगे लटक रहे थे।

मैंने अभी पिछली डाक-चौकी के कोचवान के पैसे चुकाये ही थे कि दून्या समोवार लिये हुए आ गयी। उस चचल किशोरी को यह भापते देर न लगी कि उसने मुझपर कैसा जादू कर दिया है। उसने अपनी बडी-बड़ी नीली आखो को नीचे झुका लिया। मै उसके साथ बातचीत करने लगा और वह किसी भी तरह की झेप-झिझक के बिना दुनिया के रग-ढग से परिचित लडकी की तरह मुझसे बोलने-बतियाने लगी। मैंने उसके पिता की ओर शराब का एक गिलास बढाया, दून्या को चाय का प्याला दिया और हम तीनो ऐसे घुल-मिलकर बाते करने लगे मानो बरसो से एक दूसरे को जानते हो।

घोडे कभी के जोत दिये गये थे, मगर डाक-मुशी और उसकी बेटी से विदा लेने को मेरा मन नही हो रहा था। आखिर मैंने उनसे विदा ली, पिता ने मेरे लिये शुभयात्रा की कामना की और बेटी मुझे घोडागाडी तक पहुचाने को मेरे साथ हो ली। मै ड्योढी मे रुका और मैंने उससे चुम्बन लेने की अनुमति मागी। दून्या इसके लिये राजी हो गयी... चुम्बनो के बारे में बहुत कुछ कह सकता हू मैं तबसे,

> जबसे मैंने यह खिलवाड शुरू
> किया है,

किन्तु एक चुम्बन ने भी ऐसी अमिट और मधुर छाप मन पर नही छोडी।

कई साल बीत गये और परिस्थितियां मुझे फिर से उसी रास्ते, उन्हीं जगहों पर से गयीं। मुझे बूढ़े डाक-मुंशी की बेटी की याद हो आयी और इस ख्याल से मेरा मन खिल उठा कि फिर उससे भेंट हो सकेगी। किन्तु यह विचार भी मन में आया कि बूढ़े मुंशी को शायद नौकरी से अलग कर दिया गया हो, दून्या की शादी हो चुकी हो। दोनों में से किसी एक की मृत्यु की बात भी मेरे दिमाग में कौंधी और मैं सभी तरह के बुरे-बुरे ख्याल लिये हुए डाक-चौकी के निकट पहुंचा।

घोड़ागाड़ी डाक-मुंशी के छोटे-से घर के सामने जाकर रुक गयी। कमरे में दाखिल होते ही मैंने उड़ाऊ-खाऊ बेटे की कहानी बयान करनेवाले चित्रों को पहचान लिया। मेज और पलंग अपनी पहलेवाली जगहों पर ही थे, किन्तु खिड़कियों के दासों पर फूलों के गमले नहीं थे और इर्द-गिर्द गड़बड़ तथा उपेक्षा साफ दिखाई दे रही थी। डाक-मुंशी भेड़ की खाल ओढ़े हुए सो रहा था, मेरे आने से उसकी आंख खुल गयी और वह थोड़ा-सा उठा यह तो वही सम्सोन वीरिन था, किन्तु कितना बुढ़ा गया था वह! जब तक वह मेरा यात्रा-पत्र दर्ज करता रहा मैं उसके पके बालों, बहुत समय से बढ़ी दाढ़ीवाले चेहरे की गहरी झुर्रियों और उसकी झुकी हुई पीठ को देखता तथा इस बात से हैरान होता रहा कि तीन-चार सालों में प्रफुल्ल मर्द कैसे जीर्ण-शीर्ण बुढ़ऊ में बदल गया है। "मुझे पहचाना?" मैंने उससे पूछा। "हम तो पुराने परिचित हैं।" – "हो सकता है," उसने उदासी से उत्तर दिया, "यह रास्ता बड़ा चालू है, अनेक लोग मेरे यहां आ चुके हैं।" – "तुम्हारी दून्या तो ठीक-ठाक है?" मैंने अपनी बात जारी रखते हुए पूछा। बूढ़े के माथे पर बल पड़ गये। "भगवान जाने," उसने उत्तर दिया। "शायद उसकी शादी हो गयी?" मैंने जानना चाहा। बूढ़े ने ऐसे ढोंग किया मानो मेरा सवाल सुना ही न हो और फुसफुसाते हुए यात्रा-पत्र पढ़ता रहा। मैंने अपने सवाल पूछने बन्द कर दिये और चाय के लिये केतली गर्म करने को कहा। जिज्ञासा मुझे बेचैन करने लगी और मेरे मन में यह आशा पैदा हुई कि शराब पीने के बाद मेरे पुराने परिचित की जबान खुल जायेगी।

मेरा अनुमान सही निकला। बूढ़े ने शराब का गिलास ले लिया

और मैंने देखा कि उसकी उदासी के बादल छंट गये हैं। शराब का दूसरा गिलास पीने के बाद वह बतियाने लगा। उसे मेरी याद आ गयी या फिर उसने यह ढोंग किया कि उसे मेरा स्मरण हो आया है और उसने मुझे वह किस्सा सुनाया जो उस समय मेरे दिल-दिमाग पर छा गया और जिसने मेरे मर्म को छू लिया।

"तो आप मेरी दून्या को जानते थे?" उसने कहना आरम्भ किया, "कौन नही जानता था उसे? ओह, दून्या, दून्या! क्या लडकी थी वह भी! जो कोई भी यहा आता, उसकी तारीफ करता, कोई भी उसे भला-बुरा न कहता। कुलीन नारियों मे से कोई उसे दुपट्टा भेट कर जाती, तो कोई झुमके। इधर से गुज़रनेवाले बडे लोग जान-बूझकर दोपहर या रात का भोजन करने के लिये यहा रुक जाते, मगर वास्तव मे उनका उद्देश्य यही होता कि अधिक देर तक उसे देखते रहे। ऐसा भी होता था कि कोई महानुभाव चाहे कितना ही झल्लाया हुआ क्यो न आता, उसके सामने शान्त हो जाता और मेरे साथ अच्छे ढग से बातचीत करता। आप विश्वास करेगे श्रीमान – सरकारी और सैनिक हरकारे आध-आध घण्टे तक उससे बतियाते रहते थे। सारा घर भी वही सम्भालती थी – झाडना-बुहारना, खाना पकाना, सभी कुछ कर लेती थी वह। मुझ बूढे उल्लू की तो उसे देखते-देखते नज़र ही नही भरती थी, मेरी खुशी का तो कोई ठिकाना ही नही था। क्या जी-जान से प्यार नही करता था मैं अपनी बिटिया को, क्या बहुत सहेज कर नही रखता था मैं उसे, कोई कष्ट होने देता था क्या उसे? लेकिन नही, मुसीबत से बचा नही जा सकता, किस्मत मे जो लिखा है, वह होकर रहता है।" अब इसके बाद वह सविस्तार अपनी दर्द-कहानी सुनाने लगा। तीन साल पहले जाडे की एक शाम को जब डाक-चौकी का मुशी अपने नये रजिस्टर मे लकीरे खीच रहा था और उसकी बेटी बीच की दीवार के पीछे अपने लिये फ्राक सी रही थी, तो तीन घोडो की एक गाडी – त्रोइका – आकर दरवाज़े पर रुकी। चेर्केसी ढग की टोपी और बडा फौजी कोट पहने तथा गुलूबन्द लपेटे हुए एक व्यक्ति कमरे मे दाखिल हुआ और उसने घोडे मागे। उस वक्त सभी घोडे गये हुए थे। यह खबर सुनते ही यात्री ने अपनी आवाज़ और कोड़ा भी ऊंचा किया। किन्तु दून्या, जो इस

तरह के तूफान की आदी हो चुकी थी, बीच की दीवार के पीछे से भागकर बाहर आयी और बड़े प्यार से उसने यात्री से पूछा-क्या कुछ खाना-पीना नहीं चाहेंगे? दून्या के सामने आने का जो असर होता करता था वही हुआ। आगन्तुक का गुस्सा उतर गया, वह घोड़ों का इन्तजार करने को राजी हो गया और उसने खाने का आदेश दिया। जब भी भलमनी [illegible] टोपी उतारी, [illegible] और बड़ा लबादा उतार देने पर काली [illegible] एक सुन्दर-सुडौल हुस्सार अफसर सामने आ गया। डाक मुंशी के घर में इत्मीनान से बैठ कर उसने और उसकी बेटी से हंस हंसकर बोलने-बतियाने लगा। उसके लिये भोजन परोस दिया गया। इसी बीच घोड़े भी आ गये और मुंशी ने आदेश दिया कि दाना पानी दिये बिना उन्हें यात्री की बर्फ-गाड़ी में जोत दिया जाये। किन्तु घर में लौटने पर उसने नौजवान अफसर को बेंच पर बेहोश पड़ा पाया। वह बेहोश हो रहा था, उसके सिर में बहुत दर्द था और उसके लिये यात्रा जारी रखना सम्भव नहीं था ... तो क्या किया जाये! मुंशी ने अपना पलंग उसे दे दिया और यह तय हुआ कि अगर बीमार की तबीयत बेहतर नहीं हो जायेगी, तो अगली सुबह को स... नगर से डाक्टर को बुलवाया जाये।

अगले दिन हुस्सार की तबीयत और ज्यादा खराब हो गयी। उसका नौकर घोड़े पर सवार होकर डाक्टर को लाने के लिये शहर चला गया। दून्या ने सिरके में तर किया हुआ रूमाल उसके सिर पर रखा और अपनी सिलाई लेकर उसके पलंग के पास बैठ गयी। डाक-चौकी के मुंशी की उपस्थिति में रोगी हाय-वाय करता, मुंह से लगभग एक भी शब्द न निकालता, फिर भी वह कॉफी के दो प्याले पी गया और आहें भरते हुए उसने अपने लिये दोपहर के भोजन का भी आदेश दिया। दून्या उसके पास ही बैठी रहती थी। वह बार-बार पीने के लिये कुछ देने को कहता और दून्या खुद बनाये हुए लेमोनाड का गिलास उसे देती। रोगी अपने होंठ तर करता और हर बार गिलास लौटाते हुए कृतज्ञता प्रकट करने के लिये अपने क्षीण हाथ से उसका हाथ दबाता। दोपहर के भोजन के समय तक डाक्टर भी आ गया। उसने रोगी की नब्ज देखी, उसके साथ जर्मन भाषा में बातचीत की और रूसी में यह बताया कि उसे केवल आराम की जरूरत है और दो दिन बाद

देव-मण्डप से बाहर निकल रहा था, गिरजे की देख-भाल करनेवाल मोमबत्तियां बुझा रहा था, दो बूढ़ी औरतें अभी तक एक कोने में प्रार्थना कर रही थीं, किन्तु दून्या गिरजे में नहीं थी। अभागे पिता ने आखिर मन मारकर गिरजे के चौकीदार से यह पूछा कि दून्या प्रार्थना में आयी थी या नहीं। उसने जवाब दिया कि नहीं आयी थी। डाक मुंशी न जीता, न मरता-सा वापस घर चल दिया। सिर्फ यही आश उसके दिल में रह गयी – हो सकता है कि जवानी की मस्ती में आक दून्या ने अगली डाक-चौकी तक, जहां उसकी धर्म-माता रहती थी जाने की ठान ली हो। बहुत ही यातनापूर्ण विह्वलता से वह उस त्रोइक बर्फ-गाड़ी के लौटने की राह देखने लगा, जिसपर उसने अपनी बेटी को जाने दिया था। कोचवान नहीं लौटा। आखिर रात हो जाने प वह नशे में धुत्त अकेला लौटा और उसने यह भयानक खबर सुनायी अगली डाक-चौकी से दून्या हुस्सार के साथ चली गयी।

अपने दुर्भाग्य की इस चोट को बूढ़ा सहन न कर सका, उस समय उसने वह चारपाई थाम ली जिसपर वह जवान ढोंगी पिछ दिन पड़ा रहा था। सारी परिस्थितियों पर विचार करते हुए डाक मुंशी समझ गया कि उस जवान ने बीमारी का नाटक किया था बेचारे को ज़ोर के बुखार ने धर दबाया, उसे स . नगर में इला के लिये ले जाया गया और किसी अन्य को वक़्ती तौर पर उसक जगह नियुक्त कर दिया गया। हुस्सार के इलाज के लिये आनेवाले डाक्टर ने ही उसकी चिकित्सा की। उसने डाक-मुंशी को विश्वा दिलाया कि नौजवान अफ़सर बिल्कुल स्वस्थ था, कि उसके बुरे इरा के बारे में उसने तभी भांप लिया था, किन्तु उसके कोड़े से डरत हुआ खामोश रहा था। जर्मन डाक्टर ने सच कहा था या अपनी दू दर्शिता की डींग हांकनी चाही थी, बेचारे रोगी को इससे कोई सन्तो नहीं हुआ। अपनी बीमारी से थोड़ा अच्छा होते ही डाक-मुंशी ने स. नगर के डाक-अधिकारी से दो महीने की छुट्टी ली और किसी से भी अपने इरादे की चर्चा किये बिना पैदल ही अपनी बेटी की खोज चल दिया। यात्रा-पत्र में उसे मालूम था कि कप्तान मीन्स स्मोलेन्स्क से आया था और पीटर्सबर्ग गया था। कप्तान को ले जानेवाले कोचवान ने बताया कि दून्या रास्ते भर रोती रही, यद्यपि

बूढा देर तक बुत बना खडा रहा। आखिर उसे आस्तीन के कफ में कागजों की एक गड्डी-सी दिखाई दी। उसने उसे निकालकर खोला और उसमें पाच-पाच तथा दस-दस रूबल के कई मुडे-मुडाये नोट पाये। उसकी आखो में फिर से आसू आ गये—विक्षोभ के आसू। उसने नोटों को मसलकर उनका गोला-सा बनाया, उसे जमीन पर फेका, जूते की एडी से रौंदा और आगे चल दिया कुछ कदम जाकर वह रुका, उसने थोडी देर विचार किया और मुडा किन्तु नोट गायब हो चुके थे। सज-धज कपडे पहने एक नौजवान उसे अपनी ओर आते देखकर बग्घी की तरफ लपका, जल्दी से उसमें बैठ गया और उसने चिल्लाकर कोचवान से कहा, "चलो! " डाक-मुशी ने उसका पीछा नहीं किया। उसने अपनी डाक-चौकी पर लौटने का फैसला कर लिया, किन्तु ऐसा करने से पहले अपनी बेचारी दून्या को एक बार देख लेना चाहा। दो दिन बाद वह पुन मीन्स्की के यहा लौटा। किन्तु फ़ौजी अर्दली ने बडी कठोरता से उससे कहा कि मालिक किसी से नही मिलते, धकियाकर उसे ड्योढी से बाहर निकाला और फटाक से दरवाजा बन्द कर दिया। डाक-मुशी खडा रहा, खडा रहा—और फिर वापस चला गया।

बूढा उसी शाम को गिरजे की प्रार्थना के बाद लितेयनाया सडक पर जा रहा था। अचानक उसके सामने से एक बढिया बग्घी गुजरी और उसने उसमे बैठे मीन्स्की को पहचान लिया। बग्घी एक तिमंजिले मकान के दरवाजे के सामने रुकी और हुस्सार भागकर ओसारे में चला गया। डाक-मुशी को एक बात सूझी। वह मुडा और कोचवान के पास जाकर उसने पूछा, "किसकी बग्घी है यह भाई? मीन्स्की की तो नही?"—"उन्ही की है," कोचवान ने जवाब दिया, "मगर तुम्हे इससे मतलब?"—"बात यह है कि तुम्हारे साहब ने दून्या के पास पहुचा देने के लिये एक रुक्का मुझे दिया था, लेकिन मुझे याद नही रहा कि दून्या कहा रहती है।"—"यही रहती है, दूसरी मंजिल पर। देर कर दी तुमने मेरे भाई, रुक्का लेकर आने मे। अब तो साहब खुद उसके पास हैं।"—"इससे कोई फर्क नही पडता," दिल मे अस्पष्ट-सी धडकन अनुभव करते हुए बूढे ने कोचवान की बात काटी। "यह बताने के लिये धन्यवाद, मै अपना कर्त्तव्य पूरा कर आता हूं।" इतना कहकर वह जीने पर चढ चला।

दरवाज़ा बन्द था। उसने घण्टी बजायी और उसके लिये बहुत बोझिल प्रतीक्षा के कुछ क्षण बीते। चाबी को ताले मे डालने की आवाज हुई और दरवाज़ा खुला। "अव्दोत्या सम्सोनोव्ना क्या यही रहती हैं?" उसने पूछा। "हा," जवान नौकरानी ने जवाब दिया। "तुम्हे उनसे क्या काम है?" डाक-मुशी ने कोई उत्तर नही दिया और भीतर बढ चला। "भीतर नही जाइये, नही जाइये!" नौकरानी पीछे से चिल्लायी, "अव्दोत्या सम्सोनोव्ना के यहा इस समय मेहमान है।" किन्तु डाक-मुशी उसकी बात पर कान दिये बिना आगे चलता गया। पहले दो कमरो मे अन्धेरा था, तीसरे मे रोशनी थी। खुले दरवाजे के पास आकर वह रुक गया। बहुत ही सजे-धजे कमरे मे मीन्स्की सोच मे डूबा हुआ बैठा था। आधुनिकतम फ़ैशन की पुतली-सी बनी दून्या उसकी आरामकुर्सी के हत्थे पर ऐसे बैठी थी जैसे कोई नारी-घुडसवार अंग्रेज़ी जीन पर बैठी हो। वह मुग्ध भाव से मीन्स्की को देखती हुई उसके काले घुघराले बालो को अपनी हीरो से चमकती उगलियो के गिर्द लपेट रही थी। बेचारा डाक-चौकी का मुशी! उसे अपनी बेटी कभी भी इतनी सुन्दर नही लगी थी, वह बरबस उसे देखता ही रह गया। "कौन है वहा?" दून्या ने सिर ऊपर उठाये बिना पूछा। बूढा बाप चुप रहा। कोई उत्तर न मिलने पर दून्या ने सिर ऊपर उठाया और वह चीख मारकर कालीन पर गिर गयी। मीन्स्की घबराकर उसे उठाने के लिये लपका, अचानक डाक-मुशी को दरवाजे के पास खडा देखकर उसने दून्या को वही छोड दिया और गुस्से से कापता हुआ उसके पास गया, "क्या चाहिये तुम्हे?" उसने दात पीसते हुए पूछा, "चोरों की तरह हर जगह मेरा पीछा क्यो करते रहते हो? या तुम मेरी जान लेने के फेर मे पडे हो? दफ़ा हो जाओ यहा से!" और उसने अपने मजबूत हाथ से बूढे का कालर पकडकर उसे जीने की ओर धकेल दिया।

बूढा वापस आया। उसके दोस्त ने सुझाव दिया कि वह मीन्स्की के खिलाफ शिकायत करे, किन्तु डाक-मुशी ने कुछ देर सोचकर हाथ झटका और इस ख्याल को रद्द कर दिया। दो दिन बाद वह पीटर्सबर्ग से अपनी डाक-चौकी को वापस चल पडा और फिर से वही पुराना काम करने लगा। "तो अब तीसरा साल चल

५*

रहा है इस बात को," उसने अन्त में कहा, "मैं दून्या के बिना रह रहा हूं और कोई मौत मयस्सर नहीं है मुझे उसके बारे में। वह जिन्दा है या मर गयी, भगवान ही जाने। सब कुछ होता है इस दुनिया में। किसी आने जाने वाले छैल-छबीले के फेर में पड़ जानेवाली वह न तो पहली है और न आखिरी जिसके साथ मौज मनाकर फिर उसे एक तरफ फेंक दिया जाता है। पीटर्सबर्ग में ऐसी बहुत-सी कुछ युवतियां हैं जो आज अतलस और रेशम से सजी हुई हैं, मगर कल फटेहाल शराबी पियक्कड़ों के साथ सड़कें बुहारती दिखाई देती हैं। जैसे ही कभी यह ख्याल आता है कि दून्या की भी ऐसी दुर्गति हो सकती है, तो अनचाहे ही मेरा मन उसकी मौत की कामना करने लगता है."

तो यह थी दर्द-कहानी मेरे मित्र, मेरे बूढ़े डाक-मुंशी की, जिसे सुनाते हुए अनेक बार उसका गला रुंध गया था। अपने आंसुओं को वह वैसे ही अनूठे अन्दाज में कोट के पल्लू से पोंछता था जैसे दमीत्रियेव की सुन्दर कविता में उत्साही तेरेन्तिच* करता है। उसके आंसू कुछ हद तक शराब के प्रभाव का भी परिणाम थे, जिसके वह कहानी सुनाते हुए पांच गिलास पी गया था। कुछ भी क्यों न हो, उसके आंसुओं ने मेरे मर्म को अत्यधिक छू लिया था। उससे अलग होने पर मैं बहुत समय तक बूढ़े डाक-मुंशी को नहीं भूल सका, बेचारी दून्या के बारे में भी बहुत समय तक मेरे मन में विचार बने रहे

कुछ ही समय पहले   बस्ती में से गुजरते हुए मुझे अपने मित्र का ध्यान हो आया। मालूम करने पर पता चला कि जिस डाक-चौकी का वह मुंशी था, उसे कभी का बन्द किया जा चुका है। मेरे इस प्रश्न का कि "बूढ़ा डाक-मुंशी जिन्दा है या नहीं?" किसी से सन्तोष-जनक उत्तर नहीं मिला। मैंने अपने सुपरिचित स्थान को देखने के लिये जाने का निर्णय किया, किराये की बग्घी ली और "न" गाव की ओर चल दिया।

यह पतझर के दिनों की बात है। धूसर बादल आकाश को ढके हुए थे, फ़सल-कटे खेतों से ठण्डी हवा आ रही थी और रास्ते में आने-वाले वृक्षों के लाल तथा पीले पत्ते अपने साथ उड़ाकर ला रही थी। मैं सूर्यास्त के समय गाव में पहुचा और डाक-चौकीवाले घर के सामने

* १८वी शताब्दी के रूसी कवि इवान दमीत्रियेव की एक कविता में वर्णित बन्धक-दास तेरेन्तिच की ओर सकेत है। —स०

रवा। उस ड्योढ़ी में (जहां कभी बेचारी दून्या ने मुझे चूमा था) एक मोटी-सी औरत सामने आयी और मेरे सवाल के जवाब मे उसने बताया कि बूढ़े डाक-मुंशी को मरे हुए एक साल हो गया, कि उसके घर में अब एक बियर बनानेवाला रहने लगा है और वह उसी बियर बनानेवाले की बिवी है। मुझे अपनी व्यर्थ की यात्रा और व्यर्थ खर्च किये गये सात रूबलों के लिये अफसोस हुआ। "किस कारण मृत्यु हुई उसकी?" मैंने बियर बनानेवाले की बीवी से पूछा। "शराब में डूब गया था, भैया।" उसने जवाब दिया। "उसे दफनाया कहा गया है?" – "गाव के छोर पर, उसकी बीवी की बगल में।" – "क्या कोई मुझे वहा तक पहुचा सकता है?" – "क्यो नही पहुचा सकता! ए वान्का, बिल्ली का पिंड छोड। इन साहब को कब्रिस्तान ले जाकर डाक-मुंशी की कब्र दिखा दो।"

ये शब्द सुनते ही फटे-पुराने कपडे पहने लाल बालोंवाला काना लड़का भागता हुआ मेरे पास आया और मुझे गाव के छोर की ओर ले चला।

"क्या तुम डाक-मुंशी को जानते थे?" मैंने रास्ते में उससे पूछा।

"जानता कैसे नही था! उन्होंने मुझे सीटी बनानी सिखायी थी। कभी-कभी ऐसा होता था कि वे शराबखाने से बाहर आते (भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे!) और हम उनके पीछे-पीछे शोर मचाने लगते, "दादा, दादा! अखरोट दो!" और वे हमें सारे अखरोट दे डालते। अक्सर वे हमारे साथ ही खेलते रहते।"

"राहगीर उन्हें याद करते हैं या नही?"

"राहगीर तो अब यहा आते ही बहुत कम हैं। कोई अदालती अफसर आ जाये, तो बात दूसरी है और वह मुर्दों के बारे में पूछताछ नही करता। हा, गर्मियो में एक कुलीन महिला आयी थी उसने बूढ़े डाक-मुंशी के बारे में पूछताछ की और उनकी कब्र पर गयी थी।"

"कैसी थी वह महिला?" मैंने जिज्ञासावश पूछा।

"बहुत ही सुन्दर थी," लड़के ने जवाब दिया, "वह छ घोड़ोंवाली बग्घी में यहा आयी, उसके साथ तीन बच्चे आया और एक छोटा-सा काला कुत्ता भी था। जैसे ही उसे यह बताया गया कि डाक-चौकीवाला बूढ़ा इस दुनिया में नहीं रहा, वह रो पड़ी और बच्चों से बोली, 'यहा चैन से बैठे रहना, मैं कब्रिस्तान हो आती हूं।' मैंने

उसके साथ चलना चाहा, किन्तु वह बोली, 'मैं खुद रास्ता जानती हूं।' और उसने मुझे चांदी का पाच कोपेक का सिक्का दिया – इतनी अच्छी थी वह! "

हम क़ब्रिस्तान मे पहुच गये, एकदम उजाड़-सुनसान जगह, जिसके गिर्द बाड़ नही थी, सभी जगह लकड़ी की सलीबे लगी हुई थी और छाया देनेवाला एक भी वृक्ष नही था। जिन्दगी मे कभी ऐसा मनहूस कब्रिस्तान मैंने नही देखा।

"यह है डाक-चौकीवाले बूढ़े की कब्र," लड़के ने बालू के ढूह पर उछलकर कहा, जिसमे तांबे की देव-प्रतिमावाली काली सलीब धसी थी।

"वह महिला यहा आयी थी?" मैंने पूछा।

"हा, आयी थी," वान्का ने जवाब दिया। "मैं उसे दूर से देखता रहा था। वह यहा आकर गिर गयी और देर तक ऐसे ही पड़ी रही। इसके बाद वह गाव मे गयी, उसने पादरी को बुलवाया, उसे पैसे दिये और मुझे चादी का पाच कोपेक का सिक्का दिया – बहुत अच्छी थी वह महिला।"

मैंने भी लड़के को पाच कोपेक का सिक्का दिया और अब मुझे न तो यहा तक की यात्रा करने और न ही उन सात रूबलों का अफ़सोस था जो मैंने ख़र्च किये थे।

प्रेम-मिलन

मेरी प्यारी, कुछ भी नहीं
पर तुम सुन्दर लगती हो।

बोग्दानोविच*

इवान पेत्रोविच बेरेस्तोव की जागीर हमारे देश के एक दूरस्थ गुबेर्निया मे थी। अपनी जवानी के दिनों मे वह गार्ड सेना मे था,

* १८वीं शताब्दी के रूसी कवि इप्पोलित बोग्दानोविच की 'दु... , सखी' सम्बी कविता से। – स०

घृणा उसके स्वभाव का एक विशेष लक्षण थी। अपने पड़ोसी के अंग्रेजियत के बारे में वह उत्तेजित रूप से ही नहीं बल्कि उसकी आलोचना का कोई भी मौका हाथ से न जाने देता। किसी मेहमान को वह अपनी जागीर दिखाता और अपने प्रबन्ध की प्रशंसा के उत्तर में वह व्यंग्यपूर्ण मुस्कान से कहता, "जी! मैं पड़ोसी ग्रिगोरी इवानोविच की भांति हवाई किले नहीं बनाता। अंग्रेजी रंग-ढंग के फेर में पड़कर कौन भला अपने को बरबाद करे! हमारा तो बस पेट भरने को मिल जाये, इतना ही बहुत है!" इसी तरह पड़ोसियों द्वारा ऐसे और इसी तरह के दूसरे हास्य-व्यंग्य कुछ बढ़ा-चढ़ाकर और नमक-मिर्च के साथ ग्रिगोरी इवानोविच तक पहुंचाये जाते। अंग्रेजियत का दीवाना हमारे पत्रकारों की तरह अपनी ऐसी आलोचना से झल्ला उठता और आग-बबूला होकर अपने इस आलोचक को भालू और दकियानूसी कहता।

इन दोनों जमींदारों के बीच जब ऐसी तनातनी चल रही थी, उसी समय बेरेस्तोव का बेटा उसके पास गांव में आया। उसने ...विश्वविद्यालय में शिक्षा पायी थी और फौज में जाना चाहता था, मगर उसके पिता इसके लिये राजी नहीं थे। दूसरी ओर, नौजवान बेटा अपने को गैरफौजी नौकरी के बिल्कुल अयोग्य अनुभव करता था। बाप-बेटा अपनी-अपनी बात पर अड़े हुए थे और जवान अलेक्सेई फिलहाल रईसों का निठल्ला जीवन बिताने लगा और इस ख्याल से कि जाने कब उनकी जरूरत पड़ जाये उसने मूछें बढ़ा लीं।*

अलेक्सेई तो वास्तव में ही बड़ा खूबसूरत जवान था। सचमुच ही यह बड़े अफसोस की बात होती कि उसकी सुघड़-सुडौल काठी पर फौजी वर्दी कभी अपनी अनूठी छटा न दिखाती और घोड़े की सवारी करने के बजाय दफ्तरी कागजों में मत्थापच्ची करते हुए ही वह अपनी पीठ झुका लेता। शिकार के वक्त रास्ते की किसी भी बाधा की परवाह किये बिना जब वह सबसे आगे-आगे सरपट घोड़ा दौड़ाता, तो पड़ोसी यह देखकर एकमत से कहते कि वह कभी ढंग का दफ्तरी अफसर नहीं बन पायेगा। युवतियां उसे प्रशंसा से देखतीं, कोई-कोई मुग्ध भी हो

---

* उस जमाने में सरकारी कर्मचारियों के लिये दाढ़ी-मूछ रखने की कड़ी मनाही थी। किन्तु सैनिकों के लिये मूछें रखना अनिवार्य था। –सं०

जाती, किन्तु अनेक्सेई उनमें कोई दिलचस्पी जाहिर न करता। वे उसकी ऐसी उदासीनता का यह अर्थ लगाती कि वह किसी के प्रेम-जाल में फंसा हुआ है। इतना ही नहीं, उसके एक पत्र के पतेवाला यह रुक्का भी उनके हाथों में घूम गया था – मास्को, अलेक्सी मठ के सामने, ठठेरे सवेल्येव का मकान, अकुलीना पेत्रोव्ना कुरोच्किना के नाम। कृपया यह पत्र अ० न० र० को पहुंचा दें।

मेरे पाठक जो कभी गांव में नहीं रहे, इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते कि गुबेर्नियों की ये युवतियां कैसी कमाल की होती हैं! स्वच्छ हवा और अपने बागों के सेब के पेड़ों की छाया में पली ये युवतियां पुस्तकों से ही दीन-दुनिया का ज्ञान प्राप्त करती हैं। एकान्त स्वच्छन्दता और अध्ययन उनमें कच्ची उम्र में ही ऐसी भावनाओं, उद्वेगों और भावावेगों को जन्म दे देते हैं जिनसे हमारी नगर की सुन्दरियां अनजान रहती हैं। ऐसी युवतियों के लिये घण्टियों की टनटन अनूठी बात होती है, पड़ोस के नगर की यात्रा उनके जीवन की बड़ी महत्वपूर्ण घटना बन जाती है और किसी मेहमान का आगमन बहुत समय के लिये तथा कभी-कभी तो जीवन भर के लिये अमिट छाप छोड़ जाता है। जाहिर है कि इनके कुछ अटपटेपन पर कोई हंस सकता है, किन्तु सतही ज्ञान रखनेवाले निरीक्षकों के मज़ाकों से उनके गहन गुणों पर पर्दा नहीं पड़ सकता, जिनमें से मुख्य है – चारित्रिक विशिष्टता, व्यक्तित्व की मौलिकता (individualité), जिसके बिना, जॉन पाल* के मतानुसार, मानवीय महत्ता भी नहीं हो सकती। राजधानियों की नारियों को सम्भवतः अधिक अच्छी शिक्षा मिलती है, किन्तु ऊंचे समाज का रंग-ढंग शीघ्र ही उनकी चारित्रिक विलक्षणता का अन्त कर देता है और उनकी आत्माओं में टोपियों जैसी एकरूपता आ जाती है। उनके बारे में ऐसा कहकर न तो हम अपना कोई फैसला सुना रहे हैं और न उनकी भर्त्सना ही कर रहे हैं, फिर भी जैसे कि एक पुराने टिप्पणीकार ने लिखा है – nota nostra manet.**

---

* रोमानी धारा के जर्मन लेखक जोहन पाउल रीश्तर (१७६३–१८२५) का उपनाम। –सं०

** हमारी टिप्पणी अपनी जगह पर बिल्कुल ठीक है (लातीनी)।

इस बात की कल्पना करना कुछ कठिन नहीं होगा कि हमारी युवतियों के बीच अलेक्सेई ने कैसा प्रभाव पैदा किया होगा। उनके सामने आनेवाला वह पहला इतना उदास और निराशा में डूबा हुआ युवक था, वही पहला ऐसा था जो लुटी हुई खुशियों और मुरझाये हुए यौवन की बातें करता था। इतना ही नहीं, वह खोपड़ी के निशानवाली काली अंगूठी पहनता था। उस गुबेर्निया के लिये यह सब कुछ एकदम नया था। युवतियां उसके लिये पागल हुई जा रही थीं।

किन्तु अंग्रेजी रंग-ढंग के दीवाने की बेटी लीज़ा (या बेत्सी, जैसे कि उसके पिता ग्रिगोरी इवानोविच उसे बुलाते थे) सबसे ज्यादा अलेक्सेई के फेर में पड़ी हुई थी। दोनों के पिता एक दूसरे के यहां कभी आते-जाते नहीं थे, लीज़ा ने अलेक्सेई को अभी तक देखा नहीं था, जबकि जवान पड़ोसिनें सिर्फ उसी की बातें करती रहती थीं। लीज़ा सत्रह साल की थी। उसकी काली आंखें उसके सांवले और बहुत ही प्यारे चेहरे को विशेष सजीवता प्रदान करती थीं। वह अपने पिता की इकलौती और इसीलिये लाड़-प्यार से बिगड़ी हुई बेटी थी। उसकी चंचलता और हर क्षण उसके द्वारा की जानेवाली शरारतों से पिता को बड़ी खुशी होती, मगर जिनसे नियमनिष्ठ मिस जैक्सन बुरी तरह परेशान हो उठती। यह अविवाहिता, चालीस वर्षीया शिक्षिका अपने चेहरे को चिकनाती-चमकाती, भौंहों को रंगती, साल में दो बार 'पामेला'* पढ़ती, दो हज़ार रूबल वार्षिक वेतन पाती और इस "बर्बर रूस" में ऊब के मारे उसकी जान निकलती।

लीज़ा की नौकरानी थी नास्त्या। वह लीज़ा से कुछ बड़ी थी, मगर अपनी मालकिन की तरह ही चंचल। लीज़ा उसको बहुत प्यार करती थी, उसे अपने दिल के सभी राज़ बताती थी और उसके साथ मिलकर अपनी शरारतों के सभी मसूबे बनाती थी। संक्षेप में यह कि प्रिलूचिनो गांव में नास्त्या किसी भी दुखान्ती फ़ांसीसी उपन्यास की विश्वासपात्र सहेली से कहीं अधिक महत्त्व रखती थी।

---

* अंग्रेज़ उपन्यासकार रिचर्डसन के 'पामेला' (१७४१) उपन्यास से अभिप्राय है। —स०

[illegible]

[illegible]

"सो बताओ, क्या सचमुच ही वह प्यारा है?"

बहुत कम से प्यारा कहा जा सकता है कि बहुत ही सुन्दर, [illegible] सरीखा, ऊंचा कद, दोनों गालों पर गुलाब खिले हुए..."

"सच? मगर मेरा तो ऐसा ख्याल था कि उसका चेहरा पीला होगा। तो? कैसा लगा वह तुम्हें? उदास-सा, ख्यालों में डूबा हुआ?"

"क्या कह रही हैं आप? ऐसा मस्तमौला तो मैंने पहले कभी देखा ही नहीं। जाने उसे क्या सूझी, हमारे साथ लुकाछिपी खेलने लगा।"

"तुम लोगों के साथ लुकाछिपी खेलने लगा! यह असम्भव है!"

"बिल्कुल सम्भव है! इतना ही नहीं, वह तो और भी आगे बढ़ गया। जिस किसी को पकड़ लेता, उसे चूमे बिना न छोड़ता!"

"मर्जी तुम्हारी, नास्त्या, लेकिन तुम झूठ बोल रही हो।"

"मर्जी आपकी, मैं झूठ नहीं बोल रही हूं। मैंने खुद बड़ी मुश्किल से उससे पिण्ड छुड़ाया। इसी तरह उसने पूरा दिन हमारे साथ बिताया।"

"मगर सुनने में तो यह आया है कि वह किसी के प्रेम में दीवाना है और किसी दूसरी लड़की की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखता?"

"मालूम नहीं, लेकिन मुझे तो उसने खूब नजर गड़ाकर देखा, कारिन्दे की बेटी तान्या को भी, कोन्बिन की पाशा को भी। हां, यह कहना पाप होगा कि उसने किसी की अवहेलना की, ऐसा शैतान है।"

"बड़े अचम्भे की बात है यह तो! घर में उसके बारे में लोगों की क्या राय है?"

"लोगों का कहना है कि बहुत ही अच्छा रईसज़ादा है वह, बड़ा दयालु और बहुत ही खुशमिजाज। सिर्फ एक ही बुराई है उसमें–लड़कियों के पीछे भागने का बड़ा चसका है उसे। लेकिन मेरे ख्याल

सोचती है? इस तरह वह दोनों ओर से ऊंचे छायादार वृक्षों से ढके रास्ते पर चली जा रही थी कि अचानक एक बढ़िया शिकारी कुत्ता उस पर भूंकने लगा। लीज़ा डरकर चिल्ला उठी। इसी समय ऊंची आवाज़ सुनाई दी, "Tout beau, Sbogar, ici!.."* और झाड़ियों के पीछे से जवान शिकारी सामने आया। "मेरी प्यारी, डरो नहीं," उसने लीज़ा से कहा, "मेरा कुत्ता काटता नहीं।" लीज़ा ने भय से मुक्ति पा ली और तत्काल परिस्थिति से लाभ उठाया। "हुजूर, मैरे को लगत," उसने कुछ भय और कुछ लाज का नाटक करते हुए कहा, "देखत तो कैसो डरावनो, फेर मो पर झपटत।" इसी बीच अलेक्सेई (पाठक ने उसे पहचान लिया होगा) जवान किसान लड़की को एकटक देख रहा था। "अगर डरती हो, तो मैं तुम्हारे साथ-साथ चल सकता हूं," उसने लीज़ा से कहा, "तुम मुझे अपने साथ चलने की इजाज़त देती हो?" – "कौन मना कर सकत?" लीज़ा ने उत्तर दिया, "सड़क सभी की होत, जो चाहे चलत।" – "किस गांव की हो तुम?" – "प्रिलूचिनो की। वासीली लुहार की बेटी, खुम्मियां बटोरन जात" (लीज़ा ने डोरी से लटकती छाल की टोकरी को हिलाया)। "और साहब तुम, तुगीलोवो के होवत?" – "बिल्कुल ठीक," अलेक्सेई ने जवाब दिया, "छोटे साहब का अर्दली हूं मैं।" अलेक्सेई ने बराबरी के नाते बात करनी चाही। किन्तु लीज़ा ने उसकी ओर देखा और हंस पड़ी। "झूठ बोलत," उसने कहा, "ऐसी बुद्दू मति समझत। खूब देखत, तुम खुद साहब होत।" – "तुम ऐसा क्यों समझती हो?" – "सब बातन से।" – "फिर भी?" – "क्या साहब और नौकर में फ़र्क न कर सकत? पहनत-ओढ़त हमार माफ़िक नहीं, बोलत-बतियावत हमार माफ़िक नहीं, कुत्ते को भी हमार माफ़िक नहीं पुकारत।" लीज़ा अलेक्सेई को अधिकाधिक अच्छी लग रही थी। गांव की प्यारी-सुन्दर लड़कियों के मामले में औपचारिकता न बरतने के आदी अलेक्सेई ने उसे बांहों में भरना चाहा। किन्तु लीज़ा उछलकर उससे दूर हट गयी और अपने चेहरे पर ऐसी रुखाई तथा कड़ाई ले आयी कि यद्यपि अलेक्सेई को इससे तनिक हंसी आ गयी, तथापि

* स्बोगार, भौंकना बन्द करो, इधर आओ (फ़ांसीसी)।

बातचीत की और आस्तीन से मुंह ढंकते हुए हंसी। नास्त्या को उन्हें यह भूमिका खूब जची। हां, एक ही मुश्किल का सामना करना पड़ उसने नंगे पांव अहाते में चलने की कोशिश की, किन्तु दूब उसके कोमल पैरों में चुभी और बालू तथा कंकड़-पत्थर तो बर्दाश्त से बाहर लगे। नास्त्या ने इस चीज मे भी उसकी मदद की—उसने लीज़ा के पैरों की माप ली, भागकर त्रोफ़ीम गडरिये के पास खेत में गयी और उससे उसी नाप की छाल की चप्पलें बनाने को कहा। लीज़ा अगले दिन मुंह-अंधेरे जागी। घर के बाकी लोग अभी सो रहे थे। घर के फाटक पर नास्त्या चरवाहे की राह देख रही थी। सिंगी बज उठी और गांव के पशु ज़मींदार की हवेली के पास से गुज़रने लगे। त्रोफ़ीम ने नास्त्या के सामने आकर छाल की रंग-बिरंगी छोटी-छोटी चप्पलों की जोड़ी उसे दे दी और बदले में पचास कोपेक इनाम पाया। लीज़ा ने चुपके से देहातिन का भेस बनाया, मिस जैक्सन के बारे में फुस-फुसाकर नास्त्या को हिदायतें दीं, पिछवाड़े के ओसारे से बाहर निकली और सब्जियों के बगीचे को लांघते हुए खेत की ओर भाग चली।

पूरब में उषा का प्रकाश फैल रहा था और बादलों की सुनहरी पंक्ति सूर्य की ऐसे ही प्रतीक्षा कर रही थी जैसे दरबारी ज़ार के स्वागत को उसकी राह देखते हैं। निर्मल आकाश, सुबह की ताज़गी, शबनम, सुखद पवन और पक्षियों के कलरव ने लीज़ा के हृदय को यौवन के आह्लाद से ओतप्रोत कर दिया। इस बात से डरते हुए कि कहीं जान-पहचान के किसी व्यक्ति से भेंट न हो जाये, वह चल नहीं रही थी, उड़ी जा रही थी। पिता की जागीर की सीमा पर खड़े झुरमुट के निकट पहुंचकर लीज़ा धीरे-धीरे चलने लगी। यहीं उसे अलेक्सेई की बाट जोहनी थी। उसका दिल जोर से धड़क रहा था, यद्यपि वह स्वयं इसका कारण नहीं जानती थी। किन्तु जवानी के दिनों की हमारी शरारतों के साथ अनुभव होनेवाला यही भय तो उनका मुख्य आकर्षण है। लीज़ा ने झुरमुट के धुंधलके में प्रवेश किया। वृक्षों के झुरमुट की गहराई में से दबे-घुटे शोर ने लड़की का स्वागत किया। उसका उल्लास दब गया। धीरे-धीरे वह मधुर कल्पना के वशीभूत हो गयी। वह ... रही थी ... किन्तु कौन यह सही-सही कह सकता है कि ... । सुबह में कोई छ: बजे के करीब सत्रह वर्षीया युवती झुरमुट में ...

सोचती है? इस तरह वह दोनों ओर से ऊंचे छायादार वृक्षों से ढंके रास्ते पर चली जा रही थी कि अचानक एक बढ़िया शिकारी कुत्ता उस पर भूकने लगा। लीज़ा डरकर चिल्ला उठी। इसी समय ऊंची आवाज़ सुनाई दी, "Tout beau, Sbogar, ici! "* और झाड़ियों के पीछे से जवान शिकारी सामने आया। "मेरी प्यारी, डरो नहीं" उसने लीज़ा से कहा, "मेरा कुत्ता काटता नहीं।" लीज़ा ने भय से मुक्ति पा ली और तत्काल परिस्थिति से लाभ उठाया। "हुज़ूर मेरे को लगत," उसने कुछ भय और कुछ लाज का नाटक करते हुए कहा, "देखन तो कैसो डरावनो, फेर मो पर झपटत।" इसी बीच अलेक्सेई (पाठक ने उसे पहचान लिया होगा) जवान किसान लड़की को एकटक देख रहा था। "अगर डरती हो, तो मैं तुम्हारे साथ-साथ चल सकता हूं," उसने लीज़ा से कहा, "तुम मुझे अपने साथ चलने की इजाज़त देती हो?" – "कौन मना कर सकत?" लीज़ा ने उत्तर दिया, "सड़क सभी की होत, जो चाहे चलत।" – "किस गांव की हो तुम?" – "प्रिलूचिनो की। वासीली लुहार की बेटी, खुम्भियां बटोरन जात" (लीज़ा ने डोरी से लटकती छाल की टोकरी को हिलाया)। "और साहब तुम, तुगीलोवो के होवत?" – "बिल्कुल ठीक," अलेक्सेई ने जवाब दिया, "छोटे साहब का अर्दली हूं मैं।" अलेक्सेई ने बराबरी के नाते बात करनी चाही। किन्तु लीज़ा ने उसकी ओर देखा और हंस पड़ी। "झूठ बोलत," उसने कहा, "ऐसी बुद्धू मति समझत। खूब देखत, तुम खुद साहब होत।" – "तुम ऐसा क्यों समझती हो?" – "सब बातन से।" – "फिर भी?" – "क्या साहब और नौकर में फ़र्क़ न कर सकत? पहनत-ओढ़त हमार माफ़िक नहीं, बोलत-बतियावत हमार माफ़िक नहीं, कुत्ते को भी हमार माफ़िक नहीं पुकारत।" लीज़ा अलेक्सेई को अधिकाधिक अच्छी लग रही थी। गांव की प्यारी-सुन्दर लड़कियों के मामले में औपचारिकता न बरतने के आदी अलेक्सेई ने उसे बांहों में भरना चाहा। किन्तु लीज़ा उछलकर उससे दूर हट गयी और अपने चेहरे पर ऐसी रुखाई तथा कड़ाई ले आयी कि यद्यपि अलेक्सेई को इससे तनिक हंसी आ गयी, तथापि

---

* स्बोगार, भौंकना बन्द करो, इधर आओ (फ़्रांसीसी)।

उसे अपना कदम आगे बढ़ाने की जुर्रत नहीं हुई। "अगर साहब आप चाहत कि हमारे बीच दोस्ती बनी रहत," उसने बड़ी शान दिखाते हुए कहा, "तो यो अपनी सुध-बुध न बिसारत।"—"किसने तुम्हें ऐसी अक्लमन्दी की बातें करना सिखाया है?" अलेक्सेई ने ठठाकर हंसते हुए पूछा "मेरी परिचिता, तुम्हारी छोटी मालकिन की नौकरानी नास्त्या ने तो नही? तो कैसे-कैसे रास्तों से शिक्षा का प्रचार हो रहा है!" लीज़ा ने अनुभव किया कि उसके वाक्य उसकी भूमिका की सीमा से बाहर निकल गये है और इसलिये उसने फौरन अपनी भूल सुधारी। "तुम क्या सोचत," वह बोली, "क्या हम मालिक की डेवढ़ी पर कभी न जावत? वहा सभी कुछ देखत, सभी कुछ सुनत। परन," वह कहती गयी, "तुम्हार साथ बतियात रहत, तो खुम्मियां न बटोर पावत। तो साहब, तुम उधर जावत, हम इधर जावत। छिमा मागत." लीज़ा ने जाना चाहा, किन्तु अलेक्सेई ने उसका हाथ पकड़ लिया। "तुम्हारा नाम क्या है, मेरी प्यारी?"—"अकुलीना," लीज़ा ने अलेक्सेई के हाथ से अपनी उगलिया छुड़ाने की कोशिश करते हुए जवाब दिया, "छोड़ भी देत साहब, घर जावन को वख्त होए गयो।"—"तो मेरी मित्र अकुलीना, मैं ज़रूर तुम्हारे पिता, लुहार वासीली के यहा जाऊंगा।"—"यह क्या कहत?" लीज़ा ने चिल्लाकर आपत्ति की, "ईसू के नाम पर ऐसा मत करियो। घरवाले जान जावत कि साहब के साथ कुज मे अकेली बोलत-बतियात रही, तो मेरी सामत आ जावत। बापू, वासीली लुहार, मार-मार जान ले लेवत।"—"लेकिन मैं तो तुमसे ज़रूर फिर मिलना चाहता हूं।"—"किसी और दिन यहा खुम्मिया बटोरन आवत।"—"कब आओगी?"—"कल भी आ सकत।" —"प्यारी अकुलीना, मैंने तुम्हें चूम लिया होता, मगर हिम्मत नही होती। तो कल इसी समय आओगी न?"—"हां, आवत, आवत।" —"छल तो नही करोगी?"—"छल नही करत।"—"कसम खाओ!" —"कसम खावत, पावन सलीब की कसम खावत।"

दोनो युवा लोग अलग हुए, लीज़ा जगल से बाहर निकली, उसने खेत को पार किया, दबे पाव बाग मे पहुची और सीधे खलिहान की ओर भाग गयी जहा नास्त्या उसकी राह देख रही थी। वहां उसने कपड़े बदले, बेख्याली से अपनी बेचैन राज़दान के उत्तर दिये और मेहमानखाने

मे गयी। मेज़ पर नाश्ता लगा हुआ था और चेहरे पर पाउडर की परत चढाये तथा अपनी पतली कमर को कसे हुए अंग्रेज शिक्षिका डबल रोटी के पतले-पतले टुकडे काट रही थी। लीज़ा के पिता ने सुबह की सैर के लिये उसकी प्रशसा की। "सेहत के लिये तडके उठने से ज्यादा फायदेमन्द और कुछ नही," पिता ने राय ज़ाहिर की। उन्होने दीर्घायु के बारे मे अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाओ के हवाले देते हुए कहा कि सौ साल से अधिक समय तक जीनेवाले सभी लोग ऐसे थे जो कभी वोदका नही पीते थे और जाड़ो तथा गर्मियो मे तडके ही उठते थे। लीज़ा पिता की बातो पर कान नही दे रही थी। वह युवा शिकारी के साथ अकुलीना के प्रात मिलन और उसके साथ हुई सारी बातचीत मन ही मन दोहरा रही थी और उसकी आत्मा उसे यातना देने लगी। व्यर्थ ही वह अपने मन को यह कहकर तसल्ली देती थी कि उनकी बातचीत शालीनता के चौखटे से बाहर नही निकली, कि उसकी इस शरारत का कोई बुरा नतीजा नही होगा, मगर उसकी आत्मा की आवाज़ उसकी समझ-बूझ पर हावी हो जाती थी। अगली सुबह को मिलने के लिये दिया गया वचन उसे अधिकाधिक परेशान कर रहा था – उसने लगभग यह तय कर लिया कि बडी गम्भीरता से ली हुई अपनी शपथ को पूरा नही करेगी। किन्तु उसकी व्यर्थ प्रतीक्षा करने के बाद अलेक्सेई लुहार वासीली की बेटी, असली, मोटी-भद्दी और चेचकरू अकुलीना को ढूढने के लिये गाव मे चला जायेगा और इस तरह उसकी चचलतापूर्ण शरारत को भाप जायेगा। इस विचार से लीज़ा का दिल बैठ गया और उसने अगले दिन फिर से अकुलीना के रूप मे कुज मे जाने का निर्णय किया।

दूसरी ओर अलेक्सेई बडे उछाह मे था, वह दिन भर अपनी नवपरिचिता के बारे मे सोचता रहा, रात को भी उस सावली-सलोनी की छवि उसके सपनो मे घूमती रही। पौ फटी ही थी कि वह कपडे पहनकर तैयार हो गया। बन्दूक भरने का समय नष्ट किये बिना ही वह अपने वफादार कुत्ते स्बोगार को साथ लिये हुए मिलन-स्थान की ओर भाग चला। उसके लिये बहुत ही बोझिल प्रतीक्षा का आधा घण्टा बीता। आखिर उसे झाडियो के बीच नीले सराफान की झलक मिली और वह मोहिनी अकुलीना से मिलने के लिये लपका। वह उसके

कृतज्ञतापूर्ण उत्साह के उत्तर में मुस्करायी। किन्तु अलेक्सेई को उ
चेहरे पर तत्क्षण उदासी तथा चिन्ता के लक्षण दिखाई दिये। उ
इसका कारण जानना चाहा। लीज़ा ने यह स्वीकार किया कि
अपनी हरकत को चंचलतापूर्ण मानती है, ऐसा करने के लिये पछ
है, कि आज अपने वादे को पूरा करना चाहती थी, कि उ
आज का मिलन अन्तिम होगा, कि वह इस परिचय का, जिसका
अच्छा परिणाम नही होगा, अन्त कर देना चाहती है। जाहिर है
यह सब कुछ देहाती भाषा मे कहा गया था, किन्तु एक साधारण लड़
के ऐसे असाधारण विचारो और भावो ने उसे आश्चर्यचकित कर दिय
उसने अकुलीना का ऐसा इरादा बदलवाने के लिये अपनी पूरी वा
पटुता का उपयोग किया, उसे यकीन दिलाया कि उसके मन में क
पाप-कपट नही, वचन दिया कि वह उसे कभी पश्चाताप का अव
नही देगा, उसकी हर बात मानेगा, उसने उसकी मिन्नत-समाज
की कि वह बेशक एक दिन छोड़कर या हफ्ते में दो बार ही एका
मे उससे मिलने की खुशी से उसे वंचित न करे। वह सच्ची अनुरा
भाषा मे यह सब कह रहा था और इस क्षण वास्तव में ही पूरी तर
से प्रेम मे डूबा हुआ था। लीज़ा चुपचाप उसकी बाते सुन रही थी
"तो मो को ऐसो वचन देवत," आखिर उसने कहा, "कि तुम कभ
मो को गाव मे ढूढन नही जात, वा मोरे बावत किसी से पूछन
फिरत। ऐसो वचन भी देवो कि जो मिलन हम नियत करत, वा के
अतिरिक्त मिलन न करन चाहत।" अलेक्सेई ने पवित्र सलीब की
कसम खानी चाही, किन्तु उसने मुस्कराकर उसे मना कर दिया
"कसम काहे खावत," वह बोली, "वचन देवत, इतना बहुत होवत।"
इसके बाद वे दोनो जगल मे एकसाथ घूमते हुए मैत्रीपूर्ण ढग से तब
तक बातचीत करते रहे, जब तक लीज़ा ने उससे यह नही कहा कि
उसके जाने का वक्त हो गया। वे एक दूसरे से विदा हुए। अकेला
रह जाने पर अलेक्सेई यह नही समझ पा रहा था कि किस तरह एक
साधारण किसान लड़की ने दो भेंटो में ही उसे सचमुच अपने वश
में कर लिया है। अकुलीना के साथ उसके सम्बन्धों में नवीनता का
सुख था और यद्यपि इस अजीब किसान लड़की द्वारा पहले से लगा दी
गयी शर्तें उसके लिये बड़ी बोझिल थी, तथापि अपना वचन तोड़ने का

विचार तक उसके दिमाग मे नही आया। बात यह है कि भयानक ढंग की अंगूठी पहनने, रहस्यपूर्ण पत्र-व्यवहार करने और टूटे दिल की निराशा का दिखावा करने के बावजूद अलेक्सेई भला और भावुक युवक था, निर्मल-निश्छल दिल रखता था जो निष्कपट आनन्द से रस-विभोर हो सकता था।

अगर मैं अपने मन की बात सुनता, तो निश्चय ही इन दोनो युवा लोगो के मिलनो, एक दूसरे के प्रति उनके बढते झुकाव और आपसी विश्वास, उनके मनबहलावों और बातचीत का वर्णन करता। किन्तु जानता हूं कि मेरे अधिकतर पाठको ने मेरी ऐसी खुशी का रस न लिया होता। कुल मिलाकर, ऐसे ब्योरे नीरस होगे और इसलिये मैं संक्षेप मे इतना कहकर ही उन्हे छोड देता हू कि दो महीने बीतते न बीतते हमारा अलेक्सेई तो पूरी तरह प्रेम-दीवाना हो गया, लीज़ा पर भी प्रेम का रंग कुछ कम नही चढा था, यद्यपि वह उसे अधिक प्रकट नही होने देती थी। वे दोनो अपने वर्तमान से सुखी थे और भविष्य की कम चिन्ता करते थे।

वे दोनो अटूट प्रेम-बन्धनो मे कस गये है, यह विचार अक्सर उनके दिमाग में कौंध जाता, किन्तु उन्होंने कभी एक दूसरे के सामने इसकी चर्चा नहीं की। कारण स्पष्ट था – अलेक्सेई अपनी प्यारी अकुलीना के प्रति चाहे कितना ही अनुराग अनुभव क्यो न करता था, तो भी अपने और एक गरीब किसान लडकी के बीच विद्यमान दूरी को भूलने मे असमर्थ था। दूसरी ओर लीज़ा जानती थी कि इन दोनो के पिता एक दूसरे से कितनी अधिक घृणा करते हैं और इसलिये उसे उनके बीच आपसी सुलह की कोई आशा नही थी। इसके अलावा उसके हृदय की गहराई मे कही एक चचल और रोमानी भावना भी छिपी हुई थी कि वह तुगीलोवो के जमीदार को प्रिलूचिनो के लुहार की बेटी के पैरो पर झुका देखे। अचानक एक महत्त्वपूर्ण घटना हो गयी, और उनके आपसी सम्बन्धो मे मोड आते-आते रह गया।

एक साफ-सुहानी और ठण्डी सुबह को (जैसी कि हमारी रूसी पतझर में बहुत होती हैं) इवान पेत्रोविच बेरेस्तोव घोडे पर सवार होकर सैर को निकला। कही जरूरत न पड जाये, यह बात ध्यान मे रखते हुए उसने छ शिकारी कुत्ते, सईस और खटखटे बजानेवाले कुछ

6*

दास-छोकरों को भी अपने साथ ले लिया। इसी समय ग्रिगोरी इवानोविच मूरोम्स्की ने भी सुहाने मौसम के रंग में आकर अपनी दुमकटी घोड़ी पर ज़ीन कसने का आदेश दिया और उसे दुलकी चाल से दौड़ाता हुआ अपनी अंग्रेज़ी ढंग की जागीर को लांघ चला। जंगल के निकट पहुंचने पर उसे अपना पड़ोसी दिखाई दिया जो लोमड़ी की खाल का अस्तर लगी लम्बी जाकेट पहने बड़े गर्व से घोड़े पर बैठा उस खरगोश का इन्तज़ार कर रहा था जिसे दास-लड़के चीख़-चिल्लाकर और खटखटे बजाकर झाड़ियों से बाहर निकाल रहे थे। यदि ग्रिगोरी इवानोविच इस भेंट की पूर्वकल्पना कर सकता, तो उसने अपनी घोड़ी को दूसरी दिशा में मोड़ दिया होता। किन्तु वह बिल्कुल अप्रत्याशित ही बेरेस्तोव के सामने जा निकला और उसने अचानक अपने को पिस्तौल की गोली के निशाने की दूरी पर पाया। अब तो कोई चारा न था – सुशिक्षित यूरोपीय की भांति वह अपने शत्रु के पास गया और उसने ढंग से उसका अभिवादन किया। बेरेस्तोव ने भी ज़ंजीर से बंधे उस भालू की भांति, जिसे उसका मालिक महानुभावों को सिर झुकाने का आदेश देता है, बड़ी शिष्टता से उत्तर दिया। इसी समय खरगोश जंगल से निकलकर खेत में भाग चला। बेरेस्तोव और सईस गला फाड़कर चिल्लाये, उन्होंने कुत्तों को उसके पीछे छोड़ दिया और अपने घोड़ों को उसके पीछे सरपट दौड़ाने लगे। मूरोम्स्की की घोड़ी, जो कभी शिकार पर नहीं गयी थी, बुरी तरह डर गयी और ताबड़तोड़ भागने लगी। अपने को बढ़िया घुड़सवार माननेवाले मूरोम्स्की ने उसकी रासें ढीली छोड़ दी और मन ही मन इस बात से खुश हुआ कि उसे अप्रिय बातचीत से निजात मिल गयी। किन्तु घोड़ी उस गड्ढे तक सरपट दौड़ने के बाद, जिसकी ओर उसका पहले ध्यान नहीं गया था, अचानक एक ओर को मुड़ गयी और मूरोम्स्की नीचे जा गिरा। पाले की मारी सख्त ज़मीन पर वह बुरी तरह गिरा और वहीं पड़ा हुआ अपनी दुमकटी घोड़ी को कोसता रहा, जो मानो उसी समय होश में आकर रुकी जब उसने अपने को सवार के बिना अनुभव किया। इवान पेत्रोविच सरपट घोड़ा दौड़ाता हुआ उसके पास आया और यह पूछा कि उसे कहीं चोट तो नहीं लगी। इसी बीच सईस अपराधी घोड़ी की लगाम थामे हुए उसे वहां ले आया। उसने मूरोम्स्की को घोड़े पर सवार होने

मे मदद दी और बेरेस्तोव ने उसे अपने यहा चलने को आमन्त्रित किया। मूरोम्स्की इन्कार नही कर पाया, क्योकि वह उसके प्रति कृतज्ञता अनुभव कर रहा था। इस तरह बेरेस्तोव खरगोश का शिकार करके और अपने विरोधी को घायल तथा लगभग युद्ध-बन्दी बनाये हुए विजेता की भाति घर लौटा।

नाश्ता करते हुए दोनों पड़ोसी काफी दोस्ताना ढग से बातचीत करते रहे। मूरोम्स्की ने बेरेस्तोव के सामने यह स्वीकार कर लिया कि चोट के कारण वह घोडी पर चढकर घर जाने मे असमर्थ है और इसलिये उसने उससे घोडागाडी जुतवा देने का अनुरोध किया। बेरेस्तोव उसे अपने घर के दरवाजे तक विदा करने आया और मूरोम्स्की उससे इस बात का वचन लिये बिना घर को रवाना नही हुआ कि अगले दिन वह अपने बेटे अलेक्सेई इवानोविच के साथ प्रिलूचिनो में आयेगा और मित्र की तरह दोपहर का भोजन करेगा। इस तरह दुमकटी डरपोक घोडी की बदौलत पुरानी और गहरी जडवाली दुश्मनी लगभग खत्म हो गयी।

लीज़ा भागती हुई बाहर आयी। "यह क्या मामला है, पापा?" उसने हैरान होते हुए पूछा। "आप लगडा क्यो रहे हैं? आपकी घोडी कहा है? यह घोडागाडी किसकी ले आये?" – "तुम इस सब का तो अनुमान नहीं लगा सकोगी, my dear!"* ग्रिगोरी इवानोविच ने उसे उत्तर दिया और जो कुछ हुआ था, सब कह सुनाया। लीज़ा को अपने कानों पर विश्वास नही हो रहा था। इससे पहले कि लीज़ा सम्भल पाती, उसने यह भी कह दिया कि अगले दिन बेरेस्तोव बाप-बेटा उनके घर पर दोपहर का भोजन करेगे। "यह आप क्या कह रहे हैं!" लीज़ा ने कहा और उसका चेहरा पीला पड गया। "बेरेस्तोव बाप-बेटा कल हमारे यहा दोपहर का भोजन करेगे! नही, पापा, आप चाहे कुछ भी क्यो न कहे, मैं तो किसी हालत मे भी उनके सामने नही आऊगी!" – "तुम क्या पागल हो गयी हो?" पिता ने आपत्ति की। "कब से तुम ऐसी लजीली-शर्मीली हो गयी हो या रोमानी नायिका की भाति उनके प्रति खानदानी नफरत महसूस करती हो?

* मेरी प्यारी (अग्रेज़ी)।

बस यह बेवकूफी की बात खत्म करो। – "नहीं, पापा, मैं किसी भी हालत में किसी भी कीमत पर बेरेस्तोवों के सामने नहीं आऊंगी।" ग्रिगोरी इवानोविच ने कंधे झटक दिये तथा उसके साथ और बहस नहीं की, क्योंकि पिता को मालूम था कि विवाद करने में कोई फायदा नहीं होगा और इतनी बढ़िया सैर के बाद आराम करने को अपने कमरे में चला गया।

लीजावेता ग्रिगोर्येव्ना ने अपने कमरे में जाकर नास्त्या को बुलवा भेजा। दोनों देर तक अगले दिन आनेवाले मेहमानों के बारे में बातचीत करती रहीं। एक सुसंस्कृत और कुलीन युवती के रूप में अपनी अकुलीना को पहचान लेने पर अलेक्सेई क्या सोचेगा? उसके आचार-विचार, उसके रंग-ढंग और समझ-बूझ के बारे में उसकी क्या राय बनेगी? दूसरी ओर लीज़ा यह देखने को भी बहुत उत्सुक थी कि ऐसी अप्रत्याशित भेंट से उसके मन पर क्या छाप पड़ेगी। अचानक उसके दिमाग में एक विचार कौंध गया। उसने उसी समय नास्त्या को वह विचार बताया। दोनों को एक बढ़िया सूझ के रूप में इस विचार से बेहद खुशी हुई और उन्होंने तय किया कि जरूर ही इसे अमली शक्ल देंगी।

अगले दिन नाश्ते के समय ग्रिगोरी इवानोविच ने अपनी बेटी से पूछा कि क्या वह बेरेस्तोव पिता-पुत्र के सामने न आने का अपना इरादा उसी तरह बनाये हुए है। "पापा," लीज़ा ने उत्तर दिया, "यदि आप ऐसा ही चाहते हैं, तो मैं उनकी खातिरदारी के लिये सामने आ जाऊंगी, लेकिन एक शर्त पर। मैं उनके सामने किसी भी रूप में क्यों न आऊं, चाहे कुछ भी क्यों न करूं, आप मुझे कुछ भी भला-बुरा नहीं कहेंगे, हैरानी या नाराजगी का कोई भाव व्यक्त नहीं करेंगे।" – "फिर कोई शरारत सूझी लगती है तुम्हें!" ग्रिगोरी इवानोविच ने हंसते हुए कहा। "अच्छी बात है, अच्छी बात है, जो चाहो वही करो, मेरी काली आंखोंवाली शरारती चिड़िया।" इतना कहकर उसने बेटी का माथा चूमा और लीज़ा तैयारी करने के लिये भाग गयी।

दिन के ठीक दो बजे घर की बनी घोड़ागाड़ी, जिसमें छः घोड़े जुते हुए थे, अहाते में दाखिल हुई और बहुत ही हरी घासवाले चक के पास आकर रुकी। मूरोम्स्की के दो बावर्दी नौकरों की सहायता से

बूढा बेरेस्तोव ओमारे की सीढियो पर चढा। उसके पीछे-पीछे ही घोडे पर सवार उसका बेटा भी पहुच गया और दोनो ने एक साथ भोजन-कक्ष मे प्रवेश किया, जहा पहले से ही मेज लगा दी गयी थी। मूरोम्स्की ने बहुत ही स्नेह से अपने पडोसियो का आदर-सत्कार किया, भोजन के पहले बाग और जन्तुशाला देखने का सुझाव दिया तथा खूब अच्छी तरह से साफ की गयी एव बजरी बिछी पगडडियो से उन्हे अपने साथ ले चला। बूढे बेरेस्तोव को मन ही मन इस बात का अफसोस हो रहा था कि इस व्यर्थ की सनक के फेर मे पडकर इतना श्रम और समय नष्ट किया गया है, किन्तु वह शिष्टतावश चुप रहा। बेटे को न तो दात से कौडी पकडनेवाले अपने जमीदार बाप का असन्तोष पसन्द था और न ही आत्मतुष्ट तथा अग्रेजी ढग के दीवाने का उत्साह। वह तो बडी बेसब्री से गृह-स्वामी की बेटी के आने का इन्तजार कर रहा था जिसके बारे मे बहुत कुछ सुन चुका था। यद्यपि उसके दिल मे, जैसा कि हम जानते है, कोई और बसी हुई थी, तथापि सुन्दर युवती तो हमेशा ही उसकी कल्पना को गुदगुदा सकती थी।

तीनो लौटकर मेहमानखाने मे बैठ गये – दोनो बुजुर्ग अपने पुराने वक्तो तथा सेना के जमाने के किस्से-कहानियो को याद करने लगे और अलेक्सेई यह सोचने लगा कि लीजा की उपस्थिति मे वह क्या भूमिका अदा करे। उसने यह निर्णय किया कि उत्साह के बिना वह बिल्कुल खोया-खोया सा बैठा रहेगा और उसने अपने को इसी के लिये तैयार कर लिया। दरवाजा खुला और उसने ऐसी उदासीनता तथा लापरवाही से अपना सिर घुमाया कि बहुत ही नाज-नखरे वाली सुन्दरी का दिल भी धडक उठे। किन्तु उसकी बदकिस्मती थी कि लीजा की जगह बूढी मिस जैक्सन भीतर आयी – पाउडर थोपे, चोली से कमर कसे, शिष्टता से नजर झुकाये। चुनाचे अलेक्सेई ने जो शानदार मोर्चेबन्दी की थी, वह बेकार हो गयी। वह अपने को फिर से तैयार नही कर पाया था कि दरवाजा पुन खुला और इस बार लीजा भीतर आयी। सभी उठकर खडे हो गये। पिता ने अतिथियो से उसका परिचय करवाना चाहा, किन्तु सहसा बीच मे ही रुक गया और उसने अपनी हसी पर काबू पाने के लिये होठ भीच लिये लीजा, उसकी सावली-सलोनी लीजा कानो तक पाउडर थोपे थी, मिस जैक्सन से भी ज्यादा अपनी

भौंहें भी रंगी थीं, उसके अपने बालों से अधिक सुनहरे बाल लुई चौदहवें की विग की भांति महक रहे थे. à l'imbecile* आस्तीनें Madame de Pompadour** के स्कर्ट की चुन्नटों की भांति चुन्नी और दायें-बायें मटक रही थीं, कमर फीतों से ऐसे कसी थी कि अंग्रेजी के "एक्स" अक्षर जैसी लगती थी और उसकी मां के अभी तक गिरवी न रखे गये सभी हीरे उसकी उंगलियों और गर्दन पर तथा कानों में चमक रहे थे। अलेक्सेई इस चमकती-दमकती, हास्यास्पद कुलीन युवती के रूप में अपनी अकुलीना को नहीं पहचान पाया। अलेक्सेई के पिता ने लीज़ा का हाथ चूमा और पिता के बाद उसने भी भारी मन से ऐसा ही किया। जब उसने अपने होंठों को उसकी गोरी उंगलियों से छुआया, तो उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वे सिहर उठी थीं। इसी समय उस छोटे-से पांव पर भी उसकी नज़र पड़ी जिसे जान-बूझकर बेहद फ़ैशनदार और शोख जूते के प्रदर्शन के लिये आगे बढ़ाया गया था। इसने उसे उसकी बाकी वेश-भूषा के कारण पैदा हुई अरुचि पर काबू पाने में मदद दी। जहां तक पाउडर और भौंहों को रंगने का सवाल था, तो यह कहना चाहिए कि अपने हृदय की सरलता के कारण अलेक्सेई ने पहली नज़र में उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और बाद को भी उन्हें भाप नहीं पाया। ग्रिगोरी इवानोविच को अपना दिया हुआ वचन याद था और इसलिये अपने आश्चर्य को छिपाये रखने का प्रयास किया। किन्तु बेटी की शरारत ने पिता के दिल को ऐसे गुदगुदा दिया था कि बड़ी मुश्किल से ही वह अपने को वश में रख पा रहा था। रही नकचढ़ी मिस जैक्सन, तो उसे हंसने की सूझ ही नहीं सकती थी। उसने अनुमान लगा लिया था कि रंग और पाउडर उसकी अलमारी से उड़ाये गये हैं और इसलिये उसके चेहरे की बनावटी सफेदी के बीच से गुस्से की लाली उभर आयी थी। मिस जैक्सन ने इस शरारती लड़की को बेहद गुस्से की नज़रों से देखा, जिसने सफ़ाई पेश करने का काम किसी दूसरे वक्त पर टालते हुए

* मूर्खों जैसी, फ़ांस में कभी ऐसी आस्तीनों का फ़ैशन था (फ़्रांसीसी)।

** मदाम द पोम्पादूर फ़्रांसीसी सम्राट लुई १५वें की प्रेयसी और विशेष स्नेह-पात्र थी (फ़्रांसीसी)।

यह जाहिर किया मानो उनकी तरफ उसका ध्यान ही न गया हो।

सभी खाने की मेज़ पर बैठे। अलेक्सेई खोये-खोये और विचारों में डूबे हुए व्यक्ति की भूमिका निभाता रहा। लीज़ा बनती रही, दांतों के बीच से गुनगुनाते हुए केवल फ़ांसीसी में ही बोलती रही। मुरोम्स्की अपनी बेटी के ऐसा करने के उद्देश्य को न समझ पाते हुए बार-बार उसकी ओर देखता था और उसे यह सब कुछ बहुत मनोरंजक प्रतीत हो रहा था। मिस जैक्सन गुस्से में भुनभुनाती हुई खामोश थी। केवल इवान पेत्रोविच अपने को मानो घर में अनुभव कर रहा था, उसने डटकर दो के बराबर भोजन किया, छककर शराब पी, अपने मज़ाकों पर खुद हंसा, अधिकाधिक मैत्रीपूर्ण ढंग से बातें करता और ठहाके लगाता रहा।

आखिर भोजन समाप्त होने पर सब उठे। मेहमान चले गये, ग्रिगोरी इवानोविच खुलकर हंसा और बेटी से पूछताछ करने लगा। "उनका इस तरह उल्लू बनाने की तुम्हें क्या सूझी?" पिता ने बेटी से पूछा। "वैसे एक बात कहूं, पाउडर तुम पर फबता है। नारियों के साज-सिंगार के रहस्यों की गहराई में मैं नहीं जाऊंगा, किन्तु तुम्हारी जगह मैं खुद भी पाउडर लगाने लगता। ज़ाहिर है कि इतना अधिक नहीं, हल्का-सा।" अपनी इस तरकीब की सफलता से लीज़ा बहुत ही खुश थी। उसने पिता के गले में बांहें डाल दीं, यह वचन दिया कि उनकी सलाह पर विचार करेगी और बेहद झल्लायी हुई मिस जैक्सन को मनाने के लिये भाग गयी, जो बड़ी मुश्किल से ही दरवाज़ा खोलने और उसके द्वारा दी जानेवाली सफ़ाई सुनने को तैयार हुई। लीज़ा ने बताया कि अपरिचितों के सामने अपनी काली-कलूटी शक्ल लेकर आते हुए उसे शर्म महसूस हुई और यह कि वह उससे अनुमति लेने की हिम्मत नहीं कर पायी। उसे विश्वास था कि दयालु और प्यारी मिस जैक्सन उसे क्षमा कर देगी आदि, आदि। यह विश्वास हो जाने पर कि लीज़ा ने उसकी खिल्ली उड़ाने के लिये ऐसा नाटक नहीं किया था, मिस जैक्सन शान्त हो गयी और सुलह की निशानी के तौर पर उसने लीज़ा को अंग्रेज़ी पाउडर-क्रीम की एक शीशी भेंट की, जिसे लीज़ा ने हार्दिक कृतज्ञता जताते हुए स्वीकार किया।

पाठक ने यह अनुमान लगा लिया होगा कि अगले दिन लीज़ा

सुबह वे मधुर-मिलन के लिये जल्दी से कुंज में पहुंची। "साहब, सुन कल हमार मालिक के घर गयो?" उसने भेंट होते ही अलेक्सेई से कहा, "हमार छोटी मालकिन कैसी लगत रही?" अलेक्सेई ने जवाब में कहा कि उसने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया। "बुरी बात होवत," लीजा ने राय जाहिर की। "वह किसलिये?" अलेक्सेई ने जानना चाहा। "यही कारण, हम तुम से पूछन चाहत, क्या लोग-बाग सच कहत."—"क्या कहते हैं लोग-बाग?" "सब कहत रहत कि छोटी मालकिन और हमारी सकल आपस में मिलत-जुलत?"—"कैसी बेहूदा बात है यह! तुम्हारे सामने तो वह बिल्कुल भूतनी-सी लगती है।"—"ओह, साहब, ऐसा बोलत पाप लगत। हमार छोटी मालकिन ऐसी गोरी-गोरी, ऐसी बांकी-छैली होत! हम क्या बराबरी कर सकत मालकिन की!" अलेक्सेई ने कसम खाकर कहा कि वह सभी गोरी-चिट्टी कुलीनाओं से बढ़-चढ़कर है और उसे पूरी तरह शान्त करने के लिये उसकी मालकिन का ऐसा खाका खींचने लगा कि लीज़ा खूब ठठाकर हंसी। "परन्तु," उसने गहरी उसांस छोड़ते हुए कहा, "मालकिन पर बेसक हंसी आवत, तो भी हम उसके सामने मूढ़-गवार होत।"—"अरे!" अलेक्सेई ने कहा, "यह भी कोई दुखी होने की बात है! कहो तो मैं तुम्हें अभी पढ़ाना शुरू कर सकता हूं।"—"हां," लीज़ा बोली, "कोसिस क्यों न करके देखत?"—"तो मेरी प्यारी, लाओ, हम अभी यह शुरू कर दें।" वे दोनों बैठ गये। अलेक्सेई ने अपनी जेब से पेंसिल और नोटबुक निकाल ली। अकुलीना ने ऐसी आश्चर्यजनक तेज़ी से वर्णमाला सीख ली कि अलेक्सेई उसकी समझदारी पर हैरान हुए बिना न रह सका। अगली सुबह को लीज़ा ने लिखने की कोशिश करने की इच्छा प्रकट की। शुरू में तो पेंसिल ने उसकी बात नहीं मानी, किन्तु कुछ मिनट बाद वह ढंग से अक्षर लिखने लगी। "यह तो कमाल है!" अलेक्सेई ने कहा। "हमारी पढ़ाई तो लेंकास्टर की विधि* से भी अधिक तेज़ी से चल रही है।" वास्तव में ही तीसरे पाठ के समय अकुलीना अक्षर जोड़-जोड़कर 'बोयार की बेटी नताल्या'**

* शिक्षा की उन दिनों रूस में अत्यधिक लोकप्रिय अंग्रेज शिक्षाशास्त्री लेंकास्टर (१७७१–१८३८) की विधि की ओर संकेत है।—सं०

** रूसी लेखक न० करामज़िन की उपन्यासिका।—सं०

तरह घनिष्ठता बढ़ायी जाये जिसे उसने उस चिर स्मरणीय दिन के बाद नहीं देखा था। ऐसा प्रतीत होता था कि वे एक दूसरे को बहुत पसन्द नहीं आये थे। कम से कम अलेक्सेई तो फिर कभी प्रिलूचिनो नहीं आया था और इवान पेत्रोविच जब कभी उनके यहां आने की कृपा करता था, तो लीजा हमेशा अपने कमरे में चली जाती थी। किन्तु ग्रिगोरी इवानोविच ने अपने मन में सोचा कि अगर अलेक्सेई हर दिन मेरे यहां आने लगे, तो बेटी के मन में उसके लिये जगह बन जायेगी। ऐसा ही होता है, समय सब कुछ ठीक कर देता है।

अपने इरादे की कामयाबी के बारे में इवान पेत्रोविच को कम परेशानी थी। उसी शाम उसने बेटे को अपने कमरे में बुलाया, पाइप सुलगा ली और कुछ देर चुप रहने के बाद बोला, "क्या बात है, अल्योशा, तुम बहुत समय से फौज में जाने की बात नहीं करते हो? या फिर हुस्सारों की वर्दी अब तुम्हें अपनी ओर नहीं खींचती?."–"नहीं, ऐसी बात नहीं है, पिता जी," अलेक्सेई ने बड़े आदर से उत्तर दिया, "मैंने देखा कि आपको हुस्सारों की पलटन में मेरा जाना पसन्द नहीं है। ऐसी हालत में आपकी इच्छा को ध्यान में रखना मेरा कर्त्तव्य है।"–"यह बहुत अच्छी बात है," इवान पेत्रोविच ने उत्तर दिया, "देख रहा हूं कि तुम बड़े आज्ञाकारी बेटे हो। मुझे इससे बड़ा सन्तोष हुआ। मैं भी तुम्हें किसी तरह से मजबूर नहीं करना चाहता, अभी सरकारी नौकरी करने के लिये विवश नहीं करूंगा। हां, फिलहाल, तुम्हारी शादी जरूर कर देना चाहता हूं।"

"किसके साथ, पिता जी?" अलेक्सेई ने हैरान होकर पूछा।

"लीजावेता ग्रिगोर्येव्ना मूरोम्स्काया के साथ," इवान पेत्रोविच ने जवाब दिया। "लड़की खासी अच्छी है, ठीक है न?"

"पिता जी, मैं तो फिलहाल शादी करने की सोच ही नहीं रहा हूं।"

"तुम नहीं सोचते हो, इसीलिये मैंने सोचा है और फैसला कर लिया है।"

"आप जैसा चाहें, लेकिन लीज़ा मूरोम्स्काया मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है।"

"बाद में पसन्द करने लगोगे। आदी हो जाओगे, प्यार भी हो जायेगा।"

"मुझे ऐसा नही लगता कि मैं उसे सुखी बना सकूगा।"

"तुम्हे जरूरत नही उसके सुख की चिन्ता मे घुलने की। तो? तो ऐसे ही तुम आदर करते हो अपने पिता की इच्छा का? बहुत खूब!"

"आप चाहे कुछ भी क्यों न कहे, मैं शादी करना नही चाहता और नही करूगा।"

"तुम शादी करोगे, नही तो तुम्हे मेरा अभिशाप लगेगा। भगवान साक्षी है, अपनी जागीर को मैं बेच डालूगा, सारा पैसा उडा डालूगा और एक कौड़ी भी तुम्हे नही दूगा! सोच-विचार करने के लिये तुम्हे तीन दिन देता हूं और इस बीच तुम मेरी नजरो से दूर ही रहना।"

अलेक्सेई जानता था कि अगर पिता के दिमाग मे कोई बात घुम जाती है, तो उसे, तारास स्कोतीनिन* के शब्दो मे "कील ठोककर बाहर नही निकाला जा सकता।" किन्तु अलेक्सेई मे भी अपने बाप का खून था, उसे भी उसकी ज़िद्द से टालना आसान नही था। वह अपने कमरे मे जाकर पिता के अधिकार की सीमा, लीजावेता ग्रिगोर्येव्ना, उसे भिखारी बना देने की पिता की गम्भीर धमकी और अकुलीना के बारे मे सोचने लगा। पहली बार उसने साफ तौर पर यह देखा कि वह उसे बहुत प्यार करता है। किसान लडकी से शादी करने और अपनी मेहनत की कमाई पर जीने का रोमानी विचार उसके मस्तिष्क मे आया। अपने ऐसे निर्णायक कदम के बारे मे वह जितना अधिक सोचता था, उसे वह उतना ही अधिक समझदारी का प्रतीत होता था। पिछले कुछ समय से वर्षा के कारण उनका प्रेम-मिलन नही होता था। उसने बहुत साफ-साफ लिखावट और हृदय के दहकते उद्‌गारो के साथ अकुलीना को यह लिखा कि कैसे उनके सुख पर भयानक बिजली गिरनेवाली है और साथ ही विवाह का प्रस्ताव भी कर दिया। इस पत्र को वह फौरन पत्र-पेटी यानी कोटर मे रख आया और पूरी तरह सन्तोष अनुभव करते हुए बिस्तर पर चला गया।

अगले दिन वह पक्का इरादे बनाये हुए तडके ही मूरोम्स्की के यहा पहुचा ताकि खुलकर बात कर ले। उसे आशा थी कि वह हृदय की उदारता की दुहाई देकर लीजावेता के पिता को अपने पक्ष मे कर

* फोनवीज़िन की 'घोंघावसन्त' सुखान्ती नाटक का एक ज़मीदार पात्र, मूर्ख और खरदिमाग। —स०

तरह घनिष्ठता बढायी जाये जिसे उसने उस चिर स्मरणीय दिन के बाद नही देखा था। ऐसा प्रतीत होता था कि वे एक दूसरे को बहुत पसन्द नही आये थे। कम से कम अलेक्सेई तो फिर कभी प्रिलूचिनो नही आया था और इवान पेत्रोविच जब कभी उनके यहा आने की कृपा करता था, तो लीज़ा हमेशा अपने कमरे में चली जाती थी। किन्तु ग्रिगोरी इवानोविच ने अपने मन मे सोचा कि अगर अलेक्सेई हर दिन मेरे यहा आने लगे, तो बेत्सी के मन में उसके लिये जगह बन जायेगी। ऐसा ही होता है, समय सब कुछ ठीक कर देता है।

अपने इरादे की कामयाबी के बारे में इवान पेत्रोविच को कम परेशानी थी। उसी शाम उसने बेटे को अपने कमरे में बुलाया, पाइप सुलगा ली और कुछ देर चुप रहने के बाद बोला, "क्या बात है, अल्योशा, तुम बहुत समय से फौज मे जाने की बात नही करते हो? या फिर हुस्सारो की वर्दी अब तुम्हे अपनी ओर नही खीचती?."– "नही, ऐसी बात नही है, पिता जी," अलेक्सेई ने बडे आदर से उत्तर दिया, "मैंने देखा कि आपको हुस्सारो की पलटन में मेरा जाना पसन्द नही है। ऐसी हालत मे आपकी इच्छा को ध्यान में रखना मेरा कर्त्तव्य है।"– "यह बहुत अच्छी बात है," इवान पेत्रोविच ने उत्तर दिया, "देख रहा हू कि तुम बडे आज्ञाकारी बेटे हो। मुझे इससे बडा सन्तोष हुआ। मैं भी तुम्हे किसी तरह से मजबूर नही करना चाहता, अभी सरकारी नौकरी करने के लिये विवश नही करूगा। हा, फिलहाल, तुम्हारी शादी जरूर कर देना चाहता हू।"

"किसके साथ, पिता जी?" अलेक्सेई ने हैरान होकर पूछा।

"लीज़ावेता ग्रिगोर्येव्ना मूरोम्स्काया के साथ," इवान पेत्रोविच ने जवाब दिया। "लडकी खासी अच्छी है, ठीक है न?"

"पिता जी, मैं तो फिलहाल शादी करने की सोच ही नही रहा हू।"

"तुम नही सोचते हो, इसीलिये मैंने सोचा है और फैसला कर लिया है।"

"आप जैसा चाहें, लेकिन लीज़ा मूरोम्स्काया मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है।"

"बाद मे पसन्द करने लगोगे। आदी हो जाओगे, प्यार भी हो ..."

"मुझे ऐसा नही लगता कि मैं उसे सुखी बना सकूगा।"

"तुम्हे जरूरत नही उसके सुख की चिन्ता मे घुलने की। तो? तो ऐसे ही तुम आदर करते हो अपने पिता की इच्छा का? बहुत खूब!"

"आप चाहे कुछ भी क्यों न कहे, मैं शादी करना नहीं चाहता और नही करूगा।"

"तुम शादी करोगे, नही तो तुम्हे मेरा अभिशाप लगेगा। भगवान साक्षी है, अपनी जागीर को मैं बेच डालूगा, सारा पैसा उडा डालूगा और एक कौडी भी तुम्हे नही दूगा! सोच-विचार करने के लिये तुम्हे तीन दिन देता हू और इस बीच तुम मेरी नज़रो से दूर ही रहना।"

अलेक्सेई जानता था कि अगर पिता के दिमाग मे कोई बात घुस जाती है, तो उसे, तारास स्कोतीनिन* के शब्दो मे "कील ठोककर बाहर नही निकाला जा सकता।" किन्तु अलेक्सेई मे भी अपने बाप का खून था, उसे भी उसकी ज़िद से टालना आसान नहीं था। वह अपने कमरे मे जाकर पिता के अधिकार की सीमा, लीज़ावेता ग्रिगोर्येव्ना, उसे भिखारी बना देने की पिता की गम्भीर धमकी और अकुलीना के बारे में सोचने लगा। पहली बार उसने साफ तौर पर यह देखा कि वह उसे बहुत प्यार करता है। किसान लडकी से शादी करने और अपनी मेहनत की कमाई पर जीने का रोमानी विचार उसके मस्तिष्क मे आया। अपने ऐसे निर्णायक कदम के बारे मे वह जितना अधिक सोचता था, उसे वह उतना ही अधिक समझदारी का प्रतीत होता था। पिछले कुछ समय से वर्षा के कारण उनका प्रेम-मिलन नही होता था। उसने बहुत साफ-साफ लिखावट और हृदय के दहकते उद्गारो के साथ अकुलीना को यह लिखा कि कैसे उनके सुख पर भयानक बिजली गिरनेवाली है और साथ ही विवाह का प्रस्ताव भी कर दिया। इस पत्र को वह फौरन पत्र-पेटी यानी कोटर मे रख आया और पूरी तरह सन्तोष अनुभव करते हुए बिस्तर पर चला गया।

अगले दिन वह पक्का इरादे बनाये हुए तडके ही मूरोम्स्की के यहा पहुचा ताकि खुलकर बात कर ले। उसे आशा थी कि वह हृदय की उदारता की दुहाई देकर लीज़ावेता के पिता को अपने पक्ष मे कर

* फोनवीज़िन की 'घोंघाबसन्त' सुखान्ती नाटक का एक ज़मीदार पात्र, मूर्ख और खुर्रदिमाग़। – स०

लेगा। "ग्रिगोरी इवानोविच घर पर है?" त्रिगूनिनों की हवेली के सामने अपने घोड़े को रोककर उसने नौकर से पूछा। "नहीं, हुजूर," नौकर ने जवाब दिया, "ग्रिगोरी इवानोविच तो आज सुबह ही बाहर चले गये थे।" – "कितने अफसोस की बात है!" अलेक्सेई ने सोचा। "लीजावेता ग्रिगोर्येव्ना तो घर पर होंगी?" – "जी, हुजूर!" अलेक्सेई घोड़े से कूदा, घोड़े की लगामें उसने नौकर के हाथ में पकड़ा दीं और अपने आने की सूचना दिलवाये बिना ही अन्दर चला गया।

"अभी सब कुछ तय हो जायेगा," उसने मेहमानखाने के निकट पहुंचते हुए अपने मन में सोचा, "खुद लीजावेता से ही बात कर लूंगा।" यह कमरे में दाखिल हुआ और बुत बना खड़ा रह गया! लीजा नहीं अकुलीना, उसकी प्यारी, सांवली-सलोनी अकुलीना सराफ़ान नहीं, बल्कि सुबह का हल्का-सा सफ़ेद फ्राक पहने खिड़की के सामने बैठी हुई उसका पत्र पढ़ रही थी। वह इतनी खोई हुई थी कि उसने अलेक्सेई के पैरों की आहट तक नहीं सुनी। अलेक्सेई अपने हर्षोद्गार को अभिव्यक्ति दिये बिना न रह सका। लीजा चौंककर सिहरी, उसने अपना सिर ऊपर उठाया, चीख उठी और उसने भाग जाना चाहा। अलेक्सेई ने लपककर उसे रोक लिया। "अकुलीना, अकुलीना!" लीजा ने अपने को उससे मुक्त करने की कोशिश की "Mais laissez-moi dona, monsieur; mais êtes-vous fou?"* अपने को छुड़ाने का यत्न करते हुए वह लगातार दोहराती जाती थी। "अकुलीना! मेरी प्यारी अकुलीना!" अलेक्सेई उसके हाथों को चूमते हुए बार-बार कह रहा था। यह सारा तमाशा देखनेवाली मिस जैक्सन यह समझने में असमर्थ थी कि इस सबका क्या अर्थ लगाये। इसी समय दरवाजा खुला और ग्रिगोरी इवानोविच ने भीतर प्रवेश किया।

"अरे, वाह!" पिता ने कहा, "लगता है कि तुम दोनों ने सब कुछ तय ही कर लिया है"

आशा है कि पाठकगण इस किस्से के अन्त का वर्णन करने के फालतू काम से मुझे मुक्त कर देंगे।

(इ० प० बेल्किन की कहानियां समाप्त।)

* मुझे छोड़ दीजिये श्रीमान, आप क्या पागल हो गये हैं?

हुक्म की बेगम

हुक्म की बेगम का
अर्थ है रहस्यपूर्ण शत्रुता।

भविष्य बूझने की नवीनतम पुस्तक से।

(१)

ठण्डे, बुरे मौसम मे
जमा होकर अक्सर
भगवान उन्हें क्षमा करे
खेले जुआ डटकर –
पचास से सौ तक
दाव पर लगाते,
जीतते, वे हारते
हिसाब लिखते जाते,
यो ठण्डे, बुरे मौसम मे
ऐसे अच्छे काम मे
वक्त वे बिताते।

एक बार गार्डों की घुडसेना के अफसर नारूमोव के यहा जुआ खेला जा रहा था। पता भी नही चला कि जाडे की लम्बी रात कब बीत गयी – सुबह के पाच बजे ये लोग भोजन करने बैठे। जीतनेवाले तो खूब मजे से खाने पर हाथ साफ कर रहे थे और दूसरे अपनी खाली प्लेटो के सामने खोये-खोये से बैठे थे। लेकिन जैसे ही शैम्पेन सामने आई, बातचीत सजीव हो उठी और सभी ने उसमे भाग लिया।

तुम्हारा कैसा हालचाल रहा, सूरिन?" मेजबान ने पू

सदा की भांति हार गया। मानना ही होगा कि किस्मत मु
गाल फुलाये बैठी है – मैं छोटे-छोटे दांव लगाकर खेलता हूं, कभी उत्ते
नहीं होता, दिमाग को इधर-उधर भटकने नहीं देता, लेकिन फि
भी हमेशा हारता ही रहता हूं!

क्या कभी तुम्हारे मन में लालच नहीं आया? क्या कभी ब
दांव लगाने को तुम्हारा मन नहीं हुआ? तुम्हारी यह दृढ़ता मे
लिये आश्चर्यजनक है।"

"यह हेर्मन्न भी खूब है न?" जवान इंजीनियर की ओर सं
करते हुए एक मेहमान ने कहा। "इसने कभी पत्ते हाथ में नहीं लि
कभी दांव नहीं लगाया, लेकिन सुबह के पांच बजे तक हमारे प
बैठा हुआ हमारे खेल को देखता रहता है।"

"खेल में मुझे बहुत मज़ा आता है," हेर्मन्न ने कहा, "लेकि
मैं ऐसी स्थिति में नहीं हूं कि कुछ फ़ालतू पाने की उम्मीद में उसे
कुर्बान कर दूं जो एकदम ज़रूरी है।"

"हेर्मन्न जर्मन है, सावधान है, बस, इतनी ही बात है!" तोम्स
ने राय जाहिर की। लेकिन मेरे लिये अगर कोई पहेली है, तो मेर
दादी काउंटेस आन्ना फ़ेदोतोव्ना।"

"वह कैसे? वह क्यों?" मेहमानों ने चिल्लाते हुए जिज्ञास
व्यक्त की।

"किसी तरह भी यह नहीं समझ पाता," तोम्स्की ने अपनी
बात जारी रखी, "कि मेरी दादी जुआ क्यों नहीं खेलती!"

"इसमें हैरानी की कौन-सी बात है कि अस्सी साल की बुढ़िया
जुआ नहीं खेलती!" नारूमोव ने कहा।

"तो क्या आप उसके बारे में कुछ नहीं जानते?"

"नहीं! सचमुच, कुछ भी नहीं!"

"ओह, तो सुनिये".

"यह जानना जरूरी है कि मेरी दादी साठ साल पहले पेरिस गयी
थी और वहां उसकी बड़ी धूम रही थी। La Vénus moscovite*

---

* मास्को की सौन्दर्य-देवी (फ़्रांसीसी)।

को एक नजर देख लेने के लिये लोग उसके पीछे-पीछे भागा करते थे। रिशेल्ये उसका दीवाना था और दादी यह यकीन दिलाती है कि उसकी निष्ठुरता के कारण वह अपने को गोली मारते-मारते रह गया था।

"उस जमाने मे महिलाये फारो खेला करती थी। एक दिन दरबार मे जुआ खेलते हुए वह ड्यूक दे' ओरलिआन को बहुत बडी रकम हार गयी जिसे उसने बाद मे चुका देने का वचन दिया। घर लौटने पर चेहरे को सुन्दर बनाने के लिये लगाये जानेवाले रेशमी बिन्दु और स्कर्ट को फैलानेवाले धातु के घेरे उतारते हुए उसने दादा को बताया कि कितनी रकम हार गयी है और आदेश दिया कि वे उसे चुका दे।

"जहा तक मुझे याद है, मेरे दिवगत दादा एक तरह से मेरी दादी के कारिन्दा ही थे। वे दादी से आग की तरह डरते थे। किन्तु इतनी बडी रकम हार जाने की बात सुनकर वे आपे से बाहर हो गये सभी बिल लाकर उन्होने दादी को दिखाये और यह साबित किया कि छ महीनो मे उन्होने पाच लाख का खर्च किया है, कि पेरिस के आस-पास मास्को या सरातोव की भाति उनकी कोई जागीर नही है और रकम अदा करने से साफ इन्कार कर दिया। दादी ने उनके मुह पर एक तमाचा मारा और अपनी नाराजगी ज़ाहिर करने के लिये दादा को अपने पास नही सोने दिया।

"अगले दिन दादी ने यह उम्मीद करते हुए कि घरेलू दण्ड का आवश्यक प्रभाव हुआ होगा, पति को बुलवा भेजा किन्तु दादा अपनी बात पर अड़े हुए थे। जीवन मे पहली बार दादी ने मामले पर सोच-विचार किया, सब कुछ स्पष्ट करना चाहा, सोचा कि बडी नम्रता मे यह बताते हुए पति को लज्जित करेगी कि कर्ज कर्ज मे फर्क होता है और प्रिस तथा बग्घी बनानेवाला—ये दोनो एक जैसे ही नही होते। लेकिन सब बेकार! दादा ने विद्रोह कर दिया था। नही, और बात खत्म! दादी की समझ मे नही आ रहा था कि क्या करे।

"दादी की अच्छी जान-पहचानवालो मे एक बहुत ही कमाल का आदमी था। आपने काउट सेट-जेर्मेन* का नाम तो सुना होगा, जिसके

* १८वी शताब्दी के अन्त का फ़ासीसी कीमियागर और जो-खिमबाज। —स०

बारे में बड़ी-बड़ी अद्भुत बातें कही जाती हैं। आपको यह भी मालू
होगा कि उसने अपने को अमर यहूदी, जीवन-अमृत और दार्शनि
पत्थर का आविष्कारक आदि, आदि बताया था। लोग उसे
पाखंडी कहकर उसका मज़ाक उड़ाते थे और कज़ानोवा ने* अप
टिप्पणियों में उसे जासूस कहा है। ऐसी रहस्यपूर्ण ख्याति के बावजू
सेंट-जेर्मेन बहुत ही सम्मानित व्यक्तित्व रखता था और सोसाइ
में बड़ा ही कृपालु सभ्य विनयी-शिष्ट व्यक्ति माना जाता था। द
अभी तक उसकी प्रेम-दीवानी है और अगर कोई अनादर से उसकी
चर्चा करता है, तो वह बिगड़ उठती है। दादी जानती थीं कि सें
जेर्मेन खासा अमीर आदमी है। उसने उसी से मदद लेने की सोची।
उसके नाम एक रुक्का लिख भेजा जिसमें अनुरोध किया कि वह फ़ौर
उसके पास चला आये।

"सनकी बूढ़ा उसी वक्त आ गया और दादी को उसने बहु
ही दुखी पाया। दादी ने अपने पति की क्रूरता को काले से काले रंग में
पेश किया और आखिर यह कहा कि वह उसकी मैत्री और कृपालु
पर ही पूरी आस लगाये हुए है।

"सेंट-जेर्मेन सोच में पड़ गया।

"'यह रकम तो मैं आपको दे सकता हूं,' वह बोला, 'लेकिन
जानता हूं कि जब तक आप यह रकम मुझे लौटा नहीं देंगी, आपको
चैन नहीं आयेगा। मैं आपके लिये नई परेशानियां पैदा नहीं करना
चाहता। एक और रास्ता है – आप यह रकम वापस जीत सकती हैं।' –
'किन्तु कृपालु काउंट,' दादी ने जवाब दिया, 'मैं तो यह कह रही
हूं कि हमारे पास पैसे ही नहीं हैं।' – 'पैसों की कोई ज़रूरत नहीं,'
सेंट-जेर्मेन ने दादी की बात काटी, 'आप पूरी तरह मेरी बात सुनने
की कृपा करें।' इतना कहकर उसने दादी को वह राज़ बताया, जिसे
जानने के लिये हममें से हर कोई बड़ी खुशी से भारी क़ीमत अदा
कर देता ..."

जवान जुआरी अब बहुत ही ध्यान से बात सुनने लगे।

---

* प्रसिद्ध इतालवी जोखिमबाज़ (१७२५–१७९८), जिसने बड़े
दिलचस्प संस्मरण लिखे हैं। – सं०

तोम्स्की ने पाइप सुलगाया, कश खीचा और अपनी बात आगे बढायी।

"दादी उसी शाम को वेर्साली, au jeu de la Reine* मे पहुंची। ड्यूक द ओंलिआन पत्ते बाट रहा था। दादी ने कर्ज की रकम न लाने के लिये जरा माफी मागी, अपनी सफाई मे छोटा-सा किस्सा सुनाया और ड्यूक के सामने जुआ खेलने बैठ गयी। दादी ने तीन पत्ते चुने, एक के बाद दूसरा पत्ता चला, तीनो पत्ते जीतनेवाले निकले और दादी ने अपना सारा ऋण बराबर कर दिया।"

"सयोग की बात थी!" एक मेहमान ने कहा।

"मनगढन्त किस्सा है!" हेर्मन्न ने राय ज़ाहिर की।

"शायद निशानी वाले पत्ते थे?" तीसरा कह उठा।

"मैं ऐसा नही सोचता हू," तोम्स्की ने बडी शान से जवाब दिया।

"भई वाह!" नारूमोव बोला, "तुम्हारी ऐसी दादी है जो लगातार जीतनेवाले तीन पत्तो का अनुमान लगा सकती है और तुमने अभी तक उससे यह राज़ नही जाना?"

"मामला इतना सीधा-सादा नही है!" तोम्स्की ने जवाब दिया, "मेरे पिता जी समेत दादी के चार बेटे थे। चारो ही खूब जुआ खेलते थे और दादी ने उनमे से किसी को भी अपना राज नही बताया, गो यह उनके लिये और खुद मेरे लिये भी कुछ बुरा न होता। लेकिन मेरे चाचा, काउट इवान इल्यीच ने मुझे यह किस्सा सुनाया और कसम खाकर इसके बारे मे यकीन दिलाया। दूसरी दुनिया मे पहुच चुका चाप्लीत्स्की, वही चाप्लीत्स्की जो लाखो-करोडो उडाकर बडी मुहताजी मे मरा, अपनी जवानी मे एक बार तीन लाख रूबल हार गया – याद आ रहा है ज़ोरिच** के पास। वह बहुत ही परेशान था। दादी जवान लोगों की ऐसी शरारतो, ऐसी हरकतो के मामले मे बडी कठोर थी, लेकिन न जाने क्यो, उसे चाप्लीत्स्की पर रहम आ गया। उसने उसे तीन पत्ते बताये, यह कहा कि एक के बाद एक को चले और साथ ही उससे यह वचन ले लिया कि वह फिर कभी जुआ नही खेलेगा।

---

* महारानी के यहा ताश का खेल (फ्रासीसी)।

** येकातेरीना द्वितीय का एक कृपापात्र, जुए का दीवाना (१७४५–१७९९)।–स०

चाप्लीत्स्की अपने दुर्भाग्यग्रस्त प्रतिद्वन्द्वी के यहां गया और वे दुबारा खेलने बैठे। उसने पहले पत्ते पर पचास हजार का दांव लगाया और जीत गया, दूसरे पत्ते पर इस दांव को दुगुना कर दिया, तीसरे पर चौगुना – इस तरह हारी हुई सारी रकम लौटाने के अलावा वह कुछ और भी जीत गया

"लेकिन अब सोना चाहिये – सुबह के पौने छः बज गये हैं।"

वास्तव में ही उजाला होने लगा था। जवान लोगों ने जाम खाली किये और अपने-अपने घरों को चल दिये।

(२)

—Il paraît que monsieur est décidement pour les suivantes.
—Que voulez-vous, madame? Elles sont plus fraîches*

सोसाइटी की बातें

बूढ़ी काउंटेस अपने शृंगार-कक्ष में दर्पण के सामने बैठी थी। तीन नौकरानियां उसे घेरे हुए थीं। एक सुर्खी की शीशी लिये थी, दूसरी के हाथ में हेयर पिनों का डिब्बा था और तीसरी अंगारों के रंग की फीतोंवाली ऊंची टोपी। काउंटेस की सुन्दरता का रंग कभी का फीका पड़ चुका था, इसलिये वह सुन्दरता का ज़रा भी दावा नहीं कर सकती थी, किन्तु जवानी के दिनों की सभी आदतों को उसने ज्यों का त्यों बनाये रखा था, अठारहवीं सदी के आठवें दशक के फ़ैशनों को कड़ाई से निभाती थी और साठ साल पहले की तरह बहुत यत्न से और बड़ा समय लगाकर साज-सिंगार करती थी। खिड़की के पास उसकी संरक्षिता युवती कसीदाकारी के फ्रेम के सामने बैठी थी।

---

* लगता है कि आप तो निश्चित रूप से नौकरानियों को तरजीह देते हैं।
क्या किया जाये? उनमें अधिक ताज़गी होती है (फ़्रांसीसी)।

"नमस्ते, grand'maman,* कमरे मे दाखिल होनेवाले जवान अफसर ने कहा। "Bonjour, mademoiselle Lise.** Grand'-maman, मै आपके पास एक अनुरोध लेकर आया हू।"

"क्या बात है, Paul?"***

"आपके साथ अपने एक दोस्त का परिचय करवाने और शुक्रवार के बॉल-नृत्य मे उसे अपने साथ यहां लाने के लिये आपकी अनुमति चाहता हू।"

"उसे सीधे बॉल-नृत्य में ही ले आना और तभी मेरे साथ उसका परिचय करवा देना। कल तुम   के यहा गये थे?"

"बेशक गया था! वहा बहुत मजा रहा – सुबह के पाच बजे तक नाचते रहे। येलेत्स्काया तो खूब ही जच रही थी!"

"ओह, मेरे प्यारे! उसमे भला जचनेवाली क्या खास बात हो सकती है? काश, उसकी दादी, प्रिंसेस दार्या पेत्रोव्ना को तुमने उसकी जवानी के दिनो मे देखा होता! अब तो बहुत बुढा गयी होगी प्रिंसेस दार्या पेत्रोव्ना?"

"बुढा गयी होगी?" तोम्स्की ने बेख्याली से जवाब दिया, "उसे तो मरे हुए सात साल हो चुके हैं।"

खिडकी के पास बैठी युवती ने सिर ऊपर उठाया और तोम्स्की को इशारा किया। तोम्स्की को याद आया कि बूढी काउटेस से उसकी हमउम्रो की मौत को छिपाया जाता है और यह भूल करने के लिये उसने अपना होठ काटा। किन्तु काउटेस ने अपने लिये यह नई खबर सुनकर कोई खास परेशानी जाहिर नही की।

"मर चुकी है!" काउटेस ने कहा, "और मुझे मालूम ही नही था! हम दोनो को सम्राज्ञी की सेवा मे उपस्थित रहने के लिये एक-साथ ही नियुक्त किया गया था और जब हम सम्राज्ञी के सामने गयी, तो   "

और काउटेस ने सौवी बार पोते को अपना यही किस्सा सुनाया।

---

* दादी (फ्रासीसी)।

** नमस्ते, लीजा (फ्रासीसी)।

*** पोल (फ्रासीसी)।

और दूसरे से एक नौकर भागा आया।

"तुम्हे जब बुलाया जाता है, तो तुम लोग उसी वक़्त क्यो न आते?" काउंटेस ने उनसे कहा। "लीज़ावेता इवानोव्ना को बता कि मैं उसकी राह देख रही हूं।"

लीज़ावेता इवानोव्ना चोगे जैसी पोशाक और टोपी पहने हुए भीतर आई।

"आखिर तो आ गयीं तुम!" काउंटेस ने कहा। खूब बनाव सिंगार किया है! यह किसलिये भला?. किसको मोहित करना चाहती हो? मौसम कैसा है? – लगता है हवा है।"

"नही, सरकार! बिल्कुल हवा नहीं है!" नौकर ने जवाब दिया

"तुम लोग हमेशा वही कह देते हैं जो तुम्हारे मुह मे आ जाता है! खिडकी का ऊपरवाला शीशा खोलो तो। ठीक वही मामला है-हवा है, और सो भी ठण्डी! बग्घी खुलवा दीजिये! लीज़ा, हम नही जायेगी – बनने-ठनने की कोई जरूरत नही थी।"

"यह है मेरी ज़िन्दगी!" लीज़ावेता इवानोव्ना ने सोचा।

वास्तव मे ही लीज़ावेता इवानोव्ना बडी बदकिस्मत प्राणी थी दांते ने कहा है कि परायी रोटी कड़वी होती है और पराये घर की पैडियो पर चढना मुश्किल होता है। दूसरे पर निर्भरता की कटुता को यदि जानी-मानी बुढिया की आश्रिता, गरीब लड़की नही जानेगी तो कौन जानेगा? यह सच है कि काउंटेस दिल की बुरी नहीं थी लेकिन सोसाइटी द्वारा बिगाडी गयी सभी औरतो की तरह मनमानी करती थी, कजूस और निर्मम स्वार्थ मे डूबी हुई थी, जैसे कि वे सभी बूढे लोग होते हैं जो अपने जमाने मे सारी कोमल भावनाये लुटाकर वर्तमान के प्रति उदासीन हो जाते हैं। वह ऊचे समाज की सारी चहल-पहल मे हिस्सा लेती थी, बॉल-नृत्यो मे जाती थी, जहा पुराने ढग से रगी-चुनी और पुराने फैशन के कपडे पहने हुए नाच के हाल की भद्दी और जरूरी सजावट बनी बैठी रहती थी, एक प्रचलित रस्म के अनुरूप नवागत अतिथि उसके पास आते, बहुत झुककर उसका अभिवादन करते और बाद में कोई भी उससे दिलचस्पी न लेता। सारे शहर को ही वह अपने यहा आमन्त्रित करती, कड़ाई से आचार-व्यवहार को निभा- ि और किसी को भी चेहरे से न जानती-पहचानती। उसकी हवेली

और बाहर बने क्वार्टरो मे रहने वाले अनेक नौकर-चाकर, जिनकी चर्बी बढती जाती थी और बाल सफेद होते जाते थे, जैसा चाहते थे, वैसा करते थे और मरणासन्न बुढिया को अधिक से अधिक लूटने के मामले मे एक-दूसरे से होड लेते थे। लीज़ावेता इवानोव्ना घरेलू यातनाये-यन्त्रणाये सहती थी। वह चाय का प्याला बनाती तो फालतू चीनी खर्च करने के लिये उसे डाटा-डपटा जाता; वह उपन्यास पढकर सुनाती, तो लेखक की सभी गलतियो के लिये उसे ही दोषी ठहराया जाता, काउंटेस के सैर-सपाटे के समय वह उसके साथ रहती और मौसम तथा सड़क की खराबी के लिये भी जवाबदेह होती। उसका वेतन नियत था जो उसे कभी पूरा नही मिलता था, लेकिन उससे यह माग की जाती थी कि वह सभी की तरह पहने-ओढ़े यानी बहुत कम लोगो की तरह। ऊंचे समाज मे उसकी भूमिका बहुत ही दयनीय होती थी। उसे सभी जानते थे, मगर कोई भी उसकी तरफ ध्यान नही देता था, बॉल-नृत्यो मे वह केवल तभी नाचती थी जब vis-à-vis* न मिलती और महिलाये हर बार ही, जब उन्हे अपने साज-सिंगार मे कुछ ठीक-ठाक करना होता, उसका हाथ थामकर उसे अपने साथ शृगार-कक्ष मे ले जाती। वह स्वाभिमानी थी, अपनी स्थिति के बारे मे पूरी तरह सजग थी और इसलिये अपने इर्द-गिर्द नज़र डालती हुई बडी बेसब्री से ऐसे व्यक्ति को ढूढती रहती जो उसे इस हालत से उबार सके। किन्तु अपने लाभ के फेर मे पड़े हुए दम्भी जवान लोग उसकी ओर कोई ध्यान नही देते थे, यद्यपि लीज़ावेता इवानोव्ना उन गुस्ताख और निठुर युवतियो की तुलना मे कही अधिक प्यारी थी, जिनके गिर्द वे मडराते रहते थे। कितनी बार बडे ही ठाठदार, मगर ऊब भरे मेहमानखाने से दबे पाव निकलकर वह अपने मामूली-से कमरे मे जाकर रोने लगती, जहा कागज़ की दीवारी छीट से मढी हुई लकडी की ओटे थीं, अलमारी थी, छोटा-सा दर्पण और रगा हुआ पलग था और जहा तावे के शमादान मे एक ही बत्ती धीमी-धीमी जलती रहती थी!

एक बार—यह इस उपन्यासिका के आरम्भ मे वर्णित रात के दो दिन बाद और उस दृश्य के, जिसका हमने अभी उल्लेख किया है,

---

* नृत्य-सगिनी (फ्रासीसी)।

एक सप्ताह गुजरने हुआ – लीज़ावेता इवानोव्ना ने खिड़की के पास बैठे और कशीदाकारी करते हुए संयोग से बाहर सड़क पर नज़र डाली और एक जवान फ़ौजी इंजीनियर को निश्चल भाव अपनी खिड़की पर नज़र टिकाये खड़ा देखा। लीज़ा ने सिर झुका लिया और फिर से कढ़ाई करने लगी। पांच मिनट बाद उसने फिर से उधर देखा – जवान अफ़सर उसी जगह पर खड़ा हुआ था। राह चलते अफ़सरों के साथ आंखें लड़ाने की आदत न होने के कारण उसने सड़क की ओर देखना बन्द कर दिया और सिर ऊपर उठाये बिना लगभग दो घण्टे तक अपने काम में लगी रही। दोपहर के भोजन का समय हो गया। वह उठी, कशीदाकारी का सामान समेटने लगी और अनचाहे ही सड़क की ओर देख लेने पर उसे फिर से वही अफ़सर खड़ा दिखाई दिया। उसे यह काफ़ी अजीब-सा लगा। दिन के भोजन के बाद कुछ परेशानी-सी महसूस करते हुए वह खिड़की के पास गई, किन्तु अफ़सर वहां नहीं था – और वह उसके बारे में भूल गयी।

दो दिन बाद, काउंटेस के साथ बग्घी में बैठने के लिये बाहर आने पर उसने उसे फिर से देखा। वह ऊदबिलाव की खाल के कालर में अपना चेहरा ढके हुए दरवाज़े के पास ही खड़ा था और टोप के नीचे से उसकी काली आंखें चमक रही थीं। कारण न जानते हुए लीज़ावेता इवानोव्ना डर गयी और ऐसी धड़कन अनुभव करते हुए, जिसे स्पष्ट करना सम्भव नहीं था, बग्घी में बैठ गयी।

घर लौटते ही वह खिड़की की तरफ भागी गई – अफ़सर उस पर आंखें जमाये पहले वाली जगह पर खड़ा था। जिज्ञासा से व्यथित और ऐसी भावना से विह्वल, जो उसके लिये सर्वथा नई थी, वह खिड़की से पीछे हट गयी।

इस समय से एक भी ऐसा दिन नहीं बीतता था कि यह जवान अफ़सर नियत समय पर इनके घर की खिड़की के नीचे प्रकट न हो। इन दोनों के बीच एक अनजाना सम्बन्ध-सूत्र स्थापित हो गया। अपनी जगह पर बैठकर काम करते हुए वह उसका निकट आना अनुभव कर लेती, सिर ऊपर उठाती और हर दिन अधिकाधिक देर तक उसकी ओर देखती रहती। ऐसा लगता कि जवान अफ़सर इसके लिये उसके प्रति कृतज्ञता अनुभव करता था। जवानी की पैनी दृष्टि से वह यह

देखे बिना न रहती कि जब उनकी नज़रे मिलती, तो जवान के पीले गालों पर झटपट सुर्खी दौड जाती। एक हफ्ते बाद वह उसकी ओर देखकर मुस्करा दी ..

तोम्स्की ने अपने मित्र का परिचय करवाने के लिये जब काउटेस से अनुमति चाही थी, तो इस बेचारी लडकी का दिल धडक उठा था। किन्तु यह मालूम होने पर कि नारूमोव इजीनियर नही, गार्डों की घुडसेना का अफसर है, उसे इस बात का अफसोस हुआ कि अनुचित प्रश्न पूछकर उसने चचल तोम्स्की के सामने अपना राज खोल दिया था।

हेर्मन्न रूस मे ही रह जानेवाले एक जर्मन का बेटा था, जो उसके लिये बहुत छोटी-सी पूजी छोड गया था। अपनी आत्म-निर्भरता को सुदृढ करने की आवश्यकता के बारे म पक्का विश्वास होने के कारण हेर्मन्न अपनी पूजी का सूद तक भी नही लेता था, केवल वेतन पर गुज़ारा करता था और अपने दिल की कोई छोटी-सी सनक-तरग भी पूरी नही करता था। वैसे वह अपने ही मे बन्द और महत्त्वाकाक्षी था और उसके साथियो को उसकी अत्यधिक मितव्ययता की खिल्ली उडाने का बहुत ही कम मौका मिलता था। वह बहुत ही भावावेशी और प्रबल कल्पना-शक्ति का धनी था, किन्तु उसकी दृढता ने उसे जवानी की सामान्य भूलो-भ्रातियो से बचा लिया। उदाहरण के लिये, यद्यपि उसकी आत्मा मे जुए का शौक घर किये बैठा था, वह कभी पत्ते हाथ मे नही लेता था, क्योकि यह हिसाब लगाता था कि उसकी सम्पत्ति उसे इस बात की अनुमति नही देती थी (उसी के शब्दो मे) ' कि वह कुछ फालतू पाने की उम्मीद मे उसे भी कुर्बान कर दे जो एकदम जरूरी है" – और फिर भी वह सारी-सारी रात जुए की मेज़ो के पास बैठा हुआ खेल के उतार-चढावो को बडी उत्तेजना मे देखता रहता।

तीन पत्तो के किस्से ने उसकी कल्पना को अत्यधिक प्रभावित किया और सारी रात वह उसके दिमाग मे नही निकला। "कैसा रहे," अगली शाम को पीटर्सबर्ग मे घूमते हुए वह सोचता रहा, "कैसा रहे, अगर बूढी काउटेस मेरे सामने अपना राज़ खोल दे ! या फिर निश्चित रूप से जीतनेवाले तीन पत्ते ही मुझे बता दे ! मैं अपनी किस्मत क्यो न आज़माकर देखू ? . उससे जान-पहचान करू, उसका कृपा-पात्र बन जाऊ – शायद उसका प्रेमी हो जाऊ – लेकिन इस सब के लिये तो वक्त

चाहिये – और उसकी उम्र है सत्तासी साल – वह एक हफ्ते बाद, दो दिन बाद भी मर सकती है! और फिर यह सब किस्सा भी? क्या उसपर यकीन किया जा सकता है? नहीं! मितव्ययिता, संयम और परिश्रम – यही शर्तों के मेरे तीन पत्ते हैं, यही मेरी पूंजी को तिगुना, सात गुना कर सकते हैं और मुझे चैन तथा स्वाधीनता प्रदान कर सकते हैं!'

इसी तरह से सोच विचार करते हुए वह पीटर्सबर्ग की एक मुख्य सड़क पर प्राचीन वास्तुकला वाले एक घर के सामने जा निकला। सड़क बग्घियों से भरी पड़ी थी और जगमगाते दरवाजे के सामने एक के बाद एक बग्घी आकर रुक रही थी। बग्घियों में से हर क्षण किसी जवान सुन्दरी का सुडौल पांव या छनकती एड़ी वाला घुटनों तक का जूता, या किसी राजदूत की धारीदार लम्बी जुराब और पैनी जूता बाहर आता। फर-कोट और बरसातियां अपनी झलक दिखाती हुई ठाठदार दरबान के पास से गुजरतीं। हेर्मन्न वहां रुक गया।

"यह किसका घर है?" उसने नुक्कड़ वाले पुलिसमैन से पूछा।

"काउंटेस का," पुलिसमैन ने जवाब दिया।

हेर्मन्न का दिल धड़क उठा। अनूठा किस्सा फिर से उसकी कल्पना में सजीव हो गया। वह इस घर की स्वामिनी और उसकी अद्भुत क्षमताओं के बारे में सोचता हुआ इसके आस-पास आने-जाने लगा। अपने साधारण से निवासस्थान पर वह काफी रात गये लौटा, देर तक सो नहीं सका और जब नींद उस पर हावी हो गयी, तो सपने में उसे पत्ते, हरे मेजपोश से ढकी मेज, नोटों की गड्डियां और सोने की मुद्राओं के ढेर नजर आये। वह एक के बाद एक पत्ता चलता था, दृढ़ता से दांव दुगुने करता जाता था, लगातार जीतता था, सोने की मुद्राओं के ढेरों को अपनी तरफ खिसका लेता था और जेबों में नोट ठूंसता जाता था। काफी देर से सुबह उठने पर उसने अपनी काल्पनिक दौलत के खो जाने के कारण गहरी सांस ली, फिर से शहर का चक्कर लगाने चल दिया और पुन. अपने को काउंटेस के घर के सामने पाया। कोई रहस्यमयी शक्ति मानो उसे उस घर की ओर खींच ले जाती थी। वह रुका और खिड़कियों की तरफ देखने लगा। एक खिड़की के पीछे उसे काले बालोंवाला सिर दिखाई दिया जो सम्भवत. किसी किताब

पर काम पर झुका हुआ था। सिर ऊपर को उठा। हेर्मन्न को साकगी लिये हुए चेहरा और काली आखे नजर आई। इस क्षण ने उसके भाग्य का निर्णय कर दिया।

(३)

Vous m'écrives, mon ange, des lettres de quatre pages plus vite que je ne puis les lire *

पत्र-व्यवहार

लीजावेता इवानोव्ना ने चोगा और टोपी उतारे ही थे कि काउटेस ने उसे बुलवा भेजा और फिर से बग्घी तैयार करवाने का आदेश दिया। वे बग्घी मे बैठने के लिये गयी। जब दो नौकर बूढ़ी काउटेस को उठाकर बग्घी के दरवाजे मे घुसेड रहे थे, लीजावेता इवानोव्ना को बग्घी के पहिये के बिल्कुल निकट ही अपना इजीनियर दिखाई दिया, इजीनियर ने उसका हाथ पकड लिया, डर के मारे लीजा की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी, जवान अफसर गायब हो गया और एक पत्र लीजा के हाथ मे रह गया। लीजा ने उसे अपने दस्ताने मे छिपा लिया और रास्ते भर उसे किसी बात की कोई सुध-बुध ही न रही। बग्घी मे जाते हुए काउटेस को लगातार कुछ न कुछ पूछते जाने की आदत थी हमारे निकट से अभी कौन गुजरा था? – इस पुल का क्या नाम है? – वहा साइनबोर्ड पर क्या लिखा है? लीजावेता इवानोव्ना ने हर बार ही अटकल-पच्चू और असगत जवाब दिये। इससे काउटेस की झल्लाहट बढती गयी।

"तुम्हे क्या हो गया है, री? तुम्हारा दिमाग तो नही चल निकला? तुम या तो मेरी बात सुनती नही हो या समझती नही हो?

---

* मेरे फरिश्ते, मैं जितनी जल्दी उन्हे पढ पाता हू, तुम चार-चार पृष्ठो की चिट्ठिया मुझे उससे कही ज्यादा जल्दी लिखती हो (फ्रासीसी)।

भगवान की कृपा से मैं न तो कुरूप हूं और न ही [illegible]
जवाब दिया है।"

लीज़ावेता इवानोव्ना उसे सुन ही नहीं रही थी। पर बोलते [illegible] वह अपने कमरे में भाग गयी। उसने दस्ताने में से पत्र निकाला [illegible] मुहरबन्द नहीं था। लीज़ावेता इवानोव्ना ने उसे पढ़ा। पत्र में प्रेम की स्वीकृति थी। उसमें कोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति थी, [illegible] आदरपूर्ण था तथा शब्दशः किसी जर्मन उपन्यास से नकल किया गया था। पर चूंकि लीज़ावेता इवानोव्ना जर्मन भाषा नहीं जानती थी इसलिये उसे इस पत्र से बहुत खुशी हुई।

किन्तु साथ ही इस पत्र से वह बड़ी बेचैन भी हो उठी। जिन्दगी में पहली बार एक जवान मर्द के साथ उसके गुप्त और घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो रहे थे। उसके ऐसे साहस से वह दहल उठी। अपनी व्यवहार-विधि की असावधानी के लिये उसने अपनी भर्त्सना की और वह नहीं समझ पा रही थी कि अब क्या करे – खिड़की के पास बैठना छोड़ दे और लापरवाही दिखाकर आगे के लिये जवान अफ़सर के जोश पर पानी डाल दे? उसे उसका पत्र लौटा दे? रुखाई और दृढ़ता से उसे जवाब दे दे? वह किसी के साथ भी सलाह-मशविरा नहीं कर सकती थी, उसकी न तो सहेलियां थी और न ही कोई सरपरस्त। लीज़ावेता इवानोव्ना ने उत्तर देने का निर्णय किया।

वह लिखने की मेज़ पर बैठ गयी, उसने कागज़-कलम सामने रखे और सोच में डूब गयी। उसने कई बार अपना पत्र शुरू किया और उसे फाड़ डाला – कभी तो वह उसे बहुत कोमल और कभी बहुत कठोर प्रतीत हुआ। आखिर वह ऐसी कुछ पंक्तियां लिखने में सफल हो गयी जिनसे उसे सन्तोष हुआ। "मुझे विश्वास है," उसने लिखा, "कि आपका इरादा नेक है, कि आप अच्छी तरह से सोचे-समझे बिना कोई क़दम उठाकर मेरे दिल को ठेस नहीं लगाना चाहते हैं, लेकिन हमारी जान-पहचान की इस तरह से शुरुआत नहीं होनी चाहिये। आपका पत्र लौटा रही हूं और आशा करती हूं कि भविष्य में आप मुझे अकारण अनादर की शिकायत करने का मौक़ा नहीं देंगे।"

अगले दिन हेर्मन्न को आते देखकर लीज़ा कशीदाकारी छोड़कर [illegible], साथ के बड़े कमरे में गयी, उसने खिड़की का ऊपरी भाग खोला

और जवान अफसर की चुस्ती-फुर्ती पर भरोसा करते हुए पत्र नीचे फेंक दिया। हेर्मन्न भागकर आया, उसने पत्र उठा लिया और मिठाइयों की दुकान में जाकर उसे खोला। उसे उसमें अपना और लीज़ावेता इवानोव्ना का पत्र मिला। उसे ऐसी ही आशा थी और वह अपनी इस साज़िशी कार्रवाई में बेहद खोया हुआ घर लौटा।

इसके तीन दिन बाद फैशन की दुकान से चंचल आंखोंवाली एक लड़की लीज़ावेता इवानोव्ना के पास एक रुक्का लेकर आई।

लीज़ावेता इवानोव्ना ने मन में यह घबराहट अनुभव करते हुए कि उससे फिर चुकाने की मांग की गयी होगी, लिफाफा खोला और सहसा हेर्मन्न की लिखावट पहचान ली।

"मेरी प्यारी, तुमसे भूल हो गयी है, यह रुक्का मेरे नाम नहीं है।"

"नहीं, आप ही के नाम है!" साहसी लड़की ने शरारतभरी मुस्कान को छिपाये बिना जवाब दिया। "इसे पढ़ने की कृपा कीजिये!"

लीज़ावेता इवानोव्ना ने रुक्के पर जल्दी से नज़र डाल ली। हेर्मन्न ने मिलन की मांग की थी।

"ज़रूर भूल हुई है!" मिलन की मांग के उतावलेपन और हेर्मन्न द्वारा उपयोग में लाये गये तरीके से भयभीत होकर लीज़ावेता इवानोव्ना ने कहा। "सम्भवतः यह मेरे नाम नहीं लिखा गया है!" और उसने पत्र के छोटे-छोटे टुकड़े कर डाले।

"अगर आपके नाम नहीं था, तो आपने इसे फाड़ा क्यों?" लड़की ने प्रश्न किया, "मैं इसे उसी को लौटा देती जिसने भेजा था।"

"कृपया प्यारी, भविष्य में मेरे पास पत्र नहीं लाइयेगा," लड़की की टिप्पणी पर भड़कते हुए लीज़ावेता इवानोव्ना ने कहा। "इसके अलावा जिसने तुम्हें भेजा है, उससे यह कह देना कि उसे शर्म आनी चाहिये"

किन्तु हेर्मन्न हतोत्साहित नहीं हुआ। लीज़ावेता इवानोव्ना को किसी न किसी ढंग से हर दिन ही उसका पत्र मिलता। अब ये पत्र जर्मन से अनूदित नहीं होते थे। हेर्मन्न भावनाओं से ओत-प्रोत होकर लिखता और अपनी ही भाषा का उपयोग करता उनमें उसकी दृढ़ इच्छा और बेलगाम कल्पना की उड़ान की गड़बड़ भी अभिव्यक्त होती। लीज़ावेता इवानोव्ना अब उन्हें लौटाने की बात भी नहीं सोचती, वह उनके रस

[illegible] उसके पत्र लेने लगी और उसके पत्र हर दिन [illegible] [illegible] और [illegible] होते गये। आखिर उसने खिड़की से [illegible] [illegible] उसके [illegible]

[illegible] राजदूत के यहाँ बाल-नृत्य है। काउंटेस वहाँ जायेगी। हम दो बजे तक वहाँ रहेंगी। मुझसे एकान्त में मिलने का आपके लिए यह अच्छा मौका है। काउंटेस के जाते ही उसके नौकर-चाकर भी निकल ही चले जायेंगे। ड्योढ़ी में सिर्फ दरबान ही रह जायेगा और वह भी आम तौर पर अपने छोटे से कमरे में चला जाता है। साढ़े ग्यारह बजे आइये। सीधे सीढ़ियाँ चढ़ जाइये। अगर प्रवेश-कक्ष में कोई मिल गये, तो पूछिये कि काउंटेस घर पर है या नहीं। यह जवाब मिलने पर कि नहीं है आपके सामने कोई चारा नहीं रह जायेगा। आपको लौटना पड़ेगा। अधिक सम्भावना तो इसी बात की है कि आपको कोई नहीं मिलेगा। नौकरानियाँ एक ही कमरे में बैठी रहती हैं। प्रवेश-कक्ष में बायें को मुड़ जाइये और काउटेस के शयन-कक्ष में पहुँच जाने तक सीधे ही चलते जाइये। शयन-कक्ष में पर्दों के पीछे आपको छोटे-छोटे दो दरवाज़े दिखाई देंगे दायाँ दरवाज़ा अध्ययन-कक्ष की ओर ले जाता है, जहाँ काउटेस कभी नहीं जाती, बायाँ दरवाज़ा बरामदे की ओर खुलता है और वहीं एक सँकरा-सा घुमावदार ज़ीना है—इससे ऊपर मेरे कमरे में पहुँचा जा सकता है।"

नियत समय की प्रतीक्षा करते हुए हेर्मन्न बाघ की तरह बेचैनी अनुभव कर रहा था। रात के दस बजने पर वह काउटेस के घर के सामने जाकर खड़ा भी हो गया था। मौसम बहुत ही बुरा था—हवा चीख़-चिंघाड़ रही थी, कच्ची-गीली बर्फ के बड़े-बड़े फाहे-से गिर रहे थे, सड़क के लैम्प मद्धिम-सी रोशनी छिटका रहे थे और सड़कें सुनसान थीं। कभी-कभी किराये की बग्घी वाला कोचवान अपनी मरियल-सी घोड़ी को इस आशा में इधर-उधर हाँकता दिखाई दे जाता कि शायद देर से घर को लौटनेवाली कोई सवारी मिल जाये। हेर्मन्न सिर्फ फ्राक-कोट पहने था और न तो हवा और न बर्फ का ही असर महसूस कर रहा था। आखिर काउटेस की बग्घी दरवाज़े के सामने आकर खड़ी हो गयी। हेर्मन्न ने झुकी पीठ वाली बुढ़िया को, जो सेबल का फर-कोट पहने थी, सहारा देकर नौकरों द्वारा बाहर लाते और उसके पीछे-पीछे

हल्का-सा ओवरकोट पहने और बालो मे फूल खोसे उसकी युवा सगिनी को उसके पीछे-पीछे आते देखा। बग्घी के दरवाजे बन्द कर दिये गये। नर्म बर्फ पर बग्घी मुश्किल से आगे बढी। दरबान ने घर का दरवाजा बन्द कर दिया। खिडकियो से रोशनी गायब हो गयी। हेर्मन्न सूने हो गये घर के सामने आने-जाने लगा। लैम्प के पास जाकर उसने घडी पर नज़र डाली – ग्यारह बजकर बीस मिनट हुए थे। घडी की सूई पर दृष्टि टिकाये हुए सडक की बत्ती के नीचे ही खडा रहकर वह शेष मिनटो के बीतने का इन्तज़ार करने लगा। ठीक साढे ग्यारह बजे हेर्मन्न काउटेस के घर का दरवाजा लाघकर रोशनी से जगमगाती ड्योढी मे दाखिल हुआ। दरबान नही था। हेर्मन्न भागते हुए सीढिया चढ गया, उसने प्रवेश-कक्ष का दरवाजा खोला और वहा पुराने ढग की, जहा-तहा चिकने धब्बे लगी आरामकुर्सियो पर एक नौकर को लैम्प के नीचे सोते पाया। हल्के और दृढ कदम रखते हुए हेर्मन्न उसके पास से निकल गया। हाल और मेहमानखाने मे अधेरा था। प्रवेश-कक्ष की बहुत ही हल्की-सी रोशनी इसमे आ रही थी। हेर्मन्न ने शयन-कक्ष मे प्रवेश किया। देव-प्रतिमाओ के कोने के सामने सोने का लैम्प जल रहा था। बेल-बूटेदार बदरग कपडे से मढी आरामकुर्सिया और रोये भरे तकियोवाले सोफे, जिन पर से जहा-तहा सुनहरा रग उतर चुका था, चीनी कागज़ी छीट से मजी दीवारो के साथ-साथ मातमी-सी तरतीब मे रखे हुए थे। दीवार पर m-me Lebrun* द्वारा पेरिस मे बनाये गये दो छविचित्र टगे हुए थे। एक चित्र तो कोई चालीसेक साल के लाल-लाल गालो और गदराये बदन वाले पुरुष का था जो हल्के हरे रग की वर्दी पहने था और उसकी छाती पर सितारा दिख रहा था। दूसरा चित्र था शुक नासिका वाली जवान सुन्दरी का जिसके बाल कनपटियो पर सवरे हुए थे और गुलाब का फूल पाउडर लगे बालो की शोभा बढा रहा था। सभी कोनो मे चीनी मिट्टी की बनी चरवाहिनो की मूर्त्तिया, प्रसिद्ध Leroy द्वारा बनायी गयी मेज़-घडिया सजावटी मजूषिकाये, खेलने के चक्र, पखे और महिलाओ के मनबहलाव के ऐसे खिलौने रखे हुए थे जिनका पिछली शताब्दी के अन्त मे

---

* फ्रांसीसी चित्रकार महिला, छविचित्रकार (१७५५–१८४२)।–स०

मोंटगोलफियर के गुब्बारे* तथा मेस्मेर के चुम्बकत्व** सहित अंकित किया गया था। हेर्मन्न पर्दों के पीछे गया। उनके पीछे लोहे का छोटा सा पलग था, दायीं ओर अध्ययन-कक्ष का दरवाज़ा था तथा बायीं ओर बरामदे की तरफ ले जानेवाला दरवाज़ा। हेर्मन्न ने बायीं ओर का दरवाजा खोला और उसे वह सकरा तथा घुमावदार जीना दिख दिया जिसे चढ़कर बेचारी लीज़ावेता इवानोव्ना के कमरे में पहुंचा जा सकता था लेकिन वह लौटा और अंधेरे अध्ययन-कक्ष में चला गया।

वक्त बहुत धीरे-धीरे बीत रहा था। सभी ओर खामोशी छायी थी। मेहमानखाने में घड़ी ने बारह बजाये, एक के बाद एक सभी कमरों की घड़िया टनटना उठी और फिर से सब कुछ शान्त हो गया। हेर्मन्न ठण्डी अगीठी का सहारा लिये खड़ा था। वह शान्त था, उसका हृदय उस व्यक्ति के दिल की तरह समगति से धड़क रहा था जो कोई खतरनाक, लेकिन ज़रूरी काम करने का फ़ैसला कर लेता है। घड़ियों ने रात का एक और फिर दो बजाये और हेर्मन्न को दूरी से बग्घी के आने की आवाज़ सुनाई दी। अनचाहे ही उसका मन उद्विग्न हो उठा। बग्घी घर के सामने आकर रुक गयी। उसे बग्घी से नीचे उतरने की आवाज सुनाई दी। घर में हलचल मच गयी। लोग भागने हुए आये, आवाजें गूज उठी और घर रोशन हो उठा। अधेड़ उम्र की तीन नौकरानियां भागी हुई सोने के कमरे में आयीं और थकान से बेहाल काउंटेस कमरे में दाखिल होकर ऊंची टेकवाली आरामकुर्सी में ढह पड़ी। हेर्मन्न पर्दे के पीछे से झांक रहा था। लीज़ावेता इवानोव्ना उसके पास से गुज़री। हेर्मन्न को सुनाई दिया कि कैसे वह जल्दी-जल्दी अपने कमरे की ओर जानेवाले जीने पर चढ़ी। उसकी आत्मा ने मानो उसे धिक्कारा और जल्द ही यह आवाज़ शान्त हो गई। वह जैसे पत्थर की तरह कठोर हो गया।

काउंटेस दर्पण के सामने अपने कपड़े उतारने लगी। नौकरानियों ने पिनें निकालकर गुलाबों से सजी उसकी टोपी और पके तथा छोटे-छोटे बालोंवाले सिर से पाउडर लगा विग उतारा। पिनें बारिश

* फ़ांसीसी आविष्कारक मोंटगोलफियर बन्धुओं ने जून १७८३ में गर्म धुएं से भरा हुआ कागज़ी गुब्बारा पहली बार उड़ाया। —स०

** यहां आस्ट्रिया के डाक्टर फ़ान्त्स मेस्मेर (१७३४-१८१५) के इस सिद्धान्त से अभिप्राय है कि हर व्यक्ति में "जीवयुक्त चुम्बकत्व" होता है जो लोगों को प्रभावित कर सकता है। —स०

की तरह उसके आस-पास गिर रही थी। रुपहली कढाई वाला पीला फ्राक उसके सूजे पैरो पर जा गिरा। हेर्मन्न उसके शृगार के घृणित रहस्यो को देख रहा था। आखिर काउटेस सोने के गाउन और टोपी मे रह गयी। उसके बुढापे के अधिक अनुरूप इस पोशाक मे वह कम भयानक और कम भद्दी प्रतीत हो रही थी।

सभी बूढे लोगो की तरह काउटेस भी अनिद्रा रोग से पीडित थी। कपडे उतारने के बाद वह खिडकी के पास ऊची टेक वाली आराम-कुर्सी पर बैठ गयी और उसने नौकरानियो को जाने का आदेश दिया। जलती मोमबत्तियोवाले शमादान भी बाहर ले जाये गये और कमरे मे फिर से केवल देव-प्रतिमाओ के सामने जल रहे दीप का प्रकाश रह गया। एकदम पीली-ज़र्द काउटेस अपने अधरो को हिलाती और दाये-बाये डोलती हुई बैठी थी। उसकी धुधली-धुधली आखे मानो सर्वथा भावहीन थी। उसे देखते हुए ऐसा सोचा जा सकता था कि इस भयानक बुढिया का दाये-बाये डोलना उसकी अपनी इच्छा का नही, बल्कि किसी प्रेरक प्रक्रिया के प्रभाव का परिणाम है।

इस मृतप्राय चेहरे पर सहसा अवर्णनीय परिवर्तन हो गया। होठों ने हिलना-डुलना बन्द कर दिया, आखो मे चमक आ गयी – एक अपरिचित पुरुष काउटेस के सामने खडा था।

"डरिये नही, भगवान के लिये डरिये नही!" हेर्मन्न ने स्पष्ट और धीमी आवाज मे कहा। "आपको किसी तरह की हानि पहुचाने का मेरा कतई इरादा नही। मैं आपसे केवल एक कृपा का अनुरोध करने आया हू।"

बुढिया चुपचाप उसकी ओर देख रही थी और ऐसे लगता था मानो उसने उसकी बात ही न सुनी हो। हेर्मन्न ने कल्पना की कि वह बहरी है और उसके कान पर झुककर उसने फिर से अपने वही शब्द दोहराये। बुढिया पहले की तरह ही खामोश रही।

"आप मेरी जिन्दगी को बहुत सुखी बना सकती हैं," वह कहता गया, "और आपको इसके लिये कुछ भी तो नही करना पडेगा मुझे मालूम है कि आप ऐसे तीन पत्ते बता सकती हैं जिन्हे लगातार एक के बाद एक खेला जा सकता है..."

हेर्मन्न चुप हो गया। उसे लगा मानो काउटेस समझ गयी है कि

उससे किस बात की कोशिश की जा रही है, वह अपने उत्तर के लि-
उपयुक्त शब्द ढूंढती सी दिखाई दी।

"यह तो मजाक था," उसने आखिर जवाब दिया, "इस...
मजाक करती हूं' यह मजाक था!"

"यह मजाक की बात नहीं है," हेर्मन्न ने झल्लाते हुए आपत्ति की। चाप्लीत्स्की को याद कीजिये जिसे आपने हारी हुई रकम वापस जीतने में मदद दी थी।

काउंटेस स्पष्टत बेचैनी महसूस कर रही थी। उसके चेहरे से यह पता चल रहा था कि उसके भीतर कोई भारी उथल-पुथल हो रही है, किन्तु उसमें शीघ्र ही पहले जैसी उदासीनता-निर्जीवता आ गयी।

"क्या आप मुझे पूरे भरोसे के तीन पत्ते बता सकती हैं?" हेर्मन्न ने अपनी बात जारी रखी।

काउंटेस खामोश रही। हेर्मन्न कहता गया—

"किसके लिये छिपाये रखना चाहती हैं आप अपना राज? नाती-पोतों के लिये? वे तो वैसे ही बड़े मालदार हैं, पैसा क्या कीमत रखता है, उन्हें यह मालूम नही। आपके तीन पत्ते धन उड़ाने-लुटाने वालों की कोई मदद नही कर सकते। अपने बाप से मिली विरासत को ही जो नही सहेज सकता, वह एड़ी-चोटी का जोर लगाने पर भी कौड़ी-कौड़ी को मुहताज होकर मरेगा। मैं उड़ाऊ-लुटाऊ नहीं हू, पैसे की कीमत जानता हू। आपके बताये हुए तीन पत्ते मेरे लिये बेकार नहीं जायेंगे। तो बताइये न!"

हेर्मन्न रुका और धड़कते दिल से उसके जवाब का इन्तज़ार करने लगा। काउंटेस खामोश रही। हेर्मन्न घुटनों के बल हो गया।

"अगर आपके हृदय ने कभी प्रेम-भावना को जाना है, अगर आपको उसके उल्लास का स्मरण है, अगर आप नवजात शिशु का रोना सुनकर एक बार भी मुस्करायी हैं, अगर आपके दिल में कभी कोई मानवीय धड़कन-स्पन्दन हुआ है, तो एक पत्नी, प्रेयसी और मा की भावनाओ के नाम पर आपकी मिन्नत करता हू, जीवन में जो कुछ पवित्र-पावन है, उसके नाम पर अनुरोध करता हू कि मेरी प्रार्थना को नही ठुकराइये! —मेरे सामने अपना रहस्य खोल दीजिये। आपको उसे छिपाये रखकर क्या लेना है? हो सकता है कि उसका

किसी भयानक पाप के साथ सूत्र जुडा हुआ हो, वह शाश्वत सुख से वंचित हो, शैतान के साथ उसने कोई साठ-गाठ कर रखी हो सोचिये तो आप बूढी हैं, बहुत दिन नही जीना है आपको, – आपके पापो को मैं अपनी आत्मा पर लेने को तैयार हू। सिर्फ अपना राज मुझे बता दीजिये। सोचिये तो, एक व्यक्ति का सुख-सौभाग्य आपके हाथो मे है, केवल मैं ही नही, मेरे बेटे-बेटिया, पोते-पोतिया और परपोते-परपोतिया भी आपकी स्मृति का यशोगान करेगे और उसे पावन मानेगे "

बुढिया ने जवाब मे एक भी शब्द नही कहा।

हेर्मन्न उठकर खडा हो गया।

"बूढी डायन!" वह दात पीसते हुए चिल्ला उठा, "मैं तुझे जवाब देने को मजबूर कर दूगा "

इतना कहकर उसने जेब से पिस्तौल निकाल ली।

पिस्तौल देखकर काउटेस ने दूसरी बार बडी तीव्र प्रतिक्रिया प्रकट की। उसने सिर पीछे को झटका और हाथ ऐसे ऊपर उठा लिया मानो अपने को गोली के निशाने से बचाना चाहती हो इसके बाद उसने आरामकुर्सी की टेक पर अपनी पीठ टिका दी और निश्चल हो गयी।

"यह खिलवाड बन्द कीजिये," उसका हाथ अपने हाथ मे लेकर हेर्मन्न ने कहा। "आखिरी बार पूछ रहा हू – अपने तीन पत्ते मुझे बताना चाहती हैं या नही? हा या नही?"

काउटेस ने कोई जवाब नही दिया। हेर्मन्न ने देखा कि वह मर चुकी है।

(४)

7 Mai 18..
Homme sans moeurs et sans religion!*

पत्र-व्यवहार

लीज़ावेता इवानोव्ना अभी तक अपने कमरे मे बॉल-नृत्य की पोशाक पहने और गहन विचारो मे डूबी हुई बैठी थी। घर लौटने पर उसने

* ७ मई, १८ । ऐसा व्यक्ति, जिसके न तो कोई नैतिक सिद्धान्त हैं और जिसके लिये न कुछ पावन है! (फ्रासीसी)।

उसने किस बात की कोशिश की जा रही है, पर अपने उत्तर से सि
इतनी ढूंढ़ती सी दिखाई दी।

"यह तो मजाक था," उसने आखिरकार जवाब दिया, "कसम खाकर कहती हूं! यह मजाक था!"

"यह मजाक की बात नहीं है," हेर्मन्न ने झल्लाते हुए आपत्ति की। "चाप्लीत्स्की को याद कीजिये जिसे आपने हारी हुई रकम वापस जीतने में मदद दी थी।"

काउंटेस स्पष्टतः बेचैनी महसूस कर रही थी। उसके चेहरे से यह पता चल रहा था कि उसके भीतर कोई भारी उथल-पुथल हो रही है, किन्तु उसमें शीघ्र ही पहले जैसी उदासीनता-निर्जीवता आ गयी।

"आप मुझे पूरे भरोसे के तीन पत्ते बता सकती हैं?" हेर्मन्न ने अपनी बात जारी रखी।

काउंटेस खामोश रही। हेर्मन्न कहता गया—

"किसके लिये छिपाये रखना चाहती हैं आप अपना राज? नाती-पोतों के लिये? वे तो वैसे ही बड़े मालदार हैं, पैसा क्या होता है, उन्हें यह मालूम नहीं। आपके तीन पत्ते धन उड़ाने-लुटाने वालों की कोई मदद नहीं कर सकते। अपने बाप से मिली विरासत को ही जो नहीं सहेज सकता, वह एड़ी-चोटी का जोर लगाने पर भी कौड़ी-कौड़ी को मुहताज होकर मरेगा। मैं उड़ाऊ-लुटाऊ नहीं हूं, पैसे की कीमत जानता हूं। आपके बताये हुए तीन पत्ते मेरे लिये बेकार नहीं जायेंगे। तो बताइये न! "

हेर्मन्न रुका और धड़कते दिल से उसके जवाब का इन्तजार करने लगा। काउंटेस खामोश रही। हेर्मन्न घुटनों के बल हो गया।

"अगर आपके हृदय ने कभी प्रेम-भावना को जाना है, अगर आपको उसके उल्लास का स्मरण है, अगर आप नवजात शिशु का रोना सुनकर एक बार भी मुस्करायी हैं, अगर आपके दिल में कभी कोई मानवीय धड़कन-स्पन्दन हुआ है, तो एक पत्नी, प्रेयसी और मां की भावनाओं के नाम पर आपकी मिन्नत करता हूं, जीवन में जो कुछ पवित्र-पावन है, उसके नाम पर अनुरोध करता हूं कि मेरी प्रार्थना को नहीं ठुकराइये! —मेरे सामने अपना रहस्य खोल दीजिये! आपको उसे छिपाये रखकर क्या लेना है? हो सकता है कि उसका

किसी भयानक पाप के साथ सूत्र जुडा हुआ हो, वह शाश्वत सुख से वंचित हो, शैतान के साथ उसने कोई साठ-गाठ कर रखी हो सोचिये तो· आप बूढी हैं, बहुत दिन नही जीना है आपको,—आपके पापो को मैं अपनी आत्मा पर लेने को तैयार हू। सिर्फ अपना राज़ मुझे बता दीजिये। सोचिये तो, एक व्यक्ति का सुख-सौभाग्य आपके हाथो मे है, केवल मैं ही नही, मेरे बेटे-बेटिया, पोते-पोतिया और परपोते-परपोतिया भी आपकी स्मृति का यशोगान करेगे और उसे पावन मानेगे "

बुढिया ने जवाब मे एक भी शब्द नही कहा।

हेर्मन्न उठकर खडा हो गया।

"बूढी डायन!" वह दात पीसते हुए चिल्ला उठा, "मैं तुझे जवाब देने को मजबूर कर दूगा ."

इतना कहकर उसने जेब से पिस्तौल निकाल ली।

पिस्तौल देखकर काउटेस ने दूसरी बार बडी तीव्र प्रतिक्रिया प्रकट की। उसने सिर पीछे को झटका और हाथ ऐसे ऊपर उठा लिया मानो अपने को गोली के निशाने से बचाना चाहती हो इसके बाद उसने आरामकुर्सी की टेक पर अपनी पीठ टिका दी और निश्चल हो गयी।

"यह खिलवाड बन्द कीजिये," उसका हाथ अपने हाथ मे लेकर हेर्मन्न ने कहा। "आखिरी बार पूछ रहा हू—अपने तीन पत्ते मुझे बताना चाहती हैं या नही? हा या नही?"

काउटेस ने कोई जवाब नही दिया। हेर्मन्न ने देखा कि वह मर चुकी है।

(४)

7 Mai 18
Homme sans moeurs et sans religion!*

पत्र-व्यवहार

लीज़ावेता इवानोव्ना अभी तक अपने कमरे मे बॉल-नृत्य की पोशाक पहने और गहन विचारों मे डूबी हुई बैठी थी। घर लौटने पर उसने

---

* ७ मई, १८.। ऐसा व्यक्ति, जिसके न तो कोई नैतिक सिद्धान्त हैं और जिसके लिये न कुछ पावन है! (फ्रासीसी)।

"उसका नाम हेर्मन्न है।"

लीज़ावेता इवानोव्ना ने कोई उत्तर नही दिया लेकिन उसके हाथ-पाव बर्फ की तरह ठण्डे हो गये

"यह हेर्मन्न," तोम्स्की कहता गया, "सचमुच ही रोमांटिक आदमी है – उसका चेहरा-मोहरा नेपोलियन जैसा है और उसकी आत्मा है मेफिस्टोफ़ेलिस की। मेरे ख्याल मे उसकी आत्मा पर कम से कम तीन पापो का बोझ है। आपका चेहरा कैसा पीला पड गया है! "

"मेरे सिर मे दर्द है उस हेर्मन्न – या क्या नाम है उसका? – उसने आपसे क्या कहा है? "

"हेर्मन्न अपने दोस्त से बहुत नाखुश है वह कहता है कि उसकी जगह उसने बिल्कुल दूसरा ही ढग अपनाया होता मैं तो ऐसा मानता हू कि खुद हेर्मन्न भी आप पर मुग्ध है। कम से कम इतना तो है ही कि अपने मित्र के प्रेमोद्गारो को सुनते हुए वह उदासीन नही रह पाता।"

"लेकिन उसने मुझे देखा कहा है?"

"शायद गिरजाघर मे – या सैर करते हुए! भगवान ही जाने! शायद उस समय आपके कमरे मे, जब आप सो रही थी – उससे किसी भी बात की उम्मीद की जा सकती है "

इसी वक्त तीन महिलाओ ने इनके पास आकर "Oubli ou regret?* प्रश्न किया और इस तरह उस बातचीत मे खलल डाल दिया जो लीज़ावेता इवानोव्ना के लिये यातनापूर्ण जिज्ञासा से ओतप्रोत हो गयी थी।

तोम्स्की ने जिस महिला को चुना, वह स्वय प्रिंसेस ही थी। नाच के हॉल का एक चक्कर लगाने और प्रिंसेस की कुर्सी के सामने एक बार नृत्य-चक्र पूरा करने के दौरान उनके बीच सुलह हो गयी और अपनी जगह लौटने पर तोम्स्की को न तो हेर्मन्न और न लीज़ावेता इवानोव्ना मे ही कोई दिलचस्पी रही थी। वह अधूरी रह गयी बातचीत को अवश्य ही फिर से आगे बढाना चाहती थी, मगर माज़ूर्का नाच खत्म हो गया और उसके फौरन बाद ही बूढी काउटेस घर को चल दी।

---

* विस्मृति या खेद (फ्रासीसी)।

तोम्स्की के शब्द माजूरका नाच के समय होनेवाली हल्की-फुल्की गपशप के सिवा कुछ नही थे, किन्तु वे रोमांटिक युवती की आत्मा में गहरे उतर गये। तोम्स्की ने जो चित्र प्रस्तुत किया था, वह खुद उसके द्वारा बनाये गये चित्र से बहुत मिलता-जुलता था और नवीनतम उपन्यासो की बदौलत यही ओछा चेहरा उसकी कल्पना को भयभीत भी करता था और मोहित भी। वह दस्तानो के बिना अपने हाथ बांधे और उघाडी छाती पर सिर भुकाये, जो अभी तक फूलों से सजा था, बैठी थी अचानक दरवाजा खुला और हेर्मन्न दाखिल हुआ। वह सिहर उठी

"आप कहा थे?" उसने सहमी-सी फुसफुसाहट में पूछा।

"बूढी काउटेस के सोने के कमरे में," हेर्मन्न ने जवाब दिया। "मैं वही से आ रहा हू। काउटेस मर गयी।"

"हे भगवान! यह आप क्या कह रहे हैं?.."

"और लगता है," हेर्मन्न कहता गया, "मैं ही कारण हू उसकी मौत का।"

लीज़ावेता इवानोव्ना ने उसकी ओर देखा और तोम्स्की के ये शब्द उसके दिमाग मे गूज गये – उसकी आत्मा पर कम से कम तीन पापो का बोझ है! हेर्मन्न उसके निकट ही खिडकी के दासे पर बैठ गया और उसने सारा किस्सा कह सुनाया।

लीज़ावेता इवानोव्ना ने कापते दिल से उसकी पूरी बात सुनी। तो ये तीव्र भावनाओं-उद्गारो से भरे पत्र, मिलन की मांग करनेवाले जोरदार अनुरोध, दृढता और साहसपूर्वक उसका पीछा – यह सब प्यार नही था! पैसा – उसकी आत्मा पैसे की दीवानी थी! यह वह नही थी जो उसकी इच्छाओं को पूरा कर सकती थी, उसे सुखी बना सकती थी! बेचारी युवती इस लुटेरे-बदमाश, अपनी बूढी अभिभाविका की हत्या करनेवाले की अन्धी सहायिका के सिवा कोई नही थी! देर से होनेवाले और यातनापूर्ण पश्चाताप के कारण वह फूट-फूटकर रो रही थी। हेर्मन्न उसे चुपचाप देख रहा था – उसका दिल भी कसक रहा था, लेकिन न तो बेचारी लडकी के आसू और न उसके दुख का अनूठा सौन्दर्य ही उसकी कठोर आत्मा को विह्वल कर रहा था। इस [illegible] से कि बुढिया चल बसी, उसकी [illegible] होती थी।

सिर्फ इसी ख्याल से उसकी आत्मा बुरी तरह दुखी थी कि अब उस राज़ का कभी पता नही चलेगा जिससे उसने धनी होने की आशा की थी।

"आप राक्षस हैं!" लीज़ावेता इवानोव्ना ने आखिर उससे कहा।

"मैंने उसकी मौत नही चाही थी," हेर्मन्न ने उत्तर दिया, "पिस्तौल मे गोलिया नही थी।"

दोनो खामोश हो गये।

सुबह होने लगी। लीज़ावेता इवानोव्ना ने खत्म होती हुई मोमबत्ती को बुझा दिया – कमरे मे हल्का-सा उजाला हो गया। लीज़ावेता इवानोव्ना ने रोने के कारण लाल हुई अपनी आखो को पोछा और उन्हे ऊपर उठाकर हेर्मन्न की तरफ देखा – वह छाती पर अपने हाथ बाधे और दहशत पैदा करनेवाले अन्दाज़ मे नाक-भौह सिकोडे हुए खिडकी के दासे पर बैठा था। इस मुद्रा मे वह अद्भुत रूप से नेपोलियन के छवि-चित्र की याद दिलाता था। इस समानता से लीज़ावेता इवानोव्ना भी दग रह गयी।

"आप घर से बाहर कैसे जायेगे?" आखिर उसने पूछा। "मैंने तो यह सोचा था कि गुप्त जीने से आपको बाहर ले जाऊगी, मगर इसके लिये काउटेस के सोने के कमरे मे से गुज़रना होगा और मुझे वहा जाते डर लगता है।"

"मुझे बता दीजिये कि इस गुप्त जीने तक कैसे पहुचा जा सकता है और मैं खुद ही वहा से बाहर चला जाऊगा।"

लीज़ावेता इवानोव्ना उठी, उसने अलमारी मे से चाबी निकालकर हेर्मन्न को दी और विस्तारपूर्वक उसे सब कुछ समझाया। हेर्मन्न ने लीज़ावेता इवानोव्ना का ठण्डा और उत्साहहीन हाथ दबाया, झुका हुआ सिर चूमा और कमरे से बाहर चला गया।

घुमावदार सीढी से नीचे उतरकर वह फिर से काउटेस के सोने के कमरे मे दाखिल हुआ। मृत बुढिया बुत बनी-सी बैठी थी, उसके चेहरे पर गहन शान्ति थी। हेर्मन्न उसके सामने रुककर उसे देर तक देखता रहा मानो भयानक सचाई के बारे मे पूरी तरह विश्वास कर लेना चाहता हो। आखिर वह अध्ययन-कक्ष मे गया, कागज़ की दीवारी छीट के पीछे टटोलकर उसने दरवाज़ा ढूढा और अजीब भावनाओ से विह्वल होता हुआ अधेरे जीने से नीचे उतरने लगा। वह सोच रहा था कि शायद

साठ साल पहले कसा हुआ अंगरखा पहने, à l'oiseau royal* के ढंग से बाल संवारे अपनी तिकोनी टोपी को छाती से चिपकाये कोई सौभाग्यशाली जवान इसी तरह इसी जीने से चढ़कर इसी शयन कक्ष में आता होता और कभी का कब्र में पड़ा सड़ गया होगा, जबकि उसकी बूढ़ी प्रेमसी के दिल की धड़कन आज बन्द हुई है

जीने के नीचे पहुंचने पर हेर्मन्न को दरवाजा मिला, जिसे उसने उसी चाबी से खोला और अपने को सड़क पर ले जानेवाले गलियारे में पाया।

(५)

इस रात को दिवंगता बैरोनेस फ़ोन व- मेरे सामने आ गई। वह सफ़ेद पोशाक पहने थी और बोली मुझसे : नमस्ते, श्रीमान कौंसिलर!

स्वेडेनबोर्ग**

उस मुसीबत की मारी रात के तीन दिन बाद हेर्मन्न सुबह के नौ बजे *गिरजे में गया*, जहां मृत काउंटेस की आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना की जानेवाली थी। पश्चाताप की भावना वह अनुभव नहीं कर सकता था, लेकिन लगातार सुनाई देनेवाली आत्मा की इस आवाज को भी—तुमने बुढ़िया की जान ली है!—वह पूरी तरह से दबाने में असमर्थ था। उसमें सच्ची आस्था बहुत कम थी, पूर्वाग्रह बहुत ज्यादा थे। वह ऐसा मानता था कि परलोक सिधार जानेवाली काउंटेस उसके जीवन पर बुरा प्रभाव डाल सकती थी और इसलिये उससे क्षमा मांगने के लिये उसने उसकी अन्त्येष्टि पर जाने का फ़ैसला किया।

गिरजाघर लोगों से भरा हुआ था। हेर्मन्न बड़ी मुश्किल से लोगों के बीच से रास्ता बनाकर आगे बढ़ा। ताबूत बहुत ही बढ़िया मुर्दागाड़ी

---

* "शाही परिन्दे" (फ़्रांसीसी)।

** स्वीडन का रहस्यवादी दार्शनिक (१६८८–१७७२)।–सं०

और चित जा गिरा। उसे उठाया गया। इसी वक़्त लीज़ावेता इवानोव्ना को बेहोशी की हालत में ड्योढ़ी में लाया गया। इस घटना ने कुछ मिनट के लिये इस शोकपूर्ण सस्कार की गम्भीरता को भंग कर दिया। उपस्थित लोगों में दबी-घुटी-सी खुसर-फुसर सुनाई दी और एक दुबले-पतले दरबारी अफसर ने, जो काउटेस का निकट सम्बन्धी था, अपनी बगल में खड़े अंग्रेज़ को फुसफुसाकर बताया कि जवान अफसर काउटेस का अवैध बेटा है और अंग्रेज़ ने जवाब में रुखाई से – 'ओह?' कहा।

हेर्मन्न दिन भर बहुत ही खिन्न रहा। किसी एकान्त-से मदिरालय में भोजन करते हुए उसने अपनी आन्तरिक परेशानी पर काबू पाने के लिये सामान्य से कहीं अधिक शराब पी। किन्तु शराब ने उसकी कल्पना को और अधिक तीव्रता प्रदान कर दी। घर लौटकर वह कपड़े उतारे बिना अपने बिस्तर पर जा गिरा और गहरी नींद सो गया।

काफी रात गये उसकी आंख खुली, उसके कमरे में चांदनी छिटकी हुई थी। उसने घड़ी पर नज़र डाली – रात के पौने तीन बजे थे। उसे अब और नींद नहीं आ रही थी। वह पलंग पर बैठकर बूढ़ी काउटेस के अन्त्येष्टि सस्कार के बारे में सोचने लगा।

इसी समय किसी ने खिड़की में से भीतर झांककर देखा और फौरन पीछे हट गया। हेर्मन्न ने इस बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। एक मिनट बाद उसे ड्योढ़ी का दरवाज़ा खोलने की भनक मिली। हेर्मन्न ने सोचा कि सदा की भांति शराब के नशे में धुत उसका अर्दली अपनी रात की आवारागर्दी से वापस लौटा है। किन्तु उसे अपरिचित पद-चाप सुनाई दी – कोई अपने स्लीपरों को धीरे-धीरे घसीटते हुए चल रहा था। दरवाज़ा खुला, सफेद पोशाक पहने एक नारी भीतर आई। हेर्मन्न ने उसे अपनी बूढ़ी धाय समझा और हैरान हुआ कि इतनी रात गये वह किसलिये आई है। मगर सफेद पोशाक पहने औरत सरककर अचानक उसके सामने आ गयी – और हेर्मन्न ने काउटेस को पहचान लिया।

'मैं अपनी इच्छा के विरुद्ध तुम्हारे पास आई हूं,' उसने दृढ़ आवाज़ में कहा, "लेकिन मुझे तुम्हारा अनुरोध पूरा करने को कहा गया है। तिक्की, सत्ती और इक्का तुम्हारे जीतनेवाले पत्ते हैं, लेकिन शर्त यह है कि तुम एक दिन में एक से अधिक पत्ता नहीं चलना और बाद में

देता – "पांच मिनट कम सत्ती।" सभी तोंदल आदमी उसे इक्के की याद दिलाते। तिक्की, सत्ती और इक्का उसके सपनों में घूमते रहते, तरह-तरह के रूप धारण करते तिक्की एक बहुत बड़ा और खिला हुआ फूल बन जाती, सत्ती गोथ शैली का फाटक और इक्का विराटकाय मकड़ी। सब विचार एक ही विचार में घुल-मिल जाते – किसी तरह उस राज़ से फायदा उठाया जाये जिसके लिये उसने इतनी बड़ी कीमत चुकायी है। वह सेवा-निवृत्त होने और यात्रा करने की सोचने लगा। उसका मन होता कि पेरिस के सार्वजनिक जुआखानों में जाकर जादू टोने से बंधे भाग्य से खजाने हासिल करे। संयोग ने उसे ऐसी चिन्ताओं से मुक्त कर दिया।

उस समय मास्को में धनी जुआरियों की एक संस्था थी। प्रसिद्ध चेकालिन्स्की जिसने सारी उम्र जुआ खेलने बितायी थी और हुंडियां जीतते तथा नकद रकम हारते हुए लाखों-करोड़ों की पूंजी जमा कर ली थी उसका अध्यक्ष था। लम्बे अनुभव ने उसके साथियों में उसके प्रति विश्वास पैदा कर दिया था सभी के लिये खुले उसके घर के द्वार, बढ़िया बावर्ची स्नेह और हंसी-खुशी के वातावरण ने आम लोगों में उसकी मान-मर्यादा बढ़ा दी थी। वह पीटर्सबर्ग आया। नौजवान [illegible] नृत्यों की जगह ताश और सुन्दरियों की प्यारी संगत के बजाय [illegible] के आकर्षण को तरजीह देते हुए उसके यहां उमड़ने लगे। [illegible] हेर्मान को उसके घर ले गया।

इन दोनों ने कई कमरे लांघे जिनमें अनेक शिष्ट और सेवक थे। कुछ जनरल और प्रीविकौंसिलर ह्विस्ट खेल रहे थे। नौजवान लोग [illegible] सोफों पर पसरे हुए आईसक्रीम खा रहे थे, पाइप के कश लगा रहे थे। [illegible] में एक लम्बी मेज के गिर्द जुआ खेलनेवाले कोई [illegible] थे। गृहस्वामी भी वहीं था और वहीं [illegible] [illegible]

बाजी बहुत देर तक चली। मेज पर तीस से अधिक पत्ते थे। चेकालिन्स्की हर दाव के बाद रुकता, ताकि खिलाडियो को अपनी स्थिति समझने का समय मिल जाये, हारी हुई रकमें लिखता, बडी शिष्टता से खेलनेवालो की मागो को सुनता और इससे भी अधिक शिष्टता से किसी बेध्यान खिलाडी द्वारा मोड दिये गये पत्ते के कोने को ठीक कर देता। आखिर बाजी खत्म हुई। चेकालिन्स्की ने पत्ते फेंटे और अगली बाज़ी बाटने के लिये तैयार हुआ।

"मैं भी एक पत्ते पर दाव लगाना चाहूगा," मेज के गिर्द बैठे हुए एक मोटे आदमी के पीछे से हाथ बढाते हुए हेर्मन्न ने कहा। चेकालिन्स्की मुस्कराया और नम्रतापूर्ण सहमति के रूप मे उसने सिर झुका दिया। नारूमोव ने हसते हुए उसे इस बात की बधाई दी कि आखिर तो उसने अपना इतने लम्बे अर्से का व्रत तोड लिया और उसके लिये शुभारम्भ की कामना की।

"तो मैं दाव लगा रहा हू!" हेर्मन्न ने अपने पत्ते पर खडिया से रकम लिखकर कहा।

"कितना दाव लगाया है जनाब?" मेजबान-खजाची ने आख मिचोडते हुए पूछा, "माफी चाहता हू, लगता है कि मुझे साफ नजर नही आ रहा है।"

"सैंतालीस हजार," हेर्मन्न ने जवाब दिया।

ये शब्द सुनते ही सबके सिर फौरन हेर्मन्न की ओर घूम गये और आखे उस पर जम गयी। *"इसका दिमाग चल निकला है!" नारूमोव* ने सोचा।

"मैं यह कहने की अनुमति चाहता हू," चेकालिन्स्की ने सदा की भाति मुस्कराते हुए कहा, "आप बहुत बडा दाव लगा रहे हैं। यहा किसी ने भी दो सौ पचहत्तर से अधिक बडी रकम दाव पर नही लगाई।"

"आप यह बताइये कि खेलेंगे या नही?" हेर्मन्न ने आपत्ति की।

चेकालिन्स्की ने विनयपूर्ण सहमति के रूप मे सिर झुकाया।

"मैं केवल यह निवेदन करना चाहता हू," उसने कहा, "कि मित्रो का विश्वास-पात्र होने के नाते मैं दाव की रकम सामने रख दी जाने पर ही खेलता हू। अपनी ओर से मैं तो आपके वचन पर ही भरोसा

करने को तैयार हूं, लेकिन खेल और हिसाब को सही ढग से चलाने के लिये आपसे दाव की रकम पत्ते पर रख देने की प्रार्थना करता हूं।"

हेर्मन्न ने जेब से एक बैंकनोट निकाला और उसे चेकालिन्स्की को दे दिया, जिसने उस पर सरसरी-सी नज़र डालकर उसे हेर्मन्न के पत्ते पर रख दिया।

वह पत्ते बाटने लगा। दायी ओर नहला आया और बाईं ओर तिक्की।

"मेरा पत्ता जीत गया!" हेर्मन्न ने अपना पत्ता दिखाते हुए कहा।

खिलाड़ी खुसर-फुसर करने लगे। चेकालिन्स्की के माथे पर बल पड गये, किन्तु तत्काल ही उसके चेहरे पर मुस्कान लौट आयी।

"रकम चुका दू?" उसने हेर्मन्न से पूछा।

"कृपा होगी।"

चेकालिन्स्की ने जेब से कुछ बैंकनोट निकाले और फौरन हिसाब चुकता कर दिया। हेर्मन्न ने अपनी रकम समेटी और मेज से हट गया। नारूमोव तो सम्भल भी नही पाया। हेर्मन्न लैमनेड का एक गिलास पीकर अपने घर को चला गया।

अगले दिन की शाम को वह फिर चेकालिन्स्की के यहा पहुचा। गृह-स्वामी पत्ते बाट रहा था। हेर्मन्न मेज के निकट गया, लोगो ने फ़ौरन उसके लिये जगह खाली कर दी। चेकालिन्स्की ने स्नेहपूर्वक सिर झुकाया।

हेर्मन्न ने नई बाजी शुरू होने का इन्तज़ार किया, एक पत्ते पर अपने सैतालीस हज़ार और पिछले दिन जीते गये सैतालीस हज़ार भी रख दिये।

चेकालिन्स्की पत्ते बाटने लगा। दायी ओर गुलाम तथा बायी ओर सत्ती आई।

हेर्मन्न ने सत्ती दिखाई।

सभी आश्चर्य से चिल्ला उठे। चेकालिन्स्की स्पष्टत परेशान हो उठा। उसने चौरानवे हज़ार गिनकर हेर्मन्न के हवाले कर दिये।

हेर्मन्न ने बडी शान्ति से यह रकम ली और उसी क्षण चलता बना।

अगली शाम को हेर्मन्न फिर से खेल की मेज पर आया। सभी उसकी राह देख रहे थे। जनरलो और कौंसिलरो ने ऐसा असाधारण खेल देखने के लिये अपनी ह्विस्ट बन्द कर दी। जवान अफ़सर अपने

सोफ़ों से उठकर आ गये, सभी बैरे मेहमानखाने मे जमा हो गये। सभी हेर्मन्न को घेरे हुए थे। दूसरे खिलाडियो ने अपने दाव नही लगाये, सभी यह देखने को उत्सुक थे कि इस खेल का क्या अन्त होगा। चेकालिन्स्की के साथ बाज़ी खेलने को तैयार हेर्मन्न अकेला मेज के पास खडा था। चेकालिन्स्की के चेहरे का रग उडा हुआ था, लेकिन वह सदा की भाति मुस्करा रहा था। दोनो ने ताश की एक-एक नई गड्डी निकाली। चेकालिन्स्की ने पत्ते फेंटे, हेर्मन्न ने पत्ते काटे, अपना पत्ता सामने रखा और उसपर बैकनोटो का ढेर लगा दिया। एक तरह से यह द्वन्द्व-युद्ध हो रहा था। सभी ओर गहरी खामोशी छाई हुई थी।

चेकालिन्स्की पत्ते बाटने लगा, उसके हाथ काप रहे थे। दाये बेगम आई और बायें इक्का।

"इक्का जीत गया!" हेर्मन्न ने कहा और अपना पत्ता खोल दिया।

"आपकी बेगम पिट गयी," चेकालिन्स्की ने स्नेहपूर्वक जवाब दिया।

हेर्मन्न चौका – वास्तव मे ही इक्के की जगह हुक्म की बेगम सामने पड़ी थी। उसे अपनी आखो पर विश्वास नही हो रहा था, वह यह नही समझ पा रहा था कि कैसे उससे ऐसी भूल हुई।

इसी क्षण उसे ऐसे प्रतीत हुआ कि हुक्म की बेगम अपनी आखे सिकोड़ रही है और व्यग्यपूर्वक मुस्करा रही है। असाधारण समानता से वह दग रह गया .

"बुढ़िया!" वह भयभीत होकर चिल्ला उठा।

चेकालिन्स्की ने जीती हुई रकम अपनी ओर खीच ली। हेर्मन्न बुत बना खड़ा था। उसके मेज से दूर हट जाने पर सभी खिलाडी ऊचे-ऊचे कहने लगे, "क्या कमाल का खेल था!" चेकालिन्स्की फिर से पत्ते फेटने लगा, खेल सदा की भाति चलता रहा।

सारांश

हेर्मन्न पागल हो गया। वह ओबुखोव अस्पताल के वार्ड न० १७ मे है, किसी के प्रश्नो का कभी कोई उत्तर नही देता और असाधारण तेज़ी से यही बडबडाता रहता है – "तिक्की, सत्ती, इक्का! तिक्की, सत्ती, बेगम! ."

९*

लीज़ावेता इवानोव्ना की किसी बहुत ही शालीन युवा व्यक्ति से शादी हो गयी। वह किसी सरकारी दफ़्तर में काम करता है और काफ़ी सम्पत्तिशाली है। वह बूढ़ी काउंटेस के भूतपूर्व कारिन्दे का बेटा है। लीज़ावेता इवानोव्ना एक गरीब रिश्तेदारिन का पालन-पोषण कर रही है।

तोम्स्की कप्तान हो गया है और प्रिंसेस पोलीना से शादी करने जा रहा है।

कप्तान की बेटी

जवानी में अपनी
इज्ज़त की लाज रखो।
कहावत

पहला अध्याय

गार्ड-सेना का सार्जेंट

–गार्डों की सेना में वह तो हो जाता कप्तान।
–नहीं ज़रूरत, लेकिन सैनिक बने जवान।
–सैनिक के जीवन की उसको
 हो अच्छी पहचान
–और पिता है उसका कौन?

क्न्याजनिन*

मेरे पिता अन्द्रेई पेत्रोविच ग्रिनेव अपनी जवानी के दिनों में काउंट मीनिख** के अधीन सेना में काम करते रहे थे और सन् १७   में मानद मेजर के रूप में सेवानिवृत्त हुए। तब से वे सिम्बीर्स्क गुबेर्निया के अपने गांव में रहते थे और यहीं उन्होंने इस क्षेत्र के एक निर्धन कुलीन की बेटी अव्दोत्या वसील्येव्ना यू० से शादी कर ली। मेरे नौ भाई-बहन हुए, किन्तु सभी बचपन में चल बसे।

मैं अभी मां के पेट में ही था कि मुझे हमारे नज़दीकी रिश्तेदार प्रिंस ब० की मेहरबानी से, जो गार्ड सेना में मेजर थे, सेम्योनोव्स्की रेजिमेंट में सार्जेंट की हैसियत से दर्ज कर लिया गया। यदि आशा के विरुद्ध मां बेटे के बजाय बेटी को जन्म देती, तो पिता ने सैन्य-सेवा के लिये हाज़िर न होनेवाले सार्जेंट की मृत्यु की उचित स्थान पर सूचना दे दी होती और इस तरह मामला ख़त्म हो गया होता। मेरी पढ़ाई समाप्त होने तक मुझे छुट्टी पर माना गया। उस ज़माने में हमारी शिक्षा-दीक्षा आज की तरह नहीं होती थी। मैं पांच साल का था,

---

* या० ब० क्न्याजनिन के सुखान्त नाटक 'शेख़ीख़ोर' (१७८६) से।–सं०

** सेनापति और सार्वजनिक कार्यकर्त्ता (१६८३–१७६७) जो येकातेरीना द्वितीय के शासन-परिवर्तन के समय पीटर तृतीय के प्रति निष्ठावान रहा।–सं०

एक समझदारी और सदाचार का परिचय देनेवाले सावेलिच नामक सईस को मेरा शिक्षक बना दिया गया। उसकी देख-रेख में बारह साल का होने पर मैंने रूसी भाषा के लिखने-पढ़ने का ज्ञान प्राप्त कर लिया और शिकारी कुत्तों के लक्षणों को बहुत अच्छी तरह जान-समझ गया। इसी समय मेरे पिता जी ने बोप्रे नाम के एक फ्रांसीसी महानुभाव को मुझे पढ़ाने के लिये नियुक्त किया, जो साल भर के लिये शराब और जैतून के तेल का भण्डार अपने साथ लेकर मास्को से हमारे यहां आया। सावेलिच को उसका आगमन बहुत ही अखरा। 'भगवान की दया से,' वह बड़बड़ाता, 'लगता है कि लड़का अभी तक ढंग से नहलाया-धुलाया जाता रहा है, उसके बाल भी संवारे जाते रहे हैं और उसे खिलाया-पिलाया भी जाता रहा है। फ़िज़ूल पैसा खर्च करने और इस महानुभाव को नियुक्त करने से भला क्या हुआ है मानो अपने लोग ही न रहे हों।'

बोप्रे अपने देश में हज्जाम था, बाद में वह प्रशा की फ़ौज में सैनिक रहा और इसके पश्चात pour être outchitel* रूस आ गया। वह शिक्षक शब्द का महत्त्व अच्छी तरह से नहीं समझता था। वह भला, किन्तु चंचल और अत्यधिक व्यसनी आदमी था। औरतों के पीछे भागना उसकी सबसे बड़ी दुर्बलता थी, इस तरह की हरकतों के लिये अक्सर उसकी ठुकाई-पिटाई हो जाती थी और वह कई-कई दिन तक हाय-वाय करता रहता था। इसके अलावा (उसी के शब्दों में) "बोतल से भी उसकी दुश्मनी नहीं थी" यानी शराब में कुछ अधिक ही गोते लगाता था। किन्तु हमारे घर में चूंकि शराब सिर्फ़ दोपहर के खाने के वक़्त, और सो भी केवल एक-एक जाम ही दी जाती थी, और शिक्षक की इसके लिये भी अवहेलना कर दी जाती थी, इसलिये मेरा शिक्षक बोप्रे बहुत जल्द ही रूसी पेय यानी वोदका का आदी हो गया और उसे पाचन के लिये अधिक अच्छी मानते हुए अपने देश की शराबों की तुलना में तरजीह देने लगा। हम दोनों की फ़ौरन पटरी बैठ गयी और यद्यपि अनुबन्ध के अनुसार उसे मुझे फ़्रांसीसी और जर्मन भाषा, तथा अन्य सभी विद्याएं सिखानी थीं, किन्तु उसने यही बेहतर

---

* शिक्षक बनने के लिये (फ़्रांसीसी)।

समझा कि मुझसे जल्दी-जल्दी रूसी मे बोलना-बतियाना सीख जाये। इसके बाद हम अपनी-अपनी दुनिया मे मस्त रहते थे। हमारे बीच गहरी छनती थी। मेरा कोई दूसरा शिक्षक हो, मैं यह नही चाहता था। किन्तु भाग्य ने शीघ्र ही हमे अलग कर दिया। यह कैसे हुआ, मैं बताता हू।

एक रोज़ मोटी और चेचकरू धोबिन पालाश्का और कानी ग्वालिन अकूल्का आपस मे सलाह करके एकसाथ ही मेरी मां के पैरो पर जा गिरी, उन्होंने अपनी पापपूर्ण दुर्बलता को स्वीकार किया और रो-रोकर मेरे शिक्षक के विरुद्ध इस बात की शिकायत की कि उसने उनकी अनुभव-हीनता से लाभ उठाया है। मेरी मा ऐसी बातो के मामले मे बडी सख्त थीं और उन्होंने पिता जी से शिकायत कर दी। पिता जी ने झटपट कार्रवाई की। उन्होंने लम्पट फ़ासीसी को उसी वक्त अपने पास बुलवा भेजा। उन्हे बताया गया कि शिक्षक मुझे पढा रहा है। पिता जी मेरे कमरे मे आ गये। शिक्षक इस समय भोले-भाले बच्चे की तरह पलग पर सो रहा था। मैं अपने काम मे व्यस्त था। यहा यह बताना भी जरूरी है कि मेरे लिये मास्को से भूगोल का मानचित्र मगवाया गया था। किसी प्रकार के उपयोग के बिना वह दीवार पर लटका हुआ था और अपनी चौड़ाई तथा बढिया कागज़ के कारण एक अर्से से मुझे अपनी ओर खींचता रहा था। मैंने उसकी पतग बनाने का फैसला किया और चूकि बोप्रे सो रहा था, इसलिये इस काम मे जुट गया। मैं जिस समय केप आफ़ गुड होप के साथ स्पज की पूछ लगा रहा था, पिता जी उसी समय कमरे में आये। भूगोल के मेरे इस अभ्यास को देखकर पिता जी ने मेरा कान उमेठा, फिर लपककर बोप्रे के पास गये, किसी तरह की शिष्टता के बिना झकझोरकर उसे जगाया और भला-बुरा कहने लगे। बोप्रे ने घबराकर उठना चाहा, मगर ऐसा नही कर सका – किस्मत का मारा फ़ासीसी नशे मे गडगच्च था। सब गुनाहो की एक ही सज़ा काफ़ी होती है। पिता जी ने कालर पकडकर उसे पलग से उठाया, दरवाज़े से बाहर धक्का दिया और उसी दिन अपने यहा से उसकी छुट्टी कर दी। सावेलिच को इससे इतनी खुशी हुई कि बयान से बाहर। इस तरह मेरी शिक्षा-दीक्षा का अन्त हो गया।

कबूतरों के पीछे दौडते और हमारी जागीर के छोकरो के साथ

मेढक-कूद का खेल खेलते हुए मैं एक गवार की तरह बड़ा हुआ। इसी तरह मैं सोलह साल का हो गया। अब मेरे भाग्य ने पलटा खाया।

पतझर के एक दिन मा मेहमानखाने में शहदवाला मुरब्बा बना रही थी और उबलते हुए झाग को देख-देखकर मेरे मुह में पानी आ रहा था। पिता जी खिड़की के करीब बैठे हुए राज-दरबार की वह रिपोर्ट-पुस्तक पढ रहे थे, जो हर वर्ष उनके पास आती थी। इस पुस्तक का उन पर हमेशा बहुत प्रभाव पडता था, वे उसे बडी दिलचस्पी से बार-बार पढते थे और पढते हुए सदा ही बहुत उत्तेजना अनुभव करते थे। पिता जी की रुचियो-अरुचियो और आदतो से परिचित मा इस मुसीबत की मारी रिपोर्ट-पुस्तक को, जितना सम्भव होता, कही दूर छिपा देने की कोशिश करती और इस तरह वह कई बार महीनो तक पिता जी को दिखाई न देती। किन्तु जब सयोग से वह उन्हे फिर मिल जाती, तो वे घण्टो तक उसे लिये बैठे रहते। इस तरह पिता जी राज-दरबार की इस रिपोर्ट-पुस्तक को पढ रहे थे, जब-तब कधो को झटकते थे और धीरे से यह दोहराते थे – "लेफ्टिनेट-जनरल! मेरी कम्पनी में तो वह सार्जेट था! दो उच्चतम रूसी पदको से सम्मानित! बहुत समय हो गया क्या कि जब हम " पिता जी ने आखिर यह रिपोर्ट-पुस्तक सोफे पर फेक दी और विचारो में खो गये, जो इस बात का सकेत था कि अब कोई न कोई मुसीबत आयेगी।

अचानक उन्होने मा को सम्बोधित करते हुए पूछा –

"अव्दोत्या वसील्येव्ना, पेत्रूशा कितने साल का हो गया है?"

"सत्रहवा साल चल रहा है उसे," मा ने जवाब दिया, "पेत्रूशा उसी साल जन्मा था जब मौसी नास्तास्या गेरासिमोव्ना की एक आख जाती रही थी और जब "

"बस, ठीक है," पिता जी ने मा को बीच में ही टोक दिया, "उसे फौज में भेजने का वक्त हो गया। बहुत दिनो तक दौड लिया वह नौकरानियो के घरो और कबूतरखानो के इर्द-गिर्द।"

जल्द ही मैं दूर चला जाऊगा, इस विचार से मा को ऐसा धक्का-सा लगा कि उनके हाथ से चम्मच छूटकर पतीले में गिर गया और गालो पर आसू की बूदे ढुलक आई। दूसरी ओर, मेरी खुशी का कोई ठिकाना नही था। फौज में जाने का विचार आजादी के विचार,

पीटर्सबर्ग की ज़िन्दगी के मज़े के विचार से पुलकित हो गया। मैंने गार्ड सेना के अफ़सर के रूप में अपनी कल्पना की और मेरे मतानुसार इससे बढ़कर और कोई ख़ुशी नहीं हो सकती थी।

पिता जी न तो अपना इरादा बदलना और न ही यह पसन्द करते थे कि उसे अमली शक्ल देने का काम टाल दिया जाये। चुनांचे मेरे जाने का दिन निश्चित कर दिया गया। उससे एक दिन पहले पिता जी ने कहा कि मेरे भावी बड़े अफ़सर को पत्र लिखना चाहते हैं और उन्होंने मुझसे क़लम-दवात तथा काग़ज़ लाने को कहा।

"अन्द्रेई पेत्रोविच," मां बोली, "मेरी ओर से प्रिंस ब० को प्रणाम लिखना मत भूलना। लिखना कि वे पेत्रूशा पर अपना कृपा-भाव बनाये रखें।"

"यह क्या बेकार की बात है!" पिता जी ने नाक-भौंह सिकोड़ते हुए जवाब दिया। "किसलिये भला मैं प्रिंस ब० को पत्र लिखूंगा?"

"तुम्हीं ने तो कहा था कि पेत्रूशा के अफ़सर को पत्र लिखने जा रहे हो।"

"कहा था, तो क्या हुआ?"

"लेकिन पेत्रूशा का बड़ा अफ़सर तो प्रिंस ब० ही है। पेत्रूशा का नाम तो सेम्योनोव्स्की रेजिमेंट में ही दर्ज है।"

"दर्ज है! दर्ज है, तो मुझे इससे क्या मतलब? पेत्रूशा पीटर्सबर्ग नहीं जायेगा। पीटर्सबर्ग में फ़ौज में रहते हुए भला यह क्या सीखेगा? उल्टी-सीधी बातें और पैसा उड़ाना? नहीं, यही अच्छा है कि वह सही तौर पर फ़ौज में रहे, फ़ौजी की मुश्किल ज़िन्दगी का सामना करे, बारूद की गंध सूंघे, फ़ौजी बने, छैला-बाबा नहीं। गार्डों की रेजिमेंट में नाम दर्ज है इसका! पासपोर्ट कहां है? मुझे ला दो।"

मां ने मेरा पासपोर्ट ढूंढ़ा जो मेरे नामकरण के समय की क़मीज़ के साथ उन्होंने अपनी मंजूषा में रखा हुआ था और कांपते हाथों से उसे पिता जी को दे दिया। पिता जी ने उसे बड़े ध्यान से पढ़ा, मेज़ पर अपने सामने रख लिया और पत्र लिखने लगे।

मेरी जिज्ञासा मुझे बेहद परेशान किये दे रही थी – अगर पीटर्सबर्ग नहीं, तो कहां भेजा जा रहा है मुझे? पिता जी की क़लम पर ही, जो काफ़ी धीरे-धीरे चल रही थी, मेरी नज़र टिकी हुई थी। आख़िर

उन्होंने पत्र समाप्त किया, एक लिफाफे में पासपोर्ट और खत डालकर उसे मुहरबन्द किया, चश्मा उतारा और मुझे अपने पास बुलाकर कहा, "यह पत्र मेरे पुराने साथी और दोस्त अन्द्रेई कार्लोविच र० के नाम है। तुम उसके मातहत फौज में काम करने के लिये ओरेनबुर्ग जाओगे।"

इस तरह मेरी बहुत ही मधुर आशाओं पर पानी फिर गया! पीटर्सबर्ग की मौज-मस्ती से भरी हुई ज़िन्दगी के बजाय कहीं बहुत दूर की सुनसान-वीरान जगह पर ऊब-उदासी मेरी राह देख रही थी। एक मिनट पहले तक जिस फौजी नौकरी के बारे में मैं इतने हर्षोल्लास से सोच रहा था, वह अब मुझे बहुत बोझल दुर्भाग्य प्रतीत हो रही थी। किन्तु पिता जी से बहस करना व्यर्थ था। अगली सुबह को लम्बे सफर की छतवाली घोड़ा-गाड़ी दरवाज़े के सामने आकर खड़ी हो गयी, मेरा सूटकेस, चीनी के बर्तनों की पेटी, घर के लाड़-प्यार की आखिरी निशानी के रूप में मीठी पाव रोटियों और कचौड़ियों आदि की पोटली उसमें रख दी गयी। मेरे माता-पिता ने मुझे आशीर्वाद दिया। पिता जी ने कहा, "तो विदा प्योतर। जिसकी अधीनता की कसम खाओगे, वफ़ादारी से उसकी सेवा करना, अपने अफसरों की बात मानना, उनका स्नेह पाने का प्रयास नहीं करना, खुद आगे बढ़कर अपनी सेवा पेश नहीं करना और जब ऐसा करने को कहा जाये, तो मुंह नहीं मोड़ना, यह कहावत याद रखना – नई पोशाक को सहेजो और जवानी में अपनी इज़्ज़त की लाज रखो।" मां ने आंसू बहाते हुए मुझसे अनुरोध किया कि मैं अपनी सेहत का ध्यान रखूं और सावेलिच को मेरी देख-भाल करने को कहा। मुझे खरगोश की खाल का कोट और उसके ऊपर लोमड़ी का फर-ओवरकोट पहना दिया गया। मैं सावेलिच के साथ घोड़ा-गाड़ी में बैठ गया और आंसू बहाता हुआ अपने सफर पर रवाना हो गया।

उसी रात को मैं सिम्बीर्स्क पहुंच गया, जहां ज़रूरी चीज़ें खरीदने के लिये हमें एक दिन ठहरना था। चीज़ें खरीदने का काम सावेलिच को सौंप दिया गया था। मैं होटल में ठहरा। सावेलिच सुबह से ही दुकानों के चक्कर लगाने चला गया। खिड़की से गन्दे कूचे को देखते-देखते ऊब . . . होने पर मैं कमरों के गिर्द चक्कर काटने लगा। बिलियर्ड कक्ष में गया। वहां मुझे लम्बे कद और लम्बी काली मूछोंवाला कोई हेल

मान का एक महानुभाव ड्रेसिंग-गाउन पहने दिखाई दिया। उसके हाथ में बिलियर्ड खेलने का डंडा और मुंह में पाइप था। वह खेल की बाज़ियों का हिसाब रखनेवाले के साथ खेल रहा था जिसे जीतने पर वोदका का एक जाम पीने को मिलता था और हारने पर चौपाये की तरह मेज़ के नीचे रेंगना पड़ता था। मैं उनका खेल देखने लगा। वह जितनी अधिक देर तक चलता गया, प्वाइंट गिननेवाले का चौपाये की तरह मेज़ के नीचे रेंगना भी उतना ही बढ़ता गया और आखिर वह मेज़ के नीचे ही रह गया। महानुभाव ने मानो मुर्दे का मातम करते हुए कुछ ज़ोरदार शब्द कहे और फिर मुझसे बाज़ी खेलने को कहा। मैं खेलना नहीं जानता था, इसलिये इन्कार कर दिया। उसे सम्भवतः यह अजीब-सा लगा। उसने मानो बड़े अफ़सोस से मेरी ओर देखा, लेकिन जल्द ही हम बातचीत करने लगे। मुझे पता चला कि उसका नाम इवान इवानोविच ज़ूरिन है, कि वह हुस्सार-रेजिमेंट का कप्तान है, सिम्बीर्स्क में फ़ौजियों की भर्ती के लिये आया है और इसी होटल में ठहरा हुआ है। ज़ूरिन ने मुझे अपने साथ दोपहर का भोजन करने को आमंत्रित किया और कहा कि जो कुछ रूखा-सूखा हो, फ़ौजियों की तरह से दोनों उसे मिलकर खा लेंगे। मैं खुशी से राज़ी हो गया। हम मेज़ पर बैठ गये। ज़ूरिन बहुत ज़्यादा पीता था और यह कहकर मेरा जाम भी भरता जाता था कि अपने को सैन्य-सेवा के लिये तैयार करना ज़रूरी है। वह मुझे फ़ौज के क़िस्से-चुटकुले सुनाता रहा जिनके कारण मैं हंसी से लोट-पोट होता रहा और हम पक्के दोस्त बनकर मेज़ पर से उठे। इसके बाद उसने मुझे बिलियर्ड का खेल सिखाने का सुझाव दिया।

"हम फ़ौजियों के लिये तो यह एकदम ज़रूरी है। मान लो कि कूच के वक्त तुम किसी छोटी-सी जगह पर पहुंच जाते हो, भला क्या करोगे वहां? हर वक्त यहूदियों की ही पिटाई तो नहीं करते रहोगे। चाहे-अनचाहे किसी सराय या होटल में जाकर बिलियर्ड खेलने लगोगे। इसलिये ज़रूरी है कि तुम्हें खेलना आये।" उसने मुझे पूरी तरह इस बात का यक़ीन दिला दिया और मैं बड़ी लगन से खेल सीखने लगा। ज़ूरिन खूब ऊंचे-ऊंचे मेरा हौसला बढ़ाता और मेरी जल्दी-जल्दी कामयाबी पर हैरान होता रहा तथा कुछ पाठों के बाद उसने मुझसे बहुत ही छोटी-सी रक़म दांव पर लगाकर खेलने को कहा। सो भी पैसे

ये कहने पेश कीजिये जो आप कल हार गये थे। मुझे पैसों की बेहद जरूरत है।

आपकी सेवा को प्रस्तुत

इवान जूरिन।"

मेरे लिये कोई चारा नहीं था। मैंने मुंह पर उदासीनता का नकाब ओढ़ लिया और सावेलिच को सम्बोधित किया जिसके हाथ "मेरे सारे पैसे और कपड़े-लत्ते के साथ जो मेरा सारा हिसाब-किताब रहता था * कि वह लड़के को सौ रूबल दे दे।

"क्यों? किसलिये?" सावेलिच ने हैरान होकर पूछा। "मैं उसके देने हैं।" मैंने यथासम्भव शान्ति से उत्तर दिया। "देने हैं!" सावेलिच ने अधिकाधिक हैरान होते हुए मेरे शब्दों को दोहराया। "कब तुम कर्जी भी हो गये, छोटे मालिक? जरूर मामला कुछ गड़बड़ है। जो चाहे करो, लेकिन पैसे मैं नहीं दूंगा।"

मैंने सोचा कि अगर इसी निर्णायक क्षण में इस ज़िद्दी बुड्ढे पर हावी नहीं हो जाऊंगा, तो बाद में मेरे लिये इसकी सरपरस्ती से निजात पाना मुश्किल हो जायेगा और मैंने बड़े गर्व से उसकी ओर देखकर कहा, "मैं तुम्हारा मालिक हूं और तुम मेरे नौकर हो। पैसे मेरे हैं। मैं उन्हें हार गया, क्योंकि मैंने ऐसा चाहा। तुम्हें यही सलाह देता हूं कि ज्यादा अक्लमन्दी न दिखाओ और तुम्हें जो कहा जाता है, वही करो।"

मेरे शब्दों से सावेलिच ऐसा आश्चर्यचकित हुआ कि उसने हाथ झटके और बुत बना खड़ा रह गया। "तुम बुत बने क्यों खड़े हो!" मैं गुस्से से चिल्लाया। सावेलिच रो पड़ा। "मेरे प्यारे, प्योतर अन्द्रेइच," उसने कांपती आवाज में कहा, "इतना दुख नहीं दो कि मेरी जान निकल जाये। मेरी आंखों की रोशनी! मुझ बूढ़े की बात मानो – इस बदमाश को यह लिख भेजो कि तुमने मज़ाक किया था, कि हमारे पास तो इतनी रकम है ही नहीं। एक सौ रूबल! हे मेरे भगवान! लिख दो कि माता-पिता ने तुम्हें सिर्फ अखरोटों से खेलने की इजाजत दी है..." – "बस,

---

* देनीस फोनवीज़िन (१७४५–१७९२) की 'मेरे नौकरों को सन्देश' कविता से। – स०

कभार मूं-यां कर लेता था। मैं उससे सुलह करने को बेचैन था, मैं नहीं जानता था कि बात कहां से शुरू करूं। आखिर मैंने उससे कहा

"सुनो सावेलिच! बस, काफी नाराज हो लिये, आओ सुलह कर लें, मैं दोषी हूं, खुद देख रहा हूं कि दोषी हूं। मैंने कल शैतानी की और तुम्हारे साथ बेकार गुस्ताखी से पेश आया। वचन देता हूं कि आगे अधिक बुद्धिमत्ता से काम लूंगा और तुम्हारी बात पर कान दूंगा। तो अब गुस्सा थूक दो, आओ, सुलह कर लें।"

"ओह, छोटे मालिक, प्योतर अन्द्रेइच!" उसने गहरी सांस लेकर उत्तर दिया, "मुझे तो खुद अपने पर गुस्सा आ रहा है, मैं ही पूरी तरह दोषी हू। किसलिये मैंने तुम्हे होटल मे अकेले छोड़ दिया! क्या किया जाये? दिमाग में यह ख्याल घुस गया कि गिरजाघर के पादरी की बीवी से, जो मेरी रिश्तेदार है, मिल आऊं। बस गया कि जैसे जेल मे जा बैठा। बस, मुसीबत आ गयी! .. मालिक-मालकिन को मैं कैसे मुह दिखाऊगा? जैसे ही उन्हें यह पता चलेगा कि बेटा पीता और जुआ खेलता है, तो वे क्या कहेंगे?"

बेचारे सावेलिच को तसल्ली देने के लिये मैंने वचन दिया कि भविष्य मे उसकी सहमति के बिना मैं एक पैसा भी खर्च नहीं करूंगा। वह धीरे-धीरे शान्त हो गया, यद्यपि अभी भी बीच-बीच में सिर हिलाकर बडबडाता जाता था, "एक सौ रूबल! कोई मामूली-सी बात थोड़े ही है!"

मैं अपनी मंजिल के करीब पहुच रहा था। मेरे सभी ओर सुनसान-वीरान मैदान फैला हुआ था जिसमें जहां-तहां टीले और गड्ढे थे। सभी कुछ बर्फ मे ढका हुआ था। सूरज डूब रहा था। हमारी घोड़ा-गाड़ी सकरी राह या अधिक सही तौर पर कहा जाये तो किसानों की गाड़ियों द्वारा छोड़े गये निशानों पर चल रही थी। अचानक कोचवान एक तरफ को देखने लगा और आखिर टोपी उतारकर उसने मुझे सम्बोधित करते हुए कहा –

"साहब, क्या हम लौट न चलें?"

"किसलिये?"

"मौसम भरोसे का नहीं – हवा चलने लगी है, देखो तो वह ताजा गिरी हुई बर्फ को कैसे उड़ा रही है।"

"तो इसमे क्या मुसीबत है!"

"वहा देख रहे हो, क्या है?" (कोचवान ने चाबुक से पूरब की ओर सकेत किया।)

"सफेद स्तेपी और साफ आसमान के सिवा मुझे तो कुछ भी नज़र नही आ रहा।"

"वह, वह, छोटा-सा बादल।"

वास्तव मे ही मुझे गगन के छोर पर छोटा-सा सफेद बादल दिखाई दिया जिसे मैंने शुरू मे दूर का टीला समझा था। कोचवान ने मुझे स्पष्ट किया कि यह बादल तूफ़ान का सूचक है।

मैंने इन इलाको मे आनेवाले तूफ़ानो के बारे मे सुना था और जानता था कि गाड़ियो की पातो की पाते बर्फ मे दब जाती है। कोचवान के विचार से सहमत सावेलिच ने भी लौटने की सलाह दी। किन्तु मुझे हवा बहुत तेज़ प्रतीत नही हुई। मुझे आशा थी कि अगली घोड़ा-चौकी तक ठीक समय पर पहुच जायेगे और इसलिये मैंने घोडे तेज़ करने को कहा।

कोचवान घोडो को सरपट दौड़ाने लगा, किन्तु वह लगातार पूरब की ओर देखता जाता था। घोडे हिल-मिलकर दौड रहे थे। इसी बीच हवा अधिकाधिक तेज होती जा रही थी। छोटी-सी बदली बड़े सफेद बादल मे बदल गयी, बादल उमड-घुमडकर ऊपर उठा और धीरे-धीरे आकाश पर छा गया। हिमकण गिरने लगे और सहसा उन्होंने बर्फ के बड़े-बड़े फाहो का रूप धारण कर लिया। हवा चीखने लगी–तूफ़ान आ गया था। आन की आन मे काला आकाश हिम-सागर से घुल-मिल गया। सब कुछ आखो से ओझल हो गया। "तो साहब," कोचवान चिल्ला उठा, "मुसीबत–तूफ़ान आ गया!"

मैंने घोड़ा-गाडी मे से बाहर झाककर देखा–सभी ओर अधेरा और तूफ़ान था। हवा किसी प्राणी की भाति भयावह ढग से चीख रही थी। बर्फ ने मुझे और सावेलिच को ढक दिया। घोडे कदम-कदम चल रहे थे और जल्द ही रुककर खड़े हो गये। "तुम रुक क्यो गये?" मैंने झल्लाकर कोचवान से पूछा। "चलते जाने मे क्या तुक है?" उसने अपनी सीट से नीचे उतरते हुए उत्तर दिया, "जाने अब ही कहा पहुच गये है, रास्ते का कुछ पता नही और सभी ओर घुप्प

10*

अँधेरा है। मैं उसे कोसने लगा, किन्तु सावेलिच ने उसका पक्ष लिया - "इसकी बात माननी चाहिये थी," उसने चिढ़कर कहा, "सराय में लौट जाते, वहां चाय पीते, सुबह तक आराम करते, तूफ़ान शान्त हो जाता और हम आगे चल देते। आखिर हमें जल्दी भी क्या है? क्या कहीं शादी में पहुंचना है!" सावेलिच की बात बिल्कुल सही थी। हमारे सामने कोई चारा नहीं था। बर्फ़ बहुत ज़ोर से गिरती जा रही थी। घोड़ा-गाड़ी के आस-पास बर्फ़ का टीला-सा बन गया था। घोड़े सिर झुकाये खड़े थे और जब-तब सिहर उठते थे। कोचवान गाड़ी के इर्द-गिर्द चक्कर काट रहा था, कोई काम न होने के कारण घोड़ों के साज़ को ठीक-ठाक कर रहा था। सावेलिच बड़बड़ा रहा था। मैं इस आशा से सभी ओर नज़र घुमाकर देख रहा था कि कहीं कोई घर या रास्ता दिखाई दे जाये, मगर चक्कर काटती बर्फ़ के सिवा मुझे और कुछ नज़र नहीं आया। अचानक कोई काली-सी चीज़ दिखाई दी। "ए कोचवान!" मैंने चिल्लाकर कहा, "देखो तो, वहां वह काला-सा क्या है?" कोचवान बहुत गौर से देखने लगा। "भगवान जाने, मालिक," उसने अपनी सीट पर बैठते हुए कहा, "न तो कोई गाड़ी है और न कोई पेड़ और वह हिलता-डुलता भी लग रहा है। ज़रूर कोई भेड़िया या आदमी होना चाहिये।"

मैंने इस अज्ञात चीज़ की ओर, जो उसी समय हमारी ओर आने लगी, गाड़ी बढ़ाने का आदेश दिया। दो मिनट बाद हम एक व्यक्ति के निकट पहुंच गये। "ए भले मानस!" कोचवान ने ऊंची आवाज़ में उसे सम्बोधित किया, "यहां का रास्ता जानते हो?"

"रास्ता तो यही है, मैं ठोस पट्टी पर खड़ा हूं," राहगीर ने उत्तर दिया, "मगर इससे लाभ क्या है?"

"सुनो, भले आदमी," मैंने उससे कहा, "क्या तुम इस इलाक़े को जानते हो? मुझे किसी ऐसी जगह पर पहुंचा सकते हो जहां रात बितायी जा सके?"

"यह इलाक़ा मेरा खूब जाना-पहचाना है," राहगीर ने जवाब दिया, "भगवान की कृपा से पैदल और घोड़े पर मैं यहां बहुत बार आ-जा चुका हूं। लेकिन देखो, मौसम तो कैसा है। रास्ते से भटका जा सकता है। यहीं रुककर इन्तज़ार करना ज़्यादा अच्छा होगा,

तूफान रुक जाये और आसमान साफ हो जाये – तब हम सितारो की मदद से रास्ता ढूढ लेगे।"

इस व्यक्ति के ऐसे शान्त अन्दाज़ से मेरी दिलजमई हुई। मैंने अपने को भगवान की दया पर छोडते हुए स्तेपी मे ही रात बिताने का निर्णय कर लिया कि सहसा राहगीर फुर्ती से बाक्स पर जा बैठा और कोचवान से बोला –

"भगवान की कृपा से ठहरने की जगह पास ही मे है, गाडी को दायी ओर बढाते चलो।"

"दायें को क्यो बढाऊ गाडी?" कोचवान ने नाराजगी से कहा। "कहा रास्ता दिखाई दे रहा है तुम्हे? यही सोचते हो कि घोडे पराये हैं, गाडी परायी है और इसलिये दौडाते चलो।" मुझे कोचवान की बात ठीक प्रतीत हुई।

"सचमुच तुम ऐसा क्यो सोचते हो कि कोई घर पास मे ही है?" मैंने पूछा।

"इसलिये कि हवा उधर से आ रही है," राहगीर ने जवाब दिया, "उसमे धुए की गन्ध है। इसका यही मतलब है कि गाव निकट ही है।"

उसकी तीक्ष्ण बुद्धि और सूझ-बूझ से मैं हैरान रह गया। मैंने कोचवान को गाडी बढाने का आदेश दिया। घोडे गहरी बर्फ मे धसते-धसते चलने लगे। गाडी धीरे-धीरे बढ रही थी, वह कभी बर्फ के टीले पर चढ जाती, तो कभी किसी गड्ढे मे धस जाती और कभी एक, तो कभी दूसरी दिशा मे धचका खाती। यह तूफानी सागर मे सफर करने जैसा लगता था। सावेलिच रह-रहकर मेरी बगल से टकराता और हाय-वाय करता। मैंने परदा नीचे गिरा दिया, फर का कोट ओढ लिया और बर्फीली आधी की लयबद्ध लोरी तथा गाडी के हिलने-डोलने मे ऊघ गया।

मैंने एक सपना देखा जिसे कभी नही भूल पाया और अपने जीवन की अजीब परिस्थितियो के साथ जब उसकी तुलना करके देखता हू, तो उसमे कुछ भविष्यवाणी-सी पाता हू। पाठक मुझे क्षमा करे, क्योकि सम्भवत वह अनुभव से यह जानता है कि पूर्वाग्रहो के प्रति अधिकतम तिरस्कार की भावना के बावजूद इन्सान मे अधविश्वास के अधीन

हो जाने की कैसी जन्मजात प्रवृत्ति विद्यमान है।

मैं मन और भावनाओं की ऐसी स्थिति में था, जब यथार्थ सपनों के अधीन होकर कच्ची नींद के अस्पष्ट बिम्बों में उनसे घुल-मिल जाता है। मुझे लगा कि बर्फ़ का तूफ़ान अभी अपना पूरा ज़ोर दिखा रहा है और हम इस बर्फ़ीले रेगिस्तान में रास्ते से भटक रहे हैं.. अचानक मुझे फाटक दिखाई दिया और मैं अपनी हवेली के अहाते में दाखिल हुआ। मुझे जिस पहले विचार ने चिन्तित किया, वह यह था कि मेरे मजबूरन घर लौटने पर पिता जी नाराज़ न हो उठे और इसे जान-बूझकर अपनी आज्ञा का उल्लंघन न माने। मन में इसी प्रकार की चिन्ता लिये हुए मैं गाड़ी से कूदकर बाहर आया और बहुत ही गहरे दुख में डूबी हुई मां को दरवाज़े पर खड़ी पाया। "श्शी," उन्होंने मुझे चुप रहने को कहा, "तुम्हारे पिता जी अपनी अन्तिम सांसें ले रहे हैं और तुमसे विदा लेना चाहते हैं।" मैं भयभीत-सा होकर मां के पीछे-पीछे सोने के कमरे में गया। देखता क्या हूं कि कमरे में बहुत मद्धिम रोशनी है और लोग मातमी-सी सूरतें बनाये हुए पलंग के करीब खड़े हैं। मैं दबे कदमों पलंग के करीब गया - मां ने पलंग के सामनेवाला थोड़ा-सा पर्दा हटाया और बोली, "अन्द्रेई पेत्रोविच, पेत्रूशा आ गया है, तुम्हारी बीमारी की खबर पाकर वह लौट आया है, उसे आशीर्वाद दो।" मैं घुटनों के बल हो गया और मैंने रोगी पर अपनी नज़र टिका दी। क्या देखता हूं? मेरे पिता जी की जगह काली दाढ़ीवाला एक देहाती बिस्तर पर लेटा हुआ है और खुशमिज़ाजी से मेरी ओर देख रहा है। मैंने कुछ न समझ पाते हुए मां की तरफ़ देखा और कहा, "यह क्या मामला है? यह तो पिता जी नहीं हैं। इस देहाती से भला मैं आशीर्वाद क्यों मांगू?" - "फिर भी ऐसा ही करो पेत्रूशा," मां ने उत्तर दिया, "यह तुम्हारा धर्म-पिता है। उसका हाथ चूमो और आशीर्वाद लो " मैं इसके लिये राज़ी नहीं हुआ। तब वह देहाती उछलकर बिस्तर से उठ खड़ा हुआ और अपनी पीठ के पीछे से कुल्हाड़ा निकालकर सभी ओर घुमाने लगा [illegible] जाना चाहा मगर ऐसा नहीं कर पाया। कमरा [illegible] हुआ था, लाशों से टकराकर मैं खून के डबरों में फिसल [illegible] देहाती ने मुझे प्यार से पुकारते हुए कहा, "डरो

नही, मेरी छत्र-छाया मे आ जाओ..." भय और आश्चर्य मुझ पर हावी हो गये... इसी क्षण मेरी आख खुल गयी। घोडे खडे थे, मावेलिच मेरा हाथ हिलाते हुए कह रहा था, "छोटे मालिक, बाहर आ जाओ, हम पहुंच गये।"

"कहा पहुच गये?" मैंने आखे मलते हुए पूछा।

"सराय मे। भगवान ने मदद की, हम सीधे बाड के पास पहुच गये। बाहर आ जाओ, छोटे मालिक, और जल्दी से भीतर चलकर अपने को गर्माओ।"

मैं घोडा-गाडी से बाहर निकला। बर्फीली आधी अब भी चल रही थी, यद्यपि उसका ज़ोर कम हो गया था। ऐसा घुप्प अधेरा था कि हाथ को हाथ नही सूझता था। कोट के पल्ले के नीचे लालटेन छिपाये हुए सराय का मालिक दरवाजे के पास हमसे मिला और मुझे तग, किन्तु साफ-सुथरे कमरे मे ले गया। उसमे केवल जलती मशाल की हल्की रोशनी थी। दीवार पर बन्दूक और कज़ज़ाकों की ऊची टोपी लटक रही थी।

सराय का मालिक याइक नदी के इलाके का कज़्ज़ाक था, लगभग साठ साल का प्रतीत होता था, किन्तु उसमे ताजगी और प्रफुल्लता बनी हुई थी। मावेलिच चीनी के बर्तनो की पेटी लिये हुए मेरे पीछे-पीछे आया, उसने चाय बनाने के लिये आग की व्यवस्था करने को कहा। मुझे पहले कभी भी चाय की इतनी अधिक आवश्यकता नही अनुभव हुई थी। सराय का मालिक आग की व्यवस्था करने चला गया।

"हमारा पथ-प्रदर्शक कहा है?" मैंने मावेलिच से पूछा।

"यहां हूं, हुजूर," मुझे ऊपर की ओर से आवाज़ सुनाई दी।

मैंने अगावघर के ऊपर नज़र डाली और वहा मुझे काली दाढी और चमकती हुई दो आखे दिखाई दी।

"क्यो मेरे भाई, ठिठुर गये?"

"ऐसे पिसे-फटे कोट मे ठिठुरूगा कैसे नही! भेड की खाल का कोट भी था, मगर अपने पाप को क्या छिपाऊ? कल गिरवी रख दिया – पाला कुछ अधिक ज़ोर का नही महसूस हो रहा था।"

सराय का मालिक इसी समय उबलता हुआ समोवार लेकर आया। मैंने अपने पथ-प्रदर्शक को चाय का प्याला पेश किया। देहाती अलावघर से नीचे उतरा। उसकी शक्ल-सूरत मुझे बहुत जंची – उम्र कोई चालीस साल, मझोला कद, दुबला-पतला और चौड़े-चकले कंधे। उसकी काली दाढ़ी में सफेदी की झलक थी और उसकी बड़ी-बड़ी सजीव आंखें लगातार चंचलता से हिल-डुल रही थीं। उसके चेहरे पर काफी मधुर, मगर धूर्ततापूर्ण भाव था। उसके बाल कज़्ज़ाकों के ढंग से कटे हुए थे वह फटा-पुराना कोट और तातारी ढंग की सलवार पहने था। मैंने चाय का प्याला उसकी तरफ बढ़ाया, उसने एक घूंट चखकर मुंह बनाया। "हुज़ूर, मुझ पर इतनी मेहरबानी कीजिये – शराब का एक गिलास लाने का आदेश दे दीजिये चाय हम कज़्ज़ाकों के पीने की चीज़ नहीं है।" मैंने बड़ी खुशी से उसकी यह इच्छा पूरी कर दी। सराय के मालिक ने अलमारी में से बोतल और गिलास निकाला उसके करीब गया और उसकी आंखों में झांकते हुए बोला, "अरे तुम फिर से हमारे इलाके में आ गये! किधर से आना हुआ?" मेरे पथ-प्रदर्शक ने अर्थपूर्ण ढंग से आंख मारी और रहस्यमय शब्दों में उत्तर दिया –

"साग-तरकारी के बगीचे में घूमा, पटुआ चुना, बुढ़िया ने कंकड़ फेंका – बस, मैं निकल गया। तुम्हारे यहां क्या हाल है?"

"हमारे यहां!" मेज़बान ने उसी तरह के रूपक में बात जारी रखी। "सन्ध्या की प्रार्थना का घण्टा बजाने का समय हो गया, पर पादरी की पत्नी अनुमति नहीं देती। पादरी मेहमान गया हुआ है, शैतान [illegible] मचा रहे हैं।"

"चुप रहो, चाचा!" मेरे आवारा पथ-प्रदर्शक ने आपत्ति की। "बरसात होगी, तो खुमियां भी होंगी, खुमियां होंगी तो टोकरी भी। और अब (उसने फिर से आंख मारी) कुल्हाड़ी को पीठ के [illegible] वन-रक्षक घूम रहा है। हुज़ूर! आपकी सेहत के लिये!" इतना कहकर उसने गिलास लिया, सलीब बनाई और एक ही सांस में उसे पी गया। इसके बाद उसने मेरे [illegible] और फिर अलावघर [illegible], और जो अलाव पर जा चढ़ा।

उस घड़ी इस चोर-भाषा में से मैं कुछ नहीं समझ सका।

किन्तु बाद को मैं यह भाप गया कि याइक कज्जाको की फौज * की चर्चा चल रही थी जिन्हें १७७२ के विद्रोह के बाद उन्ही दिनो वश मे किया गया था। सावेलिच बडी अप्रसन्नता प्रकट करते हुए यह बातचीत सुन रहा था। वह कभी तो सराय के मालिक और कभी पथ-प्रदर्शक को सन्देह की दृष्टि से देखता। सराय या स्थानीय रूप से 'उमेत' कहलानेवाली यह जगह एक तरफ को हटकर, गाव-पुरवे से बिल्कुल दूर, स्तेपी मे थी और चोरो के अड्डे से बहुत मिलती-जुलती थी। किन्तु हमारे लिये और कोई रास्ता नही था। सफर जारी रखने की बात ही नही सोची जा सकती थी। सावेलिच की बेचैनी से मुझे बडा मजा आ रहा था। इसी बीच मैंने सोने की तैयारी कर ली और बेच पर लेट गया। सावेलिच ने अलावघर के ऊपर सोने का निर्णय किया और सराय का मालिक फर्श पर लेट गया। कुछ देर बाद सभी खर्राटे भरने लगे और मैं गहरी नीद सो गया।

सुबह को काफी देर से आख खुली और मैंने देखा कि बर्फ का तूफान थम गया है। सूरज चमक रहा था। असीम स्तेपी मे आखो को चौधाती हुई बर्फ की चादर फैली थी। गाडी मे घोडे जोते जा चुके थे। मैंने सराय के मालिक को पैसे दिये जिसने इतने कम पैसे लिये कि सावेलिच ने भी उससे बहस नहीं की और आदत के मुताबिक मोल-भाव नही किया। पिछले दिन के सन्देह अब पूरी तरह उसके दिमाग से गायब हो गये थे। मैंने रास्ता दिखलानेवाले को बुलाया, मदद करने के लिये उसे धन्यवाद दिया और सावेलिच से कहा कि उसे वोदका के लिये पचास कोपेक दे दे। सावेलिच ने नाक-भौंह सिकोडी। "वोदका के लिये पचास कोपेक!"

*याइक नदी के तट पर अवस्थित कस्बे मे कज्जाक सेनाओ ने १२ जनवरी १७७२ को विद्रोह किया था जिसे गर्मी मे दबा दिया गया था। 'पुगाचोव के विद्रोह के इतिहास' मे पुश्किन ने दबा दिये गये कज्जाको की मन स्थिति का यो वर्णन किया है – "'अभी क्या है – आगे देखना!' क्षमा किये गये विद्रोही कहते थे, 'हम मास्को को हिला डालेगे न ' स्तेपियो और दूर-दराज़ के गावो मे गुप्त बैठके होती थी। सब कुछ से ऐसा मालूम होता था कि नया विद्रोह होने को है। सरदार की कमी थी। सरदार मिल गया।" – स०

उसने कहा, "यह किसलिये? क्या इसीलिये कि उसे घोडागाडी में बिठाकर सराय तक भी लाये? तुम चाहे कुछ भी क्यो न कहो मालिक, हमारे पास फालतू पचास कोपेक नही हैं। सभी को अगर वोदका के लिये पैसे देंगे, तो जल्द ही खुद हमें भूखे रहना पड़ेगा।" सावेलिच के साथ मैं बहस नहीं कर सकता था। मेरे दिये वचन के अनुसार पैसे पूरी तरह उसके अधिकार मे थे। फिर भी मुझे इस बात का खेद हो रहा था कि उस व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने मे असमर्थ हू जिसने यदि मुसीबत से नही, तो बहुत ही जटिल स्थिति से मुझे बचा लिया था। "अच्छी बात है," मैंने बडी शान्ति से कहा, "अगर पचास कोपेक नही देना चाहते, तो मेरे कपडों में से उसे कुछ निकाल दो। वह बहुत ही हल्के-फुल्के कपडे पहने है। उसे खरगोश की खाल का मेरा कोट दे दो।"

"सुनो, मेरे प्यारे, प्योतर अन्द्रेइच!" सावेलिच बोला। "खरगोश की खाल के तुम्हारे कोट को यह क्या करेगा? यह कुत्ते का पिल्ला अगले ही शराबखाने मे इसकी शराब पी जायेगा।"

"बुड्ढे, तुम्हे इसकी फिक्र करने की जरूरत नही," आवारा ने कहा, "कि पी डालूगा या नही। ये हुजूर मुझे अपना फर-कोट देना चाहते हैं, यह उनकी मर्जी है और तुम्हारा नौकर का काम बहस करना नही, हुक्म मानना है।"

"तुम्हे खुदा का डर-खौफ नही है, लुटेरे!" सावेलिच ने झल्लाकर उसे जवाब दिया। "तुम देख रहे हो कि मालिक अभी नादान है, कुछ समझता-बूझता नही और तुम उसकी सादगी से लाभ उठाकर उसे लूट लेना चाहते हो। क्या करोगे तुम रईसी फर-कोट का? अपने इन मनहूस कन्धों पर तुम उसे खींच-खांचकर भी नही चढ़ा पाओगे।"

"कृपया बहस नही करो," मैंने अपने इस बुजुर्ग से कहा, "इसी समय फर-कोट यहा ले आओ।"

"हे भगवान!" सावेलिच ने लम्बी सांस छोडी। "खरगोश की खाल का कोट लगभग बिल्कुल नया है! किसी और को दिया जाता, तो कोई बात भी बनती, आवारा शराबी को दिया जा रहा है!"

फिर भी खरगोश की खाल का कोट आ गया। देहाती उसी समय उसे पहनकर देखने लगा। वास्तव में ही यह कोट, जो मेरे लिये भी

छोटा हो गया था, उसके बदन पर भी कुछ तग रहा। किन्तु उसने उसकी सीवने उधेडकर उसे किसी तरह से पहन लिया। धागो के उधेड़े जाने की आवाज सुनकर सावेलिच चीखते-चीखते रह गया। मेरे उपहार से आवारा तो गद्‌गद हो गया। उसने मुझे घोडा-गाडी तक पहुचाया और सिर झुकाकर कहा –

"बहुत धन्यवाद, हुजूर! भगवान आपको आपकी नेकी का फल दे। आपकी इस मेहरबानी को कभी नही भूलूगा।" वह अपने रास्ते चल दिया और मैं सावेलिच की खीझ की ओर कोई ध्यान दिये बिना अपने सफर पर आगे चल पडा तथा बहुत जल्द ही पिछले दिन की बर्फीली आधी, रास्ता दिखानेवाले व्यक्ति और खरगोश की खाल के कोट के बारे मे भूल गया।

ओरेनबुर्ग पहुचते ही मैं जनरल के सामने हाजिर हुआ। लम्बे कद के इस व्यक्ति की बुढापे के कारण पीठ झुक चुकी थी और उसके लम्बे-लम्बे बाल एकदम सफेद थे। उसकी पुरानी, बदरग वर्दी देखकर आन्ना इओआन्नोव्ना के समय के फौजी की याद हो आयी। जनरल के बात करने के अन्दाज मे जर्मन लहजे की बडी अनुभूति होती थी। मैंने उसे पिता जी का पत्र दिया। पिता जी का नाम सुनकर उसने झटपट मेरी ओर देखा।

"हे पगवान!" उसने कहा। "ऐसा लकता जैसा कुछ ही वक्त पहले अन्द्रेई पेत्रोविच खुद तुम्हारे समान था और अब कैसा बाक्रा जवान बेटा है उसका! आह, वक्त, वक्त!" उसने पत्र खोला और जर्मन लहजेवाली रूसी भाषा मे अपनी टीका-टिप्पणिया करते हुए उसे धीमे-धीमे पढने लगा। "'आदरणीय महानुभाव अन्द्रेई कार्लोविच, आशा करता हू कि आप श्रीमान ' यह सब कैसी औपचारिकता है? थू, शरम आनी चाहिये उसे! माना – अनुशासन बहुत जरूरी है, मगर पुराने कोमराड को कौन ऐसे खत लिखता है? .. 'श्रीमान भूले नही होगे .' हू . 'और जब दिवगत फेल्डमार्शल मीनिख... कूच... और कारोलीन्का को भी'. ओह शैतान! उसे हमारी पुरानी शैतानियाँ भी याद है? 'अब काम की बात . आपके पास अपने बदमाश को भेज रहा हू'... हू... 'साही के दस्तानो मे रखे इसे'... साही के दस्तानो मे – क्या मतलब इसका? शायद कोई रूसी कहावत...

[illegible] [illegible] है [illegible], बूढ़े के हाथों में रखें ! ' [illegible]
[illegible] करने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] है ... [illegible] यहां तक [illegible] हुए, [illegible] के
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बताना दिया [illegible] से [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] न दिखाते [illegible] [illegible] के बूढ़े के हाथों में रखें।'

मैं समझा ... और इसे [illegible] न दे ... यही बात है, यदि
के हाथों में रखने का यह मतलब नहीं जो तुमने बताया 'इसके
पासपोर्ट भी भेज रहा हूँ ... कहां है पासपोर्ट? यह रहा ... सेमेनोव
रेजिमेंट में इसे भेज देगा। अच्छी बात है, अच्छी बात है, सब
कुछ कर दिया जायेगा ... बताने इसे पद की ओर ध्यान दिये बिना
पुराने साथी और दोस्त के नाते ... तुम मुझे गले लगाने की अनुमति
दोगे ... बोले आखिर तो [illegible] की बात की ... आदि आदि
तो प्यारे ... उसने पत्र पढ़ने और मेरा पासपोर्ट एक ओर रखने के
बाद मुझसे कहा ... सब कुछ हो जायेगा – तुम्हें ... रेजिमेंट में अफसर
बना दिया जायेगा। बेकार वक्त बरबाद न हो, इसलिये कल ही
बेलोगोर्स्क के दुर्ग में चले जाओ। वहां तुम बहुत भले और ईमानदार
आदमी, कप्तान मिरोनोव के अधीन काम करोगे, असली फ़ौजी रंग-
ढंग देखोगे, अनुशासन सीख जाओगे। यहां ओरेनबुर्ग में तुम्हारे करने-
धरने को कुछ नहीं ... जवान आदमी के लिये काहिली बुरी चीज़ है।
और आज दोपहर का भोजन मेरे साथ करने की कृपा करो।"

"बद से बदतर!" मैंने मन ही मन सोचा, "क्या फ़ायदा हुआ
मुझे इससे कि मैं जब मां के गर्भ में था, तभी गार्ड-सेना में सार्जेंट
के रूप में मेरा नाम दर्ज करवा दिया गया था! कहां आ पहुंचा हूं
मैं? ... रेजिमेंट में और सो भी किर्गीज-क़ज़ाख़ स्तेपी के सुनसान
दुर्ग में!" मैंने अन्द्रेई कार्लोविच के साथ दोपहर का भोजन किया।
हम दोनों के अलावा उसका पुराना सहायक फ़ौजी अफ़सर भी खाने
की मेज़ पर मौजूद था। खाने-पीने के मामले में अत्यधिक कड़ी जर्मन
मितव्ययता बरती गयी थी। मेरे ख़्याल में अपनी छड़े की मेज़ पर
कभी-कभी एक फालतू मेहमान की हाज़िरी के डर से ही मुझे फ़ौरन
दुर्ग की तरफ़ खदेड़ दिया गया था। अगले दिन जनरल से विदा लेकर
मैं अपने नियुक्ति-स्थान की ओर रवाना हो गया।

तीसरा अध्याय

दुर्ग

छोटी-सी गढ़िया में रहते, हम तो समय बिताते हैं,
हर दिन जीभर पानी पीते, हम तो रोटी खाते हैं,
लेकिन दुश्मन ने यदि चाहा, आये मौज मनाये
यहा कचौडी और समोसों की वह दावत खाये
तो हम भरे तोप मे गोले,
उसको मजा चखाये, उसका मन बहलाये।

सैनिक गीत

पुराने जमाने के लोग, मेरे हुजूर।

घोंघाबसन्त

बेलोगोर्स्क का दुर्ग ओरेनबुर्ग से चालीस वेर्स्ता दूर था। रास्ता याइक नदी के खडे तट के साथ-साथ जाता था। नदी अभी जमी नही थी और उसकी सीसे के रग जैसी लहरे सफेद बर्फ से ढके तटो के बीच उदास झलक दिखा रही थी। तटो के दोनो ओर किर्गीज स्तेपी फैली हुई थी। मैं ख्यालो मे डूब गया जो अधिकतर उदासीभरे थे। दुर्ग का जीवन मेरे लिये बहुत कम आकर्षण रखता था। मैंने अपने भावी अधिकारी, कप्तान मिरोनोव की कल्पना करने का प्रयास किया। मेरी कल्पना मे एक कठोर और चिडचिडे बूढे के रूप मे उसका चित्र उभरा जो अपनी नौकरी के सिवा और कुछ नही जानता था तथा हर छोटी-मोटी बात के लिये मुझे हिरासत मे लेने तथा सिर्फ रोटी और पानी पर रखने का आदेश देने को तैयार था। इसी बीच झुटपुटा होने लगा। हमारी घोडा-गाडी काफी तेज रफ्तार से जा रही थी। "अभी बहुत दूर है क्या दुर्ग?" मैंने अपने कोचवान से पूछा। "नही, बहुत दूर नही है," उसने जवाब दिया। 'वह तो दिखाई भी दे रहा है।" मैंने दहशत पैदा करनेवाले दुर्ग-प्राचीर, बुर्ज और मीनारे देख

[illegible] की [illegible] से [illegible] और [illegible], किन्तु [illegible] की [illegible] से घिरे हुए गाँव के [illegible] बाड़े के अतिरिक्त मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। एक ओर बर्फ़ से अधढकी घास की तीन चार ढेरियाँ थीं और दूसरी ओर अस्तव्यस्त ढंग की पवनचक्की थी जिसके [illegible] पंख बेदम से नीचे लटके हुए थे। "दुर्ग कहाँ है?" मैंने अचम्भे से पूछा।
"यह रहा," कोचवान ने बस्ती की ओर इशारा करते हुए जवाब दिया और इसी समय हमारी गाड़ी ने गाँव में प्रवेश किया। फाटक के पास मुझे लोहे की एक पुरानी तोप रखी दिखाई दी, गलियाँ तंग और टेढ़ी-मेढ़ी थीं, लकड़ी के घर नीचे-नीचे और अधिकतर पुआल की छतों वाले थे। मैंने कुमेदांत के यहाँ चलने का आदेश दिया और एक मिनट बाद हमारी गाड़ी लकड़ी के गिरजे की बगल में ऊँची जगह पर बने लकड़ी के घर के सामने जाकर खड़ी हो गयी।

किसी ने मेरा स्वागत-सत्कार नहीं किया। मैंने ड्योढ़ी में जाकर प्रवेश-कक्ष का दरवाज़ा खोला। मेज़ पर बैठा हुआ एक बूढ़ा अपाहिज हरे रंग की वर्दी की कोहनी पर नीला पैबन्द लगा रहा था। मैंने उससे कहा कि वह मेरे आने की सूचना दे दे। "भीतर चले जाओ, भैया," अपाहिज ने उत्तर दिया, "वे घर पर ही हैं।" मैं पुराने ढंग से सजे हुए एक साफ़-सुथरे कमरे में दाखिल हुआ। कोने में रखी हुई अलमारी में चीनी के बर्तन थे, दीवार पर शीशे और चौखटे में जड़ा हुआ अफ़सर का डिप्लोमा तथा उसके निकट ही किस्त्रीन* और ओचाकोव** पर कब्ज़े की चढ़ाई तथा 'दुलहन का चुनाव' एवं 'बिल्ले का दफ़न' की भद्दी-सी तस्वीरें भी लटकी हुई थीं। रुईदार जाकेट पहने और सिर पर रूमाल बाँधे एक बुढ़िया खिड़की के क़रीब बैठी थी। वह ऊन का गोला बना रही थी जिसके लच्छे को अफ़सर की वर्दी में एक काना बूढ़ा अपने हाथों पर फैलाये हुए था। "क्या बात है, भैया?" अपना काम जारी रखते हुए उसने पूछा। मैंने जवाब दिया कि सैन्य-सेवा के लिये आया हूँ और अपने आने की सूचना देने को कप्तान महोदय

---

* प्रशा का दुर्ग जिस पर रूसी सेना ने १७५८ में अधिकार किया।

** किला जिसे रूसी फौज ने १७३७ में कब्ज़े में लिया।—

के सामने हाज़िर हुआ हू। इतना कहकर मैंने काने अफ़सर को दुर्गपति समझते हुए उसे सम्बोधित करना चाहा, किन्तु बुढिया ने पहले से तैयार किये गये मेरे शब्दो को बीच मे ही टोकते हुए कहा, "इवान कुज्मिच घर पर नही है। पादरी गेरासिम के यहा गये है। खैर, कोई बात नही, मैं उनकी पत्नी हू। तुम्हारा स्वागत है। बैठो, भैया।" उसने नौकरानी को पुकारा और सार्जेंट को बुलाने का आदेश दिया। बूढा अपनी एक आख से मुझे जिज्ञासापूर्वक देख रहा था। "मैं यह पूछने की धृष्ठता कर सकता हू," उसने कहा, "कि आप किस रेजिमेन्ट मे थे?" मैंने उसकी जिज्ञासा को शान्त कर दिया। "यह पूछने की भी धृष्ठता कर सकता हू कि गार्ड-सेना से दुर्ग मे क्यो आ गये?" मैंने उत्तर दिया कि बडे अफ़सरो की ऐसी ही इच्छा थी। "सम्भवत कोई ऐसी हरकत करने के लिये, जो गार्ड-सेना के अफ़सर को शोभा नही देती," चुप न होनेवाले मेरे इस प्रश्नकर्त्ता ने अपनी बात जारी रखी। "बस, काफी बेकार की बाते कर चुके," कप्तान की बीवी ने उससे कहा, "देखते नही हो कि नौजवान सफ़र की वजह से थका-हारा हुआ है, उसे परेशान नही करो (हाथो को सीधे रखो)। और तुम भैया," उसने मुझे सम्बोधित करते हुए कहा, "इस बात के लिये दुखी नही होओ कि तुम्हे हमारे इस सुनसान इलाके मे भेज दिया गया है। न तो तुम पहले हो और न अन्तिम। यहा रहोगे तो इस जगह को चाहने भी लगोगे। अलेक्सेई इवानोविच श्वाबरिन को किसी की हत्या करने के कारण यहा आये हुए चार साल से अधिक समय हो गया है। भगवान जाने, उसने ऐसा क्यो किया। हुआ यह कि एक लेफ्टिनेंट के साथ वह नगर से बाहर चला गया, दोनो अपने साथ तलवारे ले गये और उन्हे एक-दूसरे के बदन मे घोपने लगे। अलेक्सेई इवानोविच ने उस लेफ्टिनेंट को बींध डाला और वह भी दो साक्षियो की उपस्थिति मे! किया क्या जाये! किसी से भी ऐसे हो सकता है।"

इसी समय जवान और सुघड-सुगठित सार्जेंट भीतर आया।

"मक्सीमिच!" कप्तान की बीवी ने उससे कहा। "श्रीमान अफ़सर को कोई साफ़-सुथरा फ्लैट दे दो।"

"जो हुक्म, वसिलीसा येगोरोव्ना," सार्जेंट ने जवाब दिया। "हुजूर को इवान पोलेजायेव के यहा ही क्यो न ठहरा दिया जाये?"

"अरे नहीं, मक्सीमिच," कप्तान की बीवी बोली, "पोलेजायेव के यहां तो वैसे ही घिचपिच है, फिर वह मेरा दूर का रिश्तेदार भी है और उसे यह ध्यान रहता है कि हम उसके अफ़सर हैं। श्रीमान अफ़सर को आपका नाम और पितृनाम क्या है? प्योतर अन्द्रेइच?. प्योतर अन्द्रेइच को सेम्योन कूज़ोव के मकान में ले जाओ। उस शैतान ने मेरे तरकारी के बगीचे में अपना घोड़ा छोड़ दिया था। तो मक्सीमिच, और सब कुछ तो ठीक-ठाक है न?"

"भगवान की कृपा से सब ठीक है," कज़्ज़ाक ने जवाब दिया। "सिर्फ़ गर्म पानी के टब के लिये कार्पोरल प्रोखोरोव की उस्तीन्या निगुलीना के साथ गुसलखाने में झड़प हो गयी।"

"इवान इग्नातिच!" कप्तान की बीवी ने काने बूढ़े से कहा। "प्रोखोरोव और उस्तीन्या के झगड़े की छानबीन कर लो कि उनमें से कौन दोषी है और कौन नहीं। और दोनों को सज़ा दो। तो मक्सीमिच, जाओ, भगवान तुम्हारा भला करे। प्योतर अन्द्रेइच, मक्सीमिच आपको आपके घर पर पहुंचा आयेगा।"

मैं सिर झुकाकर बाहर आ गया। सार्जेंट मुझे दुर्ग के छोर तथा ऊंचे नदी-तट पर स्थित घर में ले गया। आधे घर में सेम्योन कूज़ोव का परिवार रह रहा था और बाकी आधा मुझे दे दिया गया। उसमें एक खासा साफ़-सुथरा कमरा था, जिसे विभाजन-दीवार बनाकर दो हिस्सों में बांट दिया गया था। सावेलिच वहां रहने-सहने की व्यवस्था करने लगा और मैं छोटी-सी खिड़की से बाहर देखने लगा। मेरे सामने उदास-सी स्तेपी फैली हुई थी। एक ओर को लकड़ी के कुछ घर नज़र आ रहे थे और गली में कुछ मुर्गियां घूम रही थीं। हाथ में कठौता लिये एक बुढ़िया सुअरों को बुला रही थी जो हेल-मेल से खू-खू करते हुए उसकी ओर जा रहे थे। तो मेरी किस्मत में ऐसी जगह पर अपनी जवानी बिताना लिखा था! उदासी मुझ पर हावी हो गयी। मैं खिड़की से परे हट गया और सावेलिच के समझाने-बुझाने और लगातार यह दुहराने के बावजूद—"हे भगवान! कुछ भी खाना नहीं चाहता! अगर बेटा बीमार हो गया तो मालकिन क्या कहेगी?"—मैं रात का भोजन किये बिना ही बिस्तर पर चला गया।

अगली सुबह को मैं कपड़े पहनने ही लगा था कि दरवाज़ा खुला

और नाटे क़द का एक जवान अफ़सर मेरे कमरे मे दाखिल हुआ। उसका सावला चेहरा सुन्दर नही, मगर बहुत ही सजीव था। "माफ कीजिये," उसने मुझसे फ़ासीसी मे कहा, "कि औपचारिकता के बिना आपसे जान-पहचान करने आ गया हूं। आपके आने की मुझे कल खबर मिली और मेरी इस इच्छा ने कि आखिर तो किसी इन्सान का मुह देख पाऊगा, मुझे ऐसे वश मे कर लिया कि मुझसे रहा न गया। यहा कुछ समय तक और रहने के बाद आप यह सब समझ जायेगे।" मैंने अनुमान लगा लिया कि यह द्वन्द्व-युद्ध के लिये गार्ड-सेना से यहा भेजा गया अफसर है। हमने झटपट परिचय कर लिया।

श्वाबरिन खासा समझदार व्यक्ति था। उसकी बातचीत काफी लच्छेदार और दिलचस्प थी। उसने बड़ी चुटकिया ले लेकर दुर्गपति के परिवार, यहा के दूसरे लोगो और क्षेत्र का वर्णन किया जहा किस्मत मुझे खीच लाई थी। उसकी बाते सुनते हुए मैं खुलकर हस रहा था। इसी समय वही अपग मेरे पास आया जो दुर्गपति के प्रवेश-कक्ष मे बैठा हुआ वर्दी की मरम्मत कर रहा था और उसने वसिलीसा येगोरोव्ना की ओर से मुझे उनके यहा भोजन करने को आमन्त्रित किया। श्वाबरिन खुशी से मेरे साथ हो लिया।

दुर्गपति के घर के निकट हमे मैदान मे लम्बी चोटियोवाले तथा तिकोणी टोपिया पहने कोई बीसेक बूढे अपग सैनिक फौजी कवायद के लिये कतार मे खडे दिखाई दिये। रात की टोपी और ड्रेसिंग गाउन पहने ऊंचे कद के प्रफुल्ल बूढे दुर्गपति उनके सामने खडे थे। हमे देखकर वे हमारे पास आये, उन्होने मुझसे स्नेहपूर्ण कुछ शब्द कहे और फिर से कवायद करवाने लगा। हम यह कवायद देखने के लिये रुक गये, किन्तु दुर्गपति ने अनुरोध किया कि हम वसिलीसा येगोरोव्ना के पास जाये और कहा कि वे स्वय भी जल्द ही वहा आ जायेगे। "यहा आपके देखने के लिये कुछ नही है," उन्होंने इतना और जोड दिया।

वसिलीसा येगोरोव्ना ने बडी सहजता और प्रसन्नता से हमारा स्वागत किया और मुझसे ऐसे मिली मानो एक अर्से से मुझे जानती हों। अपाहिज फौजी और पालाशा नौकरानी मेज पर खाने-पीने की व्यवस्था कर रहे थे। "मेरा इवान कुज़्मिच तो आज कवायद मे कुछ ज्यादा ही खो गया है!" दुर्गपति की बीवी ने कहा। "पालाशा, साहब को

भोजन करने के लिए बुला लाओ। और माशा कहां है?" इसी क्षण गोल चेहरे, गुलाबी गालों और सुनहरे बालोंवाली कोई अठारह बरस की युवती कमरे में दाखिल हुई। घबराहट के कारण लाल हुए कानों के पीछे उसके बाल बड़े अच्छे ढंग से सँवारे हुए थे। पहली नजर में वह मुझे बहुत अच्छी नहीं लगी। मेरे मन में पूर्वाग्रह की गांठ रही हुई थी। उसे देखा था - श्वाब्रिन ने कप्तान की बेटी, इसी माशा को पूरी तरह एक बुद्धू लड़की के रूप में मेरे सामने चित्रित किया था। माशा यानी मरीया इवानोव्ना कोने में बैठकर सिलाई करने लगी। इसी बीच बन्दगोभी का शोरबा परोस दिया गया। पति को अभी तक गायब पाकर वसिलीसा येगोरोव्ना ने पालाशा को फिर से उन्हें बुलाने भेजा। ' साहब से कहना कि मेहमान उनकी राह देख रहे हैं, शोरबा ठंडा हो जायेगा। भगवान की कृपा से कवायद कहीं भाग नहीं जायेगी, बाद में चीख-चिल्ला लेंगे फौजियों पर।" कुछ ही देर बाद काने बूढ़े फौजी के साथ कप्तान कमरे में आये। 'यह क्या बात है, मेरे प्यारे?" पत्नी ने उनसे कहा। "भोजन कभी का परोसा जा चुका है मगर तुम आने का नाम नहीं लेते।' - "सुनो तो वसिलीसा येगोरोव्ना," इवान कुज़्मिच ने उत्तर दिया, "मैं अपना फौजी काम कर रहा था, सैनिकों को शिक्षा दे रहा था।" - "बस, बस, रहने दो।" पत्नी ने आपत्ति की। "यह तो सिर्फ़ कहने की बात है कि तुम सैनिकों को शिक्षा देते हो। न तो वे कभी कुछ सीखेंगे और न तुम खुद ही यह काम अच्छी तरह से जानते हो। घर बैठकर भगवान का नाम जपते, तो ज़्यादा अच्छा होता। प्यारे मेहमानो, मेज़ पर पधारने की कृपा करें।"

हम भोजन करने बैठे। वसिलीसा येगोरोव्ना क्षण भर को भी चुप नहीं हुई, मुझ पर प्रश्नों की झड़ी लगाये रही - मेरे माता-पिता कौन हैं, जीवित हैं या नहीं, कहां रहते हैं और उनकी कितनी सम्पत्ति है? यह सुनकर कि मेरे पिता जी के तीन सौ भूदास हैं, वे कह उठीं, "सच! कितने अमीर लोग हैं इस दुनिया में! इधर, हमारे यहां तो ले-देकर यही एक पालाशा नौकरानी है और भगवान की दया से कुछ बुरी जिन्दगी नहीं है हमारी। बस, एक ही चिन्ता है - माशा शादी-ब्याह के लायक हो गयी है, लेकिन दहेज के नाम पर क्या है उसके पास? फूटी कौड़ी भी नहीं। कोई भला आदमी मिल जाये,

तो अच्छी बात है। नही तो बैठी रहेगी उम्र भर कुआरी ही।" मैंने मरीया इवानोव्ना की ओर देखा – शर्म से वह बिल्कुल लाल हो गयी थी और इतना ही नही, आंसू की एकाध बूद भी उसकी प्लेट मे टपक पडी थी। मुझे उस पर तरस आया और मैंने झटपट बातचीत का विषय बदल दिया। "मैंने सुना है," किसी प्रसग के बिना ही मैं कह उठा, "कि आपके दुर्ग पर बश्कीरी लोग हमला करनेवाले हैं।" – "भैया, किससे सुना है तुमने यह?" इवान कुज़्मिच ने पूछा। "ओरेनबुर्ग मे सुनने को मिला था," मैंने जवाब दिया। "बेकार की बात है!" दुर्गपति ने कहा। "हमारे यहा एक अर्से से ऐसा कुछ सुनने मे नही आ रहा। बश्कीरी लोग डरे हुए हैं और किर्गीज़ियो का भी हमने दिमाग ठीक किया हुआ है। वे हमसे नही उलझेगे और अगर उलझेगे तो उनकी ऐसी तबीयत साफ की जायेगी कि दस बरस तक चू नही करेगे।" – "इस तरह के खतरो का शिकार हो सकनेवाले दुर्ग मे रहते हुए आपको डर नही लगता?" मैंने दुर्गपति की पत्नी को सम्बोधित करते हुए पूछा। "आदत हो गयी है, भैया," उन्होने उत्तर दिया। "बीस साल हो गये जब हमे यहा भेजा गया था और भगवान ही जानता है कि तब इन कमबख्त काफिरो से मैं कितनी डरती थी! कभी-कभी ऐसा भी होता था कि जैसे ही बन-बिलाव की उनकी टोपिया दिखाई देती, उनकी चीख-चिल्लाहट सुनाई पडती, सच मानना, मेरा दिल उसी वक्त बैठ जाता! मगर अब ऐसी आदत पड गयी है कि अगर कोई आकर यह कहता है कि ये शैतान लोग किसी बुरे इरादे से दुर्ग के आस-पास घूम रहे हैं, तो मैं अपनी जगह से टस से मस भी नही होती।"

"वसिलीसा येगोरोव्ना बडी साहसी महिला है," श्वाबरिन ने बडी शान से कहा। "इवान कुज़्मिच मेरी इस बात की गवाही दे सकते हैं।"

"अरे हां," इवान कुज़्मिच बोले, "डरनेवाली औरतो मे से नही है यह।"

"और मरीया इवानोव्ना?" मैंने पूछा, "क्या वह भी आपकी तरह ही साहसी है?"

"कौन, माशा?" मां ने उत्तर दिया, "माशा साहसी नही, डरपोक है। अभी तक गोली चलने की आवाज़ नही सुन सकती –

११*

तो अच्छी बात है। नहीं तो बैठी रहेगी उम्र भर कुआरी ही।" मैंने मरीया इवानोव्ना की ओर देखा—शर्म से वह बिल्कुल लाल हो गयी थी और इतना ही नहीं, आसू की एकाध बूद भी उसकी प्लेट मे टपक पडी थी। मुझे उस पर तरस आया और मैंने झटपट बातचीत का विषय बदल दिया। "मैंने सुना है," किसी प्रसग के बिना ही मैं कह उठा, "कि आपके दुर्ग पर बश्कीरी लोग हमला करनेवाले है।"—"भैया, किससे सुना है तुमने यह?" इवान कुज्मिच ने पूछा। "ओरेनबुर्ग मे सुनने को मिला था," मैंने जवाब दिया। "बेकार की बात है!" दुर्गपति ने कहा। "हमारे यहा एक अर्से से ऐसा कुछ सुनने मे नही आ रहा। बश्कीरी लोग डरे हुए हैं और किर्गीजियो का भी हमने दिमाग ठीक किया हुआ है। वे हमसे नही उलझेगे और अगर उलझेगे तो उनकी ऐसी तबीयत साफ की जायेगी कि दस बरस तक चू नही करेगे।"—"इस तरह के खतरो का शिकार हो सकनेवाले दुर्ग मे रहते हुए आपको डर नही लगता?" मैंने दुर्गपति की पत्नी को सम्बोधित करते हुए पूछा। "आदत हो गयी है, भैया," उन्होने उत्तर दिया। "बीस साल हो गये जब हमे यहा भेजा गया था और भगवान ही जानता है कि तब इन कमबख्त काफिरो से मैं कितनी डरती थी! कभी-कभी ऐसा भी होता था कि जैसे ही बन-बिलाव की उनकी टोपिया दिखाई देती, उनकी चीख-चिल्लाहट सुनाई पडती, सच मानना, मेरा दिल उसी वक्त बैठ जाता! मगर अब ऐसी आदत पड गयी है कि अगर कोई आकर यह कहता है कि ये शैतान लोग किसी बुरे इरादे से दुर्ग के आस-पास घूम रहे हैं, तो मैं अपनी जगह से टस से मस भी नही होती।"

"वसिलीसा येगोरोव्ना बडी साहसी महिला हैं," श्वाब्रिन ने बडी शान से कहा। "इवान कुज्मिच मेरी इस बात की गवाही दे सकते हैं।"

"अरे हा," इवान कुज्मिच बोले, "डरनेवाली औरतो मे से नहीं है यह।"

"और मरीया इवानोव्ना?" मैंने पूछा, "क्या वह भी आपकी तरह ही साहसी है?"

"कौन, माशा?" मा ने उत्तर दिया, "माशा साहसी नही, डरपोक है। अभी तक गोली चलने की आवाज नही सुन सकती—

सुनते ही सिर से पांव तक कांप उठती है। दो साल पहले इवान कुज्मिच को क्या सूझी कि मेरे जन्मदिन पर तोप से सलामी दिलवा दी। मेरी यह चिड़िया तो डर के मारे मरते-मरते बची। तब से हम कमबख्त तोप को कभी नहीं चलवाते।"

हम लोग खाने की मेज पर से उठे। कप्तान और उनकी पत्नी सोने चले गये। मैं श्वाब्रिन के साथ हो लिया और उसी की संगत में मैंने सारी शाम बितायी।

चौथा अध्याय

द्वन्द्व-युद्ध

> कृपा करो, सम्मुख आ जाओ अपना बदन उघारो।
> निश्चय, मेरा खड्ग तुम्हारे आर-पार हो जाये!
>
> कन्याज्निन

कुछ सप्ताह बीते और बेलोगोर्स्क के दुर्ग मे मेरा जीवन न केवल बर्दाश्त करने के लायक, बल्कि सुखद भी हो गया। दुर्गपति के यहा मुझे एक तरह से घर का आदमी ही समझा जाता था। पति-पत्नी, दोनो ही बहुत सम्माननीय व्यक्ति थे। सैनिक का बेटा होने हुए अफ़सर बन जानेवाले इवान कुज्मिच अनपढ तथा सीधे-सादे, किन्तु बहुत ही ईमानदार और दयालु व्यक्ति थे। उनकी पत्नी उन्हें अपने इशारों पर नचाती थी जो उनकी नम्र तबीयत के बिल्कुल अनुरूप था। वसिलीसा येगोरोव्ना नौकरी के काम-काज को गिरस्ती के काम-धन्धे की तरह ही मानती थी और दुर्ग का अपने घर की भाति ही सचालन करती थी। मरीया इवानोव्ना ने जल्द ही मुझसे घबराना-कतराना बन्द कर दिया। हमारे बीच अच्छी जान-पहचान हो गयी। मैंने उसे समझदार और सवेदनशील लडकी पाया। मुझे पता भी नही चला और इस भले परिवार, यहा तक कि काने लेफ्टिनेट इवान इग्नातिच से भी मुझे लगाव हो गया, जिसके बारे मे श्वाबरिन ने यह कपोल-कल्पना की थी कि वसिलीसा येगोरोव्ना के साथ उसके अनुचित सम्बन्ध हैं, जबकि

इसमे लेशमात्र भी सचाई नही थी। किन्तु श्वावरिन की बला से।

मुझे अफसर बना दिया गया था। मेरी ड्यूटी कोई खास थकानेवाली नही थी। भगवान ही जिसका मालिक था, इस तरह के इस दुर्ग मे तो न कवायद होती थी, न सैनिक शिक्षण और न ही पहरा-रखवाली। दुर्गपति अपनी इच्छा से ही कभी-कभी अपने सैनिकों को कवायद करवाते थे, किन्तु अभी तक इतनी सफलता नही प्राप्त कर सके थे कि उन सबको दायें और बाये पहलू की पक्की जानकारी हो जाती, यद्यपि उनमे से अधिकाश दाये या बाये मुडने का आदेश मिलने पर इसलिये अपने ऊपर सलीब का निशान बनाते थे कि उनसे गलती न हो जाये। श्वावरिन के पास कुछ फ्रासीसी भाषा की पुस्तके थी। मैं उन्हे पढने लगा और मुझमे साहित्यिक रुचि जागृत होने लगी। सुबह के वक्त मैं पढता, अनुवाद करता और कभी-कभी कविता रचता। दिन का खाना लगभग हमेशा दुर्गपति के यहा ही खाता और आम तौर पर दिन का शेष भाग भी वही बिताता। किसी-किसी शाम को पादरी गेरासिम भी अपनी पत्नी अकुलीना पम्फीलोव्ना के साथ, जो इस इलाके मे खबरो-अफवाहो का भण्डार थी, यहा आते। जाहिर है कि श्वावरिन के साथ मेरी लगभग हर दिन ही मुलाकात होती थी, लेकिन जैसे-जैसे वक्त बीतता जाता था, उसकी बातचीत मेरे लिये अधिकाधिक अप्रिय होती जाती थी। दुर्गपति के परिवार के बारे मे उसके हर दिन के मजाक मुझे अच्छे नही लगते थे, खास तौर पर मरीया इवानोव्ना के सम्बन्ध मे उसके तीखे-चुभते व्यग्य। दुर्ग मे ऐसे अन्य लोग नही थे जिनसे मिला-जुला जा सकता और मुझे इसकी चाह भी नही थी।

भविष्यवाणियो के बावजूद बश्कीरियो ने कोई हगामा नही किया। हमारे दुर्ग के सभी ओर शान्ति का बोलबाला था। किन्तु अप्रत्याशित आपसी झगडे से यह शान्ति भग हो गयी।

मैं पहले कह चुका हू कि कुछ साहित्य-सृजन करने लगा था। उस समय को देखते हुए मेरे प्रयोग कुछ बुरे नही थे और कुछ वर्ष बाद अलेक्सान्द्र पेत्रोविच सुमारोकोव* ने उनकी बडी प्रशसा भी की।

---

* १८वी शताब्दी (१७१८–१७७७) के एक नाटककार, कवि और रूसी क्लासिकी साहित्य के एक प्रतिनिधि। – स०

एक दिन मैंने एक ऐसा गीत रचा जिससे मुझे काफी सन्तोष हुआ। यह तो सर्वविदित है कि सर्जक कभी-कभी सलाह लेने की आड़ में हमदर्द श्रोता की इच्छा करते हैं। सुनाने अपने गीत की साफ़ नकल तैयार करके मैं श्वाबरिन के पास ले गया। दुर्ग में वही एक ऐसा व्यक्ति था जो कविता का मूल्यांकन कर सकता था। छोटी-सी भूमिका बांधने के बाद मैंने जेब से अपनी नोटबुक निकाली और उसे यह रचना सुनाई–

> व्यर्थ यत्न करता हूँ मैं जो
> अपने मन से प्यार भुलाऊँ
> प्यारी माशा से कतराकर
> मुक्त हृदय को अपने पाऊँ!
>
> जिन आँखों ने मुग्ध किया है
> सम्मुख रहतीं मेरे हर क्षण
> लूट लिया है चैन हृदय का
> विह्वल विकल किया मेरा मन।
>
> मर्म-वेदना तुमने जानी
> माशा, मुझ पर दया करो तुम,
> मुझ पर जादू करनेवाली
> मेरी पीड़ा व्यथा हरो तुम।

"कहो, कैसा लगा तुम्हें मेरा यह गीत?" मैंने अधिकार के रूप में प्रशंसा की आशा करते हुए श्वाबरिन से पूछा। किन्तु मेरा दुर्भाग्य कहिये कि सामान्यतः बड़े शिष्ट श्वाबरिन ने दो टूक कह दिया कि मेरा गीत किसी काम का नहीं।

"भला क्यों?" अपनी खीझ को छिपाते हुए मैंने पूछा। "इस-लिये," उसने जवाब दिया, "कि ऐसी रचनाएं मेरे अध्यापक वसीली किरीलिच त्रेद्याकोव्स्की* को शोभा देती हैं और वे मुझे उनके प्रेम-छन्दों की अत्यधिक याद दिलाती हैं।"

इतना कहकर उसने मेरी नोटबुक ले ली और बड़ी निर्दयता से हर छन्द और शब्द की आलोचना करने और बहुत ही चुभते ढंग से

---

* १८ वीं शताब्दी के कवि और अनुवादक, रूसी छन्दशास्त्र के ज़ोरदार समर्थक, जिनकी कविताओं की उनके समकालीन अक्सर अकारण ही खिल्ली उड़ाते थे। –स०

मेरा मज़ाक उड़ाने लगा। मुझसे यह बर्दाश्त नही हुआ, मैंने उसके हाथ से नोटबुक छीन ली और कहा कि भविष्य में कभी भी उसे अपनी रचना नही दिखाऊगा। इ्वाबरिन मेरी इस धमकी पर भी हस दिया।

"देखेगे," उसने कहा, "तुम अपना यह वचन निभाओगे या नही – कवियो को श्रोता की वैसे ही अपेक्षा होती है जैसे इवान कुज़्मिच को भोजन के पहले वोदका की सुराही की। और यह माशा कौन है जिसके सामने तुमने अपनी कोमल भावनाये और प्रेम-वेदना प्रकट की है? कही मरीया इवानोव्ना तो नही?"

"तुम्हे इससे कोई मतलब नही," मैंने नाक-भौह सिकोडते हुए उत्तर दिया, "कोई भी क्यो न हो यह माशा। मुझे न तो तुम्हारी राय की ज़रूरत है और न तुम्हारे अनुमानो की।"

"ओहो! बडे आत्माभिमानी कवि और विनयशील प्रेमी हो!" मुझे लगातार अधिकाधिक चिढाते हुए इ्वाबरिन कहता गया। "तुम मेरी दोस्ताना सलाह पर कान दो – अगर कामयाबी चाहते हो, तो मेरे मशविरे पर अमल करो और गीतो-कविताओ के फेर मे नही पडो।"

"इसका क्या मतलब है जनाब? ज़रा समझाइये तो।"

"बडी खुशी से। इसका मतलब है, अगर तुम यह चाहते हो कि झुटपुटा हो जाने पर माशा तुम्हारे पास आया करे, तो प्रेम-कविता के बजाय उसे झुमको की जोडी भेट करो।"

मेरा खून खौल उठा।

"उसके बारे मे तुम ऐसा क्यो कहते हो?" बडी मुश्किल से अपने गुस्से पर काबू पाते हुए मैंने पूछा।

"इसलिये," उसने बहुत ही क्रूर व्यग्य करते हुए उत्तर दिया, "कि अपने अनुभव से उसके आचार-विचार और आदतो को जानता हू।"

"तुम झूठ बोलते हो, कमीने!" मैं गुस्से से पागल होकर चिल्ला उठा, "बहुत ही बेहयाई से झूठ बोलते हो।"

इ्वाबरिन के चेहरे का रग उड गया।

"तुम्हे इसकी कीमत चुकानी पडेगी," उसने मेरा हाथ दबाते हुए कहा। "बदला लेकर मुझे अपना कलेजा ठण्डा करना होगा।"

"जब चाहो।" मैंने खुश होते हुए जवाब दिया। इस वक्त मैं

उसके टुकड़े-टुकड़े कर देने को तैयार था।

मैं फ़ौरन इवान इग्नातिच की ओर रवाना हो गया और उन्हें हाथ में सुई लिये पाया – कमांडेंट की बीवी के कहने पर जाड़े के लिये कुकुरमुत्ते सुखाने को वह उन्हें धागों में पिरो रहा था।

'अरे प्योत्र अन्द्रेइच!' मुझे देखकर उसने कहा, "पधारिये, पधारिये! कैसे आना हुआ? यह बताने की कृपा कीजिये कि किस काम के सिलसिले में आये हैं?'

मैंने बड़ा संक्षेप में उसे बताया कि अलेक्सेई इवानोविच के साथ मेरा झगड़ा हो गया है और चाहता हूं कि इवान इग्नातिच द्वन्द्व-युद्ध के समय मेरी ओर से मध्यस्थ रहें। इवान इग्नातिच ने अपनी एक आंख को फैलाते हुए बड़ा ध्यान से मेरी बात सुनी।

"आप यह कहना चाहते हैं," उसने मुझसे कहा, "कि आप अलेक्सेई इवानोविच के बदन में तलवार घोंपना और मुझे उसका साक्षी बनाना चाहते हैं? मैं पूछने की जुर्रत कर सकता हूं, यही बात है न?"

"बिल्कुल सही।"

"सुनिये तो प्योत्र अन्द्रेइच! यह क्या सूझी है आपको! अलेक्सेई इवानोविच के साथ आपकी तू-तू मैं-मैं हो गयी? तो क्या मुसीबत है! गाली-गलौज से किसी का क्या बिगड़ता है? उसने आपको गाली दी, आप उसे कोस लीजिये। वह आपकी थूथनी पर घूंसा मारता है, आप उसके कान पर। बस ऐसे ही हिसाब बराबर करके अलग हो जाइये। हम जरूर आपकी सुलह करवा देंगे। यह बताने की कृपा करें कि क्या अपने नजदीकी आदमी के तन में तलवार घोंपना कोई अच्छी बात है? वैसे यह तो कुछ बुरा नहीं होगा कि आप उसके, अलेक्सेई इवानोविच के तन में तलवार घोंप दें। कोई बात नहीं, खुद मुझे भी वह पसन्द नहीं है। लेकिन अगर उसने आपको बींध डाला तो? तब क्या होगा? यह बताने की कृपा करें कि तब कौन उल्लू बनेगा?"

समझदार लेफ्टिनेंट के तर्क-वितर्क से मैं डगमगाया नहीं। मेरा इरादा ज्यों का त्यों बना रहा।

"जैसा ठीक समझें, वैसा करें," इवान इग्नातिच ने कहा। मुझे गवाह बनकर क्या लेना है? किसलिये? लोग आपस में लड़ते-

भिड़ते हैं, कौन-सी अनोखी बात है यह? भगवान की दया से मैं ल्वोडों और तुर्कों से लड़ चुका हूं—सब कुछ देख चुका हूं।"

मैंने इवान इग्नातिच को मध्यस्थ का कर्तव्य समझाने की पूरी कोशिश की, मगर वह उसे किसी भी तरह से समझ नहीं पाया।

"आपकी मर्ज़ी है," उसने कहा। "अगर मुझे इस मामले में दखल देना ही है, तो अपनी ड्यूटी बजाते हुए इवान कुज़्मिच को यह खबर देनी चाहिये कि दुर्ग में एक बुरी बात होनेवाली है जो सरकार के हितों के विरुद्ध है। श्रीमान दुर्गपति को क्या इसे रोकने के लिये कदम नहीं उठाने चाहिये "

मैं डर गया और इवान इग्नातिच की मिन्नत-समाजत करने लगा कि वह दुर्गपति से कुछ न कहे। बड़ी मुश्किल से मैंने उसे मनाया। उसने मुझे ऐसा न करने का वचन दिया और मैं वहां से चलता बना।

सदा की भांति यह शाम भी मैंने दुर्गपति के यहां बिताई। मैंने अपने को रंग और मस्ती से जाहिर करने की कोशिश की, ताकि किसी के दिल में कोई शक-शुबहा न पैदा हो और मुझसे खोद-खोदकर सवाल न पूछे जायें। किन्तु मैं अपने पर वैसा संयम नहीं कर सका, जैसे मेरी जैसी स्थिति में होनेवाले लोग कर पाते हैं और जिसकी वे लगभग हमेशा डींग हांकते हैं। इस शाम को मैं कोमल भावनाओं और भावुकता की धारा में बह रहा था। अन्य दिनों की अपेक्षा मरीया इवानोव्ना मुझे कहीं अधिक अच्छी लग रही थी। यह विचार कि शायद आज उसे आखिरी बार देख रहा हूं, मेरी दृष्टि में उसे मर्मस्पर्शी बना रहा था। श्वाबरिन भी यहां आ गया। मैंने उसे एक ओर को ले जाकर इवान इग्नातिच के साथ हुई अपनी बातचीत बतायी। "क्या ज़रूरत है हमें मध्यस्थों की?" उसने रुखाई से कहा, "उनके बिना ही काम चला लेंगे।" हमने तय किया कि दुर्ग के निकट भूसे की टालों के पीछे अगले दिन सुबह के सात बजे द्वन्द्व-युद्ध करेंगे। सम्भवतः हम इतने मैत्रीपूर्ण रूप से बातचीत कर रहे थे कि इवान इग्नातिच ने खुशी की तरंग में हमारा भंडाफोड़ कर दिया।

"बहुत पहले से ऐसा होना चाहिये था," उसने प्रसन्न मुद्रा में मुझसे कहा, "अच्छी लड़ाई से बुरी शान्ति बेहतर है, आदर की दृष्टि से स्वस्थ होना ज़्यादा अच्छा है।"

"क्या, क्या कहा तुमने, इवान इग्नातिच ?" दुर्गपति की बीवी ने पूछा जो दूर कोने में बैठी हुई ताश के पत्तो से नजूम लगा रही थी, और ये शब्द सुन नही पाई थी।

मेरे चेहरे पर नाराज़गी का भाव देख और अपना वादा याद करके इवान इग्नातिच परेशान हो उठा। उसकी समझ मे नहीं आ रहा था कि क्या उत्तर दे। श्वाबरिन ने उसकी मदद की।

"इवान इग्नातिच हमारे बीच सुलह का अनुमोदन कर रहा है," उसने कहा।

"किसके साथ तुम्हारा झगडा हो गया था, भैया ?"

"प्योतर अन्द्रेइच के साथ हमारा खासा जोरदार झगडा हो गया था।"

"वह किसलिये ?"

"बहुत ही मामूली-सी बात के लिये – गीत को लेकर, वसिलीसा येगोरोव्ना।"

"झगडे के लिये भी क्या चीज़ चुनी है! गीत! कैसे हुआ यह ?"

"ऐसे हुआ कि प्योतर अन्द्रेइच ने कुछ ही समय पहले एक गीत रचा और आज उसे मेरे सामने गाने लगा। उधर मैंने अपना मनपसन्द गीत गाना शुरू कर दिया –

> ओ बेटी कप्तान की, सुनो बात पर कान दो
> नही घूमने जाओ आधी रात को

इसी बात पर झगडा हो गया। प्योतर अन्द्रेइच बिगड उठा मगर बाद मे उसने यह सोचा कि जो जैसे चाहे, वैसे ही गा सकता है। ऐसे मामला खत्म हो गया।"

श्वाबरिन की ऐसी बेहयाई से मैं लगभग आग-बबूला हो गया, लेकिन उसके इन भोंडे कटाक्षो को मेरे सिवा और कोई नही समझा। कम से कम इतना तो था ही कि उनकी ओर किसी ने ध्यान नही दिया। गीत से कवियों की चर्चा चल पडी और दुर्गपति ने यह राय ज़ाहिर की कि वे सभी दुराचारी और बडे पियक्कड होते है तथा मैत्रीपूर्ण ढग से मुझे यह सलाह दी कि मै कविताये रचने के फेर मे न पडू क्योंकि यह

चीज़ फ़ौजी नौकरी के साथ मेल नही खाती और इसका कोई अच्छा नतीजा नही निकलेगा।

श्वाबरिन की उपस्थिति मेरे लिये असह्य थी। कुछ ही देर बाद मैंने दुर्गपति और उनके परिवार से विदा ली, घर लौटकर अपनी तलवार को अच्छी तरह से देखा, उसकी नोक को जाचा-परखा और सावेलिच को सुबह के छ बजने के फौरन बाद जगा देने को कहकर बिस्तर पर चला गया।

अगले दिन मैं नियत समय पर भूसे की टालो के पीछे जाकर अपने प्रतिद्वन्द्वी की प्रतीक्षा करने लगा। शीघ्र ही वह भी आ गया। "यहा हम पकडे जा सकते हैं," उसने मुझसे कहा, "इसलिये जल्दी करनी चाहिये।" हमने फौजी कमीज़े उतार दी, केवल नीचे के कुरतों मे रह गये और अपनी तलवारे निकाल ली। इसी क्षण टाल के पीछे से अचानक इवान इग्नातिच और पाच अपाहिज फौजी प्रकट हुए। इवान इग्नातिच ने दुर्गपति के सामने चलने को कहा। हमने बहुत दुखी मन से उसका कहना माना, सैनिको ने हमे घेर लिया और हम इवान इग्नातिच के पीछे-पीछे, जो विजेता की तरह बडी अनूठी शान से कदम बढा रहा था, दुर्ग की ओर चल दिये।

हमने दुर्गपति के घर मे प्रवेश किया, इवान इग्नातिच ने दरवाजा खोला और उत्साहपूर्वक घोषणा की, "ले आया हू।" वसिलीसा येगोरोव्ना हमारे सामने थी। "ओह, मेरे प्यारो! यह सब क्या है? क्यो? किसलिये? हमारे दुर्ग मे हत्या की जाये? इवान कुज्मिच, इन्हे इसी समय गिरफ्तार करने का हुक्म दो! प्योतर अन्द्रेइच! अलेक्सेई इवानोविच! अपनी तलवारे इधर दे दो, दे दो इधर! पालाशा, इन तलवारो को कोठरी मे रख आओ। प्योतर अन्द्रेइच! तुमसे मैंने यह आशा नही की थी। तुम्हे शर्म नही आती? अलेक्सेई इवानोविच की बात दूसरी है, उसे तो हत्या करने के लिये गार्ड-सेना से अलग किया गया, वह भगवान को नही मानता, मगर तुम्हें, तुम्हे क्या हो गया? तुम भी उसी रास्ते पर चलना चाहते हो?"

इवान कुज्मिच अपनी पत्नी के साथ पूरी तरह सहमत थे और बार-बार यही कहते जाते थे, "सुनते हो न, वसिलीसा येगोरोव्ना बिल्कुल ठीक कह रही हैं। सेना की नियमावली के अनुसार द्वन्द्व-युद्धो

की औपचारिक रूप से मनाही है।" इसी बीच पालाशा हमारी तलवारें लेकर उन्हें कोठरी में रख आई। मैं हँसे बिना नहीं रह सका। श्वाबरिन अपनी शान बनाये रहा। "आपके प्रति अपनी पूरी आदर-भावना के बावजूद," उसने वसिलीसा येगोरोव्ना को सम्बोधित करते हुए स्वाईं से कहा, "मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि व्यर्थ ही आप हम लोगों के बारे में निर्णय करने का कष्ट कर रही हैं। यह काम इवान कुज्मिच का है, उन्हीं को करने दीजिये।" – "ओह, मेरे भैया!" दुर्गपति की पत्नी ने उसकी बात काटी, "क्या पति-पत्नी एक तन और एक ही जान नहीं होते? इवान कुज्मिच! तुम बैठे-बैठे क्या देख रहे हो? इसी वक़्त इन्हें अलग-अलग कोनों में रोटी और पानी के राशन पर बिठा दो, ताकि इनके दिमागों से बेवकूफ़ी का भूत निकल जाये। हाँ, और पादरी गेरासिम से कहो कि इन पर पूजा-पाठ का दण्ड लगा दे, ताकि ये भगवान से क्षमा माँगें और लोगों के सामने प्रायश्चित करें।"

इवान कुज्मिच समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें। मरीया इवानोव्ना के चेहरे का तो बिल्कुल रंग उड़ा हुआ था। तूफ़ान धीरे-धीरे शान्त हो गया। वसिलीसा येगोरोव्ना का गुस्सा ठण्डा पड़ गया और उन्होंने हम दोनों को गले मिलने और चूमने के लिये विवश किया। पालाशा ने हमें हमारी तलवारें वापस ला दीं। दुर्गपति के घर में हम दोनों स्पष्टतः सुलह किये हुए बाहर निकले। इवान इग्नातिच हमारे साथ था। "शर्म आनी चाहिये, आपको," मैंने झल्लाकर उससे कहा, "दुर्गपति के पास जाकर हमारे बारे में मुखबिरी की, जबकि मुझसे ऐसा न करने का वादा कर चुके थे?" – "भगवान जानता है, मैंने इवान कुज्मिच को यह नहीं बताया," उसने उत्तर दिया, "वसिलीसा येगोरोव्ना ने मुझसे यह सब उगलवा लिया। उन्होंने ही दुर्गपति की जानकारी के बिना यह सारी व्यवस्था-कर दी। वैसे, भला हो भगवान का कि यह मामला ऐसे खत्म हो गया।" इतना कहकर वह घर वापस चला गया और मैं तथा श्वाबरिन ही रह गये। "हमारा किस्सा ऐसे ही खत्म नहीं हो सकता," मैंने उससे कहा। "बेशक," श्वाबरिन ने जवाब दिया, "अपनी गुस्ताख़ी के लिये आपको अपने ख़ून से क़ीमत चुकानी पड़ेगी। किन्तु हम पर सम्भवतः नज़र रखी जायेगी। हमें कुछ

दिनो तक ढोंग करना पड़ेगा। नमस्ते!" और हम ऐसे अलग हो गये मानो कोई बात ही न हुई हो।

दुर्गपति के घर लौटकर मैं सदा की भांति मरीया इवानोव्ना के पास बैठ गया। इवान कुज़्मिच घर पर नहीं थे। वसिलीसा येगोरोव्ना घर-गिरस्ती के काम में व्यस्त थी। हम दोनो बहुत धीमे-धीमे बातचीत कर रहे थे। मरीया इवानोव्ना कोमल शब्दो में उस परेशानी के लिये मेरी भर्त्सना कर रही थी जो श्वाबरिन के साथ मेरे झगड़े के कारण हुई थी।

"मेरी तो जान ही निकल गयी," वह बोली, "जब हमें यह बताया गया कि आप दोनो तलवारों से लड़ने का इरादा रखते हैं। मर्द कैसे अजीब होते हैं! एक शब्द के लिये, जिसे वे निश्चय ही एक सप्ताह बाद भूल जायेंगे, एक-दूसरे का गला काटने और न केवल अपने जीवन और आत्मा की ही बलि देने को तैयार हो जाते हैं, बल्कि उन लोगों के सुख-कल्याण की भी, जो   किन्तु मुझे विश्वास है कि झगड़ा आपने आरम्भ नहीं किया होगा। अवश्य अलेक्सेई इवानोविच ही दोषी होगा।"

"आप ऐसा क्यों सोचती हैं, मरीया इवानोव्ना?"

"यों ही   वह हमेशा मज़ाक उड़ाता रहता है! अलेक्सेई इवानोविच मुझे अच्छा नहीं लगता। फूटी आंखों नहीं सुहाता। फिर भी यह अजीब बात है कि मैं उसे अच्छी न लगूं, ऐसा मैं नहीं चाहूंगी। मेरे दिल को इससे दुख होगा।"

"मरीया इवानोव्ना, क्या ख्याल है आपका, आप उसे अच्छी लगती हैं या नहीं?"

मरीया इवानोव्ना हकलायी और उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी।

"मुझे लगता है," उसने कहा, "मैं सोचती हूं कि अच्छी लगती हूं।"

"क्यों आपको ऐसा लगता है?"

"क्योंकि उसने मेरे साथ अपनी सगाई करनी चाही थी।"

"सगाई करनी चाही थी! उसने आपके साथ? कब?"

"पिछले साल। आपके आने के दो महीने पहले।"

लगा और उसे लगभग नदी तक पीछे हटा दिया। सहसा मुझे बहुत ऊंची आवाज़ में अपना नाम सुनाई दिया। मैंने मुड़कर देखा, तो मुझे सावेलिच पहाड़ी पगडंडी से नीचे भागा आता नज़र आया। इसी समय दायें कंधे के नीचे मुझे अपनी छाती में ज़ोर का दर्द महसूस हुआ। मैं गिर पड़ा और बेहोश हो गया।

पांचवां अध्याय

प्रेम

अभी उमरिया छोटी है सुन्दर युवती!
अभी न सोचो अभी न सोचो शादी की
पूछो अपने बापू से तुम अम्मा से
बापू से, अम्मा से, रिश्तेदारों से
अक्ल-समझ तुम थोड़ी-सी जानो समझो
समझ-बूझ भी कुछ दहेज संचित कर लो।

लोक गीत

मुझसे अच्छा मिला अगर कोई तुमको, भूल मुझे तुम जाओगी
बुरा मिला यदि मुझसे कोई, दिल में मुझे बसाओगी।

लोक गीत

होश आने पर कुछ समय तक मैं यह याद नहीं कर सका और समझ नहीं पाया कि मेरे साथ हुआ क्या था। मैं एक अनजाने-अपरिचित कमरे में लेटा हुआ था और बड़ी कमज़ोरी महसूस कर रहा था। हाथ में मोमबत्ती लिये हुए सावेलिच मेरे सामने खड़ा था। कोई मेरी छाती और कंधे पर बंधी हुई पट्टी को बड़ी सावधानी से खोल रहा था। धीरे-धीरे मेरे विचारों में स्पष्टता आने लगी। मुझे अपना द्वन्द्व-युद्ध याद हो आया और यह भांप गया कि मैं घायल हो गया था। इसी क्षण चूं-चीं करता हुआ दरवाज़ा खुला। "कहो, कैसा है?" किसी ने फुसफुसाकर पूछा और इस आवाज़ से मेरे बदन में झुरझुरी-सी दौड़

गयी। "उसी, पहले जैसी हालत में ही," सावेलिच ने गहरी उसास छोडते हुए कहा, "पाच दिन हो गये, वही मूर्च्छा बनी हुई है।" मैंने करवट लेनी चाही, किन्तु ऐसा नही कर सका। "मैं कहा हू? यहा कौन है?" मैंने बडी मुश्किल से पूछा। मरीया इवानोव्ना मेरे पलग के पास आई और मेरी ओर झुककर उसने पूछा, "कैसी तबीयत है आपकी?" – "भगवान की कृपा है," मैंने बडी क्षीण-सी आवाज मे जवाब दिया। "यह आप हैं मरीया इवानोव्ना? मुझे बताइये..." मुझमें अपनी बात जारी रखने की शक्ति नहीं थी और मैं चुप हो गया। सावेलिच ने हर्षोच्छ्वास छोडा। उसके चेहरे पर खुशी झलक उठी। "होश आ गया! होश आ गया!" वह दोहरा रहा था। "भला हो भगवान तुम्हारा! भैया, प्योतर अन्द्रेइच! तुमने तो मुझे डरा ही दिया था! मामूली बात है क्या? पाच दिन तक बेहोशी!.." मरीया इवानोव्ना ने उसे टोक दिया। "उसके साथ ज्यादा बात नहीं करो, सावेलिच," वह बोली। "वह अभी कमजोर है।" वह धीरे से दरवाजा बन्द करके बाहर चली गयी। मेरे विचारो में हलचल जारी थी। तो मैं दुर्गपति के घर मे था। मरीया इवानोव्ना मेरा हालचाल जानने के लिये आयी थी। मैंने सावेलिच से कुछ प्रश्न पूछने चाहे, किन्तु बुड्ढे ने सिर हिला दिया और कानो में उगलिया ठूस ली। मैंने निराशा से आखें मूद ली और जल्द ही नीद मे खो गया।

आख खुलने पर मैंने सावेलिच को पुकारा और उसकी जगह मरीया इवानोव्ना को अपने सामने पाया। अपनी मृदुल आवाज मे उसने मेरा अभिवादन किया। इस क्षण मैं जिस मधुर भावना से ओतप्रोत हो गया, उसे व्यक्त नही कर सकता। मैंने उसका हाथ पकडकर अपने होठो से लगा लिया और उसे खुशी के आसुओ से तर कर दिया। माशा ने अपना हाथ छुडाया नही अचानक उसके होठो ने मेरे गालों को छुआ और मुझे उनके गर्म और ताजा चुम्बन की अनुभूति हुई। मेरे बदन में बिजली-सी दौड गई। "मेरी प्यारी, मेरी अच्छी मरीया इवानोव्ना," मैंने उससे कहा, "मेरे सुख के लिये मेरी पत्नी बनना स्वीकार करो।" वह सम्भली। "भगवान के लिये शान्त हो जाइये," अपना हाथ [illegible] हुए उसने कहा। "आप अभी खतरे से बाहर नही हुए हैं, घाव [illegible] है। और कुछ नहीं तो मेरी खातिर ही अपनी चिन्ता की-

जिये।" इतना कहकर और मुझे खुशी से मदहोश-सा बनाकर वह चली गयी। खुशी ने मुझे नई ज़िन्दगी दे दी। वह मेरी हो जायेगी! वह मुझे प्यार करती है! मेरा रोम-रोम इस विचार से पुलकित हो उठा।

इस क्षण से मेरी तबीयत लगातार बेहतर होने लगी। रेजिमेंट का नाई मेरी चिकित्सा कर रहा था, क्योंकि दुर्ग मे कोई दूसरा चिकित्सक नही था और, भला हो भगवान का, वह मुझ पर अपने तजरबे नही करता था। जवानी और प्रकृति ने मेरे जल्दी से स्वस्थ होने मे योग दिया। दुर्गपति का सारा परिवार मेरी देख-भाल करता था। मरीया इवानोव्ना तो मेरे बिस्तर के पास से हटती ही नही थी। ज़ाहिर है कि पहला अच्छा अवसर मिलते ही मैंने अपने प्रेम-निवेदन की बात चलाई, जो अधूरी रह गयी थी और मरीया इवानोव्ना ने बडे सब्र से उसे सुना। उसने किसी प्रकार की झेंप-झिझक के बिना मेरे प्रति अपने हृदय के झुकाव को स्वीकार कर लिया और कहा कि उसके माता-पिता तो उसके सुख-सौभाग्य से खुश होगे। "लेकिन तुम अच्छी तरह से यह सोच लो," उसने इतना और जोड दिया, "कि तुम्हारे माता-पिता की ओर से तो कोई बाधा नही होगी?"

मैं सोच मे पड गया। मा के हृदय की कोमलता के बारे मे तो मुझे कोई सन्देह नही था, किन्तु पिता जी के मिज़ाज और आचार-विचार को जानते हुए मैंने यह अनुभव किया कि मेरा प्यार उनके हृदय को बहुत नही छुएगा और वे इसे एक जवान आदमी की सनक मानेगे। मैंने सच्चे मन से मरीया इवानोव्ना के सामने इस बात को स्वीकार कर लिया और फिर भी यह तय किया कि पिता जी को यथासम्भव बहुत अच्छे ढग से पत्र लिखूगा और उनसे आशीर्वाद देने को कहूगा। मैंने वह पत्र मरीया इवानोव्ना को दिखाया। उसे वह इतना प्रभावपूर्ण और मर्मस्पर्शी लगा कि सफलता का तनिक भी सन्देह नही रहा तथा जवानी और प्रेम की पूरी विश्वसनीयता के साथ उसने अपने को अपने मन की कोमल भावनाओ के अधीन कर दिया।

स्वस्थ होने के पहले ही दिन मैंने श्वाबरिन से सुलह कर ली। द्वन्द्व-युद्ध के लिये मुझे झिडकते हुए इवान कुज़्मिच ने मुझसे कहा, "ओह, प्योतर अन्द्रेइच! वैसे तो मुझे तुम्हे हिरासत मे लेने का आदेश

12–697

और ऐनक चढ़ाकर [illegible] 'सम्भव है, मुझे बूढ़े से [illegible] [illegible] कि तुम्हारे कारण ही मुसीबत हो गयी और सब [illegible] इसलिये पर [illegible] पड़ा। पर मैंने यह भी जान लेना चाहिये हो।" सावेलिच पर तो मानो वज्रपात हुआ। "यह क्या कह रहे हो तुम, श्रीमान?" उसने आपत्ति ज़ाहिर करते हुए कहा। "मैं कारण हूं तुम्हारे घायल होने का! भगवान जानता है, मैं तो दौड़ा तुम्हारे पास आया हुआ आ रहा था कि अपनी छाती सामने करके तुम्हें अलेक्सेई इवानोविच की तलवार से बचा लूं! कमबख्त बुढ़ापा ही आड़े आ गया। और तुम्हारी माता जी के साथ मैंने क्या बुराई की है?" — "क्या बुराई की है तुमने?" मैंने प्रश्न करते हुए उत्तर दिया। "किसने तुम्हें मेरी चुगली लिखने को कहा था? क्या तुम्हें मेरी जासूसी करने के लिये मुझ पर तैनात किया गया है?" — "मैंने? मैंने तुम्हारे बारे में चुगली लिखी?" सावेलिच ने आंसू बहाते हुए कहा। "हे मेरे ईश्वर! तो कृपया यह पत्र तो पढ़ो जो बड़े मालिक ने मुझे लिखा है और तुम जान जाओगे कि कैसी चुगली की है मैंने तुम्हारी।" इतना कहकर उसने जेब से पत्र निकाला और मैंने उसमें यह पढ़ा—

"तुम्हें, बुड्ढे कुत्ते को शर्म आनी चाहिये कि मेरी कड़ी हिदायत के बावजूद तुमने मेरे बेटे प्योत्र अन्द्रेइच के बारे में कुछ नहीं लिखा और पराये लोगों को मुझे उसकी शरारतों की सूचना देने को विवश होना पड़ा है। तो इस तरह तुम अपना कर्तव्य निभा रहे हो और अपने मालिक की इच्छा पूरी कर रहे हो? तुम्हें, बुड्ढे कुत्ते को सचाई छिपाने और नौजवान के साथ मिली-भगत करने के लिये सूअरों की देख-भाल के काम में लगाऊंगा। पत्र मिलते ही तुम्हें फौरन यह लिखने का आदेश देता हूं कि अब उसका स्वास्थ्य कैसा है, जिसके बारे में मुझे लिखा गया है कि सुधर रहा है। हां, और यह भी लिखना कि घाव किस जगह पर है तथा उसका ढंग से इलाज हो रहा है या नहीं।"

यह स्पष्ट था कि सावेलिच मेरे सामने दोषी नहीं था और मैंने व्यर्थ ही ताने-बोलियों से तथा सन्देह प्रकट करके उसका अपमान किया ... उससे क्षमा मांगी, किन्तु बूढ़े को इससे चैन नहीं हुआ। ... पड़े हैं मुझे," वह दोहराता जा रहा था, "क्या- ... है मुझे अपने मालिकों से! मैं ही बुड्ढा कुत्ता हूं, मैं

ही सूअर-पालक हूं, मैं ही तुम्हारे घाव का कारण हू? नही, मेरे छोटे मालिक प्योतर अन्द्रेइच! मैं नही, वह कमबख्त फ्रांसीसी ही दोषी है इस सबके लिये – उसी ने तुम्हे लोहे की सलाखें घोपना और जमीन पर पाव पटकना सिखाया है मानो सलाखें घोपने और पांव पटकने की बदौलत दुष्ट आदमी से बचा जा सकता है! बडी जरूरत थी उस फ्रांसीसी को नौकर रखने और उस पर बेकार पैसा खर्च करने की!"

तो पिता जी को मेरी हरकत की खबर देने की तकलीफ किसने उठाई? जनरल ने? किन्तु लगता है कि उसे तो मेरी बहुत फिक्र नही थी। इवान कुज़्मिच को मेरे द्वन्द्व-युद्ध की सूचना देने की आवश्यकता अनुभव नही हुई होगी। मैं अनुमानो मे खो गया। श्वाब्रिन पर ही मुझे सन्देह हुआ। केवल उसे ही इस चुगली से लाभ हो सकता था, क्योंकि इसके फलस्वरूप मुझे इस दुर्ग से किसी दूसरी जगह भेजा जा सकता था और दुर्गपति के परिवार से मेरा नाता टूट सकता था। मैं इस सब के बारे मे मरीया इवानोव्ना को बताने गया। उसके साथ ड्योढी मे मेरी भेट हुई। "आपको क्या हुआ है?" मुझे देखकर उसने कहा, "कितना पीला चेहरा है आपका!" – "सब कुछ खत्म हो गया!" मैंने जवाब दिया और उसे पिता जी का पत्र दे दिया। अब उसके चेहरे का रग उड गया। पत्र पढकर उसने कापते हाथ से उसे मुझे लौटा दिया और कापती आवाज मे कहा, "लगता है कि मेरी किस्मत मे यह नही लिखा है आपके माता-पिता मुझे अपने परिवार मे नही लेना चाहते। भगवान को जो मजूर है, वही हो! भगवान हमसे ज्यादा अच्छी तरह यह जानता है कि हमारे लिये क्या अच्छा है। हो ही क्या सकता है प्योतर अन्द्रेइच, कम से कम आप सुखी रहे "– "यह नही होगा!" उसका हाथ अपने हाथ मे लेते हुए मैं चिल्ला उठा, "तुम मुझे प्यार करती हो, मैं हर चीज के लिये तैयार हू। चलो, हम तुम्हारे माता-पिता के पाव पकड लेते है, वे सीधे-सादे लोग हैं, घमण्ड से उनके दिल कठोर नही हुए हैं वे हमे आशीर्वाद दे देगे, हम शादी कर लेगे बाद में, मुझे यकीन है कि कुछ वक्त बीतने पर हम मेरे पिता जी को भी मना लेगे, मा हमारा पक्ष लेगी और पिता जी मुझे क्षमा कर देगे "– "नही, प्योतर अन्द्रेइच," माशा ने जवाब दिया, "तुम्हारे माता-पिता के आशीर्वाद के बिना मैं तुमसे

शादी नहीं करूगी। उनके आशीर्वाद के बिना तुम सुखी नहीं हो सकोगे। भगवान जैसे चाहता है हम वैसा ही मान लेते हैं। अगर भाग्य में किसी पत्नी मिल जाये या किसी दूसरी को प्यार करने लगो, तो भगवान तुम्हारा भला करे। मैं तुम दोनों के लिये प्रार्थना करूगी ..." इतना कहकर वह रो पड़ी और चली गयी। मैंने उसके पीछे-पीछे कमरे में जाना चाहा किन्तु यह अनुभव किया कि अपनी भावनाओं को वश में करने में असमर्थ हू और इसलिये अपने यहा लौट आया।

मैं विचारों में गहरा डूबा हुआ था कि अचानक सावेलिच ने आकर मेरे ख्यालों में खलल डाल दिया। "लो यह लो मालिक," उसने लिखा हुआ एक कागज मुझे देते हुए कहा, "इसे पढ़कर यह जान लो कि मैं अपने मालिक की निन्दा-चुगली करता हू और बेटे तथा पिता के बीच झगड़ा करवाना चाहता हू या नहीं।" मैंने उसके हाथ से कागज ले लिया। यह उसके द्वारा प्राप्त पत्र का उत्तर था। मैं उसे ज्यों का त्यों यहा दे रहा हू —

"माननीय अन्द्रेई पेत्रोविच,
मेरे कृपालु स्वामी!

आपका कृपापत्र मुझे मिला जिसमें आपने मुझ पर, अपने इस दास पर क्रोध प्रकट किया है कि आपका, अपने स्वामी का आदेश न मानने के लिये मुझे शर्म आनी चाहिये। किन्तु मैं, बूढ़ा कुत्ता नहीं, आपका सच्चा सेवक हू, स्वामी का आदेश मानता हू, सदा तन-मन से आपकी सेवा करता रहा हू और ऐसा करते हुए ही मेरे बाल सफेद हो गये हैं। प्योतर अन्द्रेइच के घाव के बारे में मैंने आपको कुछ नहीं लिखा, ताकि व्यर्थ आपको न डराऊ, अब यह सुनता हू कि हमारी स्वामिनी, हमारी माता जी अव्दोत्या वसील्येव्ना घबराहट के कारण बीमार पड गयी हैं और उनके स्वास्थ्य के लिये मैं भगवान का नाम जपूगा। प्योतर अन्द्रेइच को दाये कधे के नीचे छाती में हड्डी के बिल्कुल नीचे घाव लगा था, डेढ इच गहरा था, वह दुर्गपति के घर में रहा, जहा हम उसे नदी-तट से लाये थे और स्थानीय नाई स्तेपान परामोनोव उसकी चिकित्सा करता रहा। भगवान की कृपा से प्योतर अन्द्रेइच

लिख ही नहीं सकता। सुना है, उसके अफ़सर उससे खुश हैं और वसिलीसा येगोरोव्ना उसे बेटे की तरह मानती है। उसके साथ अगर ऐसी अजीब बात हो गयी है, तो यह जवानी के लिये कोई अपमान नहीं—चार टांगें होने पर भी घोड़ा ठोकर खा जाता है। आपने यह लिखने की भी कृपा की है कि मुझे सूअर चराने भेजेंगे, तो यह आप स्वामी जैसा चाहें, कर सकते हैं। दासवत आपको शीश नवाता हूं।

आपका निष्ठावान दास
अर्खीप सावेल्येव"।

इस भले बूढ़े का पत्र पढ़ते हुए मैं कई बार मुस्कराये बिना न रह सका। पिता जी के पत्र का उत्तर देने लायक मेरी स्थिति नहीं थी और माता जी के मन को शान्त करने के लिये मुझे सावेलिच का पत्र काफ़ी प्रतीत हुआ।

इस दिन से मेरी स्थिति में परिवर्तन हो गया। मरीया इवानोव्ना मेरे साथ लगभग नहीं बोलती थी और हर प्रकार मुझसे कन्नी काटने का प्रयत्न करती थी। दुर्गपति के घर का मेरे लिये कोई आकर्षण नहीं रहा। धीरे-धीरे मुझे अपने घर में अकेले बैठने की आदत हो गयी। वसिलीसा येगोरोव्ना ने शुरू में ऐसा करने के लिये मुझे कुछ बुरा-भला कहा, किन्तु मेरी ज़िद देखकर उन्होंने मुझे मेरे हाल पर छोड़ दिया। केवल फ़ौजी काम-काज के सिलसिले में ही मैं इवान कुज़्मिच के पास यदा-कदा जाता। श्वाबरिन से कभी-कभार और मन मारकर ही मिलता, क्योंकि उसमें अपने प्रति छिपे हुए शत्रुभाव को अनुभव करता जिससे मेरे सन्देहों की पुष्टि होती। मेरा जीवन असह्य हो उठा। मैं उदासीभरे विचारों में डूबा रहने लगा जो निठल्लेपन और एकाकीपन का फल होते हैं। एकाकीपन में मेरा प्यार दहक उठा और मेरे लिये अधिकाधिक बोझिल बनने लगा। पुस्तकें पढ़ने और कुछ रचने में मेरी रुचि जाती रही। मेरे मन पर गहरी निराशा छा गयी। मुझे डर लगता कि या तो मैं पागल हो जाऊंगा या ऐय्याशी में डूब जाऊंगा। मेरे पूरे जीवन पर बहुत महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालनेवाली अप्रत्याशित घटनाओं ने सहसा मेरी आत्मा को बहुत ज़ोरदार और हितकर झटका दिया।

छठा अध्याय

पुगाचोव का दल-बल

तुम सुनो ध्यान से युवा लोग
हम बूढ़े तुम्हें सुनाये जो।

गीत

इससे पहले कि मैं उन अजीब घटनाओ का वर्णन करू, जिनका मैं साक्षी बना, मुझे उस स्थिति के बारे मे कुछ शब्द कहने होंगे जो १७७३ के अन्त मे ओरेनबुर्ग के गुबेर्निया मे थी।

इस विशाल और समृद्ध गुबेर्निया मे अनेक अर्ध-सभ्य जातिया रहती थी जिन्होंने कुछ ही समय पहले रूसी ज़ारो की सत्ता स्वीकार की थी। उनके जब-तब विद्रोह करने, कानून-कायदे और सभ्य जीवन के अभ्यस्त न हो पाने तथा उनकी सनको और क्रूरता के कारण सरकार को उन्हें अपने अधीन रखने के लिये उन पर लगातार कड़ी नज़र रखनी पड़ती थी। सुविधाजनक माने जानेवाले स्थानो पर, जहा एक ज़माने मे याइक नदी-तटो पर बसे हुए अधिकतर कज़्ज़ाक लोग ही रहते थे, गढ-गढ़िया बनाई गयी थी। किन्तु यही याइक कज़्ज़ाक, जिन पर इस सारे क्षेत्र की शान्ति और सुरक्षा को बनाये रखने की ज़िम्मेदारी थी, पिछले कुछ समय से सरकार के लिये बेचैनी का कारण बन गये थे, खतरनाक लोग हो गये थे। १७७२ मे उनके प्रमुख नगर में विद्रोह हुआ। इसका कारण वे कठोर कदम थे, जो मेजर-जनरल त्रा-उबेन्बेर्ग ने फौजों को पूरी तरह अपने अधीन करने के लिये उठाये थे। इसका नतीजा हुआ था त्राउबेन्बेर्ग की निर्दयतापूर्ण हत्या, प्रशासन मे मनमाने परिवर्तन। अन्त मे बड़ा दमन-चक्र चलाकर तथा कड़ी सज़ाये देकर इस विद्रोह को कुचला गया।

ये सारी घटनाये मेरे बेलोगोर्स्क के दुर्ग मे आने से कुछ समय पहले घटी। सब कुछ शान्त हो चुका था या कम से कम ऐसा प्रतीत होता था। अधिकारियो ने मक्कार विद्रोहियों के बनावटी पश्चात्ताप पर बहुत आसानी से विश्वास कर लिया जो अपने दिलो मे बदले

की आग छिपाये हुए फिर से गडबड़ शुरू करने के लिये अच्छे मौके के इन्तजार मे थे।

तो मैं अपनी कहानी की ओर लौटता हूं।

एक शाम को (यह १७७३ के अक्तूबर महीने के आरम्भ की बात है) मैं घर मे अकेला बैठा हुआ पतझर की हवा की चीख-चिल्लाहट सुन रहा था और खिडकी मे से चाद के पास से भागे जा रहे बादलो को देख रहा था। इसी समय दुर्गपति ने मुझे बुलवा भेजा। मैं फौरन गया। दुर्गपति के यहा श्वाबरिन, इवान इग्नातिच और कज्ज़ाक सार्जेंट पहले से ही मौजूद थे। कमरे मे न तो वसिलीसा येगोरोव्ना थी और न ही मरीया इवानोव्ना। दुर्गपति ने कुछ परेशानी जाहिर करते हुए मेरा अभिवादन किया। उन्होंने दरवाजे को ताला लगाकर बन्द किया, सार्जेंट के सिवा, जो दरवाजे के पास खडा था, हम सभी को बिठाया और जेब मे एक कागज़ निकालकर हम सभी को सम्बोधित करते हुए कहा, "महानुभावो, बडा महत्त्वपूर्ण समाचार है! जनरल साहब ने जो लिखा है, उसे सुनिये।" इतना कहकर उन्होंने चश्मा चढा लिया और यह पढा –

"बेलोगोर्स्क के दुर्गपति श्रीमान कप्तान मिरोनोव को।

सर्वथा गुप्त।

इसके द्वारा आपको सूचित करता हू कि जेल से भाग जानेवाले दोन तटवर्ती कज्ज़ाक और विधर्मी येमेल्यान पुगाचोव ने, जिसने दिवगत सम्राट पीटर तृतीय का नाम धारण करने की अक्षम्य धृष्टता की है, चोर-उचक्को का एक गिरोह जमा करके याइक गावो मे गडबडी पैदा की है, कुछ दुर्गो पर अधिकार करके उन्हे नष्ट कर दिया है, सभी जगह लूट-मार और हत्याये की हैं। अत यह पत्र पाते ही आप, श्रीमान कप्तान, उल्लिखित दुष्ट और झूठे दावेदार के विरुद्ध आवश्यक उपाय करे और यदि वह आपके अधीन दुर्ग पर आक्रमण करे, तो सभव होने पर उसे पूर्णत नष्ट कर डाले।"

"आवश्यक उपाय करे!" दुर्गपति ने चश्मा उतारते और कागज को तह करते हुए कहा। "यह कह देना बडा आसान है। वह दुष्ट तो स्पष्टत काफी शक्तिशाली है और हमारे पास, कज्ज़ाको को

छोड़कर, जिन पर बहुत भरोसा नहीं किया जा सकता, तुम्हारी भर्त्सना नहीं कर रहा हूं, मक्सीमिच (गार्नेट व्यंग्यपूर्वक मुस्करा दिया), कुल एक सौ तीस सैनिक हैं। किन्तु हमारे सामने और कोई चारा नहीं है, महानुभावो! अच्छी तरह अपनी ड्यूटी बजायें, सन्तरी और गश्त के पहरेदार तैनात कर दें। आक्रमण होने पर फाटक बन्द कर लें और सैनिकों को मैदान में ले आयें। मक्सीमिच, तुम अपने कज्ज़ाकों पर कड़ी नजर रखो। तोप की खूब जांच-पड़ताल करके अच्छी तरह से साफ करवा लिया जाये। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि इस सारी चीज को गुप्त रखा जाये, ताकि दुर्ग में किसी को भी समय से पहले इसकी कानों कान खबर न मिले।"

ऐसे आदेश देने के बाद इवान कुज्मिच ने हम लोगों से जाने को कहा। हमने जो कुछ सुना था, मैं उसी पर विचार करता हुआ श्वाबरिन के साथ बाहर निकला। "तुम्हारे ख्याल में क्या अन्त होगा इसका?" मैंने उससे पूछा। "भगवान जाने," उसने उत्तर दिया, "देखा जायेगा। फिलहाल तो कोई खास बात नजर नहीं आती। अगर " इतना कहकर वह सोच में डूब गया और खोया-खोया सा एक फ्रांसीसी प्रेम-गीत की धुन पर सीटी बजाने लगा।

हमारी पूरी सावधानी के बावजूद पुगाचोव के प्रकट होने की बात सारे दुर्ग में फैल गयी। इवान कुज्मिच अपनी पत्नी का यद्यपि बहुत आदर करते थे, तथापि फौजी नौकरी के सिलसिले में उन्हें सौंपे गये राज को किसी भी हालत में अपनी बीवी को नहीं बताते थे। जनरल का खत मिलने पर उन्होंने बड़ी चालाकी से यह कहकर पत्नी को पादरी गेरासिम के यहां भेज दिया मानो पादरी के पास ओरेनबुर्ग से कोई अनूठी खबर आयी है जिसे वह बड़े राज की तरह छिपाये हैं। वसिलीसा येगोरोव्ना उसी समय पादरी की बीवी के पास जाने को तैयार हो गयी और इवान कुज्मिच की सलाह के मुताबिक माशा को भी अपने साथ ले गयी, ताकि उसे अकेली रहने पर ऊब महसूस न हो।

घर का एकच्छत्र स्वामी रह जाने पर इवान कुज्मिच ने हम सभी को फौरन बुलवा भेजा और पालाश्का को कोठरी में बन्द कर दिया, ताकि वह हमारी बातचीत न सुन सके।

वसिलीसा येगोरोव्ना पादरी की बीवी से कोई भी खबर हासिल किये बिना घर लौटी और उन्हें पता चला कि उनकी अनुपस्थिति में इवान कुज्मिच के यहां बैठक हुई तथा पालाश्का को ताला लगाकर कोठरी में बन्द कर दिया गया था। उन्हें फौरन यह सूझ गया कि पति ने उन्हें धोखा दिया है और वे कुरेद-कुरेदकर उनसे सवाल पूछने लगी। किन्तु इवान कुज्मिच ने अपने को पत्नी के ऐसे प्रश्न-प्रहार के लिये तैयार कर लिया था। तनिक भी घबराये बिना उन्होंने बड़ी प्रफुल्लता से अपनी जीवन-संगिनी के प्रश्नों के उत्तर दिये, "सुनो तो, हमारी औरतों के दिमागों में फूस से चूल्हे जलाने की बात समा गई है और चूंकि इससे कोई मुसीबत हो सकती है, इसलिये मैंने यह कड़ा आदेश दे दिया है कि वे घास-फूस से नहीं, बल्कि सूखी टहनियों और झाड़-झंखाड़ से ही चूल्हे जलायें।" – "मगर तुमने पालाश्का को ताला लगाकर कोठरी में क्यों बन्द किया?" बीवी ने पूछा। "किसलिये बेचारी नौकरानी हमारे लौटने तक कोठरी में बैठी रही?" इवान कुज्मिच ऐसे सवाल के लिये तैयार नहीं थे, गड़बड़ा गये और उन्होंने बहुत ही अटपटा-सा जवाब दे दिया। वसिलीसा येगोरोव्ना अपने पति की मक्कारी को समझ गयीं, किन्तु यह जानते हुए कि उनसे कुछ भी नहीं उगलवा सकेंगी, उन्होंने अपने सवाल करने बन्द कर दिये और खीरों के अचार की चर्चा करने लगीं जिसे अकुलीना पम्फीलोव्ना एक खास ही ढंग से तैयार करती थी। वसिलीसा येगोरोव्ना को सारी रात नींद नहीं आई और वे किसी भी तरह इस बात का अनुमान नहीं लगा पाईं कि उनके पति के दिमाग में ऐसी क्या चीज़ थी जिसके बारे में उनके लिये जानकारी पाना अनुचित था।

अगले दिन सुबह की प्रार्थना के बाद गिरजाघर से लौटते हुए उनकी इवान इग्नातिच पर नज़र पड़ी, जो तोप के मुंह में से बच्चों द्वारा ठूंसे गये चिथड़े, कंकड़-पत्थर, चैलियां और हड्डियां आदि निकाल रहा था। "युद्ध की ऐसी तैयारियों का क्या अर्थ हो सकता है?" वसिलीसा येगोरोव्ना सोचने लगी, "कहीं किर्गीज़ियों के हमले का तो अन्देशा नहीं है? क्या इवान कुज्मिच मुझसे ऐसी मामूली-सी बात छिपायेगा?" उन्होंने अपने नारी-हृदय को व्यथित करनेवाले रहस्य को इवान इग्नातिच से जानने का पक्का इरादा बनाकर उसे पुकारा।

वसिलीसा येगोरोव्ना ने उस न्यायाधीश की भांति, जो शुरू मे उत्तर देनेवाले से उसे असावधान बनाने के लिये इधर-उधर के सवाल पूछता है, घरेलू कामकाज के बारे मे कुछ टीका-टिप्पणियां कीं। इसके पश्चात कुछ मिनट तक चुप रहने के बाद गहरी सास ली और सिर हिलाते हुए बोली –

"हे भगवान! खबर तो कैसी है! क्या होगा अब?"

"कोई चिन्ता न करे आप!" इवान इग्नातिच ने उत्तर दिया। "भगवान की दया चाहिये – हमारे पास बहुत सैनिक हैं, बारूद की कुछ कमी नही और तोप मैंने साफ कर दी है। पुगाचोव के दांत खट्टे कर ही देंगे। भगवान की कृपादृष्टि रही तो कुछ नही बनेगा उसका!"

"यह पुगाचोव है कौन?" वसिलीसा येगोरोव्ना ने पूछा।

इवान इग्नातिच की समझ मे अब यह आया कि उसने भंडाफोड़ कर दिया है और फौरन चुप हो गया। किन्तु देर हो चुकी थी। वसिलीसा येगोरोव्ना ने उसे यह वचन देकर कि किसी को कुछ नही बतायेगी, उससे सारी बात जान ली।

वसिलीसा येगोरोव्ना ने अपना वचन निभाया और पादरी की पत्नी के अतिरिक्त किसी से भी एक शब्द नही कहा। पादरी की पत्नी से भी उन्होंने केवल इसलिये इसकी चर्चा की कि उसकी गाय अभी कहीं स्तेपी मे चर रही थी और उचक्कों के हत्थे चढ़ सकती थी।

शीघ्र ही सभी पुगाचोव की चर्चा करने लगे। उसके बारे मे तरह-तरह की बातें होने लगीं। दुर्गपति ने सार्जेंट को आस-पास के गांवों और दुर्गों मे अधिकतम जानकारी हासिल करने के लिये भेजा। सार्जेंट ने दो दिन बाद लौटकर यह बतलाया कि दुर्ग से लगभग साठ वेर्स्ता की दूरी पर उसने बेशुमार अलाव जलते देखे और बश्कीरियों से यह सुना कि सेनाओं का कोई बहुत बड़ा दल-बादल उमड़ा आ रहा है। वैसे वह निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता था, क्योंकि आगे जाने हुए उसे डर महसूस हुआ था।

दुर्ग के कज़ाकों के बीच असाधारण उत्तेजना दिखाई देती थी। वे सभी दल बनाकर गलियों मे जमा होते, आपस मे खुसर-फुसर करते और किसी घुड़सवार या दुर्ग के सैनिक को देखकर इधर-उधर खिसक जाते। उनके बीच जासूसों को भेजा गया। कल्मीक जाति के ईसाई

धर्म ग्रहण कर लेनेवाले युलाई ने दुर्गपति को महत्त्वपूर्ण सूचना दी। युलाई के मतानुसार सार्जेंट ने गलत खबरे दी थी। धूर्त कज्जाक ने लौटने पर अपने साथियो से यह कहा था कि वह विद्रोहियो के पास हो आया है, उनके सरदार से मिला है जिसने उसे अपना हाथ चूमने दिया और वह देर तक उससे बाते करता रहा। दुर्गपति ने सार्जेंट को फौरन पहरे मे रख दिया और उसकी जगह युलाई की नियुक्ति कर दी। कज्जाको को यह समाचार स्पष्टत बहुत बुरा लगा। उन्होने ऊचे-ऊचे अपना गुस्सा जाहिर किया और दुर्गपति के आदेशो को पूरा करते हुए इवान इग्नातिच ने खुद अपने कानो से उन्हे यह कहते सुना, "अब जल्द ही तुम्हारी बारी आनेवाली है दुर्ग के चूहे!" दुर्गपति ने उसी दिन हिरासत मे लिये गये सार्जेंट से पूछताछ करनी चाही, मगर वह सम्भवत अपने हमख्यालो की मदद से भाग निकला था।

एक नई परिस्थिति से दुर्गपति की चिन्ता और बढ गयी। उकसाने-भडकानेवाले इश्तिहारो के साथ एक बश्कीरी पकडा गया था। इस मामले को लेकर दुर्गपति ने फिर से अपने अफसरो की बैठक बुलानी चाही और इसीलिये कोई अच्छा-सा बहाना बनाकर अपनी बीवी को फिर से कही भेज देना चाहा। किन्तु इवान कुज्मिच चूकि बहुत ही सीधे-सरल, सच्चे और ईमानदार आदमी थे, इसलिये उन्हे पहले भी उपयोग मे लाये गये उपाय के अतिरिक्त और कुछ नही सूझा।

"सुनो तो, वसिलीसा येगोरोव्ना," उन्होंने खासते हुए बीवी से कहा, "सुनने मे आया है कि फादर गेरासिम को शहर से "— "बस, काफी झूठ बोल लिया, इवान कुज्मिच," बीवी ने उन्हें बीच मे ही टोक दिया, "मतलब यह है कि तुम फिर से अफसरो की बैठक बुलाना और मेरे बिना येमेल्यान पुगाचोव के बारे मे सोच-विचार करना चाहते हो। लेकिन इस बार तुम्हारी दाल नही गलेगी।" इवान कुज्मिच आखे फाड-फाडकर देखते रह गये। "अगर तुम्हे सब कुछ मालूम ही है," उन्होने कहा, "तो कृपया यही रहो, हम तुम्हारे सामने ही सोच-विचार कर लेगे।" — "यह हुई अक्ल की बात," पत्नी ने जवाब दिया, "तुमसे चालाकी करते नही बनेगी, बुलाओ अफसरो को।"

हम फिर से एकत्रित हुए। इवान कुज्मिच ने अपनी पत्नी की उपस्थिति मे पुगाचोव का आह्वान-पत्र पढा जो किसी अर्ध-शिक्षित

कज्जाक द्वारा लिखा गया था। उस लुटेरे ने बहुत जल्द ही हमारे दुर्ग पर आक्रमण करने के इरादे की घोषणा की थी, कज्जाकों और सैनिकों को अपने गिरोह मे शामिल होने की दावत दी थी और कमाडरों को यह सलाह दी थी कि वे उसका विरोध न करें, अन्यथा उन्हे मृत्यु-दण्ड दिया जायेगा। यह आह्वान-पत्र भद्दे, किन्तु जोरदार शब्दों मे लिखा हुआ था और साधारण लोगों पर उसका भयानक प्रभाव होना चाहिये था।

"कैसा बदमाश है!" दुर्गपति की बीवी ने कहा। "हमें ऐसी सलाह देने की भी जुर्रत करता है! उसका स्वागत करें और उसके पैरों पर झण्डा रख दें! कुत्ते का पिल्ला! क्या वह यह नहीं जानता कि चालीस साल से हम फौजी नौकरी कर रहे हैं और भगवान की कृपा से बहुत कुछ देख-भाल चुके हैं? क्या ऐसे कमाडर भी होंगे जो इस उठाईगीरे की बातों पर कान देंगे?"

"ऐसे कमाडर तो शायद ही होंगे," इवान कुज्मिच ने उत्तर दिया। "मगर सुना है कि उस दुष्ट ने कई दुर्गों पर अधिकार कर भी लिया है।"

"लगता है कि वह सचमुच शक्तिशाली है," श्वाबरिन ने राय जाहिर की।

"हम अभी उसकी असली शक्ति जान लेंगे," दुर्गपति ने कहा। "वसिलीसा येगोरोव्ना, मुझे खत्ती की चाबी दो। इवान इग्नातिच, उस बश्कीरी को यहा लाओ और युलाई से कोड़े लाने को कहो।"

"जरा रुको, इवान कुज्मिच," दुर्गपति की बीवी ने अपनी जगह से उठते हुए कहा। "मैं माशा को घर से कहीं बाहर ले जाती हूं वरना चीख-चिल्लाहट सुनकर वह डर जायेगी। और सच बात तो यह है कि इस तरह की जाच-पड़ताल मे मुझे खुद भी कोई दिलचस्पी नही है। तो मैं चली।"

पुराने वक्तों मे कानूनी मामलों मे यातना देने की प्रथा ने इतनी गहरी जड़ जमा रखी थी कि इसे खत्म करने का कल्याणकारी आदेश बहुत समय तक कागजी कार्रवाई ही बना रहा। ऐसा सोचा जाता था कि अपराधी के अपराध का पूरी तरह भण्डाफोड करने के लिये यह जरूरी है कि वह स्वय उसे स्वीकार करे। यह विचार न केवल निराधार,

बल्कि विवेकपूर्ण कानूनी तर्क-वितर्क के बिल्कुल विरुद्ध भी था। कारण कि यदि अपराधी न होने का प्रमाण नहीं माना जाता, तो उसका उसे स्वीकार कर लेना उसके अपराधी होने का और भी कम प्रमाण होना चाहिये। पुराने न्यायाधीश तो अब भी कभी-कभी इस बात के लिये खेद प्रकट करते सुनाई देते है कि इस बर्बर परम्परा का अन्त कर दिया गया। हमारे समय में न तो न्यायाधीशों और न अभियुक्तों को ही यातना देने की आवश्यकता के बारे में कोई सन्देह था। इसलिये दुर्गपति के आदेश से हम में से किसी को न तो हैरानी और न परेशानी ही हुई। इवान इग्नातिच बश्कीरी को लाने चला गया जो खत्ती में बन्द था और जिसकी चाबी दुर्गपति की बीवी के पास थी। कुछ मिनट बाद बन्दी को ड्योढ़ी में लाया गया। दुर्गपति ने उसे अपने सामने पेश करने का आदेश दिया।

बश्कीरी ने बड़ी मुश्किल से दहलीज़ लांघी (उसके पैरों में बेड़ी थी) और अपनी ऊंची टोपी उतारकर दरवाज़े के पास खड़ा हो गया। मैं उसे देखकर कांप उठा। इस आदमी को मैं कभी नहीं भूल सकूंगा। वह कोई सत्तर साल का लग रहा था। उसकी न तो नाक थी और न कान ही। उसका सिर मुंडा हुआ था, दाढ़ी की जगह कुछ सफेद बाल लटक रहे थे। वह नाटा और दुबला-पतला था तथा उसकी पीठ कुछ भुकी हुई थी, किन्तु उसकी छोटी-छोटी आंखों में अभी भी चिंगारी की चमक थी।

"अरे!" उसकी भयानक निशानियों से १७४१ के विद्रोह * के लिये दण्डप्राप्त एक अपराधी को पहचानकर दुर्गपति ने कहा। "देख रहा हूं कि पुराने भेड़िये हो, हमारे जाल में पहले भी फस चुके हो। तुम्हारे सिर पर जिस तरह रदा फिरा है, उससे पता चलता है कि तुम पहली बार विद्रोह नहीं कर रहे हो। ज़रा नज़दीक आकर बताओ कि किसने तुम्हें यहां भेजा है?"

बूढ़ा बश्कीरी चुप रहकर खाली-खाली आंखों से दुर्गपति को ताकता रहा।

"तुम बोलते क्यों नहीं?" इवान कुज़्मिच ने पूछना जारी रखा।

* १७४१ में बश्कीरिया के विद्रोह से अभिप्राय है जिसे ज़ारशाही सरकार ने निर्दयता से कुचल दिया था। – सं०

या फिर तुम रूसी नहीं समझते? युलाई, तुम इससे अपनी भाषा में पूछो कि किसने उसे हमारे दुर्ग में भेजा है?"

युलाई ने तातारी भाषा में इवान कुज्मिच का प्रश्न दोहराया किन्तु बश्कीरी पहले जैसी मुद्रा बनाये ताकता रहा और उसने उत्तर में एक भी शब्द नहीं कहा।

"याक्शी*" दुर्गपति ने कहा, "अभी तुम्हारी ज़बान खुल जायेगी। तो सैनिको! इसका यह बेहूदा धारीदार चोगा उतारकर इसकी पीठ की चमड़ी उधेड़ो। युलाई, देखो, अच्छी तरह से!"

दो पगु सैनिक बश्कीरी के कपड़े उतारने लगे। उस बिरमन बेचारे के चेहरे पर घबराहट झलक उठी। उसने बच्चों द्वारा पकड़ लिये गये जानवर की तरह सभी ओर नज़र दौड़ाई। जब एक पगु ने उसके दोनों हाथ पकड़े और उन्हें अपनी गर्दन के पास टिकाकर बूढ़े को अपने कंधों पर ऊपर उठाया और युलाई ने कोड़ा ऊपर उठाया, तो बश्कीरी धीमी-सी तथा मिन्नत करती आवाज़ में कराह उठा तथा सिर झुकाकर उसने मुंह खोल दिया जिसमें ज़बान की जगह उसका छोटा-सा टुकड़ा हिल रहा था।

मैं जब यह याद करता हूं कि हमारे ही समय में ऐसा हुआ था और मैं सम्राट अलेक्सान्द्र के विनयशील शासन** के समय तक जीवित हूं, तो मैं द्रुत गति से शिक्षा की सफलता और मानव-प्रेम के नियमों के प्रचार-प्रसार से आश्चर्य चकित हुए बिना नहीं रह सकता। नौजवान! यदि मेरी टिप्पणियां तुम्हारे हाथों में आ जायें, तो याद रखना कि वही परिवर्तन सबसे अच्छे और पक्के होते हैं जो किसी भी प्रकार की हिंसा-पूर्ण उथल-पुथल के बिना नैतिकता के सुधार द्वारा किये जाते हैं।

हम सभी स्तम्भित रह गये।

"तो," दुर्गपति ने कहा, "स्पष्ट है कि हम इससे कुछ नहीं

---

* अच्छा। – अनु०

** "विनयशील शासन" में निहित व्यंग्य तब स्पष्ट हो जाता है, जब हम पुश्किन द्वारा एक पद में दिये गये वर्णन को स्मरण करते हैं जिसमें उसे "दुर्बल और कपटी शासक... एक गंजा छैला... भाग्य की से ख्याति के मज़े लूटनेवाला काहिल" कहा गया है। – अनु०

किसलिये भरोसे का नही है? भगवान की दया से इसमे रहते हुए हमारा बाईसवा साल चल रहा है। हमने बश्कीरी भी देखे और किर्गीज़ भी। पुगाचोव से भी निपट लेंगे।"

"अच्छी बात है," इवान कुज़्मिच ने उत्तर दिया, "अगर तुम्हें हमारे दुर्ग पर भरोसा है, तो यहीं रहो। मगर माशा के बारे में ज़रूर कुछ सोचना चाहिये। अगर हम बच गये या कुमक आ गयी, तब तो अच्छा है। लेकिन अगर दुष्टों ने दुर्ग पर अधिकार कर ही लिया, तब?"

"तब " इतना कहकर वसिलीसा येगोरोव्ना हकलाई और बहुत ही परेशानी ज़ाहिर करते हुए खामोश हो गयी।

"नही, वसिलीसा येगोरोव्ना," दुर्गपति ने यह देखकर कि शायद जिन्दगी मे पहली बार उनके शब्दो का असर हुआ है अपनी बात जारी रखी। "माशा का यहा रहना ठीक नही होगा। उसे ओरेनबुर्ग में उसकी धर्म-माता के पास भेज देते हैं – वहा सेनाये और तोपें भी काफी हैं और दीवार भी पत्थर की है। तुम्हें भी वही जाने की सलाह दूगा – तुम बूढी औरत हो और अगर उन्होने दुर्ग पर अधिकार कर ही लिया, तो सोचो कि तुम्हारा क्या होगा।"

"अच्छी बात है," दुर्गपति की बीवी ने कहा, "ऐसा ही सही, हम माशा को भेज देगे। मुझसे तो स्वप्न मे भी ऐसी आशा नही करना – हरगिज़ नही जाऊगी। बुढापे मे मैं तुमसे अलग होकर किसी अजनबी जगह पर अपनी अकेली की कब्र बनवाऊ, यह नही होने का। एकसाथ जिये है, एकसाथ मरेंगे।"

"तो तय हो गया," दुर्गपति ने कहा। "लेकिन देर नहीं करो। माशा के लिये सफ़र की तैयारी कर दो। उसे कल तड़के ही रवाना कर देंगे, रक्षक-दस्ता भी साथ दे देंगे, यद्यपि हमारे पास फालतू लोग बिल्कुल नहीं हैं। लेकिन माशा है कहा?"

"अकुलीना पम्फ़ीलोव्ना के यहां," दुर्गपति की बीवी ने जवाब दिया। उसने जैसे ही निज्नेओज़ेर्नाया दुर्ग पर कब्ज़ा हो जाने की बात सुनी, उसे ग़श आ गया। मुझे डर है कि कहीं बीमार न हो गयी हो। हे भगवान, कैसे दिन देखने के लिये ज़िन्दा रह गये हम!"

वसिलीसा येगोरोव्ना बेटी के जाने की तैयारी करने चली गयी।

दुर्गपति के यहां बातचीत जारी रही, मगर मैंने उसमें कोई हिस्सा नहीं लिया और न कुछ सुना ही। मरीया इवानोव्ना शाम के भोजन के समय आई, पीला, रुआंसा चेहरा लिये हुए। हमने मौन साधे रहकर ही खाना खाया, हर दिन की तुलना में मेज पर से जल्दी उठे और दुर्गपति के परिवार से विदा लेकर अपने-अपने घर को चल दिये। मैंने जान-बूझकर अपनी तलवार वहीं छोड़ दी और उसे लेने के लिये वापस आया। मुझे ऐसी पूर्वानुभूति हो रही थी कि मरीया इवानोव्ना वहां मुझे अकेली ही मिलेगी। वास्तव में ऐसा ही हुआ। वह दरवाजे पर ही मुझसे मिली और उसने मेरी तलवार मुझे सौंप दी। "तो विदा प्योतर अन्द्रेइच!" उसने आंसू बहाते हुए मुझसे कहा। "मुझे ओरेनबुर्ग भेजा जा रहा है। आप जिन्दा और सुखी रहें। हो सकता है कि भगवान की कृपा से हमारी फिर कभी भेंट हो जाये, अगर ऐसा न हो, तो..." इतना कहकर वह सिसकने लगी। मैंने उसे अपनी बांहों में भर लिया।

"विदा, मेरी जान," मैंने कहा। "विदा, मेरी प्यारी, मेरे दिल की रानी! मेरे साथ चाहे कुछ भी क्यों न गुज़रे, यह विश्वास रखना कि अन्तिम सांस लेते हुए मैं तुम्हारे ही बारे में सोचूंगा और तुम्हारे लिये ही प्रार्थना करूंगा!" मेरी छाती से चिपकी हुई माशा सिसक रही थी। मैंने बहुत ही भाव-विह्वल होकर उसे चूमा और झटपट कमरे से बाहर चला गया।

सातवां अध्याय

आक्रमण

सिर मेरे, ओ सिर मेरे,
फौजी सेवा करनेवाले सिर मेरे!
पूरे तैंतीस बरस कि तुमने सेवा की
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
लोक गीत

इस रात को मैं न तो सोया और न मैंने कपड़े ही उतारे। मेरा यह इरादा था कि पौ फटते ही दुर्ग के फाटक पर चला जाऊंगा, जहां से मरीया इवानोव्ना को ओरेनबुर्ग के लिये जाना था, और वहां उससे अन्तिम बार विदा ले सकूंगा। मैं अपनी आत्मा में बहुत बड़ा परिवर्तन अनुभव कर रहा था – अपनी आत्मा की उत्तेजना मुझे उस उदासी की तुलना में कहीं कम बोझिल अनुभव हो रही थी जिसमें मैं कुछ समय पहले डूबा रहा था। बिछोह-वेदना के साथ-साथ मेरे भीतर अभी तक अस्पष्ट, किन्तु मधुर आशायें, खतरे की विह्वलतापूर्ण प्रत्याशा और उदात्त महत्त्वाकांक्षा की भावनाएं घुल-मिल गयी थीं। रात कब गुजर गयी, इसका पता भी नहीं चला। मैं घर से बाहर निकलने ही वाला था कि मेरा दरवाजा खुला और दफ़ादार ने मुझे यह सूचना दी कि हमारे कज़ाक रात के वक्त दुर्ग से भाग गये, युलाई को जबर्दस्ती अपने साथ ले गये और यह कि अजनबी घुड़सवार दुर्ग के आस-पास घूमते दिखाई देते हैं। इस ख्याल से मेरा दिल बैठ गया कि मरीया इवानोव्ना दुर्ग से नहीं जा पायेगी। मैंने दफ़ादार को जल्दी-जल्दी कुछ हिदायतें दीं और फ़ौरन दुर्गपति की ओर भाग चला।

पौ फट रही थी। मैं गली में बहुत तेज़ी से कदम बढ़ाता जा रहा था कि किसी को अपना नाम पुकारते सुना। मैं रुका। "कहां जा रहे हैं आप?" इवान इग्नातिच ने मेरे करीब आकर पूछा। "इवान कुज़्मिच दुर्ग-प्राचीर पर हैं और मुझे आपको बुला लाने के लिये भेजा है। पुगाचोव आ गया है।" – "*मरीया इवानोव्ना चली गयी या नहीं?*" मैंने धड़कते दिल से पूछा। "*नहीं जा पायी,*" इवान इग्नातिच ने उत्तर में कहा, "ओरेनबुर्ग का रास्ता काट दिया गया है और दुर्ग घेरे में है। हालत अच्छी नहीं है, प्योतर अन्द्रेइच!"

हम दुर्ग-प्राचीर पर गये। यह प्रकृति द्वारा बनायी गयी ऊंची जगह थी और इसे बाड़ से मज़बूत कर दिया गया था। सारे दुर्गवासी वहां जमा थे। सैनिक बन्दूकें लिये तैयार खड़े थे। तोप को पिछली शाम

ही वहां पहुंचा दिया गया था। दुर्गपति मिरोनोव अपने थोड़े से सैनिकों के सामने इधर-उधर आ-जा रहे थे। खतरे की निकटता से पुराने योद्धा में असाधारण स्फूर्ति आ गयी थी। दुर्ग से कुछ ही दूर कोई बीसेक घुड़सवार स्तेपी में जाते दिखाई दे रहे थे। वे कज्जाक प्रतीत होते थे, किन्तु उनके बीच बश्कीरी भी थे जिन्हें उनकी वन-बिलाव की ऊंची टोपियों और तरकशों से आसानी से पहचाना जा सकता था। दुर्गपति अपनी फौज के गिर्द चक्कर लगाते हुए कह रहे थे, "तो जवानो, आज हम सम्राज्ञी माता के लिये डटकर लड़ेंगे और सारी दुनिया को यह दिखा देंगे कि हम वीर और शपथ के प्रति निष्ठावान लोग हैं!" सैनिकों ने बहुत जोर से अपना उत्साह प्रकट किया। श्वाब्रिन मेरी बगल में खड़ा था और एकटक शत्रु को देख रहा था। स्तेपी में नज़र आनेवाले घुड़सवार दुर्ग में हलचल देखकर एक जगह पर इकट्ठे हो गये और आपस में बातचीत करने लगे। दुर्गपति ने इवान इग्नातिच को आदेश दिया कि तोप का मुंह उनकी ओर कर दे और उन्होंने स्वयं पलीते को आग लगाई। गोला भनभनाया और किसी को हानि पहुंचाये बिना उनके सिरों के ऊपर से गुजर गया। घुड़सवार बिखर गये, उसी क्षण घोड़ों को सरपट दौड़ाते हुए नज़र से ओझल हो गये और स्तेपी निर्जन हो गयी।

इसी समय वसिलीसा येगोरोव्ना और उनके साथ माशा भी, जो मां से अलग नहीं रहना चाहती थी, यहां आ गयी। "तो?" दुर्गपति की बीवी ने पूछा, "लड़ाई कैसी चल रही है? दुश्मन कहां है?" – "दुश्मन दूर नहीं है," इवान कुज्मिच ने जवाब दिया। "भगवान ने चाहा तो सब कुछ ठीक हो जायेगा। क्यों, तुम्हें डर लग रहा है माशा?" – "नहीं, पापा," मरीया इवानोव्ना ने उत्तर दिया, "घर में अकेली रहने पर और ज्यादा डर लगता है।" इतना कहकर उसने मेरी ओर देखा और किसी तरह से मुस्करा दी। यह याद आने पर कि पिछले दिन मुझे उसके हाथ से अपनी तलवार मिली थी, मेरा हाथ अनजाने ही उसकी मूठ पर चला गया मानो मैं अपनी प्यारी की रक्षा को तैयार हूं। मेरे दिल में जैसे आग-सी धधक रही थी। मैंने उसके रक्षक के रूप में अपनी कल्पना की। मैं यह प्रमाणित करने को बेचैन था कि उसके विश्वास के योग्य हूं और बड़ी बेसब्री से निर्णायक क्षण की प्रतीक्षा करने लगा।

इसी समय दुर्ग से कोई आध वेर्स्ता की दूरी पर स्थित ऊंचाई पर घुड़सवारों के नये दल दिखाई दिये और शीघ्र ही स्तेपी में बर्छियों तथा तीर-कमानों से लैस लोगों की बड़ी भीड़ जमा हो गयी। इनके बीच लाल अंगरखा पहने तथा हाथ में नंगी तलवार लिये एक व्यक्ति सफ़ेद घोड़े पर सवार था – यही पुगाचोव था। वह रुका, लोग उसके इर्द-गिर्द जमा हो गये और, जैसा कि स्पष्ट था, उसके आदेश पर चार व्यक्ति भीड़ से अलग होकर सरपट घोड़े दौड़ाते हुए दुर्ग के पास आ गये। हमने उनमें अपने गद्दारों को पहचान लिया। उनमें से एक अपनी टोपी के नीचे एक कागज़ दबाये था और दूसरे की बर्छी पर युलाई का सिर टंगा हुआ था जिसे उसने ज़ोर से झटका देकर बाड़ के ऊपर से हमारे पास फेंक दिया। बेचारे कल्मीक का सिर दुर्गपति के क़दमों पर आकर गिरा। गद्दारों ने चिल्लाकर कहा, "गोली नहीं चलाइये! हमारे महाराज के सामने आ जाइये। महाराज यहां हैं!"

"अभी चखाता हूं मैं तुम्हें मज़ा!" इवान कुज़्मिच चिल्लाये। "जवानो! चलाओ गोली!" हमारे सैनिकों ने गोलियों की बौछार की। ख़त लिये हुए कज़्ज़ाक काठी पर लड़खड़ाया और घोड़े से नीचे गिर गया, बाकी कज़्ज़ाक अपने घोड़ों को पीछे दौड़ा ले गये। मैंने मरीया इवानोव्ना की ओर देखा। ख़ून से लथपथ युलाई के सिर से चकित और गोलियां दगने की आवाज़ से बहरी-सी हुई वह लगभग बेहोश लग रही थी। दुर्गपति ने दफ़ादार को बुलाया और उसे मृत कज़्ज़ाक के हाथ से कागज़ लाने का हुक्म दिया। दफ़ादार मैदान में गया और मरे हुए कज़्ज़ाक के घोड़े की लगाम थामे हुए लौटा। उसने पत्र दुर्गपति को दिया। इवान कुज़्मिच ने उसे मन ही मन पढ़ा और फिर फाड़कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। विद्रोहियों ने इसी बीच अपने को स्पष्टतः हमले के लिये तैयार कर लिया था। कुछ ही देर बाद गोलियां हमारे कानों के पास सनसनाने लगीं और कुछ तीर हमारे करीब धरती में और किलेबन्दी के बाड़ों में आकर धंस गये। "वसिलीसा येगोरोव्ना!" दुर्गपति ने कहा। "यहां औरतों का काम नहीं है, माशा को ले जाओ। देखती नहीं हो कि लड़की का दम निकला जा रहा है।"

गोलियों के कारण परास्त हुई वसिलीसा येगोरोव्ना ने स्तेपी की ओर देखा, जहां बहुत हलचल दिखाई दे रही थी। इसके बाद उन्होंने

पति को सम्बोधित करते हुए कहा, "इवान कुज्मिच, जीना-मरना तो भगवान के हाथ में है – माशा को आशीर्वाद दो। माशा, पिता के पास जाओ!"

ज़र्द चेहरा लिये और कांपती हुई माशा इवान कुज्मिच के पास गयी, घुटनों के बल हो गयी और उसने भुककर पिता को प्रणाम किया। बूढ़े दुर्गपति ने उसके ऊपर तीन बार सलीब का निशान बनाया, उसे उठाया और चूमने के बाद बदली हुई आवाज़ में उससे कहा, "मदुचाना रहो, बेटी मेरी! भगवान का नाम लो – वह तुम्हारी मदद करेगा। अगर कोई भला आदमी मिल जाये, तो भगवान तुम दोनों को प्यार और सद्बुद्धि दे। ऐसे ही जीना, जैसे मैं और तुम्हारी मां वसिलीसा येगोरोव्ना जिये हैं। तो विदा, माशा। वसिलीसा येगोरोव्ना, जल्दी से ले जाओ इसे।" (माशा पिता के गले से लगकर रो पड़ी।) "आओ, हम भी एक-दूसरे को चूम लें," दुर्गपति की बीवी ने रोते हुए कहा। "तो विदा, मेरे इवान कुज्मिच। अगर मैंने किसी तरह से तुम्हारा दिल दुखाया हो, तो क्षमा कर देना!" – "विदा, विदा, मेरी प्यारी!" अपनी बूढ़ी पत्नी को गले लगाकर दुर्गपति ने कहा। "बस, काफ़ी है! जाओ, घर जाओ, अगर समय मिल जाये, तो माशा को सराफ़ान* पहना देना।" दुर्गपति की पत्नी और बेटी चली गयीं। मैं मरीया इवानोव्ना को देखता जा रहा था – उसने मुड़कर मेरी ओर देखा और सिर भुकाकर विदा ली। इवान कुज्मिच ने अब हमारी ओर दृष्टि घुमाई और उनका ध्यान पूरी तरह से शत्रु पर केन्द्रित हो गया। घोड़ों पर सवार विद्रोही अपने सरदार को घेरे हुए थे और वे अचानक घोड़ों से नीचे उतरने लगे। "अब मज़बूती से डटे रहना," दुर्गपति ने कहा, "धावा बोला जायेगा..." इसी क्षण भयानक चीख़-चिल्लाहट सुनाई दी, विद्रोही तेज़ी से दुर्ग की ओर दौड़ने लगे। हमारी तोप में छर्रे भरे हुए थे। दुर्गपति ने विद्रोहियों को अधिक से अधिक निकट आ जाने दिया और फिर अचानक तोप दाग दी। छर्रे भीड़ के ठीक बीचोंबीच जाकर गिरे। विद्रोही दायें-बायें बिखरे और पीछे हटने लगे। सिर्फ़ उनका सरदार ही अकेला आगे खड़ा रहा... वह तलवार

---

* रूसी किसान औरतों की पोशाक। – अनु०

हिलाता हुआ बड़े जोर से उन्हें प्रेरित करता प्रतीत हो रहा था .. क्षण भर को शान्त होनेवाली चीख-पुकार फिर से सुनाई देने लगी। "तो जवानो," दुर्गपति ने कहा "अब फाटक खोल दो और नगाड़े पर चोट लगाओ। जवानो! धावा बोलने के लिये मेरे पीछे-पीछे आगे बढ़ो!"

दुर्गपति, इवान इग्नातिच और मैं क्षण भर में ही दुर्ग की फसील के बाहर पहुंच गये, मगर दहशत में आई हुई दुर्ग-सेना टस से मस नही हुई। "तुम वही क्यो खड़े हो, जवानो?" इवान कुज्मिच ने चिल्लाकर कहा। "मरना है, तो मरना है—हम फौजियों का यही धर्म है!" इसी क्षण विद्रोही हम पर चढ़ आये और दुर्ग में घुस गये। नगाड़ा बन्द हो गया, दुर्ग-सेना ने हथियार डाल दिये। रेल-पेल में मुझे नीचे गिरा दिया गया, किन्तु मैं उठा और विद्रोहियों के साथ ही दुर्ग मे दाखिल हुआ। दुर्गपति, जिनके सिर पर चोट आई थी, बदमाशो की भीड़ से घिरे हुए थे जो उन्हें चाबिया देने को मजबूर कर रहे थे। मैं दुर्गपति की मदद करने के लिये लपका, किन्तु कुछ हट्टे-कट्टे कज्जाको ने मुझे पकड लिया और यह कहते हुए "तो चखिये मजा हमारे महाराज की बात न मानने का!" मुझे कमरबन्दो से कस दिया। हमे गलियो मे से घसीटकर ले जाया गया। बस्ती के लोग नमक और रोटी लेकर घरो मे बाहर आ गये। गिरजाघर का घण्टा बजने लगा। सहसा भीड मे बहुत ऊंचे यह सुनाई दिया कि महाराज चौक मे है और बंदियो के वहा लाये जाने तथा वफादारी की कसम खाने की राह देख रहे हैं। लोगो की भीड उस तरफ उमड पडी और हमे भी घसीटकर वही ले जाया गया।

पुगाचोव दुर्गपति के घर के ओसारे मे कुर्सी पर बैठा था। वह कज्जाको के ढंग का लाल अंगरखा पहने था जिस पर गोटा लगा था। सुनहरी कलगी लगी सेबल की खाल की ऊंची टोपी उसकी चमकती आखो पर खिची हुई थी। उसका चेहरा मुझे जाना-पहचाना प्रतीत हुआ। कज्जाक मुखिया उसे घेरे हुए थे। फादर गेरासिम, जो काप रहा था और जिसके चेहरे पर हवाइया उड रही थी, हाथो मे सलीब थामे ओसारे के पास खडा था और ऐसा लगता था मानो कुछ समय बाद दी जानेवाली कुर्बानियो की माफी के लिये चुपचाप उसकी

मिश्रन कर रहा था। चौक में जल्दी-जल्दी सूली बनाई जा रही थी। जब हम निकट पहुंचे, तो बश्कीरियों ने लोगों को खदेड़ दिया और हमें पुगाचोव के सामने पेश किया। घण्टा बजना बन्द हो गया और गहरी खामोशी छा गयी। "दुर्गपति कौन है?" नकली सम्राट ने पूछा। हमारे सार्जेंट ने भीड़ में से आगे आकर इवान कुज्मिच की तरफ इशारा किया। पुगाचोव ने कोप-दृष्टि से बूढ़े दुर्गपति की तरफ देखा और बोला, "मेरा, अपने सम्राट का विरोध करने की तुम्हें कैसे हिम्मत हुई?" घाव के कारण दुर्बल हुए दुर्गपति ने अपनी बची-बचायी शक्ति बटोरी और दृढ़ता से उत्तर दिया, "तुम मेरे लिये सम्राट नहीं, चोर-उचक्के और झूठे दावेदार हो, सुना तुमने।" पुगाचोव की गुस्से से भौंहें चढ़ गयीं और उसने सफ़ेद रूमाल हिलाया। कई कज्जाकों ने बूढ़े कप्तान को पकड़ लिया और सूली के पास घसीट ले गये। अपंग बश्कीरी, जिससे हमने एक दिन पहले पूछताछ की थी, सूली के शहतीर पर तैनात था। वह अपने हाथ में रस्सी लिये था और एक मिनट बाद मैंने बेचारे इवान कुज्मिच को सूली पर लटकते पाया। इसके बाद इवान इग्नातिच को पुगाचोव के सामने लाया गया। "मुझ सम्राट, प्योतर फ्योदोरोविच के सामने वफ़ादारी की क़सम खाओ!" पुगाचोव ने उससे कहा। "तुम हमारे लिये सम्राट नहीं हो," अपने कप्तान के शब्द दोहराते हुए इवान इग्नातिच ने उत्तर दिया। "चचा, तुम चोर-उचक्के और झूठे दावेदार हो!" पुगाचोव ने फिर से रूमाल हिलाया और बेचारा लेफ्टिनेंट अपने बूढ़े अफ़सर की बगल में ही सूली पर लटक गया।

अब मेरी बारी थी। मन ही मन अपने भले साथियों के उत्तर दोहराने की तैयारी करते हुए मैं बड़े साहस से पुगाचोव की ओर देख रहा था। इसी समय मैंने विद्रोही मुखियाओं के बीच कज्जाकों के ढंग से बाल कटवाये और कज्जाकों का अंगरखा पहने श्वाब्रिन को देखा और मुझे इतनी हैरानी हुई कि बयान से बाहर। उसने पुगाचोव के क़रीब आकर उसके कान में कुछ शब्द कहे। "इसे सूली दे दो।" मेरी ओर देखे बिना ही पुगाचोव ने कहा। मेरी गर्दन में फंदा डाल दिया गया। मैं मन ही मन प्रार्थना और अपने सभी पापों का प्रायश्चित्त तथा भगवान से यह अनुरोध करने लगा कि वह मेरे सभी प्रियजन की

प्यार करो। मुझे सूली के नीचे खींच ले गये। "डरो नहीं, डरो नहीं," मेरे हत्यारे लगातार दोहराते जा रहे थे और वे शायद सचमुच ही मेरी हिम्मत बढ़ाना चाहते थे। अचानक मैंने किसी की यह चीख सुनी — "रुक जाओ दुष्टो! रुक जाओ!" जल्लाद रुक गये। देखता हूं कि सावेल्यिच पुगाचोव के चरणों पर गिरा हुआ है। "प्यारे पिता!" बेचारा सावेल्यिच गिड़गिड़ा रहा था। "मेरे स्वामी के इस बच्चे की जान लेकर तुम्हें क्या मिलेगा? इसे छोड़ दो, इसके बदले में तुम्हें फीरौती मिल जायेगी और लोगों के सामने मिसाल पेश करने तथा उनमें दहशत पैदा करने के लिये अगर चाहो तो मुझ बूढ़े को सूली दे सकते हो।" पुगाचोव ने इशारा किया और मुझे उसी समय फ़ौरन छोड़ दिया गया। "हमारे महाराज आपकी जान बख्शते हैं," मुझसे कहा गया। यह नहीं कह सकता कि अपनी जान बच जाने से मुझे खुशी हुई या नहीं किन्तु यह भी नहीं कह सकता कि मुझे इसका अफ़सोस हुआ। बहुत ही धुंधली-धुंधली-सी भावनायें आ रही थीं उस वक्त मेरे दिल-दिमाग में। मुझे फिर से उस नकली सम्राट के सामने लाया गया और घुटनों के बल होने को विवश किया गया। पुगाचोव ने उभरी हुई नसोंवाला हाथ मेरी ओर बढ़ाया। "चूमो, हाथ को चूमो!" मुझे अपने आस-पास से आवाजें सुनाई दीं। किन्तु ऐसे लीचतापूर्ण अपमान की तुलना में मैंने कड़े से कड़े दण्ड को बेहतर माना होता। "भैया, प्योतर अन्द्रेइच!" मेरे पीछे खड़ा और मुझे आगे की ओर धकियाता हुआ सावेल्यिच फुसफुसाया, "जिद्द नहीं करो! तुम्हारा इसमें क्या जाता है? थूको और चूम लो नीच (छि!) मेरा मतलब उसका हाथ चूम लो।" मैं टस से मस नहीं हुआ। पुगाचोव ने व्यग्यपूर्वक यह कहते हुए हाथ नीचे कर लिया — "लगता है कि जनाब का खुशी के मारे दिमाग ठिकाने नहीं रहा। इसे उठाकर खड़ा कर दीजिये।" मुझे खड़ा किया गया और मुक्त छोड़ दिया गया। मैं आगे जारी रहनेवाले इस भयानक तमाशे को देखता रहा।

दुर्गवासी वफ़ादारी की क़सम खाने लगे। वे बारी-बारी से आते, सलीब को चूमते और फिर उस नकली सम्राट के सामने सिर झुकाते। दुर्ग के सैनिक भी वहीं खड़े थे। अपनी कुठित कैंची लिये हुए दुर्ग का दर्जी

उनकी चोटिया काट रहा था। अपने को झटककर वे पुगाचोव का हाथ चूमते जो उन्हे क्षमा-दान देता और अपने गिरोह मे शामिल कर लेता। यह सब कुछ लगभग तीन घण्टे तक चलता रहा। आखिर पुगाचोव अपनी कुर्सी से उठा और अपने सलाहकारो से घिरा हुआ ओसारे से नीचे उतरा। उसके लिये बढिया साज़ से सजा हुआ सफेद घोडा लाया गया। दो कज़्ज़ाको ने सहारा देकर उसे ज़ीन पर बिठाया। उसने फादर गेरासिम से कहा कि दिन का भोजन वह उसके यहा करेगा। इसी समय एक नारी की चीख़ सुनाई दी। कुछ लुटेरे वसिलीसा येगोरोव्ना को ओसारे मे घसीट लाये। उनके बाल अस्त-व्यस्त थे और वह एकदम नगी थी। उनमे से एक ने तो उनकी रूईदार जाकेट भी पहन ली थी। दूसरे लोग रोयो से भरे हुए गद्दे, सन्दूक, चीनी के बर्तन, गिलाफ-चादरे और दूसरी चीज़े उठाये ला रहे थे। "भले लोगो!" बेचारी बूढी वसिलीसा येगोरोव्ना चिल्ला रही थीं। "मुझे शान्ति से मर जाने दो! प्यारे लोगो, मुझे इवान कुज़्मिच के पास पहुचा दो।" अचानक उन्होंने सूली की ओर देखा और अपने पति को पहचान लिया। "नीच दुष्टो," वह गुस्से से पागल होकर चिल्ला उठी। "यह तुमने क्या किया है उसके साथ? मेरी आखो की रोशनी, इवान कुज़्मिच, मेरे वीर सैनिक! न प्रशा की सगीन तुम्हारा कुछ बिगाड सकी, न तुर्की की गोली। न इन्साफ की सच्ची लडाई मे तुम खेत रहे, एक भगोडे अपराधी के हाथो मारे गये!" – "बन्द करो इस चुडैल बुढिया की जबान।" पुगाचोव ने कहा। इसी वक्त एक जवान कज़्ज़ाक ने उनके सिर पर तलवार से वार किया और वह ओसारे की पैडी पर निर्जीव होकर गिर पडी। पुगाचोव ने घोडा बढाया, लोगो की भीड उसके पीछे-पीछे भागने लगी।

बिन बुलाया मेहमान

> बिन बुलाया मेहमान
> तातार से भी बदतर।
>
> कहावत

शोर शान्त हो गया। मन पर पड़ी इतनी भयानक छापों के कारण बेहद परेशान हुआ मैं एक ही जगह पर खड़ा था और अपने विचारों को व्यवस्थित नहीं कर पा रहा था।

मरीया इवानोव्ना का क्या हुआ, यह बात मुझे सब से अधिक व्यथित कर रही थी। कहां है वह? कैसी है वह? कहीं छिप पाई या नहीं? उसके छिपने की जगह भरोसे की है या नहीं? मन को अत्यधिक विचलित करनेवाले ऐसे विचारों को लिये हुए ही मैं दुर्गपति के घर में दाखिल हुआ। वहां बरबादी का नजारा था – कुर्सियां, मेजें, सन्दूक तोड़-फोड़ डाले गये थे, बर्तन टूटे-फूटे पड़े थे, सब कुछ लूटा जा चुका था। मैं भागता हुआ सोने के कमरे की ओर ले जानेवाला छोटा-सा ज़ीना चढ़ गया और जीवन में पहली बार मरीया इवानोव्ना के कमरे में प्रवेश किया। मैंने उसका बिस्तर देखा जिसे उचक्कों ने खूब अच्छी तरह से उथला-पुथला था, अलमारी को तोड़ा और लूट लिया गया था, देव-प्रतिमा के सामने दीपक की बत्ती अभी तक धीरे-धीरे सुलग रही थी। खिड़कियों के बीच की दीवार पर लटकनेवाला दर्पण सही-सलामत था। कुआरी कन्या के इस बहुत ही साधारण, छोटे-से और शांत कमरे की स्वामिनी कहां थी? मेरे मस्तिष्क में एक भयानक-सा विचार कौंध गया – अपनी कल्पना में मैंने उसे लुटेरों के हाथों में देखा। मेरा दिल बैठ गया। मैं फूट-फूटकर रोने लगा और मैंने ऊंची आवाज में अपनी प्यारी का नाम लिया। इसी समय हल्की-सी आहट सुनाई दी और अलमारी के पीछे से कांपती तथा पीला-जर्द चेहरा लिये हुए पालाशा सामने आई।

“ओह, प्योतर अन्द्रेइच!” उसने हताशा से हाथ झटकते हुए ... ‘कैसा मनहूस दिन है आज! कैसी भयानक चीजों का सामना ...ा!”

"मरीया इवानोव्ना कहा है?" मैंने अधीरता से पूछा। "क्या हुआ मरीया इवानोव्ना का?"

"छोटी मालकिन जिन्दा है," पालाशा ने उत्तर दिया। "अकुलीना पम्फीलोव्ना के यहा छिपी हुई है।"

"पादरी के यहा!" मैं भयभीत होकर चिल्ला उठा। "हे भगवान! पुगाचोव भी वही पर है!"

मैं पागलो की तरह कमरे से बाहर भागा, आन की आन मे सडक पर आ गया, कुछ भी सोचे-विचारे बिना, कुछ भी देखे-सुने और अनुभव किये बिना दौडता हुआ पादरी के घर जा पहुचा। वहा हो-हल्ला, ठहाके और गाने सुनाई दे रहे थे पुगाचोव अपने साथियो के साथ दावत उड़ा रहा था। पालाशा भी मेरे पीछे-पीछे दौडती हुई वही आ पहुची। मैंने उसे अकुलीना पम्फीलोव्ना को धीरे-से बुला लाने को भेजा। क्षण भर बाद हाथ मे खाली बोतल लिये हुए पादरिन ड्योढी मे मेरे पास आई।

"भगवान के लिये यह बताइये कि मरीया इवानोव्ना कहा है?" मैंने बेहद उत्तेजना से पूछा।

"वह, मेरी प्यारी, मेरे यहा बीच की ओट के पीछे मेरे पलग पर लेटी हुई है। ओह, प्योतर अन्द्रेइच, मुसीबत का पहाड टूटते-टूटते बचा। बडी कृपा है भगवान की कि बुरी घडी टल गयी – वह बदमाश दिन का भोजन करने बैठा ही था कि मेरी उस बेचारी बच्ची की आख खुल गयी और वह कराह उठी! मेरी तो जान ही निकल गयी। उसने कराहने की आवाज सुन ली – 'बुढिया, कौन तुम्हारे यहा कराह रहा है?' मैंने सिर झुकाकर चोर से कहा, 'मेरी भानजी हुजूर, उसकी बीमारी का दूसरा हफ्ता चल रहा है।' – 'जवान है तुम्हारी भानजी?' – 'जवान है हुजूर।' – 'बुढिया, मुझे दिखाओ तो अपनी भानजी।' मेरा दिल बहुत जोर से धडकने लगा, मगर हो ही क्या सकता था। 'जैसी आपकी इच्छा हुजूर, लेकिन लडकी तो उठकर आपकी सेवा मे उपस्थित नही हो सकती।' – 'कोई बात नहीं बुढिया, मैं खुद जाकर उसे देख लेता हू।' और वह दुष्ट सचमुच कमरे की ओट के पीछे चला गया। और क्या बताऊ तुम्हे! उसने पर्दा हटाया और अपनी बाज जैसी पैनी नजर से उसे देखा। मगर कोई बात नही . भगवान

ने बड़ी दया की! यकीन मानना, मैं और मेरे पति ने उसे प्यार-दुलार करने के लिए आने को तैयार भी कर लिया था। मूर्खिनी कहिये, लेकिन उस प्यारी बच्ची ने उसे पहचाना नहीं। हे भगवान, कैसा दिन दिखाया है तुमने! कुछ कहते नहीं बनता! बेचारे इवान कुज्मिच! कौन सोच सकता था ऐसी बात! और वसिलीसा येगो-रोव्ना? इवान इग्नातिच भी? उनके साथ भला ऐसा सुलूक क्यों किया गया? आप पर कैसे रहम कर दिया उसने? और वह अलेक्सेई इवानो-विच श्वाब्रिन भी खूब है? कज़्ज़ाकों की तरह बाल कटवा लिये और अब उन्हीं के साथ हमारे यहां बैठा हुआ दावत उड़ा रहा है! बड़ा चलता पुर्जा है! जैसे ही मैंने बीमार भानजी के बारे में कहा, वैसे ही, यकीन मानिये, उसने मेरी ओर ऐसे देखा मानो छुरी से आर-पार कर दी हो. लेकिन भंडाफोड़ नहीं किया, इसके लिए ही शुक्रिया उसका।" इसी समय नशे में धुत मेहमानों की चीख-पुकार और फादर गेरासिम की आवाज़ सुनाई दी। मेहमान शराब मांग रहे थे, मेज़बान अपनी पत्नी को पुकार रहा था। पादरिन ने हड़बड़ाते हुए कहा "अपने घर जाइये, प्योतर अन्द्रेइच, आपका यहां रुकना ठीक नहीं। बदमाशों की पिलाई चल रही है। कहीं किसी शराबी के हत्थे चढ़ गये, तो बहुत बुरा होगा। विदा प्योतर अन्द्रेइच। जो होगा, सो होगा। शायद भगवान रक्षा करेगा।"

पादरिन चली गयी। कुछ शान्त होकर मैं अपने घर की ओर चल दिया। चौक के पास से गुज़रते हुए मुझे कुछ बश्कीरी दिखाई दिये जो सूली के आसपास जमा थे और लटकते हुए मुर्दों के बूट उतार रहे थे। यह अनुभव करते हुए कि उन्हें मना करने में कोई तुक नहीं, मैंने बड़ी मुश्किल से अपने गुस्से पर काबू पाया। अफ़सरों के घरों को लूटते हुए लुटेरे दुर्ग में जहां-तहां भागे फिर रहे थे। हर जगह पीते-पिलाते विद्रोहियों का चीखना-चिल्लाना सुनाई दे रहा था। मैं घर पहुंचा। सावेलिच दहलीज पर ही मेरी राह देख रहा था।

"भला हो भगवान का!" मुझे देखकर वह चिल्ला उठा। "मैं [illegible] लगा था कि बदमाशों ने तुम्हें फिर से पकड़ लिया। भैया, [illegible] अन्द्रेइच! यकीन मानोगे, शैतान के बच्चे हमारे यहां से सब [illegible] लूट ले गये – कपड़े-लत्ते, गिलाफ़-चादर, चीज़ें, बर्तन-

कुछ भी तो नही छोडा। भाड में जाये यह सब कुछ! भगवान की यही बडी कृपा है कि तुम्हे जिन्दा छोड दिया! इनके सरदार को तो पहचाना तुमने, मालिक?"

"नही, नही पहचाना। कौन है वह?"

"क्या कहते हो मालिक? तुम उस शराबी को भूल गये जिसने सराय मे तुमसे खरगोश की खाल का कोट ठग लिया था? कोट बिल्कुल नया था, मगर उस जगली ने पहनते वक्त उसे उधेड डाला था!"

मैं दग रह गया। वास्तव मे ही पुगाचोव और उस तूफानी रात के मेरे मार्गदर्शक के बीच बहुत समानता थी। मुझे विश्वास हो गया कि पुगाचोव वही व्यक्ति था तथा यह समझने मे देर न लगी कि क्यो मुझ पर दया की गयी थी। परिस्थितियों के ऐसे अजीब उलट-फेर पर मैं आश्चर्यचकित हुए बिना न रह सका – एक आवारा को भेट किये गये बालक के फर-कोट ने मुझे सूली के फदे से बचा लिया और एक सराय से दूसरी मे भटकते रहनेवाला पियक्कड अब दुर्गों की नाका-बन्दिया कर रहा था और राज्य की नीव हिला रहा था।

"कुछ खाना चाहोगे न?" सावेलिच ने अपनी आदत के मुताबिक पूछा। "घर मे तो कुछ भी नही, जाकर ढूढता-ढाढता हू और तुम्हारे खाने के लिये किसी तरह कुछ तैयार कर दूगा।"

अकेला रह जाने पर मैं अपने विचारो मे खो गया। मुझे क्या करना चाहिये? इस दुष्ट के अधीन दुर्ग मे ही रहना या उसके गिरोह मे शामिल हो जाना अफसर को शोभा नही देता था। मेरा कर्तव्य इस बात की माग करता था कि मैं वहा जाऊ, जहा इस समय की कठिन परि-स्थितियो मे मातृभूमि के लिये मेरी सेवा उपयोगी हो सकती थी किन्तु प्रेम बहुत जोर से यह सलाह देता था कि मैं मरीया इवानोव्ना के पास रहू, उसका रक्षक और सरक्षक बनू। यद्यपि मैं पहले से ही यह देख रहा था कि परिस्थितियो मे निश्चय ही और बहुत शीघ्र परिवर्तन होगा, तथापि मरीया इवानोव्ना की स्थिति के खतरे की कल्पना करके कापे बिना नही रह सकता था।

एक कज़्ज़ाक के भागते हुए भीतर आने और यह घोषणा करने से मेरी विचार-शृखला टूटी कि "महान सम्राट ने तुम्हे अपने यहा आने का आदेश दिया है"।

"कहां है वह?" आदेश-पालन के लिये तत्पर होते हुए मैंने पूछा।

"दुर्गपति वाले घर में," कज्जाक ने जवाब दिया। "भोजन के बाद हमारे महाराज गुसल करने गये और अब आराम कर रहे हैं। हुजूर, सभी बातो से पता चलता है कि बहुत बडी हस्ती हैं वह। भोजन के वक्त उन्होंने सूअर के दो तले हुए बच्चे खाये और वह इतना गर्म भाप-स्नान करते हैं कि तराम कूरोच्किन भी बर्दाश्त न कर सका, उसने तन साफ करने का झाड़ू फोमका बिक्बायेव को दे दिया और फिर खुद बडी मुश्किल से ठण्डे पानी की बदौलत होश में आया। यह कहना चाहिये कि हमारे महाराज के सभी रग-ढग बड़े निराले हैं-और सुनने मे आया है कि गुसलघर में उन्होंने अपनी छाती पर अपने सम्राट-चिह्न दिखाये – एक ओर तो पाच कोपेक के सिक्के जितना बड़ा दो सिर वाला उकाब और दूसरी ओर अपना चित्र।"

मैंने कज्जाक के मत का खण्डन करना आवश्यक नहीं समझा और पुगाचोव के साथ अपनी भेट तथा इस बात की पहले से ही कल्पना करने का प्रयास करते हुए कि इसका क्या अन्त होगा, कज्जाक के साथ दुर्गपति के घर की ओर चल दिया। पाठक बहुत आसानी से ही यह अनुमान लगा सकता है कि मेरा मन बेचैन था।

जब मैं दुर्गपति के घर पहुचा, तो भुटपुटा होने लगा था। लटकती लाशोवाली सूली अब काली और बहुत भयानक लग रही थी। बेचारी वसिलीसा येगोरोव्ना की लाश अभी भी ओसारे के नीचे, जहा दो कज्जाक पहरा दे रहे थे, पड़ी हुई थी। मुझे बुलाकर लानेवाला कज्जाक मेरे बारे मे सूचना देने गया और उल्टे पाव लौटकर मुझे उस कमरे मे ले गया जहा पिछली शाम को मैंने इतने प्यार से मरीया इवानोव्ना से विदा ली थी।

मेरी आखो के सामने बडा असाधारण-सा दृश्य था – मेजपोश से ढकी मेज पर सुराहिया और गिलास रखे थे और कोई दसेक कज्जाक मुखियो के साथ, जो ऊची टोपियां और रगीन कमीजे पहने थे तथा जिनके [illegible] लाल और आखे चमक रही थी, पुगाचोव मेज के पास [illegible]

[illegible] हुए गद्दार – यानी श्वाबरिन और हमारा सार्जेंट

अरे, हुजूर आप है!" मुझे देखकर पुगाचोव ने कहा।

[illegible], हमारे लिये बड़े गौरव की बात है, बैठिये।" [illegible]

लोग एक-दूसरे के साथ तनिक सट गये। मैं चुपचाप मेज़ के सिरे पर बैठ गया। मेरी बगल मे बैठे हुए जवान, सुघड-सुडौल और सुन्दर कज्ज़ाक ने मेरे लिये शराब का गिलास भर दिया जिसे मैंने छुआ भी नही। मैं यहा एकत्रित लोगो को जिज्ञासा से देखने लगा। मेज पर कोहनी टिकाये और काली दाढी को अपनी चौडी मुट्ठी पर फैलाये पुगाचोव मुख्य स्थान पर बैठा था। तीखे और मासे प्यारे नाक-नक्शो वाले उसके चेहरे पर क्रूरता की झलक तक नही थी। वह रह-रहकर पचासेक साल के एक व्यक्ति को सम्बोधित करता था और कभी तो उसे काउंट कभी तिमोफ़ेइच और कभी चाचा कहता था। सभी साथियो की तरह एक-दूसरे के साथ पेश आते थे और अपने सरदार के प्रति कोई खास आदर-सत्कार नही दिखा रहे थे। सुबह के हमले, विद्रोह की सफलता और भावी गतिविधियो के बारे मे बातचीत चल रही थी। हर कोई अपनी डीग हाक रहा था, अपनी राय ज़ाहिर करता था और बेरोक-टोक पुगाचोव की बात काटता था। इस अजीब क़िस्म की युद्ध-परिषद मे ओरेनबुर्ग पर हमला करने का फैसला किया गया – यह बडा साहसपूर्ण निर्णय था जो आपदपूर्ण सफलता के चरम-बिन्दु तक पहुचता-पहुचता रह गया। अगले दिन कूच करने की घोषणा की गयी। "तो बन्धुओ," पुगाचोव ने कहा, "बिस्तर पर जाने के पहले आओ मेरा मनपसन्द गीत गा ले। चुमाकोव! शुरू करो!" मेरी बगल मे बैठे कज़्ज़ाक ने पतली-सी आवाज मे बजरे खीचनेवालो का एक उदासीभरा गीत शुरू किया और सभी मिलकर गाने लगे –

हरे-भरे प्यारे बलूत, तुम नहीं करो सरसर
मुझे सोचना, खलल न डालो, बोझ बडा मन पर,
रौद्र ज़ार के न्यायालय मे कल मुझको जाना –
जो कुछ पूछेगा वह मुझसे होगा बतलाना।
पूछेगा यह ज़ार – "मुझे तुम इतना बतलाओ
ओ किसान के बेटे, किसके संग मिल चोरी की
जब डाके डाले, तब किसने तेरा साथ दिया,
बहुत अधिक थे साथी, जिनको तूने साथ लिया?"
"न्यायप्रिय सम्राट, तुम्हे मैं सब कुछ बतलाता,
सब कुछ सच-सच कहूं, ज़रा भी कपट न कर पाता।
सिर्फ चार थे मेरे साथी –

पहला तो था – रात अन्धेरी
दूजा – तेज छुरी यह मेरी
और तीसरा साथी तो था – बढ़िया घोड़ा
चौथा साथी – धनुष कसा यह मेरा
मेरे सन्देशों के वाहक तेज तीर थे।"
न्याय-धर्म का प्यारा, ज़ार कहेगा तब यह –
"ओ किसान के बेटे, है शाबाश, तुम्हें है
आता तुमने चोरी करना, उत्तर देना!
भैया, इसके लिये करूं सम्मान तुम्हारा –
महल खुले मैदान बीच मैं बनवाऊंगा,
दो खम्भों के बीच कड़ी मैं डलवाऊंगा।

सूली के बारे में इस साधारण लोक-गीत ने, जिसे उन्हीं लोगों ने गाया था जिनके भाग्य में सूली लिखी थी, मेरे मन पर कितनी गहरी छाप अंकित की, यह बयान करना मुमकिन नहीं। उनके रौद्र चेहरे, सधी हुई आवाज़ें, उनकी वह उदासी भरी अभिव्यक्ति जिससे वे उन शब्दों को गाते थे जो स्वयं ही बहुत अभिव्यक्तिपूर्ण थे – इन सब चीज़ों ने मुझे अजीब, काव्यमय भय से झकझोर डाला।

मेहमानों ने शराब का एक-एक गिलास और पिया, मेज़ पर से उठे और पुगाचोव से विदा लेकर जाने लगे। मैंने भी ऐसा ही करना चाहा, किन्तु पुगाचोव ने मुझसे कहा "बैठो, मैं तुम से कुछ बातचीत ... ..." हम दोनों ...

तो कभी नही सोचा होगा कि तुम्हे रास्ता दिखानेवाला व्यक्ति स्वय महान सम्राट है?" (इतना कहकर वह अपने चेहरे पर बहुत रोबीला और रहस्यपूर्ण भाव ले आया)। "तुम मेरे सम्मुख बहुत अपराधी हो," वह कहता गया, "किन्तु मैने तुम्हारी नेकी के लिये, इस चीज के लिये तुम्हे माफ कर दिया कि तुमने उस वक्त मेरी मदद की थी जब मैं अपने दुश्मनो की नजर से छिपने के लिये मजबूर था। मगर अभी तो क्या है और आगे देखना! जब अपना राज्य प्राप्त कर लूगा, तो तुम्हारे लिये और बहुत कुछ करुगा! निष्ठा से मेरी सेवा करने का वचन देते हो?"

इस बदमाश का प्रश्न और उसका ऐसा साहस, मुझे ये दोनो चीजे इतनी मनोरजक प्रतीत हुई कि मैं मुस्कराये बिना न रह सका।

"किसलिये मुस्करा रहे हो?" उसने नाक-भौह सिकोडकर मुझसे पूछा। "या तुम यह विश्वास नही करते कि मैं महान सम्राट हू? साफ़-साफ़ जवाब दो।"

मैं उलझन मे पड गया—एक आवारा को सम्राट मान लेना मेरे बस की बात नही थी—मुझे लगा कि यह अक्षम्य कायरता होगी। उसके मुह पर उसे धोखेबाज कहना मौत को बुलावा देना था। गुस्से की पहली झोक मे सूली के फदे के नीचे और सभी की आखो के सामने मैं जो करने को तैयार था, वह अब मुझे व्यर्थ डीग मारना प्रतीत हो रहा था। मैं दुविधा मे पड गया। पुगाचोव निष्ठुरता का भाव लिये मेरे उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था। आखिर (आज भी मैं बहुत आत्मसन्तोष से इस क्षण को याद करता हू) मानवीय दुर्बलता पर कर्तव्य-भावना की विजय हुई। मैने पुगाचोव को उत्तर दिया, "सुनो, मैं तुमसे सब कुछ सच-सच कहे देता हू। खुद ही सोचो, क्या मैं तुम्हें सम्राट मान सकता हू? तुम चतुर व्यक्ति हो—मेरे ऐसा करने पर तुमने स्वयं यह जान लिया होता कि मैं मक्कारी कर रहा हू।"

"तो तुम्हारे ख्याल मे मैं कौन हू?"

"भगवान ही जानता है। लेकिन तुम कोई भी क्यो न हो, तुम एक भयानक खिलवाड कर रहे हो।"

पुगाचोव ने झटपट मेरी ओर देखा।

"तो तुम यह विश्वास नही करते," उसने कहा, "कि मैं सम्राट

14*

जहा तुम्हारा मन चाहे, वहा जाओ और जो चाहो, वह करो। कल मुझसे विदा लेने आ जाना और अब जाकर सो जाओ। मुझे भी नीद आ रही है।"

मैं पुगाचोव के कमरे से बाहर सडक पर आ गया। रात शान्त और पाले से ठण्डी-ठिठुरी हुई थी। चाद-सितारे खूब चमक रहे थे, चौक और सूली को रोशन कर रहे थे। दुर्ग मे सब कुछ शान्त था, अन्धेरा छाया था। केवल मदिरालय मे रोशनी थी और रात को देर तक पीने-पिलानेवालो का चीखना-चिल्लाना सुनाई दे रहा था। मैंने पादरी के घर की ओर देखा। उसके शटर और फाटक-दरवाजे बन्द थे। वहा सब कुछ शान्त प्रतीत हो रहा था।

मैं घर लौटा और सावेलिच को अपनी अनुपस्थिति के कारण दुख मे घुलते पाया। मुझे आज़ाद कर दिया गया है, इस ख़बर से उसे इतनी खुशी हुई कि बयान से बाहर। "भला हो तुम्हारा भगवान।" उसने सलीब का निशान बनाते हुए कहा। "सुबह होते ही हम दुर्ग से चल देगे और कही भी चले जायेगे। मैंने तुम्हारे खाने के लिये कुछ तैयार कर दिया है, उसे खा लो और सुबह तक चैन से सोये रहो।"

मैंने सावेलिच की इस सलाह पर अमल किया और बडे मन से भोजन करके मानसिक और शारीरिक रूप से बेहद थका-टूटा हुआ फ़र्श पर ही गहरी नीद सो गया।

नौवां अध्याय

जुदाई

बहुत मधुर था, मेरी प्यारी, तुमसे मिलना,
बहुत दुखद ज्यो हृदय गवाना रहा बिछुड़ना।

हेरास्कोव

ढोल की आवाज़ से तडके ही मेरी आख खुल गयी। मैं लोगो के एकत्रित होने के स्थान की ओर चल दिया। पुगाचोव के लोग-

बाग यहा सूली के करीब, जहा अभी तक पिछले दिन की लाशें लटक रही थी, कतारो मे खडे हो रहे थे। कज्जाक घोडो पर सवार थे और फौजी बन्दूके लिये खडे थे। भण्डे लहरा रहे थे। कुछ तोपे, जिनमे मैने हमारी तोप भी पहचान ली, तोप-गाडियो पर लाद दी गयी थी। सारे दुर्गवासी भी यही थे, नकली सम्राट का इन्तजार कर रहे थे। दुर्गपति के घर के ओसारे के करीब एक कज्जाक किर्गीजी नस्ल के एक बहुत ही बढिया सफेद घोडे की लगाम थामे खडा था। मैने दुर्गपति की बीवी की लाश को नजरो से ढूढने की कोशिश की। अब उसे एक तरफ को हटाकर चटाई मे ढक दिया गया था। आखिर पुगाचोव ड्योढी से बाहर निकला। लोगो ने टोपिया उतार ली। ओसारे मे रुककर पुगाचोव ने सबका अभिवादन किया। उसके एक मुखिया ने ताबे के सिक्को की थैली पकडा दी और वह मुट्ठिया भर-भरकर उन्हे बिखेरने लगा। लोग शोर मचाते हुए उन्हें उठाने के लिये लपके और किसी-किसी का हाथ-पाव भी टूट गया। पुगाचोव के प्रमुख विद्रोही साथी उसे घेरे हुए थे। श्वाबरिन भी उनमे खडा था। हमारी नजरें मिली। मेरी नजर मे तिरस्कार देखकर उसने दिली गुस्से तथा बनावटी उपहास के भाव से मुह फेर लिया। भीड मे मुझे पहचानकर पुगाचोव ने मेरी ओर सिर झुकाया और मुझे अपने पास बुलाया। "सुनो," उसने मुझसे कहा, "अभी ओरेनबुर्ग जाओ और मेरी ओर से गवर्नर तथा सभी जनरलो को यह बता दो कि एक हफ्ते बाद मेरी राह देखें। उन्हे यह सलाह देना कि बाल-सुलभ स्नेह के साथ मेरा स्वागत करें और मेरी बात मानें, वरना वे कठोर दण्ड से नहीं बच सकेंगे। हुजूर, तुम्हारी यात्रा शुभ रहे।" इसके बाद उसने श्वाबरिन की तरफ इशारा करते हुए लोगो से कहा, "यह तुम लोगो का नया दुर्गपति है – इसकी हर बात मानो और वह तुम्हारे तथा दुर्ग के लिये मेरे सामने जिम्मेदार है।" ये शब्द सुनकर मेरा दिल दहल गया – श्वाबरिन को दुर्गपति बना दिया गया, मरीया इवानोव्ना उसके हाथो मे रह गयी! हे भगवान, उसका क्या होगा! पुगाचोव ओसारे से नीचे उतरा। उसके लिये घोडा लाया गया। उन कज्जाको का इन्तजार किये बिना, जो घोडे पर सवार होने मे उसकी सहायता करना चाहते थे, वह फुर्ती से उस पर चढ गया।

र बूढ़ा अपनी मुट्ठी हाथ में लिये था और बहुत अफ़सोस से उसे
[illegible] रहा था।

मेरे साथ पुगाचोव के अच्छे रवैये को देखकर उसने इससे फ़ायदा उठाना चाहा था, लेकिन अपने इस नेक इरादे में उसे कामयाबी नहीं मिली। ग़लत ढंग से अपना जोश दिखाने के लिये मैंने उसे डाटना-फटकारना चाहा, मगर अपनी हंसी को नहीं रोक पाया।

"हंसो मालिक, हंसो," सावेलिच ने कहा। "लेकिन जब नये सिरे से सारी गिरस्ती जमानी होगी, तब देखेंगे कि हंसी आयेगी या नहीं।"

मैं मरीया इवानोव्ना से मिलने के लिये झटपट पादरी के घर की ओर चल दिया। पादरिन ने मुझे बुरा समाचार सुनाया। मरीया इवानोव्ना को पिछली रात को बहुत जोर का बुखार चढ़ गया था। वह बेहोश और सरसाम की हालत में थी। पादरिन मुझे उसके कमरे में ले गयी। मैं दबे पांव उसके पलंग के पास गया। उसके चेहरे पर हुए परिवर्तन से मैं हैरान रह गया। उसने मुझे पहचाना नहीं। पादरी गेरासिम और उसकी नेक बीवी की बातों पर कान न देते हुए, जो शायद मुझे तसल्ली दे रहे थे, मैं देर तक उसके सामने खड़ा रहा। दुःखद परेशान विचार मेरे मन में घूम रहे थे। क्रूर विद्रोहियों के बीच छूट गयी इस बेचारी, असहाय यतीम की स्थिति और अपनी बेबसी से मैं ग़मगीन हो रहा था। सबसे अधिक तो श्वाबरिन मेरी कल्पना को परेशान कर रहा था। अब, जब उसे नक़ली सम्राट से अधिकार मिल गये थे, वह उस दुर्ग का सरदार बन गया था, जहां [illegible] की मारी वह मासूम लड़की रह गयी थी जिससे उसे नफ़रत थी, अब वह उसके साथ मनमाना सुलूक कर सकता था। मैं क्या करूं, कैसे उसे सहायता देता? किस तरह चोर-उचक्कों से उसे छुटकारा दिलवाऊं? केवल एक ही उपाय था – मैंने इसी समय ओरेनबुर्ग जाने का निर्णय किया, ताकि बेलोगोर्स्क दुर्ग को जल्दी से जल्दी मुक्त कराया जा सके और इस काम में यथाशक्ति सहयोग दूं। मैंने पादरी और अकुलीना पम्फ़ीलोव्ना से विदा ली, मन से उमड़ते प्यार से उसको [illegible] जिसे मैं अपनी पत्नी मानता था। मैंने अपनी अभागी-बेचारी लड़की का हाथ अपने हाथ में लेकर उसे आंसुओं से तर

सम्भाले हुए घोड़े को सरपट वापस दौड़ा ले चला और क्षण भर बाद नज़र से ओझल हो गया।

भेड़ की खाल का कोट पहनकर मैं घोड़े पर सवार हो गया और सावेलिच को मैंने अपने पीछे बिठा लिया। "देखा मालिक," बुड्ढे ने कहा, "व्यर्थ ही मैंने उस लुटेरे को अपनी अर्जी नही दी थी – उचक्के को शर्म आई, यद्यपि लम्बी टांगोवाला यह बश्कीरी घोड़ा और भेड़ की खाल का कोट उस सबकी आधी कीमत के बराबर भी नही है जो उन शैतान के बच्चो ने हमारे यहा से चुरा लिया और जो तुमने खुद उसे दे दिया था। फिर भी ये काम आयेगे, भागते भूत की लंगोटी ही सही।"

दसवां अध्याय

शहर की नाकाबन्दी

> ढाल पहाड़ चरागाहो से औ' पर्वत पर,
> दृष्टि उकाब सरीखी डाली शहर, नगर पर,
> हुक्म दिया – दीवार बना, सब भेद छिपाओ,
> रात हुई तो धावा बोला, दल-बल लेकर।
>
> हेरास्कोव

ओरेनबुर्ग के निकट पहुचने पर हमे मुडे सिरो और जल्लाद की चिमटियो द्वारा कुरूप बनाये गये चेहरोवाले कैदियो की भीड़ दिखाई दी। वे दुर्ग के पगु सैनिको की निगरानी मे किलेबन्दी के नज़दीक काम कर रहे थे। उनमे से कुछ ठेलों मे भरकर खाई से कूडा-करकट निकाल रहे थे, दूसरे फावड़ों से ज़मीन खोद रहे थे। राज लोग प्राचीर के ऊपर ईंटे ढो-ढोकर नगर-दीवार की मरम्मत कर रहे थे। फाटक पर सन्तरियो ने हमें रोका और पासपोर्ट मागे। किन्तु सार्जेंट को जैसे ही यह मालूम हुआ कि मैं बेलोगोर्स्क दुर्ग से आ रहा हू, वह मुझे सीधे जनरल के पास ले गया।

जनरल बाग मे थे। वे पतझर से पातहीन हुए सेबो के पेड़ो को

, जिसे उसने अपना मित्र बताया, मुझसे पूछ-ताछ करने लगा, क्सर अतिरिक्त प्रश्न तथा उपदेशात्मक टीका-टिप्पणियां करते हुए मुझे टोकता जाता था, जो उसे यदि युद्ध-कला का जानकार नहीं, ो कम से कम समझदार और जन्मजात कुशाग्र बुद्धिवाला व्यक्ति वश्य प्रकट करती थी। इसी बीच अन्य आमन्त्रित लोग भी जमा हो गये। जनरल को छोड़कर उनमें सेना से सम्बन्धित एक भी आदमी नहीं था। जब सभी लोग बैठ गये और सबके सामने चाय का प्याला आ गया, तो जनरल ने बहुत स्पष्ट रूप से और विस्तारपूर्वक सारी स्थिति पर प्रकाश डाला।

"तो महानुभावो," जनरल कहते गये, "अब हमें यह तय करना है कि हम विद्रोहियों के विरुद्ध आक्रमणात्मक या रक्षात्मक कार्रवाई करें? इन दोनों विधियों के पक्ष-विपक्ष में बहुत कुछ कहा जा सकता है। दुश्मन का जल्दी से मुंह तोड़ने के लिये आक्रमणात्मक कार्रवाई ज्यादा उम्मीद बंधवाती है, रक्षात्मक कार्रवाई अधिक विश्वसनीय है और उसमें कम जोखिम होती है सो हम उचित क्रम में यानी सबसे छोटे पदवाले की राय जानने से इस काम को आरम्भ करते हैं। तो श्रीमान छोटे लेफ्टिनेंट!" जनरल ने मुझे सम्बोधित करते हुए अपनी बात जारी रखी, "हमारे सामने अपना मत प्रकट करने की कृपा करें।"

मैं उठकर खड़ा हो गया और आरम्भ में पुगाचोव और उसके गिरोह का संक्षिप्त वर्णन करने के बाद मैंने यह कहा कि नकली सम्राट नियमित सेना के सामने नहीं टिक सकेगा।

नगर-अधिकारियों को स्पष्टत मेरा मत अच्छा नहीं लगा। उन्हें इसमें युवा आदमी की गर्ममिजाजी और ढिठाई दिखाई दी। खुसर-फुसर होने लगी और मुझे किसी के द्वारा दबी जबान में कहे गये "दूध पीता बच्चा है" शब्द साफ सुनाई दिये। जनरल ने मुझे सम्बोधित करते हुए मुस्कराकर कहा –

"श्रीमान छोटे लेफ्टिनेंट! युद्ध-परिषदों की बैठकों में प्रारम्भिक मत आक्रमणात्मक कार्रवाई के पक्ष में ही व्यक्त किये जाते हैं – यह स्वाभाविक क्रम है। अब हम दूसरों से अपने मत प्रकट करने को कहेंगे। श्रीमान कौसिलर! अपनी राय जाहिर कीजिये।"

जनरल इतना कहकर रुके और पाइप में तम्बाकू भरने लगे। मेरे स्वाभिमान की विजय हो गयी थी। मैंने गर्व से सरकारी कर्मचारियों की ओर देखा, जो असन्तोष और बेचैनी जाहिर करते हुए आपस में खुसर-फुसर कर रहे थे।

"किन्तु महानुभावो," जनरल ने गहरी सांस के साथ-साथ तम्बाकू के धुएं का घना बादल-सा छोड़ते हुए अपनी बात जारी रखी, "जब हमारी कृपालु सम्राज्ञी द्वारा मेरे हाथों में सौंपे गये प्रान्त की सुरक्षा का प्रश्न सम्मुख हो, तो मैं अपने ऊपर इतनी बड़ी जिम्मेदारी लेने की हिम्मत नहीं कर सकता। इसलिये मैं बहुमत के साथ अपनी सहमति प्रकट करता हूं जिसके अनुसार शहर के भीतर रहते हुए नाकाबन्दी का इन्तज़ार करना कहीं अधिक समझदारी और कम जोखिम का काम होगा और दुश्मन के हमलों को तोपों और (यदि ऐसा सम्भव हो) तो जवाबी धावों से नाकाम बनाना चाहिये।

सरकारी कर्मचारियों ने अब मेरी ओर उपहासपूर्ण दृष्टि से देखा। परिषद की बैठक समाप्त हो गयी। मैं सम्माननीय जनरल की इस दुर्बलता पर अफ़सोस किये बिना न रह सका कि उन्होंने अपनी आस्था के विरुद्ध रणनीति से अनभिज्ञ और अनुभवहीन लोगों के मत का अनुकरण करने का निर्णय किया था।

इस विख्यात परिषद की बैठक के कुछ दिन बाद हमें पता चला कि पुगाचोव अपने वादे के मुताबिक ओरेनबुर्ग के नज़दीक आता जा रहा है। शहर की दीवार की ऊंचाई से मैंने विद्रोहियों की सेना को देखा। मुझे ऐसे लगा कि अन्तिम आक्रमण के बाद, जिसका मैं साक्षी रहा था, पुगाचोव का लश्कर दस गुना बढ़ गया था। उसके पास तोपें भी थीं जो उसने कब्ज़े में कर लिये गये छोटे दुर्गों से हासिल की थीं। युद्ध-परिषद के निर्णय को याद करते हुए मैं अभी से ही यह देख रहा था कि ओरेनबुर्ग की दीवारों में लम्बे अर्से तक बन्द रहना पड़ेगा और इसलिये मुझे खीझ-निराशा से रुलाई आ रही थी।

मैं ओरेनबुर्ग की नाकेबन्दी का वर्णन नहीं करूंगा जो पारिवारिक टिप्पणियों की नहीं, इतिहास की थाती है। संक्षेप में इतना ही कहूंगा कि स्थानीय अधिकारियों की असावधानी के कारण यह नगरवासियों के लिये विनाशकारी सिद्ध हुई। उन्हें भुखमरी और सभी तरह की

लिया। उसे देखकर मुझे इतनी खुशी हुई कि बयान नही कर सकता।

नमस्ते मक्सीमिच," मैंने कहा। "बहुत समय हो गया तुम्हें बेलोगोर्स्क मे आये हुए?"

नही भैया प्योतर अन्द्रेइच। कल ही लौटा हू। आपके लिये मेरे पास खत है।"

"कहा है वह?" मै बहुत ही बेचैनी से चिल्ला उठा।

"मेरे पास है," भीतर की जेब मे हाथ डालते हुए मक्सीमिच ने उत्तर दिया। "मैंने पालाशा से वादा किया था कि इसे किसी न किसी तरह आप तक पहुचा दूगा।" तह किया हुआ एक कागज़ मुझे देकर वह सरपट घोडा दौडाता हुआ चला गया। मैंने कागज़ खोला और धडकते दिल से यह पढा—

"भगवान की ऐसी ही इच्छा थी और उसने सहसा मुझसे मेरे माता-पिता छीन लिये इस धरती पर अब न तो मेरा कोई सगा-सम्बन्धी है और न ही रक्षक-सरक्षक। यह जानते हुए कि आप हमेशा मेरी भलाई चाहते रहे है और हर किसी की सहायता करने को तैयार हैं, मैं आप ही से यह अनुरोध कर रही हू। भगवान से यही प्रार्थना है कि यह पत्र किसी तरह आप तक पहुच जाये। मक्सीमिच ने वादा किया है कि वह इसे आप तक पहुचा देगा। पालाशा ने मक्सीमिच से यह भी सुना है कि धावो के वक्त वह अक्सर आपको दूर से देखता है और यह कि आप अपनी जान की बिल्कुल चिन्ता नही करते तथा उनके बारे मे नहीं सोचते जो आसू बहाते हुए आपकी रक्षा के लिये भगवान से प्रार्थना करते रहते हैं। मैं लम्बे अर्से तक बीमार रही और जब स्वस्थ हुई तो अलेक्सेई इवानोविच ने, जो मेरे दिवगत पिता की जगह अब यहा दुर्गपति है, पुगाचोव को मेरे बारे में सूचित कर देने की धमकी देकर पादरी गेरासिम को मुझे उसे सौपने के लिये विवश कर दिया। मैं सन्तरियो के पहरे मे अपने घर मे रह रही हू। अलेक्सेई इवानोविच मुझे अपने साथ शादी करने को मजबूर कर रहा है। वह कहता है कि उसने मेरी जिन्दगी बचाई है, क्योकि अकुलीना पम्फीलोव्ना के इस धोखे का भडाफोड नही किया जिसने बदमाशो से यह कहा था कि मैं मानो उसकी भानजी हू। अलेक्सेई इवानोविच जैसे व्यक्ति की पत्नी बनने के बजाय मैं मर जाना कही बेहतर मानती हू। वह मेरे

साथ बडा क्रूर व्यवहार करता है और यह धमकी देता है कि अगर मैं अपना इरादा नहीं बदलूगी और उसकी बीवी बनने को राजी नही हो जाऊगी, तो वह मुझे उस दुष्ट के डेरे पर ले जायेगा और तब मेरा भी लिज़ावेता मार्लोवा * जैसा ही हाल होगा। मैंने अलेक्सेई इवानोविच से प्रार्थना की है कि वह मुझे सोचने-विचारने का कुछ समय दे। वह तीन दिन तक और इन्तज़ार करने को राजी हो गया है। अगर तीन दिन बाद मैं उससे शादी नही करूगी, तो मुझ पर किसी तरह से रहम नहीं किया जायेगा। प्यारे प्योतर अन्द्रेइच! केवल आप ही मेरे एकमात्र रक्षक हैं, मुझ असहाय की रक्षा कीजिये। जनरल और सभी कमांडरों से अनुरोध कीजिये कि हमारी सहायता को जल्दी से जल्दी सेनायें भेजें, और यदि सम्भव हो, तो स्वय भी आ जाइये। मैं हूं आपकी आज्ञाकारिणी असहाय यतीम

मरीया मिरोनोवा।"

यह पत्र पढकर मैं तो मानो पागल हो गया। बडी बेरहमी से अपने बेचारे घोडे को एड लगाता हुआ मैं उसे नगर की ओर बढा ले चला। रास्ते मे मैं असहाय मरीया की मदद करने के लिये तरह-तरह की तरकीबे सोचता रहा, मगर कुछ भी नही सोच पाया। घोडे को सरपट दौडाता हुआ मैं नगर मे पहुचा, सीधे जनरल की तरफ चल दिया और कुछ भी सोचे-विचारे बिना भागता हुआ उनके सामने जा पहुंचा।

फेनिज पाइप से कश खीचते हुए जनरल कमरे में इधर-उधर आ-जा रहे थे। मुझे देखकर रुके। शायद मेरी सूरत देखकर उन्हे हैरानी हुई होगी और उन्होने चिन्ता प्रकट करते हुए मेरे इस तरह हडबडी मे आने का कारण जानना चाहा।

"हुज़ूर," मैंने उनसे कहा, "आपको अपने सगे पिता की तरह मानते हुए आपके पास आया हू। भगवान के लिये मेरा अनुरोध पूरा करने से इन्कार नही कीजिये – मेरे समूचे जीवन के सुख-सौभाग्य की बात है।"

---

* नीज़्नेओज़ेर्नाया दुर्गपति मेजर मार्लोव की पत्नी। मेजर मार्लोव को पुगाचोव ने हत्या कर दी थी। – स०

"क्या बात है, भैया?" आश्चर्यचकित बूढ़े ने पूछा। "क्या कर सकता हू मैं तुम्हारे लिये? बोलो।"

"हुजूर, मुझे सैनिकों की एक कम्पनी और पचासेक कज्जाक अपने साथ लेकर बेलोगोर्स्क दुर्ग जाने और उसे साफ करने की आज्ञा दीजिये।"

जनरल यह मानते हुए कि मेरा दिमाग चल निकला है (और इसमे उनसे लगभग भूल भी नही हुई थी) मुझे एकटक देखते रहे।

"क्या मतलब? क्या मतलब है बेलोगोर्स्क दुर्ग को साफ करने से आपका?" आखिर जनरल ने पूछा।

"कामयाबी की गारटी करता हू," मैंने बडे जोश से जवाब दिया। "बस, आप मुझे जाने दीजिये।"

"नही, मेरे नौजवान," उन्होंने सिर हिलाते हुए कहा। "इतने बड़े फासले पर शत्रु के लिये मुख्य सेना-केन्द्र से आपका सम्पर्क काट देना और आप पर पूरी तरह विजय प्राप्त कर लेना आसान होगा। सम्पर्क कट जाने पर "

मैं इस बात से डर गया कि जनरल रणनीति पर विचार-विनिमय आरम्भ करने जा रहे है और इसलिये मैंने झटपट उन्हे टोका।

"कप्तान मिरोनोव की बेटी ने मुझे पत्र लिखा है," मैंने जनरल से कहा। "उसने सहायता की प्रार्थना की है। श्वाबरिन उसे मजबूर कर रहा है कि वह उससे शादी करे।"

"सच? ओह, यह श्वाबरिन बड़ा Schelm* है और अगर मेरे हत्थे चढ गया तो हुक्म दूगा कि चौबीस घण्टे के भीतर उस पर मुकदमा चलाकर फैसला किया जाये और हम उसे किले की दीवार के सामने खडा करके गोली से उडवा देगे! किन्तु फिलहाल तो सब्र से काम लेना होगा."

"सब्र से काम लेना होगा!" मैं पागलो की तरह चिल्ला उठा। "और वह इसी बीच मरीया इवानोव्ना से शादी कर लेगा!"

"अरे, यह तो कोई बडी मुसीबत नही होगी," उन्होंने मेरी बात काटी। "उसके लिये फिलहाल श्वाबरिन की बीवी बन जाना

---

* बदमाश (जर्मन)।

बेकार होगा। इस वक्त वह उसकी रक्षा कर सकता है। जब हम उसे लोगों से छुड़ा देंगे तो भगवान की कृपा से कोई वर भी मिल जायेगा। प्यारी विधवाएं कुंवारियां नहीं बैठी रहतीं, मेरा मतलब यह कि किसी लड़की की तुलना में विधवा को अधिक जल्दी से पति मिल जाता है।"

"श्वाब्रिन से उसकी शादी कर दें, इसकी बजाय तो मैं मर जाना कहीं बेहतर समझूंगा!" मैं दीवानों की तरह कह उठा।

"ओह, हो, हो!" बूढ़े जनरल ने अर्थपूर्ण ढंग से उत्तर दिया। "अब समझा, लगता है कि तुम खुद मरीया इवानोव्ना के प्रेम में डूबे हुए हो। यह दूसरी बात है! बेचारा नौजवान! लेकिन सैनिकों की कम्पनी और रसाला बख्शने मैं तुम्हें किसी हालत में भी नहीं दे सकता। ऐसी मुहिम बेसमझी की बात होगी। मैं अपने ऊपर इसकी जिम्मेदारी नहीं ले सकता।"

मैंने निराशा से सिर झुका लिया। हताशा मुझ पर हावी हो गयी। अचानक मेरे दिमाग में एक ख्याल कौंध गया। वह ख्याल क्या था, पाठक इसके बारे में, जैसा कि पुराने उपन्यासकार कहा करते थे, अगले अध्याय में जान जायेंगे।

ग्यारहवां अध्याय

विद्रोही गाव

बेशक जन्मजात वह क्रोधी, पर उस क्षण था तृप्त बबर,
बड़े प्यार से पूछा उसने –
"कहो किसलिये आये हो तुम,
किस कारण, इस जगह, इधर?"

अ० सुमारोकोव

जनरल के यहा से मैं जल्दी-जल्दी अपने क्वार्टर में आया। सावेलिच ने सदा की भाति उपदेश और उलाहने देने शुरू किये। "इन शराबी लुटेरों के साथ लडने के लिये जाने की भी तुम्हे क्या सूझती है, मालिक! यह भी कोई कुलीनो का काम है? कौन जाने, कब व्यर्थ ही तुम्हारी

क्यों न कहो मालिक, मैं तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूंगा।"

मैं जानता था कि सावेलिच से बहस करना बेकार है और इसलिये मैंने उससे सफर की तैयारी करने को कह दिया। आध घण्टे बाद मैं अपने बढ़िया घोड़े पर सवार हो गया और सावेलिच मरियल-सी लंगड़ी घोड़ी पर, जो उसे एक नगरवासी ने इसलिये मुफ्त भेंट कर दी थी कि उसके पास उसे खिलाने-पिलाने को कुछ नहीं था। हम नगर के फाटक पर पहुंचे, सन्तरियों ने हमें जाने दिया। हम ओरेनबुर्ग से बाहर आ गये।

भुटपुटा होने लगा था। मेरा रास्ता बेर्दा गाव से होकर जाता था, जहा अब पुगाचोव के लोगों की छावनी थी। सीधा रास्ता बर्फ से ढका हुआ था, मगर सारी स्तेपी में घोड़ों के सुमों के निशान दिखाई दे रहे थे, जो हर दिन नये हो जाते थे। मैं तेज दुलकी चाल से घोड़े को दौड़ा रहा था। सावेलिच बड़ी मुश्किल से मेरे पीछे-पीछे आ पा रहा था और दूर से ही लगातार चिल्लाकर मेरी मिन्नत करता था— "धीरे, धीरे दौड़ाओ घोड़े को, मालिक। मेरी मनहूस घोड़ी तुम्हारे लम्बी टागोवाले शैतान का साथ नहीं दे सकती। कहा जाने की जल्दी मे हो? अगर दावत पर जाते होते तो दूसरी बात थी, मगर सच मानना, कुल्हाड़े के नीचे सिर रखने जा रहे हो . भैया प्योतर अन्द्रेइच . प्योतर अन्द्रेइच! मेरी जान नही लो! हे भगवान, मेरे मालिक का बेटा यो ही अपनी जान गवाने जा रहा है!"

शीघ्र ही बेर्दा की बत्तिया जगमगा उठी। हम खाइयो-खड्डों के निकट पहुंचे जो इस गाव की मानो प्राकृतिक किलेबन्दिया थी। सावेलिच मेरे पीछे-पीछे अपनी घोड़ी बढ़ाता आ रहा था और लगातार दर्दभरी आवाज में गिड़गिड़ाता तथा मेरी मिन्नत-समाजत करता जा रहा था। मुझे आशा थी कि इस गाव के गिर्द चक्कर काटकर सही-सलामत आगे निकल जाऊंगा कि अचानक अन्धेरे में लट्ठ लिये पाच किसानों को अपने सामने देखा। पुगाचोव की छावनी की यह अग्रिम चौकी थी। उन्होंने हमें ललकारा। चूंकि मैं गुप्त संकेत-शब्द नहीं जानता था, इसलिये मैंने चुपचाप उनके पास से निकल जाना चाहा। किन्तु उन्होंने मुझे उसी क्षण घेर लिया और एक ने मेरे घोड़े की लगाम पकड़ ली। मैंने झटपट तलवार निकाली और किसान के सिर पर

[illegible]

[illegible] सभी कुछ साधारण किसानों का सा था। पुगाचोव लाल अंगरखा पहने, ऊंची टोपी डाटे और कूल्हों पर बड़ी शान से हाथ रखे इन प्रतिमाओं के नीचे बैठा था। उसके कुछ मुख्य साथी बनावटी अधीनता का सा दिखावा करते हुए उसके निकट खड़े थे। साफ़ नज़र आ रहा था कि ओरेनबुर्ग के अफ़सर के आने की खबर ने विद्रोहियों में बड़ी जिज्ञासा पैदा कर दी थी और उन्होंने अपने पूरे ठाट-बाट के साथ मुझसे मिलने की तैयारी की थी। पुगाचोव ने मुझे देखते ही पहचान लिया। उसकी बनावटी शान एकायक गायब हो गयी। "अरे, आप हैं हुज़ूर!" उसने बड़े उत्साह से कहा। "क्या हालचाल है? यहां कैसे आना हुआ?" मैंने जवाब दिया कि अपने काम से जा रहा था और आपके लोगों ने मुझे रोक लिया। "किस काम से?" उसने मुझसे पूछा। क्या जवाब दूं, मैं यह नहीं जानता था। पुगाचोव ने यह मानते हुए कि मैं दूसरे लोगों के सामने बताना नहीं चाहता, अपने साथियों से बाहर जाने को कहा। दो को छोड़कर, जो अपनी जगह से नहीं हिले, बाकी सबने उसके आदेश का पालन किया। "तुम्हें जो कुछ भी कहना है किसी तरह की झिझक के बिना इनके सामने कहो।" पुगाचोव ने मुझसे कहा, "मैं इनसे कुछ भी नहीं छिपाता हूं।" मैंने इस नकली सम्राट के राज़दानों को कनखियों से देखा। उनमें से एक था नाटा-सा, झुकी पीठ और सफ़ेद दाढ़ीवाला बूढ़ा। उसमें तो इस चीज़ के सिवा कोई खास बात नहीं थी कि वह अपने भूरे कोट के कंधे पर नीला रिबन डाले था। लेकिन उसके साथी को ज़िन्दगी भर नहीं भूल सकूंगा।

लम्बा-तडगा, मोटा-तगड़ा, चौडे-चकले कधे। मुझे वह कोई पैतालीस साल का लगा। लाल रग की घनी दाढी, चमकती हुई भूरी आखे, नासिकाओ के बिना नाक और माथे तथा गालो पर लाल रग के धब्बे उसके चेचकरू चौडे चेहरे को ऐसा भाव प्रदान करते थे कि बयान से बाहर। वह लाल कमीज, किर्गीज़ी चोगा और कज्जाकी शलवार पहने था। पहला (जैसा कि मुझे बाद मे पता चला) फरार दफादार बेलोबोरोदोव था और दूसरा अफ़ानासी सोकोलोव (जिसे ख्लोपूशा के नाम से पुकारा जाता था) निर्वासित अपराधी था जो तीन बार साइबेरिया की खानो से भाग चुका था। मेरे मन मे भारी उथल-पुथल पैदा करनेवाली भावनाओ के बावजूद मैं सयोग से जिन लोगो की सगत मे आ गया था, उन्होने मेरी कल्पना को अत्यधिक वशीभूत कर लिया। किन्तु पुगाचोव ने प्रश्न दोहराकर फिर से मेरा ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया – "तो बोलो, किसलिये तुम ओरेनबुर्ग से आये हो?"

मेरे दिमाग में एक अजीब-सा ख्याल आया – मुझे लगा कि दूसरी बार पुगाचोव से मिला देनेवाली मेरी किस्मत ने मानो ऐसा मौका दिया है कि मैं अपने इरादे को अमली शक्ल दू। मैंने इस मौके का फायदा उठाने का फैसला किया और अपने फैसले पर सोच-विचार किये बिना पुगाचोव के सवाल का जवाब दिया –

"मैं एक यतीम लडकी को बचाने के लिये, जिसके साथ वहा बुरा बर्ताव किया जा रहा है, बेलोगोर्स्क जा रहा था।"

पुगाचोव की आखो मे बिजली-सी कौंध गई।

"मेरे लोगो मे से किसे यतीम लडकी के साथ बुरा बर्ताव करने की हिम्मत हुई?" वह चिल्ला उठा। "वह चाहे कितना ही धूर्त क्यो न हो, मेरे इन्साफ़ से नही बच सकेगा। बोलो, कौन है वह अपराधी?"

"श्वाबरिन," मैंने जवाब दिया। "वह उस लडकी को बन्दी बनाये हुए है जिसे तुमने पादरिन के यहा बीमारी की हालत में देखा था और उससे ज़बर्दस्ती शादी करना चाहता है।"

"मैं उस श्वाबरिन की अक्ल ठिकाने करूगा," पुगाचोव ने रौद्र रूप धारण करते हुए कहा। "उसे मालूम हो जायेगा कि मनमानी और लोगो के साथ बुरा बर्ताव करने का क्या नतीजा होता है। मैं उसे सूली दे दूगा।"

कुछ कहने की इजाजत दी," ख्लोपूशा ने भर्रायी-सी आवाज में कहा। "श्वाब्रिन को दुर्गपति बनाने में भी तुमने जल्दी की और अब सूली देने की भी जल्दी कर रहे हो। इस कुलीन को कज़ाकों के सिर पर बिठाकर तुम उनकी बेइज्जती कर चुके हो और अब उनके बारे में पहली निन्दा-चुगली सुनते ही उसे सूली देकर कुलीनों को नहीं डराओ।"

"कोई जरूरत नहीं है उन पर रहम करने की, उन्हें लटका देने की!" नीले रिबन वाले बूढ़े ने कहा। "श्वाब्रिन को सूली देने में कोई हर्ज नहीं। लेकिन साथ ही इस अफसर साहब से अच्छी तरह यह पूछ लेना भी कुछ बुरा नहीं होगा कि किसलिये यहां पधारा है। अगर यह तुम्हें सम्राट नहीं मानता तो तुमसे इन्साफ की उम्मीद क्यों रखता है? अगर सम्राट मानता है तो आज तक ओरेनबुर्ग में तुम्हारे जानी दुश्मनों की बगल में क्यों बैठा रहा? क्या तुम्हारे लिये यह हुक्म देना ठीक नहीं होगा कि इसे फौजी दफ्तर में ले जाया जाये और वहां लोहे की सलाखें गर्मायी जायें? मेरा दिल कहता है कि इस हजरत को ओरेनबुर्ग के अफसरों ने हमारे पास भेजा है।"

शैतान बुड्ढे की दलील मुझे काफी वजनी लगी। यह सोचकर कि मैं किन लोगों के हाथों में हूं मेरे रोंगटे खड़े हो गये। पुगाचोव मेरी घबराहट ताड़ गया।

"तो हुजूर?" उसने मेरी ओर आंख मारते हुए कहा, "लगता है कि मेरा फील्डमार्शल अक्ल की बात कह रहा है। क्या ख्याल है तुम्हारा?"

पुगाचोव द्वारा ली गयी इस चुटकी से फिर मेरी हिम्मत बंध गयी। मैंने शान्ति से जवाब दिया कि मैं पूरी तरह से उसके रहम पर हूं और वह मेरे साथ जैसा भी चाहे, बर्ताव कर सकता है।

"अच्छी बात है," पुगाचोव बोला। "अब यह बताओ कि तुम्हारे नगर की कैसी हालत है?"

"भगवान की कृपा से सब कुछ ठीक-ठाक है," मैंने जवाब दिया।

"सब कुछ ठीक-ठाक है?" पुगाचोव ने मेरे शब्दों को दोहराया। "और लोग भूख से मर रहे हैं!"

नकली सम्राट सच कह रहा था। लेकिन मैंने वफादारी की कसम

नेभाते हुए यकीन दिलाना शुरू किया कि ये सब भूठी अफवाहे हैं और ओरेनबुर्ग मे रसद की कोई कमी नही है।

"देख रहे हो," बूढे ने मेरी बात पकडी, "वह तुम्हारी आखो मे साफ-साफ धूल भोंक रहा है। वहा से भागकर आनेवाले सभी लोग यह कहते हैं कि वहा भुखमरी और महामारी फैली हुई है, कि लोग जानवरो की लाशे खाते हैं और उनके मिल जाने पर भी अल्लाह का शुक्र करते हैं। मगर यह हजरत यकीन दिला रहा है कि वहा सब कुछ ठीक-ठाक है। अगर श्वाबरिन को सूली देना चाहते हो तो उसी सूली पर इस छैले को भी लटका दो, ताकि किसी को भी एक-दूसरे से ईर्ष्या न हो।"

ऐसा प्रतीत हुआ कि इस दुष्ट बुड्ढे के शब्दो से पुगाचोव का मन कुछ डावाडोल हो गया है। मेरी खुशकिस्मती थी कि ख्लोपूशा अपने साथी की बात का विरोध करने लगा।

"बस, काफी है, नाऊमिच," उसने कहा। "तुम तो सभी का गला घोटने और काटने पर उतारू रहते हो। क्या खूब सूरमा हो तुम भी? जाने कहा जान अटकी हुई है तुम्हारी। खुद कब्र मे पैर लटकाये हुए हो, मगर दूसरो की जान लेने पर उतारू रहते हो। क्या कम खून के धब्बे है तुम्हारी आत्मा पर?"

"और तुम तो बडे दूध के धोये हो?" बेलोबोरोदोव ने आपत्ति की। "तुम मे कहा से रहम आ गया?"

"बेशक, मैं भी गुनाहगार हू," ख्लोपूशा ने जवाब दिया, "यह हाथ (इतना कहकर उसने हडीली मुट्ठी भींच ली और आस्तीन ऊपर चढाकर बालो से ढकी हुई बाह दिखाई) भी ईसाइयो का खून बहाने के लिये अपराधी है। मगर मैंने दुश्मनो की जान ली, मेहमानो की नही। मैं चौराहे पर या घने जगल मे अपने शिकार को मारता हू, अगीठी के करीब घर पर नहीं। मैं लट्ठ और फरसे से वार करता हू, औरतो जैसी निन्दा-चुगलियो से काम नही लेता।"

बुड्ढे ने मुह फेर लिया और बडबडाया—"नककटा!"

"तुम वहा क्या बडबडा रहे हो, बुड्ढे खूसट?" ख्लोपूशा चिल्ला उठा। "मैं तुम्हे चखाऊगा नककटा होने का मजा। जरा सब्र करो, तुम्हारा वक्त भी आ जायेगा। खुदा ने चाहा, तो तुम्हारी नाक भी

"कुछ कहने की इजाज़त दो," ख्लोपूशा ने खरखरी-सी आवाज़ मे कहा। "श्वाब्रिन को दुर्गपति बनाने में भी तुमने जल्दी की और अब सूली देने की भी जल्दी कर रहे हो। एक कुलीन को कज़ाकों के सिर पर बिठाकर तुम उनकी बेइज्ज़ती कर चुके हो और अब उनके बारे मे पहली निन्दा-चुगली सुनते ही उसे सूली देकर कुलीनो को नहीं डराओ।"

"कोई जरूरत नही है उन पर रहम करने की, उन्हें रुतबे देने की!" नीले रिबन वाले बूढ़े ने कहा। "श्वाब्रिन को सूली देने मे कोई हर्ज नही, लेकिन साथ ही इस अफसर साहब से अच्छी तरह यह पूछ लेना भी कुछ बुरा नही होगा कि किसलिये यहां पधारा है। अगर वह तुम्हे सम्राट नही मानता तो तुमसे इन्साफ की उम्मीद क्यो रखता है? अगर सम्राट मानता है, तो आज तक ओरेनबुर्ग मे तुम्हारे दुश्मनो की बगल मे क्यो बैठा रहा? क्या तुम्हारे लिये यह हुक्म देना ठीक नही होगा कि इसे फौजी दफ्तर मे ले जाया जाये और वहा मेरे की सलाखे गर्मायी जाये? मेरा दिल कहता है कि इस हज़रत को ओरेनबुर्ग के अफसरो ने हमारे पास भेजा है।"

शैतान बुड्ढे की दलील मुझे काफी वजनी लगी। यह सोचकर कि मैं किन लोगो के हाथो मे हू मेरे रोंगटे खड़े हो गये। पुगाचोव मेरी घबराहट ताड़ गया।

[illegible] तो हुजूर?" उसने मेरी ओर आंख मारते हुए कहा, "लगता है कि मेरा फील्डमार्शल अक्ल की बात कह रहा है। क्या ख्याल है तुम्हारा?"

पुगाचोव द्वारा ली गयी इस चुटकी से फिर मेरी हिम्मत बंध गयी। मैंने शान्ति से जवाब दिया कि मैं पूरी तरह से उसके रहम पर हू और वह [illegible] भी चाहे, बर्ताव कर सकता है।

[illegible] है," पुगाचोव बोला। "अब यह बताओ कि तुम्हारे [illegible] न है?"

[illegible] कुछ ठीक-ठाक है," मैंने जवाब दिया।

[illegible]" पुगाचोव ने मेरे शब्दों को दोहराया।

[illegible]।"

[illegible] था। लेकिन मैंने [illegible] की [illegible]

मिट्टी की नजर हो जायेगी। फिलहाल तो इतनी ही खैर मनाओ कि कहीं मैं तुम्हारी दाढ़ी न नोच लूं!"

"ए मेरे जनरलो!" पुगाचोव ने बड़ी शान से कहा। "बस, काफी नोक-झोंक हो गयी। अगर ओरेनबुर्ग के सभी कुत्ते एक ही सूली पर लटक जायें, तो इसमें कोई फर्क नहीं पड़ेगा। लेकिन अगर हमारे कुत्ते एक-दूसरे पर झपटेंगे, तो बहुत बुरा होगा। सुलह कर लीजिये।"

ख्लोपूशा और बेलोबोरोदोव चुप्पी साधे हुए रुखाई से एक-दूसरे की ओर देखते रहे। मुझे इस बातचीत को बदलने की जरूरत महसूस हुई जिसका मेरे लिये बहुत ही बुरा अन्त हो सकता था। मैंने पुगाचोव को सम्बोधित करते हुए खुशमिजाजी से कहा—

"अरे, हां! घोड़े और भेड़ की खाल के कोट के लिये मैं तो तुम्हें धन्यवाद देना ही भूल गया। तुम्हारी इस मदद के बिना मैं शहर तक न पहुंच पाता और रास्ते में ही ठिठुरकर रह गया होता।"

मेरी यह चाल कामयाब रही। पुगाचोव खिल उठा।

"नेकी के बदले में नेकी करनी चाहिये," पुगाचोव ने आंख मारते और सिकोड़ते हुए कहा। "अच्छा, अब यह बताओ कि उस लड़की से तुम्हारा क्या वास्ता है जिसके साथ श्वाबरिन बुरा बर्ताव कर रहा है? कहीं उसने तुम्हारे दिल में तो घर नहीं कर रखा है? बोलो?"

"वह मेरी मंगेतर है," हवा का रुख अपने हक में देखने और सचाई को छिपाने की जरूरत न महसूस करते हुए मैंने पुगाचोव को जवाब दिया।

"तुम्हारी मंगेतर!" पुगाचोव चिल्ला उठा। "तुमने पहले क्यों नहीं कहा? हम तुम्हारी शादी करेंगे और तुम्हारी शादी की दावत उड़ायेंगे!" इसके बाद उसने बेलोबोरोदोव को सम्बोधित करते हुए कहा, "सुनो, फील्डमार्शल! इन हुजूर के साथ हमारी पुरानी दोस्ती है। आओ, अब सब एकसाथ खाना खायें। रात से प्रभात भला। कल सुबह देखा जायेगा कि हम इसके साथ क्या बर्ताव करें।"

मैंने खुशी से इस सम्मान से इन्कार कर दिया होता, मगर कोई चारा नहीं था। दो जवान कज्जाक लड़कियों ने, जो इस घर के मालिक की बेटियां थीं, मेज पर सफेद मेजपोश बिछा दिया, डबल रोटी और मछली का शोरबा और शराब तथा बियर की कुछ सुराहियां ले आईं।

मैं दूसरी बार पुगाचोव और उसके दुष्ट साथियों की संगत में खाने की एक ही मेज पर बैठा था।

अपनी इच्छा के विरुद्ध मैं जिस रंग-रस का साक्षी बना हुआ था, वह काफी रात तक जारी रहा। आखिर नशा मेरे साथियो पर हावी होने लगा। पुगाचोव अपनी जगह पर बैठा हुआ ही ऊंघने लगा, उसके साथी उठे और उन्होंने मुझे उसे छोड़कर बाहर चलने का इशारा किया। मैं उनके साथ बाहर आ गया। ख्लोपूशा के हुक्म के मुताबिक सन्तरी मुझे फौजी दफ़्तर में ले गये। सावेलिच भी वहीं था और मुझे उसके साथ छोड़कर उन्होंने बाहर से ताला लगा दिया। बूढ़ा सावेलिच घटना-चक्र से इतना चकित था कि उसने मुझसे कुछ भी पूछ-ताछ नहीं की। वह अंधेरे में लेट गया, देर तक आहें भरता तथा आह-ओह करता रहा और आखिर खर्राटे लेने लगा। मैं ख्यालो में खो गया, जिन्होंने क्षण भर को भी मुझे पलक नहीं झपकने दी।

अगली सुबह को पुगाचोव ने मुझे बुलवा भेजा। मैं उसके पास गया। उसके घर के बाहर तीन तातारी घोडो से जुती हुई स्लेज खडी थी। सडक पर लोगो की भीड थी। पुगाचोव से मेरी ड्योढी मे भेट हुई। वह सफरी कपडे—फर-कोट और किर्गीज़ी टोपी पहने था। पिछली शाम के उसके साथी उसे घेरे हुए थे और उनके चेहरो पर चापलूसी का ऐसा भाव था जो मेरे द्वारा पिछले दिन देखे गये भाव से सर्वथा भिन्न था। पुगाचोव ने प्रसन्नतापूर्वक मुझसे हाथ मिलाया और स्लेज मे बैठने को कहा।

हम स्लेज मे सवार हो गये। "बेलोगोर्स्क दुर्ग को चलो!" पुगाचोव ने चौडे कन्धोवाले तातार कोचवान से कहा जो तीनो घोडो को हाकने के लिये स्लेज मे तैयार खडा था। मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धडकने लगा। घोडे चल पडे, घण्टिया बज उठी और स्लेज हवा से बाते करने लगी

"रुको! रुको!" ज़ोर से आवाज सुनाई दी जो मेरी बहुत ही जानी-पहचानी थी। मैंने सावेलिच को हम लोगो की ओर भागे आते देखा। पुगाचोव ने स्लेज रोकने का आदेश दिया। "भैया, प्योतर अन्द्रेइच!" बूढ़े ने चिल्लाकर कहा। "बुढ़ापे मे मुझे नही छोडो इन बद "—"अरे बुड्ढे खूसट!" पुगाचोव ने उससे कहा। "भगवान ने हमे फिर मिला दिया। बैठ जाओ, कोचवान की सीट पर।"—"धन्यवाद

महाराज, धन्यवाद हुजूर!" सावेलिच ने बैठते हुए कहा। "बूढ़े आदमी की चिन्ता करने और उसके दिल को तसल्ली देने के लिये भगवान तुम्हें सौ बरस तक जिन्दा रखे। जब तक जीता रहूंगा, भगवान से तुम्हारे लिये प्रार्थना करूंगा और खरगोश की खाल के कोट की अब कभी याद नहीं दिलाऊंगा।"

खरगोश की खाल के कोट की चर्चा से पुगाचोव सचमुच ही आग-बबूला हो सकता था। लेकिन खुशकिस्मती कहिये कि नकली सम्राट ने या तो यह सुना नहीं या फिर बेमौके के इस इशारे की तरफ जान-बूझकर कोई ध्यान नहीं दिया। घोड़े तेजी से दौड़ने लगे – लोग रास्ते में रुक-रुककर दोहरे होते हुए उसका अभिवादन करते। पुगाचोव जवाब में दायें-बायें सिर हिलाता जा रहा था। आन की आन में हम गांव से बाहर आ गये और स्लेज बढ़िया रास्ते पर तेजी से बढ़ चली।

इस बात की आसानी से कल्पना की जा सकती है कि इस क्षण मैं क्या अनुभव कर रहा था। कुछ घण्टे बाद मैं उससे मिलनेवाला था जिसे मैं अपने लिये मानो खो ही चुका था। मैं हमारे मिलन-क्षण की कल्पना कर रहा था मैं उस व्यक्ति के बारे में भी सोच रहा था जिसके हाथों में मेरा भाग्य था और जो किसी अजीब कारणवश अदृश्य सूत्रों से मेरे साथ जुड़ा हुआ था। मुझे उस आदमी की बेसमझी की क्रूरता, खून के प्यासे रवैये का भी ध्यान आया जो अब मेरे दिल की रानी का रक्षक होनेवाला था। पुगाचोव को यह मालूम नहीं था कि वह कप्तान मिरोनोव की बेटी है। गुस्से से पगलाया हुआ श्वाब्रिन उसे यह सब कुछ बता सकता था। किसी और तरीके से भी पुगाचोव को सारी सचाई मालूम हो सकती थी. तब क्या होगा मरीया इवानोव्ना का? मुझे अपने सारे शरीर में झुरझुरी-सी महसूस हुई, मेरे रोंगटे खड़े हो गये

पुगाचोव ने यह प्रश्न करके सहसा मेरी विचार-शृंखला को भंग कर दिया –

"हुजूर, किन ख्यालों में खो गये?"

"ख्यालों में खोये बिना रह ही कैसे सकता हूं," मैंने उसे जवाब । "मैं फौजी अफसर और कुलीन हूं। अभी कल तक मैं तुम्हारे ..ड लोहा ले रहा था, आज तुम्हारे साथ एक ही स्लेज में जा रहा

हू और मेरी जिन्दगी की खुशी तुम पर निर्भर है।"

"तो क्या डर लगता है तुम्हे?" पुगाचोव ने पूछा।

मैंने जवाब दिया कि जब एक बार वह मुझे माफ कर चुका है, तो मैं केवल उसका दया-पात्र होने की ही नही, बल्कि उसकी सहायता पाने की भी आशा रखता हूं।

"तुम ठीक कहते हो, भगवान की कसम, बिल्कुल ठीक कहते हो!" नक़ली सम्राट ने कहा। "तुमने देखा था न कि मेरे लोग तुम्हे कैसी नज़र से देखते थे। वह बुड्ढा तो आज भी इस बात की रट लगाये हुए था कि तुम जासूस हो, तुम्हे यातना और सूली देनी चाहिये। लेकिन मैं नही माना," उसने आवाज धीमी करके, ताकि सावेलिच और तातार उसकी बात न सुन सके, इतना और जोड दिया, "क्योकि तुम्हारा शराब का गिलास और खरगोश की खाल का कोट नही भूला था। देखते हो न, मैं दूसरो के खून का वैसा ही प्यासा नही हू, जैसा कि तुम्हारे लोग मेरे बारे मे कहते हैं।"

बेलोगोर्स्क दुर्ग पर जब कब्ज़ा किया गया था और तब क्या हुआ था, मुझे वह सब याद हो आया, लेकिन पुगाचोव की बात का खण्डन करना मैंने आवश्यक नही समझा और कुछ भी नही कहा।

"मेरे बारे मे ओरेनबुर्ग में क्या कहा जा रहा है?" कुछ देर चुप रहने के बाद पुगाचोव ने पूछा।

"कहा जा रहा है कि तुमसे मोर्चा लेना लोहे के चने चबाने के बराबर है। निश्चय ही तुमने अपनी धाक मनवा ली है।"

नक़ली सम्राट के चेहरे पर अहभाव की तुष्टि झलक उठी।

"हा!" उसने खुश होते हुए कहा। "मैं लडता तो खूब डटकर हू। तुम्हारे ओरेनबुर्ग मे युज़ेयेवा के निकट हुई लडाई के बारे मे जानते हैं या नही? चालीस जनरल मार डाले गये, चार पलटने बन्दी बना ली गयी। क्या ख्याल है तुम्हारा, प्रशा का बादशाह मेरे मुकाबले मे डटा रह सकता?"

इस उचक्के का डीग हाकना मुझे दिलचस्प लगा।

"तुम्हारा अपना क्या ख्याल है इस बारे मे?" मैंने उससे पूछा, "तुम फ्रेडरिक से निपट लेते?"

फ्योदोर फ्योदोरोविच* से? क्यों नहीं? तुम्हारे जनरलों से तो निपट लेता हूं और उन्होंने उसे पीट डाला था। अभी तक तो मेरे हथियारों ने मेरा साथ दिया है। अभी क्या है, जब मास्को पर चढ़ाई करूंगा तब देखना।

"तुम्हारा ख्याल है कि तुम मास्को पर भी चढ़ाई कर पाओगे?"

नक़ली सम्राट कुछ देर को सोच में डूब गया और धीमे से बोला –

"भगवान ही जानता है। मेरी राह तंग है, विस्तार की कमी है। मेरे जवानों के दिमागों में सभी तरह की उल्टी-सीधी बातें आती हैं। वे चोर-उचक्के हैं। मुझे हर वक्त अपने कान खड़े रखने चाहियें। पहली नाकामी होते ही वे अपनी गर्दन बचाने के लिये मेरा सिर कटवा देंगे।"

'यही तो बात है!' मैंने पुगाचोव से कहा। "क्या तुम्हारे लिये वक्त रहते उनसे पिंड छुड़ा लेना और अपने को सम्राज्ञी की दया पर छोड़ देना ज़्यादा अच्छा नहीं होगा?"

पुगाचोव बड़ी कटुता से मुस्कराया।

"नहीं," उसने जवाब दिया, "मेरे लिये क़दम पीछे हटाने के मामले में देर हो चुकी है। मुझे माफ़ नहीं किया जायेगा। जैसे शुरू किया था, वैसे ही जारी रखूंगा। कौन जाने? शायद कामयाबी मिल जाये! ग्रीश्का ओत्रेप्येव ने तो आखिर मास्को पर शासन किया ही था।"

"उसका अन्त क्या हुआ था, यह तो जानते हो न? उसे खिड़की से बाहर फेंका गया था, उसके टुकड़े-टुकड़े किये गये थे, उसे जलाया गया था, उसकी राख को तोप में भरकर उड़ाया गया था!"

"सुनो," पुगाचोव ने एक अजीब उत्साह से ओतप्रोत होकर कहा। "तुम्हें वह किस्सा सुनाता हूं जो एक काल्मीक बुढ़िया ने मुझे बचपन में सुनाया था। एक बार उकाब ने कौवे से पूछा – 'कौवे, तुम इस दुनिया में तीन सौ साल तक जीते रहते हो, जबकि मैं कुल

* पुगाचोव ने व्यंग्यपूर्वक प्रशा के बादशाह फ्रेडरिक द्वितीय को रूसी नाम से सम्बोधित किया है। रूस और प्रशा के बीच सातवर्षीय युद्ध में पुगाचोव सैनिक था। इस युद्ध में रूस ने प्रशा को पराजित ... और १७६० में रूसी सेना बर्लिन में दाखिल हुई। – सं०

ास वर्ष तक ही जी पाता ह भला क्या ? – इसलिये पक्षीराज
ाव न उस जवाब दिया   कि तुम ताजा खून पीते हो और मै मर्दा
ास पर जिन्दा रहता हू। उकाब न कुछ देर सोचा और बोला
अच्छी बात है मै भी ऐसा ही करके देखता हू। सो उकाब और
वा उड़ चले। उन्होने एक मरा हुआ घोडा देखा – दोनो नीचे उतरकर
सकी लाश पर जा बैठे। कौवा मास नोचकर खाने और उसकी तारीफ
ने लगा। उकाब ने एक बार चोच मारी दूसरी बार चोच मारी
वे फडफडाये और कौवे से कहा   नही भैया कौवे तीन सौ साल
क लाश का गोश्त खाने के बजाय एक बार ताजा खून पी लेना कही
हतर है और फिर भगवान जो करे वही ठीक है।'' तो कैसा है
ह कल्मीक किस्सा ?

वडा दिलचस्प है   मैंने जवाब दिया। "किन्तु मेरी नजर मे
त्या और लूट-मार मे जीना भी लाश खाने के बराबर है।"

पुगाचोव ने मुझे हैरानी से देखा और कोई जवाब नही दिया।
पने-अपने ख्यालो मे खोये हुए हम दोनो खामोश रहे। तातार कोचवान
ने कोई उदासी भरा गीत गाना शुरू कर दिया। सावेलिच कोचवान
की सीट पर ऊघते हुए डोल रहा था। जाडे की साफ-सपाट सडक पर
तेज उडी जा रही थी. अचानक मुझे बाड और गिरजे की घण्टे
वाली मीनार सहित याइक नदी के खडे तट पर छोटा-सा गाव दिखाई
दिया और कोई पन्द्रह मिनट बाद हमने बेलोगोर्स्क दुर्ग मे प्रवेश
किया।

बारहवां अध्याय

यतीम

पेड़ सेब का जैसे अपना –
नहीं कोंपलियां नहीं नई शाखायें उस पर
हाल यही अपनी दुल्हन का –
नहीं पिता है और न मां का स्नेह-दुलार।

कौन करे उसका शृंगार?
दे आशीष, उसे दे प्यार?

विवाह-गीत

स्लेज दुर्गपति के घर के निकट पहुच गयी। लोगो ने पुगाचोव की स्लेज की घण्टियो की आवाज पहचान ली और उनके दल के दल हमारे पीछे-पीछे दौडने लगे। श्वाबरिन ने बाहर ओसारे मे आकर नकली सम्राट का स्वागत किया। वह कज्जाकों की तरह कपडे पहने था और उसने दाढी बढा ली थी। गद्दार ने पुगाचोव को सहारा देकर स्लेज से उतारा और दास सरीखी भावाभिव्यक्तियों द्वारा अपनी प्रसन्नता और निष्ठा व्यक्त की। मुझे देखकर वह घबरा-सा गया, किन्तु शीघ्र ही उसने अपने को सम्भाल लिया और यह कहते हुए मेरी ओर हाथ बढाया – "और तुम भी हमारे हो गये? बहुत पहले ही ऐसा कर लेना चाहिये था!" मैंने मुह फेर लिया और कोई उत्तर नहीं दिया।

चिर-परिचित कमरे मे जाने पर, जहा अतीत के करुण समाधि-लेख की तरह दिवगत दुर्गपति का डिप्लोमा अभी तक दीवार पर लटका हुआ था, मेरा दिल टीस उठा। पुगाचोव उसी सोफे पर बैठ गया जहा अपनी बीवी की बडबड सुनते हुए इवान कुज्मिच ऊघ जाया करते थे। श्वाबरिन खुद उसके लिये वोदका लेकर आया। पुगाचोव ने एक जाम पी लिया और मेरी ओर सकेत करते हुए उससे कहा, "इन हुजूर की भी खातिरदारी करो!" श्वाबरिन ट्रे लिये हुए मेरे पास आया, लेकिन मैंने दूसरी बार उसकी ओर से मुह फेर लिया। वह बेहद परेशान नजर आ रहा था। अपनी सहज बुद्धि से उसने निश्चय ही यह अनुमान लगा लिया था कि पुगाचोव उससे नाराज है। वह उससे डरता था और मेरी ओर अविश्वास से देखता था। पुगाचोव ने दुर्ग की स्थिति और शत्रु-सेनाओ आदि के बारे में पूछ-ताछ की और फिर अचानक उससे यह प्रश्न किया –

"यह बताओ, भैया, किस लडकी को तुम बन्दी बनाये हुए हो? उसे मुझे दिखाओ तो।"

श्वाबरिन का चेहरा मुर्दे की तरह पीला हो गया।

"महाराज," वह कापती आवाज मे बोला, – "महाराज,

वह बन्दी नही है .. वह बीमार है .. अपने कमरे मे लेटी हुई है।"

"मुझे उसके पास ले चलो," नकली सम्राट ने अपनी जगह से उठते हुए कहा। टाल-मटोल करना सम्भव नही था। श्वावरिन पुगाचोव को मरीया इवानोव्ना के कमरे की ओर ले चला। मैं उनके पीछे-पीछे हो लिया। श्वावरिन ज़ीने मे रुका।

"महाराज!" वह बोला। "आप मुझे कुछ भी करने का हुक्म दे सकते हैं, लेकिन किसी पराये आदमी को मेरी बीवी के कमरे मे नही जाने दीजिये।"

मैं सिर से पाव तक काप उठा।

"तो तुमने शादी कर ली!" मैंने श्वाबरिन से कहा और इस क्षण मे उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालने को तैयार था।

"बस, काफी है!" पुगाचोव ने मुझे चुप करवा दिया। "यह मेरा मामला है। और तुम," उसने श्वाबरिन को सम्बोधित करते हुए कहा, "बहुत होशियारी दिखाने और बहानेबाज़ी करने की कोशिश नही करो। वह तुम्हारी बीवी है या नही, मै जिसको चाहूगा, उसके पास ले जाऊगा। हुज़ूर, तुम आओ मेरे साथ।"

कमरे के दरवाज़े के करीब श्वावरिन फिर से रुका और टूटती-सी आवाज़ मे बोला –

"महाराज, आपको पहले से ही आगाह कर देना चाहता हू कि उसे बहुत ज़ोर का बुखार है और वह तीन दिन से सरसाम मे लगातार बड़बड़ा रही है।"

"दरवाज़ा खोलो!" पुगाचोव ने कहा।

श्वावरिन अपनी जेबे टटोलने लगा और बोला कि चाबी अपने साथ लाना भूल गया है। पुगाचोव ने दरवाज़े पर ठोकर मारी, ताला टूट गया, दरवाज़ा खुल गया और हम भीतर दाखिल हुए।

मैंने कमरे मे नज़र डाली और सकते मे आ गया। किसान औरतो के ढग की फटी-पुरानी पोशाक पहने दुबली-पतली, पीले चेहरे और अस्त-व्यस्त बालोंवाली मरीया इवानोव्ना फर्श पर बैठी थी। उसके सामने रोटी के टुकड़े से ढकी हुई पानी की गागर रखी थी। मुझे देखकर वह चौकी और चीख उठी। तब मेरी क्या हालत हुई थी – मुझे याद नही।

१६*

तुम्हारे साथ उसे अपनी भानजी की शादी करने को कहा जाये? मैं धर्म-पिता का कर्तव्य निभाऊंगा और श्वाबरिन बनेगा दूल्हे का साथी। खूब छककर पियेंगे और जी भरकर मौज मनायेंगे।"

मुझे जिस बात की शंका थी, वही हुई। पुगाचोव का यह प्रस्ताव सुनकर श्वाबरिन आपे से बाहर हो गया।

"महाराज!" वह पागलों की तरह चिल्ला उठा। "मैं कुसूरवार हूं मैंने आपके सामने झूठ बोला, लेकिन ग्रिनेव भी आपको धोखा दे रहा है। यह लड़की यहां के पादरी की भानजी नहीं इवान मिरोनोव की बेटी है जिसे इस दुर्ग पर अधिकार करने के समय सूली दी गयी थी।"

पुगाचोव ने अपनी दहकती आंखें मेरे चेहरे पर टिका दीं।

"यह और क्या मामला है?" उसने हैरान होते हुए पूछा।

"श्वाबरिन ने तुमसे सच कहा है," मैंने दृढ़ता से उत्तर दिया।

"तुमने तो मुझे यह नहीं बताया," पुगाचोव ने कहा, जिसका चेहरा मुरझा सा गया था।

"तुम खुद ही सोचो," मैंने उसे उत्तर दिया, "क्या मैं तुम्हारे लोगों के सामने ऐसा कह सकता था कि मिरोनोव की बेटी जिन्दा है? वे तो उसे नोच खाते। किसी हालत में भी उसकी जान न बच पाती!"

"हां, यह भी सच है," पुगाचोव ने हंसते हुए कहा। "मेरे उन पियक्कड़ों ने बेचारी लड़की पर रहम न किया होता। पादरिन ने अच्छा ही किया कि उन्हें चकमा दे दिया।"

"मेरी बात सुनो," पुगाचोव का अच्छा मूड देखकर मैंने अपनी बात आगे बढ़ाई। "तुम्हें क्या कहकर सम्बोधित करूं, मैं यह नहीं जानता और जानना भी नहीं चाहता किन्तु भगवान जानता है कि तुमने मेरे लिये जो कुछ किया है, मैं उसके बदले में खुशी से अपनी जान तक दे सकता हूं। केवल मुझसे उस बात की मांग न करो जो मेरी मान-मर्यादा और ईसाई के नाते मेरी आत्मा की आवाज़ के विरुद्ध है। तुम मेरे उद्धारक हो। तुमने जैसे आरम्भ किया था, वैसे ही अन्त भी करो – इस बेचारी यतीम लड़की के साथ हमें जहां भी भगवान ले जाये, वहीं जाने दो। और तुम कहीं भी क्यों न होगे, कैसे भी क्यों न

होंगे, हम हर दिन तुम्हारी पापी आत्मा के उद्धार के लिये ईश्वर से प्रार्थना करेंगे "

पुगाचोव की कठोर आत्मा पसीज गयी।

"जैसा तुम चाहते हो, वैसा ही सही!" उसने कहा। "सज़ा देता हू तो सज़ा देता हू और माफ करता हू, तो माफ़ करता हू - मेरा यही उसूल है। अपनी इस हसीना को जहां चाहो, वहा ले जाओ। भगवान तुम दोनो को प्यार और सद्बुद्धि दे!"

इतना कहकर उसने श्वाबरिन को सम्बोधित करते हुए आदेश दिया कि वह मुझे उसके अधीन सभी दुर्गों और नगर-द्वारों को लांघने का अनुमति-पत्र लिख दे। पूरी तरह से पराजित श्वाबरिन बुत बना खड़ा था। पुगाचोव दुर्ग देखने चल दिया। श्वाबरिन उसके साथ गया और मैं सफर की तैयारी का बहाना करके यहीं रुक गया।

मैं मरीया इवानोव्ना के कमरे की ओर भाग गया। दरवाजा बन्द था। मैंने दस्तक दी। "कौन है?" पालाशा ने पूछा। मैंने अपना नाम बताया। दरवाजे के पीछे से मरीया इवानोव्ना की प्यारी सी आवाज सुनाई दी - "जरा रुकिये, प्योतर अन्द्रेइच! मैं कपड़े बदल रही हू। आप अकुलीना पम्फीलोव्ना के यहां चले जाइये - मैं भी अभी वहा आ जाऊगी।"

उसकी बात मानते हुए मैं पादरी गेरासिम के घर की ओर चल दिया। पादरी और पादरिन मुझसे मिलने के लिये बाहर आ गये। सावेलिच ने उन्हें मेरे बारे में पहले से ही सूचना दे दी थी। "नमस्ते प्योतर अन्द्रेइच!" पादरिन ने कहा। "भगवान की कृपा से फिर भेंट हो गयी। कैसा हालचाल है? हम तो आपको हर दिन याद करते थे। प्यारी मरीया इवानोव्ना को तो आपके बिना बहुत कुछ सहना पड़ा! हां भैया, यह तो बताइये कि पुगाचोव के साथ आपने कैसे पटरी बिठा ली? आपकी जान कैसे बख्श दी उसने? और कुछ नहीं तो इसी के लिए हम उस बदमाश को धन्यवाद दे सकते हैं।" - "बस बस बहुत है बुढ़िया," पादरी गेरासिम ने उसे टोका। "जो कुछ जानती है, सभी कुछ कह डालना तो जरूरी नहीं। बहुत बोलना अच्छा नहीं होता। [illegible] प्योतर अन्द्रेइच! कृपया भीतर आइये! बहुत बहुत [illegible] है।"

पादरिन ने घर मे उपलब्ध खाने-पीने की सभी चीज़ें मेरे सामने लाकर रख दी। साथ ही वह लगातार बातें भी करती जाती थी। उसने मुझे बताया कि श्वाबरिन ने कैसे मरीया इवानोव्ना को उसके हवाले कर देने के लिये विवश किया, मरीया इवानोव्ना कैसे फूट-फूटकर रोई और कैसे वह उनसे अलग नही होना चाहती थी, कैसे मरीया इवानोव्ना ने पालाशा (बडी साहसी लडकी है, जिसने सार्जेंट को भी अपने इशारो पर नचाया) के जरिये उसके साथ सम्पर्क बनाये रखा और कैसे उसने मरीया इवानोव्ना को मुझे पत्र लिखने की सलाह दी आदि। दूसरी ओर, मैंने सक्षेप मे उसे अपनी कहानी सुनाई। यह सुनकर कि पुगाचोव को उनके द्वारा दिये गये धोखे की जानकारी है, पादरी और पादरिन ने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया। "भगवान का ही भरोसा है हमे तो!" अकुलीना पम्फीलोव्ना ने कहा। "दुख के बादलो को दूर भगा दो, प्रभु। और अलेक्सेई इवानोविच, क्या कहने हैं उसके। खूब है वह!" इसी क्षण दरवाज़ा खुला और पीले चेहरे पर मुस्कान लिये हुए मरीया इवानोव्ना भीतर आई। उसने किसान युवती की पोशाक उतार दी थी और पहले की तरह ढग की सादी-सी पोशाक पहने थी।

मैंने उसका हाथ अपने हाथ मे ले लिया और देर तक मेरे मुह से एक भी शब्द नही निकला। हम दोनो इतना कुछ कहना चाहते थे कि कुछ भी नही कह पा रहे थे। हमारे मेज़बानो ने अनुभव किया कि हमे अब उनकी सुध नही थी और इसलिये उन्होंने हमे अकेले छोड दिया। हमे दीन-दुनिया की खबर नही रही। हम बाते करते जाते थे और उनका अन्त नही होने को आ रहा था। मरीया इवानोव्ना ने मुझे वह सब कुछ बताया जो दुर्ग पर अधिकार होने के बाद उसे सहन करना पडा था। उसने अपनी स्थिति की सारी भयानकता और उन सभी मुसीबतो-आज़माइशो का वर्णन किया जिनका कमीने श्वाबरिन ने उसे शिकार बनाया था। हमने पहले के अच्छे और सुखी समय को भी याद किया हम दोनो रोये आखिर मैं उसे भविष्य की योजना बताने लगा। पुगाचोव के अधीन और श्वाबरिन द्वारा शासित दुर्ग मे उसके लिये रहना सम्भव नही था। दुश्मन के घेरे मे सभी तरह की मुसीबतें सहते हुए ओरेनबुर्ग जाने की भी बात नही सोची जा सकती

होंगे. हम हर दिन तुम्हारी पापी आत्मा के उद्धार के लिये भगवान में प्रार्थना करेंगे "

पुगाचोव की कठोर आत्मा पसीज गयी।

"जैसा तुम चाहते हो, वैसा ही सही!" उसने कहा। "सज़ा देता हू तो सज़ा देता हू और माफ़ करता हू, तो माफ़ करता हू - मेरा यही उसूल है। अपनी इस हसीना को जहा चाहो, वहा ले जाओ। भगवान तुम दोनों को प्यार और सद्बुद्धि दे!"

इतना कहकर उसने श्वाबरिन को सम्बोधित करते हुए आदेश दिया कि वह मुझे उसके अधीन सभी दुर्गों और नगर-द्वारों को लाघने का अनुमति-पत्र लिख दे। पूरी तरह से पराजित श्वाबरिन बुत बना खड़ा था। पुगाचोव दुर्ग देखने चल दिया। श्वाबरिन उसके साथ गया और मैं सफ़र की तैयारी का बहाना करके यहीं रुक गया।

मैं मरीया इवानोव्ना के कमरे की ओर भाग गया। दरवाज़ा बन्द था। मैंने दस्तक दी। "कौन है?" पालाशा ने पूछा। मैंने अपना नाम बताया। दरवाज़े के पीछे से मरीया इवानोव्ना की प्यारी-सी आवाज़ सुनाई दी—"ज़रा रुकिये, प्योतर अन्द्रेइच! मैं कपड़े बदल रही हू। आप अकुलीना पम्फ़ीलोव्ना के यहा चले जाइये—मैं भी अभी वहा आ जाऊगी।"

उसकी बात मानते हुए मैं पादरी गेरासिम के घर की ओर चल दिया। पादरी और पादरिन मुझसे मिलने के लिये बाहर आ गये। सावेलिच ने उन्हें मेरे बारे में पहले से ही सूचना दे दी थी। "नमस्ते, प्योतर अन्द्रेइच," पादरिन ने कहा। "भगवान की कृपा से फिर भेंट हो गयी। कैसा हालचाल है? हम तो आपको हर दिन याद करते थे। प्यारी मरीया इवानोव्ना को तो आपके बिना बहुत कुछ सहना पड़ा!. हा भैया, यह तो बताइये कि पुगाचोव के साथ आपने कैसे पटरी बिठा ली? आपकी जान कैसे बख्श दी उसने? और कुछ नहीं तो इसी के लिये हम उस बदमाश को धन्यवाद दे सकते हैं।"—"बस, बस, काफ़ी है, बुढ़िया," पादरी गेरासिम ने उसे टोका। "जो कुछ जानती हो, सभी कुछ कह डालना तो ज़रूरी नहीं। बहुत बोलना अच्छा नहीं होता। भैया प्योतर अन्द्रेइच! कृपया, भीतर आइये! बहुत, बहुत दिनों बाद मिल रहे हैं!"

पादरिन ने घर मे उपलब्ध खाने-पीने की सभी चीजें मेरे सामने लाकर रख दी। साथ ही वह लगातार बातें भी करती जाती थी। उसने मुझे बताया कि श्वाबरिन ने कैसे मरीया इवानोव्ना को उसके हवाले कर देने के लिये विवश किया, मरीया इवानोव्ना कैसे फूट-फूटकर रोई और कैसे वह उनसे अलग नही होना चाहती थी, कैसे मरीया इवानोव्ना ने पालाशा (बडी साहसी लडकी है, जिसने सार्जेंट को भी अपने इशारो पर नचाया) के जरिये उसके साथ सम्पर्क बनाये रखा और कैसे उसने मरीया इवानोव्ना को मुझे पत्र लिखने की सलाह दी आदि। दूसरी ओर, मैंने सक्षेप मे उसे अपनी कहानी सुनाई। यह सुनकर कि पुगाचोव को उनके द्वारा दिये गये धोखे की जानकारी है, पादरी और पादरिन ने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया। "भगवान का ही भरोसा है हमे तो!" अकुलीना पम्फीलोव्ना ने कहा। "दुख के बादलो को दूर भगा दो, प्रभु। और अलेक्सेई इवानोविच, क्या कहने हैं उसके! मूद है वह!" इसी क्षण दरवाजा खुला और पीले चेहरे पर मुस्कान लिये हुए मरीया इवानोव्ना भीतर आई। उसने किसान युवती की पोशाक उतार दी थी और पहले की तरह ढग की सादी-सी पोशाक पहने थी।

मैंने उसका हाथ अपने हाथ मे ले लिया और देर तक मेरे मुह मे एक भी शब्द नही निकला। हम दोनो इतना कुछ कहना चाहते थे कि कुछ भी नही कह पा रहे थे। हमारे मेजबानो ने अनुभव किया कि हमे अब उनकी सुध नही थी और इसलिये उन्होंने हमे अकेले छोड दिया। हमें दीन-दुनिया की खबर नही रही। हम बाते करते जाते थे और उनका अन्त नही होने को आ रहा था। मरीया इवानोव्ना ने मुझे वह सब कुछ बताया जो दुर्ग पर अधिकार होने के बाद उसे सहन करना पडा था। उसने अपनी स्थिति की सारी भयानकता और उन सभी मुसीबतो-आजमाइशो का वर्णन किया जिनका कमीने श्वाबरिन ने उसे शिकार बनाया था। हमने पहले के अच्छे और सुखी समय को भी याद किया हम दोनो रोये आखिर मैं उसे भविष्य की योजना बताने लगा। पुगाचोव के अधीन और श्वाबरिन द्वारा शासित दुर्ग मे उसके लिये रहना सम्भव नही था। दुश्मन के घेरे मे सभी तरह की मुसीबतें सहते हुए ओरेनबुर्ग जाने की भी बात नही सोची जा सकती

पादरिन ने घर में उपलब्ध खाने-पीने की सभी चीज़ें मेरे सामने लाकर रख दी। साथ ही वह लगातार बातें भी करती जाती थी। उसने मुझे बताया कि श्वाबरिन ने कैसे मरीया इवानोव्ना को उसके हवाले कर देने के लिये विवश किया, मरीया इवानोव्ना कैसे फूट-फूटकर रोई और कैसे वह उनसे अलग नहीं होना चाहती थी, कैसे मरीया इवानोव्ना ने पालाशा (बड़ी साहसी लड़की है, जिसने सार्जेंट को भी अपने इशारों पर नचाया) के जरिये उसके साथ सम्पर्क बनाये रखा और कैसे उसने मरीया इवानोव्ना को मुझे पत्र लिखने की सलाह दी आदि। दूसरी ओर, मैंने सक्षेप में उसे अपनी कहानी सुनाई। यह सुनकर कि पुगाचोव को उनके द्वारा दिये गये धोखे की जानकारी है, पादरी और पादरिन ने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया। "भगवान का ही भरोसा है हमें तो।" अकुलीना पम्फ़ीलोव्ना ने कहा। "दुख के बादलों को दूर भगा दो, प्रभु! और अलेक्सेई इवानोविच, क्या कहने हैं उसके! खूब है वह!" इसी क्षण दरवाजा खुला और पीले चेहरे पर मुस्कान लिये हुए मरीया इवानोव्ना भीतर आई। उसने किसान युवती की पोशाक उतार दी थी और पहले की तरह ढंग की सादी-सी पोशाक पहने थी।

मैंने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और देर तक मेरे मुह से एक भी शब्द नहीं निकला। हम दोनों इतना कुछ कहना चाहते थे कि कुछ भी नहीं कह पा रहे थे। हमारे मेजबानों ने अनुभव किया कि हमें अब उनकी सुध नहीं थी और इसलिये उन्होंने हमें अकेले छोड़ दिया। हमें दीन-दुनिया की खबर नहीं रही। हम बातें करते जाते थे और उनका अन्त नहीं होने को आ रहा था। मरीया इवानोव्ना ने मुझे वह सब कुछ बताया जो दुर्ग पर अधिकार होने के बाद उसे सहन करना पड़ा था। उसने अपनी स्थिति की सारी भयानकता और उन सभी मुसीबतों-आज़माइशों का वर्णन किया जिनका कमीने श्वाबरिन ने उसे शिकार बनाया था। हमने पहले के अच्छे और सुखी समय को भी याद किया हम दोनों रोये आखिर मैं उसे भविष्य की योजना बताने लगा। पुगाचोव के अधीन और श्वाबरिन द्वारा शासित दुर्ग में उसके लिये रहना सम्भव नहीं था। दुश्मन के घेरे में सभी तरह की मुसीबतें सहते हुए ओरेनबुर्ग जाने की भी बात नहीं सोची जा सकती

रहेंगे हम हर दिन तुम्हारी पापी आत्मा के उद्धार के लिये भगवान से प्रार्थना करेंगे..."

पुगाचोव की कठोर आत्मा पसीज गयी।

"जैसा तुम चाहते हो, वैसा ही सही!" उसने कहा। "सजा देता हूं तो सजा देता हूं और माफ करता हूं, तो माफ करता हूं-ऐसा मेरा उसूल है। अपनी इस हसीना को जहां चाहो, वहां ले जाओ। भगवान तुम दोनों को प्यार और सद्बुद्धि दे!"

इतना कहकर उसने श्वाब्रिन को सम्बोधित करते हुए आदेश दिया कि वह मुझे उसके अधीन सभी दुर्गों और नगर-द्वारों को लांघने का अनुमति-पत्र लिख दे। पूरी तरह से पराजित श्वाब्रिन बुत बना खड़ा था। पुगाचोव दुर्ग देखने चल दिया। श्वाब्रिन उसके साथ चला और मैं सफ़र की तैयारी का बहाना करके यहीं रुक गया।

मैं मरीया इवानोव्ना के कमरे की ओर भाग गया। दरवाज़ा बन्द था। मैंने दस्तक दी। "कौन है?" पालाशा ने पूछा। मैंने अपना नाम बताया। दरवाज़े के पीछे से मरीया इवानोव्ना की प्यारी-सी आवाज़ सुनाई दी-"ज़रा रुकिये, प्योतर अन्द्रेइच! मैं कपड़े बदल रही हूं। आप अकुलीना पम्फ़ीलोव्ना के यहां चले जाइये-मैं भी अभी वहां आ जाऊंगी।"

उसकी बात मानते हुए मैं पादरी गेरासिम के घर की ओर चल दिया। पादरी और पादरिन मुझसे मिलने के लिये बाहर आ गये। सावेलिच ने उन्हें मेरे बारे में पहले से ही सूचना दे दी थी। "नमस्ते, प्योतर अन्द्रेइच," पादरिन ने कहा। "भगवान की कृपा से फिर भेंट हो गयी। कैसा हालचाल है? हम तो आपको हर दिन याद करते थे। प्यारी मरीया इवानोव्ना को तो आपके बिना बहुत कुछ सहना पड़ा! हां भैया, यह तो बताइये कि पुगाचोव के साथ आपने कैसे पटरी बिठा ली? आपकी जान कैसे बख्श दी उसने? और कुछ नहीं तो इसी के लिये हम उस बदमाश को धन्यवाद दे सकते हैं।"-"बस, बस, काफ़ी है, बुढ़िया," पादरी गेरासिम ने उसे टोका। "जो कुछ जानती हो, सभी कुछ कह डालना तो ज़रूरी नहीं। बहुत बोलना अच्छा नहीं होता। भैया प्योतर अन्द्रेइच! कृपया, भीतर आइये! बहुत, बहुत दिनों बाद मिल रहे हैं!"

पादरिन ने घर में उपलब्ध खाने-पीने की सभी चीजें मेरे सामने लाकर रख दी। साथ ही वह लगातार बातें भी करती जाती थी। उसने मुझे बताया कि श्वाबरिन ने कैसे मरीया इवानोव्ना को उसके हवाले कर देने के लिये विवश किया, मरीया इवानोव्ना कैसे फूट-फूटकर रोई और कैसे वह उनसे अलग नहीं होना चाहती थी, कैसे मरीया इवानोव्ना ने पालाशा (बड़ी साहसी लड़की है, जिसने सार्जेंट को भी अपने इशारों पर नचाया) के जरिये उसके साथ सम्पर्क बनाये रखा और कैसे उसने मरीया इवानोव्ना को मुझे पत्र लिखने की सलाह दी आदि। दूसरी ओर, मैंने संक्षेप में उसे अपनी कहानी सुनाई। यह सुनकर कि पुगाचोव को उनके द्वारा दिये गये धोखे की जानकारी है, पादरी और पादरिन ने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया। "भगवान का ही भरोसा है हमें तो!" अकुलीना पम्फीलोव्ना ने कहा। "दुख के बादलों को दूर भगा दो, प्रभु। और अलेक्सेई इवानोविच, क्या कहने हैं उसके! खूब है वह!" इसी क्षण दरवाजा खुला और पीले चेहरे पर मुस्कान लिये हुए मरीया इवानोव्ना भीतर आई। उसने किसान युवती की पोशाक उतार दी थी और पहले की तरह ढंग की सादी-सी पोशाक पहने थी।

मैंने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और देर तक मेरे मुह मे एक भी शब्द नही निकला। हम दोनों इतना कुछ कहना चाहते थे कि कुछ भी नहीं कह पा रहे थे। हमारे मेजबानों ने अनुभव किया कि हमें अब उनकी सुध नहीं थी और इसलिये उन्होंने हमें अकेले छोड़ दिया। हमें दीन-दुनिया की खबर नहीं रही। हम बातें करते जाते थे और उनका अन्त नहीं होने को आ रहा था। मरीया इवानोव्ना ने मुझे वह सब कुछ बताया जो दुर्ग पर अधिकार होने के बाद उसे सहन करना पड़ा था। उसने अपनी स्थिति की सारी भयानकता और उन सभी मुसीबतों-आजमाइशों का वर्णन किया जिनका कमीने श्वाबरिन ने उसे शिकार बनाया था। हमने पहले के अच्छे और सुखी समय को भी याद किया   हम दोनों रोये   आखिर मैं उसे भविष्य की योजना बताने लगा। पुगाचोव के अधीन और श्वाबरिन द्वारा शासित दुर्ग में उसके लिये रहना सम्भव नहीं था। दुश्मन के घेरे में सभी तरह की मुसीबतें सहते हुए ओरेनबुर्ग जाने की भी बात नहीं सोची जा सकती

और जब घोडे चल पडे तो फिर एक बार स्लेज से सिर बाहर निकालकर चिल्लाया – "तो विदा, हुजूर! शायद फिर कभी मुलाकात हो जाये।" सचमुच हमारी मुलाकात हुई, लेकिन किन परिस्थितियो मे!

पुगाचोव चला गया। मैं बहुत देर तक उस सफेद स्तेपी को देखता रहा जिसमे उसकी स्लेज तेज़ी से बढी जा रही थी। लोग-बाग अपनी-अपनी राह चलते बने। श्वाबरिन भी गायब हो गया। मैं पादरी के घर मे लौट आया। हमारे जाने की पूरी तैयारी हो चुकी थी, मैं देर नही करना चाहता था। दुर्गपति की पुरानी घोडा-गाडी पर हमारा सारा सामान लादा जा चुका था। कोचवानो ने आन की आन मे घोडे जोत दिये। मरीया इवानोव्ना गिरजे के पीछे दफनाये गये अपने माता-पिता की कब्रो से विदा लेने गयी। मैंने उसके साथ जाना चाहा, किन्तु उसने अनुरोध किया कि उसे अकेली ही रहने दिया जाये। कुछ मिनट बाद वह मूक आसू बहाती हुई चुपचाप वापस आ गयी। घोडा-गाडी लाई गयी। पादरी गेरासिम और उसकी पत्नी बाहर आकर खडे हो गये। मरीया इवानोव्ना, पालाशा और मैं – हम तीनो घोडा-गाडी मे बैठ गये। सावेलिच कोचवान की बगल मे जा बैठा। "नमस्ते, मेरी प्यारी मरीया इवानोव्ना! नमस्ते, प्योतर अन्द्रेइच, हमारे बाके सूरमा!" दयालु पादरिन ने कहा। "यात्रा शुभ हो और भगवान तुम दोनो को सुख-सौभाग्य दे!" हम रवाना हो गये। दुर्गपति के घर की खिडकी मे मुझे श्वाबरिन खडा दिखाई दिया। उसके चेहरे पर उदासी भरा क्रोध झलक रहा था। मैं पराजित शत्रु पर अपनी विजय का प्रदर्शन नही करना चाहता था और इसलिये मैंने नज़र दूसरी ओर कर ली। आखिर हम दुर्ग के फाटक से बाहर निकले और हमेशा के लिये बेलो-गोर्स्क दुर्ग से विदा हो गये।

तेरहवां अध्याय

गिरफ्तारी

> बुरा नही मानें हुजूर, मुझको कर्तव्य निभाना है –
> जेल आपको इसी घडी, अब मुझको तो भिजवाना है।

— मरने को तैयार, जान पर मगर मुझे हर लेते हैं,
क्या कारण है, मुझको मन की बातें हर लेते हैं।

क्न्याज्निन

अपने दिल की रानी से, जिसके बारे में मैं आज सुबह ही इतनी यातनापूर्ण चिन्ता में घुल रहा था, ऐसे अप्रत्याशित मेल हो जाने पर मुझे हकीकत का यकीन नहीं हो रहा था और मैं यही कल्पना कर रहा था कि जो कुछ घटा है, वह केवल सपना है। ख्यालों में डूबी-खोई-सी मरीया इवानोव्ना कभी मेरी ओर तो कभी सड़क की ओर देखती थी और ऐसे लगता था कि अभी तक उसके होश-हवास ठीक नहीं हुए हैं, वह पूरी तरह सम्भल नहीं पाई है। हम दोनों खामोश थे। हमारे हृदय बहुत क्लान्त थे। हमें पता भी नहीं चला कि दो घण्टे बीत गये और हम पुगाचोव के ही अधीन एक अन्य दुर्ग में पहुंच गये। यहां हमने घोड़े बदले। पुगाचोव द्वारा नियुक्त किये गये इस दुर्ग के दढ़ियल कज़्ज़ाक दुर्गपति ने जिस तेज़ी से घोड़े बदलवाये, जैसे हमारी लल्लो-चप्पो की, उससे मैं यह समझ गया कि हमारी स्लेज के बातूनी कोचवान की बदौलत मुझे यहां पुगाचोव का कृपा-पात्र मान लिया गया है।

हम आगे चल दिये। झुटपुटा होने लगा था। हम उस बस्ती के निकट पहुंच रहे थे, जहां दढ़ियल दुर्गपति के शब्दों में एक शक्तिशाली दस्ता पड़ाव डाले था और वह नकली सम्राट की सेना में शामिल होने जा रहा था। पहरेदारों ने हमें रोका। यह पूछा जाने पर कि कौन जा रहा है, कोचवान ने ऊंची आवाज़ में जवाब दिया, "अपनी पत्नी सहित महाराज का मित्र"। अचानक हुस्सारों की भीड़ ने धुआंधार गालियां बकते हुए हमें घेर लिया। "बाहर निकल, शैतान के दोस्त!" मुच्छल सार्जेंट-मेजर ने मुझसे कहा। "अभी तुम्हारी और तुम्हारी बीवी की खातिर की जायेगी!"

घोड़ा-गाड़ी से नीचे उतरकर मैंने यह मांग की कि मुझे उनके सबसे बड़े अफसर के पास ले जाया जाये। मुझ अफसर को अपने सामने देखकर फौजियों ने गालियां बकना बन्द कर दिया। सार्जेंट-मेजर मुझे मेजर के पास ले गया। सावेलिच बड़बड़ाता हुआ मेरे पीछे-पीछे चला रहा – "ले लो मज़ा महाराज का मित्र होने का! गढ़े से बचे, खाई

मे गिरे... हे भगवान! क्या अन्त होगा इस सब का?" घोडा-गाडी धीरे-धीरे हमारे पीछे-पीछे आती रही।

पाच मिनट बाद हम रोशनी से जगमगाते घर के नजदीक पहुच गये। सार्जेंट-मेजर मुझे पहरे मे छोडकर मेरे बारे मे सूचना देने गया। उसने उसी वक्त लौटकर मुझे बताया कि मेजर साहब के पास मुझसे मिलने का वक्त नही है, उन्होंने हुक्म दिया है कि मुझे जेल भेज दिया जाये और श्रीमती जी को उनके पास लाया जाये।

"क्या मतलब है इसका?" मैं गुस्से से बौखलाकर चिल्ला उठा। "क्या उसका दिमाग चल निकला है?"

"मालूम नही, हुजूर," सार्जेंट-मेजर ने जवाब दिया। "हा, उन बडे हुजूर ने हुक्म दिया है कि आप हुजूर को जेल भेज दिया जाये और श्रीमती जी को उन बडे हुजूर के पास ले जाने का हुक्म दिया गया है, हुजूर!"

मैं दरवाजे की तरफ लपका। सन्तरियो ने मुझे रोकने की कोशिश नही की और मैं भागता हुआ उस कमरे मे घुस गया जहा छ हुस्सार अफसर जुआ खेल रहे थे। मेजर सज्जाकी था। कितनी हैरानी हुई तब मुझे जब मैंने उसे देखते ही पहचान लिया। यह इवान इवानोविच जूरिन था, जिसने कभी सिम्बीर्स्क के होटल मे मुझसे पैसे जीत लिये थे।

"यह क्या देख रहा हू?" मैं चिल्ला उठा। "इवान इवानोविच? यह तुम्ही हो क्या?"

"अरे वाह, प्योतर अन्द्रेइच! यहा कैसे आना हुआ? कहा से आ टपके? बहुत खूब, मेरे भाई। तो बाजी हो जाये?"

"शुक्रिया। यही ज्यादा अच्छा होगा कि तुम मेरे कहीं ठहरने का इन्तज़ाम करने का हुक्म दो।"

"कही ठहरने का क्या सवाल पैदा होता है? मेरे यहा ठहरो।"

"ऐसा नही कर सकता – मैं अकेला नही हू।"

"तो अपने दोस्त को भी यही ले आओ।"

"मैं दोस्त के साथ नही एक महिला के साथ हू।"

"महिला के साथ! कहा तुमने उसे अपने गले बाध लिया? अरे, भैया! (इतना कहकर जूरिन ने ऐसे अर्थपूर्ण ढग से सीटी बजायी कि सभी ठठाकर हस पडे और मैं बिल्कुल चकरा गया।)

"खैर," जूरिन ने अपनी बात जारी रखी, "ऐसा ही सही। रहने की जगह का इन्तज़ाम हो जायेगा। मगर अफसोस की बात है कि हमने पहले की तरह मौज उड़ाई होती... अरे, सुनो तो! पुगाचेव की उस सहेली को यहां क्यों नहीं लाया जा रहा? या वह डरी है? उससे कह देना चाहिये कि डरे नहीं, कि रईसज़ादा बहुत ही शरीफ है, किसी तरह उसके दिल को ठेस नहीं लगायेगा। अगर बहुत हठ करे, तो उसे धकेलकर ले आओ।"

"यह तुम क्या कह रहे हो?" मैंने जूरिन से कहा। "कैसी पुगाचेव की सहेली? वह तो शहीद हुए कप्तान मिरोनोव की बेटी है। मैं उसे रिहा करवाकर लाया हूं और अब पिता जी के पास गांव ले जा रहा हूं और वहीं छोड़ आऊंगा।"

"क्या कहा! तो क्या तुम्हारे बारे में ही मुझे अभी सूचना दी गयी थी? कृपया यह बताओ कि यह सब क्या किस्सा है?"

"बाद में सब कुछ बताऊंगा। भगवान के लिये अभी तो उस बेचारी लड़की को तसल्ली दो जिसे तुम्हारे हुस्सारों ने बुरी तरह डरा दिया है।"

जूरिन ने उसी समय सारी व्यवस्था कर दी। अनजाने ही हो जानेवाली इस भूल के लिये उसने खुद बाहर जाकर मरीया इवानोव्ना से माफी मांगी और सार्जेंट-मेजर को उसे बस्ती के सबसे अच्छे मकान में ले जाकर टिकाने का आदेश दिया। मैं जूरिन के साथ ही ठहर गया।

हमने रात का भोजन किया और जब हम दोनों ही रह गये तो मैंने उसे अपनी सारी दास्तान सुनाई। जूरिन बहुत ध्यान से मेरी बातें सुनता रहा। मेरे सब कुछ कह लेने पर उसने सिर हिलाते हुए कहा -

"यह सब तो अच्छा है भैया, मगर एक बात अच्छी नहीं - तुम्हारे सिर पर यह शादी का भूत क्यों सवार हुआ है? मैं ईमानदार अफसर हूं, तुम्हें धोखा नहीं देना चाहता - मेरी बात पर यकीन करो कि शादी निरी बकवास चीज़ है। क्या लेना है तुम्हें बीवी और बच्चों के फेर में पड़कर? गोली मारो। मेरी बात मानो - कप्तान की बेटी से तुम अपना पिंड छुड़ा लो। सिम्बीर्स्क जाने का रास्ता मैंने दुश्मनों से साफ कर दिया है और वहां कोई खतरा नहीं। कल ही उसे अपने माता-पिता के पास रवाना कर दो और खुद मेरी पलटन में ही रह

जाओ। तुम्हारे ओरेनबुर्ग लौटने मे कोई तुक नही। अगर फिर से विद्रोहियो के हत्थे चढ गये, तो शायद ही फिर उनके पजे से निकल पाओगे। इस तरह यह मुहब्बत का जनून भी अपने आप ही दिमाग से निकल जायेगा और सारी बात ठीक हो जायेगी।"

यद्यपि मैं ज़ूरिन के साथ पूरी तरह सहमत नही था, तथापि यह अनुभव करता था कि अफसर के नाते मेरी प्रतिष्ठा और मेरा कर्तव्य यह माग करते हैं कि मैं सम्राज्ञी की सेनाओ मे डटा रहूं। मैंने ज़ूरिन की सलाह पर अमल करने का फैसला किया – मरीया इवानोव्ना को गाव भेज दूगा और खुद उसकी पलटन मे ही रह जाऊगा।

सावेलिच सोने के लिये मेरे कपडे बदलवाने को आया। मैंने उससे कहा कि वह अगले दिन ही मरीया इवानोव्ना को साथ लेकर गाव जाने की तैयारी कर ले। उसने हठ करते हुए विरोध किया –

"यह क्या कह रहे हो, मालिक? मैं तुम्हे छोडकर कैसे जा सकता हू? कौन तुम्हारी देख-भाल करेगा? तुम्हारे माता-पिता क्या कहेगे?"

मैं अपने इस बुजुर्ग की हठधर्मी से परिचित था, इसलिये मैंने प्यार और मन की सच्ची बात कहकर उसका दिल जीतने का फैसला किया।

"मेरे दोस्त, अर्खीप सावेलिच!" मैंने उससे कहा। "मुझे इन्कार नही करो, मुझ पर एहसान करो! मुझे यहा देख-भाल करनेवाले की ज़रूरत नहीं पडेगी, लेकिन अगर मरीया इवानोव्ना तुम्हारे बिना अकेली जायेगी, तो मेरा दिल बहुत परेशान रहेगा। उसकी सेवा करते हुए तुम मेरी भी सेवा करोगे, क्योकि मैंने यह पक्का इरादा बना लिया है कि सम्भव होते ही मैं उससे शादी कर लूगा।"

यह सुनकर सावेलिच ने इतनी हैरानी से हाथ झटके कि बयान से बाहर।

"'शादी कर लूगा!'" उसने मेरे शब्द दोहराये। "बेटा शादी करना चाहता है! लेकिन तुम्हारे पिता क्या कहेगे, माता क्या सोचेगी?"

"वे मान जायेगे, जरूर मान जायेगे," मैंने जवाब दिया, "मरीया इवानोव्ना को समझ भर लेने की देर है। मैं तुम पर भी भरोसा करता हू। मेरे माता-पिता तुम पर यकीन करते हैं, तुम भी हमारी वकालत करोगे न?"

बूढ़े का दिल पसीज गया।

"ओह, मेरी आखों की रोशनी, प्योतर अन्द्रेइच!" उसने उत्तर दिया। "बेशक तुम शादी के मामले में जल्दी कर रहे हो, फिर भी मरीया इवानोव्ना इतनी भली हैं कि ऐसा अवसर हाथ से जाने देना पाप होगा। सो वही हो, जो तुम चाहते हो! मैं इस फ़रिश्ते को घर पहुंचा दूगा और बड़ी नम्रता से तुम्हारे माता-पिता से कहूंगा कि ऐसी दुलहन के लिये दहेज जरूरी नहीं।"

मैंने सावेलिच को धन्यवाद दिया और जूरिन के कमरे में अपने बिस्तर पर जा लेटा। अत्यधिक उत्साहित और भाव-विह्वल होने के कारण मैं खूब बतियाता रहा। शुरू मे जूरिन बहुत खुशी से मेरे साथ बाते करता रहा, मगर धीरे-धीरे उसके मुह से निकलनेवाले शब्द कम होते गये और उनके बीच सिलसिला टूटता चला गया। आखिर मेरे किसी सवाल का जवाब देने के बजाय उसने खर्राटे लेना शुरू किया और उसकी नाक बजने लगी। मैं चुप हो गया और कुछ देर बाद खुद भी सो गया।

अगली सुबह को मैं मरीया इवानोव्ना के पास पहुंचा। मैंने उसने अपने दिल की बात कही। उसे ठीक मानते हुए वह मेरे साथ फौरन सहमत हो गयी। जूरिन की पलटन उसी दिन नगर से रवाना होनेवाली थी। देर करना सम्भव नही था। मैंने उसी क्षण मरीया इवानोव्ना से विदा ली और अपने माता-पिता के नाम एक खत देते हुए उसे सावेलिच की देख-रेख मे छोड दिया। मरीया इवानोव्ना रो पडी। "तो विदा, प्योतर अन्द्रेइच!" उसने धीमी-सी आवाज मे कहा। "फिर कभी हमारी मुलाकात होगी या नही, यह तो भगवान ही जानता है। लेकिन मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूगी, आखिरी सांस तक तुम ही मेरे दिल मे बसे रहोगे।" मैं कोई जवाब नहीं दे पाया। हमारे आस-पास बहुत-से लोग थे। मै उनके सामने अपने हृदय को उद्वेलित करनेवाले भाव प्रकट नहीं करना चाहता था। आखिर वह रवाना हो गयी। मैं उदास और गुमसुम-सा जूरिन के पास वापस आ गया। उसने मुझे रग मे लाने की कोशिश की और मैं खुद भी ऐसा ही चाहता था। हमने हो-हल्ला करने और मौज मनाते हुए दिन बिताया और शाम को हमारी पलटन यहा से चल दी।

यह फरवरी के अन्त की बात है। जंगी कार्रवाइयों को मुश्किल बनानेवाला जाड़ा खत्म हो रहा था और हमारे जनरल मिल-जुलकर कदम उठाने की तैयारियां कर रहे थे। पुगाचोव अभी भी ओरेनबुर्ग की नाकाबन्दी किये हुए था। इसी बीच हमारे दस्ते उसके निकट जमा होकर सभी दिशाओं से इन दुष्टों के गढ़ की ओर बढ़ते जा रहे थे। विद्रोही गांव हमारी सेनाओं को देखते ही अधीनता स्वीकार कर लेते थे, लुटेरों के गिरोह सभी जगह हमें देखते ही भाग उठते थे और हर चीज़ इस बात का विश्वास दिलाती थी कि जल्द सब कुछ अच्छे ढंग से समाप्त हो जायेगा।

शीघ्र ही प्रिंस गोलीत्सिन ने तृतीश्चेव दुर्ग के निकट पुगाचोव के छक्के छुड़ा दिये, उसके गिरोहों को तितर-बितर कर दिया, ओरेनबुर्ग को घेरे से मुक्त करवा लिया और ऐसे प्रतीत हुआ मानो पुगाचोव के विद्रोह पर अन्तिम और निर्णायक चोट कर दी गयी है। जूरिन को उस समय विद्रोही बश्कीरियों के विरुद्ध भेजा गया था और ये हमें देखने के पहले ही भाग जाते थे। वसन्त ने हमें एक तातार गांव में रुके रहने के लिये विवश कर दिया था। नदियों में बाढ़ आ गयी थी और रास्ते लांघना सम्भव नहीं था। हम अपने निठल्लेपन को इस विचार से तसल्ली देते थे कि चोर-लुटेरों और जंगलियों के विरुद्ध इस ऊबभरी तथा मामूली-सी लड़ाई का जल्द ही अन्त हो जायेगा।

किन्तु पुगाचोव गिरफ्तार नहीं हुआ था। वह साइबेरिया के कारखानों में नमूदार हुआ, वहां उसने नये गिरोह जमा किये और फिर से अपनी काली करतूतें शुरू कर दीं। पुनः उसकी सफलताओं के समाचार फैलने लगे। हमें साइबेरिया के दुर्गों के मटियामेट किये जाने की खबरें मिलीं। जल्द ही कज़ान पर पुगाचोव के कब्ज़े और नकली सम्राट के मास्को की ओर कूच करने के समाचार ने घृणित विद्रोही के कुछ न कर सकने की आशा सजोये हुए चैन से सो रहे हमारे सेना-संचालकों की निद्रा भंग कर दी। जूरिन को वोल्गा लांघने का आदेश मिला।

अपने अभियान और युद्ध के अन्त का मैं वर्णन नहीं करूंगा। केवल इतना ही कहूंगा कि दुख-मुसीबतों की कोई हद नहीं थी। हम विद्रोहियों द्वारा बरबाद किये गये गांवों में से गुज़रते थे और बेचारे गांववाले जो कुछ बचा पाये थे, वह भी अनिच्छापूर्वक उनसे छीन लेते थे।

प्रशासन नाम की कही कोई चीज नही रही थी। जमीदारों ने जंगलो मे जाकर पनाह ली थी। लुटेरो के गिरोह सभी जगह लूट-मार कर रहे थे। अलग-अलग सैनिक अधिकारी मनमाने ढग से लोगो को दण्ड देते और क्षमा करते थे। इस पूरे क्षेत्र की, जहा यह आग भडकी हुई थी, बहुत बुरी हालत थी भगवान न करे कि किसी को बेमानी और निर्मम रूसी विद्रोह को देखना पडे!

पुगाचोव भाग खडा हुआ था और इवान इवानोविच मिखेलसोन* उसका पीछा कर रहा था। जल्द ही हमे यह पता चला कि उसे पूरी तरह से कुचल दिया गया है। आखिर जूरिन को नकली सम्राट के गिरफ्तार कर लिये जाने का समाचार और साथ ही यह आदेश मिला कि वह आगे बढना बन्द कर दे। लडाई खत्म हो गयी थी। आखिर तो मैं अपने माता-पिता के पास जा सकता था! यह विचार कि उनसे गले मिल सकूगा, मरीया इवानोव्ना को देख सकूगा, जिससे कोई समाचार नही मिला था, मुझे खुशी से दीवाना-सा बना रहा था। मैं बालक की तरह उछलता-कूदता था। जूरिन हसता और कधे झटककर कहता, "नही, तुम्हारा बुरा हाल होगा! शादी करोगे और बरबाद हो जाओगे!"

किन्तु इसी बीच एक अजीब-सी भावना मेरी खुशी में जहर घोल रही थी। दुष्ट पुगाचोव का, जिसने इतनी बडी सख्या मे निर्दोष लोगो के खून से अपने हाथ रगे थे और अब उसे जो दण्ड मिलनेवाला था, उसका भी मुझे बरबस ध्यान आ रहा था। "येमेल्या, येमेल्या!" मैं दुखी मन से सोचता, "क्यो तुम किसी सगीन या गोली का निशाना नही बन गये? तुम्हारे लिये इससे बेहतर और कुछ नही हो सकता था।" मैं उसके बारे मे भला सोचता कैसे नही? उसके बारे में मेरे मन मे आनेवाला विचार उस दया-भाव के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ था जो उसने जीवन के एक भयानक क्षण मे उसने मेरे प्रति दिखाया

---

* लेफ्टिनेंट कर्नल (१७४०–१८०७), जिसने त्सारीत्सिन और चोर्नी यार के बीच २५ अगस्त, १७७४ को हुई लड़ाई में पुगाचोव को पूरी तरह से पराजित किया था। — सं०

था और यह भी कि कैसे उसने मेरे दिल की रानी को नीच श्वाबरिन से निजात दिलवाई थी।

ज़ूरिन ने मुझे घर जाने की छुट्टी दे दी। कुछ दिन बाद मैं फिर से अपने परिवार मे पहुचनेवाला था, फिर से अपनी मरीया इवानोव्ना से मेरी भेट होनेवाली थी . अचानक मानो बिजली टूटी जिसने मुझे स्तम्भित कर दिया।

मेरे जाने के दिन, ठीक उसी क्षण जब मैं सफर के लिये रवाना होने को तैयार हो रहा था, ज़ूरिन हाथ मे एक कागज़ और चेहरे पर गहरी चिन्ता का भाव लिये हुए मेरे पास आया। मेरे दिल मे फास-सी चुभी। मुझे मालूम नही कि किस चीज से, लेकिन मैं डर जरूर गया। उसने मेरे अर्दली को बाहर भेज दिया और बोला कि उसे मुझसे कुछ काम है। "क्या बात है?" मैंने घबराकर पूछा। "छोटी-सी अप्रिय बात है," उसने कागज़ मुझे पकडाते हुए उत्तर दिया। "इसे पढो, मुझे अभी-अभी मिला है।" मैं पढने लगा – यह सभी सैनिक विभागाध्यक्षो के नाम भेजा गया गुप्त आदेश था कि मुझे, मैं जहा भी होऊ, फौरन गिरफ्तार करके फौजी पहरे मे कज़ान भेज दिया जाये, जहा पुगाचोव के मामले की जाच-पडताल करने का आयोग नियुक्त किया गया था।

कागज़ मेरे हाथ से नीचे गिरते-गिरते रह गया। "कुछ भी नही हो सकता!" ज़ूरिन ने कहा। "आदेश का पालन करना मेरा कर्तव्य है। सम्भवत. पुगाचोव के साथ तुम्हारे मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो की खबर किसी तरह सरकार तक पहुच गयी है। मुझे आशा है कि इस मामले का कोई बुरा नतीजा नही होगा और आयोग के सामने तुम अच्छी तरह से अपनी सफाई दे सकोगे। दिल छोटा नही करो और रवाना हो जाओ।" मेरे मन मे किसी तरह की अपराध-भावना नही थी और फौजी अदालत के सामने जाने मे मुझे किसी तरह का डर नही महसूस हो रहा था। किन्तु मधुर मिलन के क्षणो को, सो भी शायद कई महीनो के लिये स्थगित करने के विचार से मैं काप उठा। घोडा-गाड़ी तैयार थी। ज़ूरिन ने मैत्रीपूर्ण ढग से मुझसे विदा ली। मुझे घोडा-गाडी मे बिठा दिया गया, नगी तलवारें लिये हुए दो हुस्सार मेरे साथ बैठ गये और घोडा-गाडी बडी सडक पर चल दी।

चौदहवाँ अध्याय

मुकदमा

लोगों में यों फैलती बात
जैसे बहती हुई लहर।

कहावत

मुझे इस बात का विश्वास था कि अपनी इच्छानुसार ओरेनबुर्ग से मेरा अनुपस्थित रहना ही मेरा मुख्य अपराध था। मैं बड़ी आसानी से अपनी सफाई पेश कर सकता था, क्योंकि शत्रु से जूझने के लिये दुर्ग से बाहर जाने की न केवल कभी मनाही नहीं की गयी थी, बल्कि इसे हर तरह से प्रोत्साहित किया जाता था। मुझ पर जरूरत से ज्यादा जोश दिखाने का अपराध लगाया जा सकता था, मगर अनुशासन भंग करने का नहीं। किन्तु पुगाचोव के साथ मेरे हेल-मेल की अनेक गवाह पुष्टि कर सकते थे और मेरे ऐसे सम्बन्ध कम से कम काफी सन्देहपूर्ण अवश्य प्रतीत हो सकते थे। रास्ते भर मैं उन प्रश्नों पर विचार करता रहा जो मुझसे पूछे जा सकते थे, अपने जवाबों के बारे में भी सोचता रहा और अदालत के सामने सब कुछ सच-सच कह देने को ही अपनी सफाई का सबसे सीधा-सादा और साथ ही विश्वसनीय उपाय मानते हुए मैंने यही करने का निर्णय किया।

मैं जलकर खाक हुए और सुनसान कज़ान में पहुंचा। सड़कों पर मकानों की जगह राख और जली चीज़ों के ढेर लगे थे और छतों तथा खिड़कियों के बिना धुएं से काली हुई दीवारें खड़ी थीं। तो पुगाचोव अपने पीछे ऐसे निशान छोड़ गया था! भस्म हुए नगर के बीचोंबीच बिल्कुल क्षतिहीन रह गये दुर्ग में मुझे ले जाया गया। हुस्सारों ने मुझे सन्तरियों के अफसर के हवाले कर दिया। उसने लुहार को बुला लाने का आदेश दिया। मेरे पैरों में बेड़ियां डालकर उन्हें अच्छी तरह से कस दिया गया। इसके बाद मुझे जेलखाने में ले जाकर खाली दीवारों और लोहे का जंगला लगी छोटी-सी खिड़की वाली तंग तथा अंधेरी कोठरी में अकेला छोड़ दिया गया।

इस तरह का आरम्भ किसी अच्छी बात की आशा नहीं बंधवाता

था। फिर भी मैंने न तो हिम्मत हारी और न उम्मीद ही छोड़ी। मैंने सभी दुखियो-पीड़ितो को सान्त्वना देनेवाले मार्ग का सहारा लिया और पहली बार सच्चे, किन्तु विदीर्ण मन से प्रार्थना के सुधा का मधु-पान किया और इस बात की चिन्ता किये बिना कि मेरे साथ क्या होगा, चैन की नींद सो गया।

अगले दिन जेल के चौकीदार ने यह कहते हुए मुझे जगा दिया कि जाच-आयोग के सामने बुलाया गया है। दो सैनिकों के साथ अहाते को लाघकर हम दुर्गपति के घर मे दाखिल हुए, सैनिक प्रवेश-कक्ष मे ही रुक गये और मुझे अकेले ही भीतर जाने दिया।

मैंने काफी बड़े हॉल में प्रवेश किया। कागजो से ढकी मेज के पीछे दो व्यक्ति बैठे थे – कठोर और रुखा-सा दिखनेवाला बुजुर्ग जनरल और गार्ड सेना का जवान कप्तान, जिसकी उम्र कोई अट्ठाईस साल थी, प्रियदर्शी, चुस्त-फुर्तीला और स्वाभाविक ढंग से व्यवहार करनेवाला। खिड़की के पास एक खास मेज के पीछे कान मे कलम अटकाये कागज पर झुका हुआ और मेरा बयान लिखने को तैयार मुशी बैठा था। पूछ-ताछ शुरू हुई। मुझसे मेरा नाम और ओहदा पूछा गया। जनरल ने प्रश्न किया कि क्या मैं अन्द्रेई पेत्रोविच ग्रिनेव का बेटा तो नही हू? मेरा उत्तर सुनने के बाद उसने बड़ी कठोरता से कहा, "बड़े अफसोस की बात है कि ऐसे सम्माननीय व्यक्ति का ऐसा नालायक बेटा है!" मैंने शान्ति से जवाब दिया कि मुझ पर चाहे कैसे भी आरोप क्यो न लगाये जाये, मुझे आशा है कि मैं ईमानदारी से सचाई बयान करके उन्हें गलत सिद्ध कर दूगा। मेरा यह आत्मविश्वास उसे अच्छा नही लगा।

"तुम बहुत तेज हो, भैया," उसने नाक-भौंह सिकोड़ते हुए कहा, "किन्तु हमने तुमसे भी कहीं ज्यादा तेज देखे हैं!"

तब जवान कप्तान ने मुझसे पूछा कि किन परिस्थितियो मे और किस समय मैंने पुगाचोव की नौकरी की और उसने मुझे क्या काम सौंपे थे?

मैंने गुस्से से जवाब दिया कि एक अफसर और अभिजात होने के नाते मैं पुगाचोव की कभी नौकरी नहीं कर सकता था और उसके लिये कुछ भी करने को तैयार नही हो सकता था।

"तो भला किस तरह उस नकली सम्राट ने," विद्रोह करनेवाले कप्तान ने आपत्ति की, "इस अभिजात और अफसर को बख्श दिया, जबकि उसके बाकी सभी साथियों की निर्दयता से हत्या कर दी गई थी? कैसे इसी अफसर और अभिजात ने विद्रोहियों के साथ बैठकर दावत उड़ाई और बदमाशों के सरदार से तोहफे – फर-कोट, घोड़ा और पचास कोपेक लिये? यदि गद्दारी या कम से कम कमीनी और अपराधपूर्ण कायरता इस अजीब दोस्ती की बुनियाद नहीं थी, तो और क्या कारण था इसका?"

गार्ड-सेना के अफसर के शब्दों से मेरे दिल को बड़ी ठेस लगी और मैं खूब जोश से अपनी सफाई पेश करने लगा। मैंने बताया कि बर्फ के तूफान के वक्त कैसे पुगाचोव से स्तेपी में मेरी जान-पहचान हुई, कैसे बेलोगोर्स्क दुर्ग पर अधिकार करने के समय उसने मुझे पहचानकर क्षमा कर दिया। मैंने कहा, यह सच है कि उस नकली सम्राट से फर-कोट और घोड़ा लेते हुए मुझे शर्म नहीं आई, किन्तु बदमाशों से बेलोगोर्स्क दुर्ग की रक्षा के लिये मैंने अपनी पूरी ताकत लगाई। अन्त में मैंने अपने जनरल का हवाला दिया जो ओरेनबुर्ग की भयानक किलेबन्दी के समय मेरे जोश की गवाही दे सकता था।

कठोर बूढ़े जनरल ने मेज पर से खुला हुआ पत्र उठाया और उसे ऊंचे-ऊंचे पढ़ने लगा –

"महामान्य, छोटे लेफ्टिनेंट ग्रिनेव से सम्बन्धित आपकी पूछ-ताछ के उत्तर में, जिसने मानो हाल के विद्रोह में भाग लिया और सैनिक नियमों तथा वफादारी की कसम का उल्लंघन करते हुए बदमाशों के सरदार के साथ सम्बन्ध स्थापित किया, मैं सादर यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि छोटा लेफ्टिनेंट पिछले, १७७३ के अक्तूबर महीने से इस वर्ष के फरवरी महीने की २४ तारीख तक ओरेनबुर्ग में सैनिक ड्यूटी पर रहा, इसी दिन शहर से गायब हो गया और उसके बाद मेरी कमान में नहीं लौटा। भगोड़ों से सुनने को मिला है कि वह गांव में पुगाचोव के साथ था और उसके साथ बेलोगोर्स्क गया जहां वह पहले फौजी ड्यूटी पर रहा था। जहां तक उसके आचरण का प्रश्न है, तो मैं यह कह सकता हूं " यहां उसने पत्र पढ़ना बन्द कर दिया और मुझसे कहा, "अब तुम्हें क्या कहना है अपनी सफाई में?"

मैने जैसे अपना बयान शुरू किया था, वैसे ही जांच और निष्कपटता से मरीया इवानोव्ना के साथ अपना सम्बन्ध और बाकी सब कुछ भी स्पष्ट करना चाहा। किन्तु सहसा मैंने एक अदम्य वितृष्णा अनुभव की। मेरे दिमाग में यह बात आई कि अगर मैं मरीया इवानोव्ना का नाम ले दूंगा तो आयोग उसे पूछ-ताछ के लिये बुला लेगा और बदमाशों के घटिया साक्षों के साथ उसका नाम जोड़ने तथा उनके सामने खुद उसके आने के विचार से मैं ऐसे विह्वल हो उठा कि मेरी जबान लड़खड़ा और गड़बड़ा गई।

मेरे भाग्य-निर्णायकों के दिलों में, जो कुछ अनुकूल भाव दिखाते हुए मेरे उत्तर सुनने लगे थे, मेरी घबराहट देखकर फिर से मेरे विरुद्ध पूर्वाग्रह जाग उठे। गार्ड-सेना के अफसर ने यह मांग की कि मुझे मुख्य मुखबिर के आमने-सामने किया जाये। जनरल ने हुक्म दिया कि "पिछले दिन के बदमाश" को भीतर लाया जाये। मैं अपने अभियोक्ता के प्रकट होने की प्रतीक्षा करते हुए बड़ी उत्सुकता से दरवाजे की तरफ देखने लगा। कुछ मिनट बाद बेड़ियां झनझनाईं, दरवाजा खुला और श्वाब्रिन भीतर आया। मैं उसमें हुआ परिवर्तन देखकर दंग रह गया। वह बेहद दुबला हो गया था और उसके चेहरे का रंग बिल्कुल पीला था। कुछ ही समय तक राख की तरह काले उसके बाल अब एकदम सफेद हो गये थे और उसकी लम्बी दाढ़ी बिखरी हुई थी। उसने क्षीण, किन्तु दृढ़ आवाज में अपना अभियोग दोहराया। उसके कथनानुसार पुगाचोव ने मुझे जासूस बनाकर ओरेनबुर्ग भेजा था, मैं हर दिन इसलिये मुठभेड़ को दुर्ग से बाहर जाता था कि शहर में जो कुछ हो रहा था, उसका लिखित ब्योरा भेज सकूं, कि आखिर मैं खुलकर नकली सम्राट का साथ देने लगा, एक के बाद एक दुर्ग में उसके साथ जाने लगा, ताकि अपने जैसे गद्दार साथियों को हर सम्भव तरीके से तबाह कर सकूं, उनके पद छीन सकूं और झूठे दावेदार द्वारा दिये जानेवाले इनाम पा सकूं। मैंने चुपचाप उसका बयान सुना और मुझे एक बात की खुशी हुई – इस कमीने ने मरीया इवानोव्ना का नाम नहीं लिया था। शायद उसने इसलिये ऐसा किया था कि उसका विचार आने पर, जिसने तिरस्कारपूर्वक उसे ठुकरा दिया था, उसके आत्माभिमान को ठेस लगी या फिर इसलिये कि उसके दिल में भी कहीं उसी भावना की चिंगारी

छिपी हुई थी जिसने मुझे चुप रहने को विवश किया था। कारण कुछ भी रहा हो, बेलोगोर्स्क के दुर्गपति की बेटी का नाम जांच-आयोग के सामने नहीं लिया गया। मेरा इरादा और भी ज्यादा पक्का हो गया। और जब निर्णायकों ने यह पूछा कि मैं श्वाब्रिन के बयान का कैसे खण्डन कर सकता हूं, तो मैंने जवाब दिया कि अपने पहले स्पष्टीकरण को ज्यों का त्यों रखना चाहता हूं और अपनी सफाई में और कुछ भी नहीं जोड़ सकता। जनरल ने हम दोनों को ले जाने का आदेश दिया। हम एकसाथ बाहर निकले। मैंने शान्ति से श्वाब्रिन की ओर देखा, किन्तु उससे एक भी शब्द नहीं कहा। वह द्वेषपूर्वक हंसा, बेड़ियां ऊपर उठाते हुए मुझसे आगे निकल गया और तेजी से बढ़ गया। मुझे फिर से जेल की कोठरी में ले जाकर बन्द कर दिया गया और इसके बाद फिर कभी पूछ-ताछ के लिये नहीं बुलाया गया।

अपने पाठकों को मुझे जो कुछ और बताना है, मैं उसका भुक्त-भोगी नहीं हूं। किन्तु ये बातें मैंने इतनी अधिक बार सुनी हैं कि उनकी हर छोटी-छोटी तफसील मेरे मानसपट पर ऐसे अंकित हो गयी है मानो अदृश्य रूप से मैं इनका साथी रहा हूं।

मेरे माता-पिता ने उसी हार्दिकता से मरीया इवानोव्ना को स्वीकार किया जो पिछली सदी के लोगों का विशेष लक्षण थी। वे इसी बात के लिये भगवान के आभारी थे कि उन्हें एक यतीम को शरण और स्नेह देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। जल्द ही उन्हें उससे सच्चा लगाव हो गया, क्योंकि उसे जान-समझकर प्यार न करना सम्भव नहीं था। मेरा प्यार पिता जी को अब कोरी सनक नहीं प्रतीत होता था और मां तो केवल यही चाहती थी कि उनका पेत्रूशा कप्तान की प्यारी बेटी से शादी कर ले।

मेरी गिरफ़्तारी की खबर से मेरे परिवार के सभी लोग हैरान रह गये। पुगाचोव के साथ मेरी अजीब जान-पहचान का मरीया इवानोव्ना ने इतनी सरलता से वर्णन किया कि इससे उन्हें न केवल कोई चिन्ता नहीं हुई, बल्कि इसने उन्हें अक्सर सच्चे दिल से हंसने को भी मजबूर किया। पिता जी इस बात पर विश्वास नहीं करना चाहते थे कि नीचतापूर्ण विद्रोह से, जिसका उद्देश्य गद्दी उलटना और कुलीनों को करना था, मेरा कोई वास्ता था। उन्होंने बड़ी कड़ाई से

सावेलिच से पूछ-ताछ की। बुजुर्ग सावेलिच ने यह नही छिपाया कि छोटे मालिक की येमेल्यान पुगाचोव के यहा खातिरदारी हुई थी और वह उस बदमाश का कृपा-पात्र था, किन्तु कसम खाई कि किसी तरह की गद्दारी की बात उसने नही सुनी थी। बूढे माता-पिता शान्त हो गये और बड़ी बेसब्री से कोई अच्छी खबर सुनने का इन्तजार करने लगे। मरीया इवानोव्ना बहुत ज्यादा परेशान थी, किन्तु उसने मौन साध रखा था क्योंकि उसमे नम्रता और सावधानी के गुण तो अपनी चरम सीमा पर पहुचे हुए थे।

कुछ सप्ताह बीत गये . अचानक पिता जी को पीटर्सबर्ग के एक हमारे रिश्तेदार प्रिंस ब.. का पत्र मिला। प्रिंस ने उन्हें मेरे बारे मे लिखा था। शुरू की कुछ रस्मी पक्तियो के बाद उन्होंने बताया था कि दुर्भाग्य से, विद्रोहियो के मसूबो मे मेरे सहभाग के बारे मे सन्देह बहुत ठोस सिद्ध हुआ और मुझे उसका उपयुक्त दण्ड मिलना चाहिये था, किन्तु पिता जी की सेवाओं और उनके बुढापे को ध्यान मे रखते हुए सम्राज्ञी ने अपराधी बेटे को क्षमा करने और सूली का कलकपूर्ण दण्ड देने के बजाय साइबेरिया के किसी दूरस्थ स्थान पर सदा के लिये जा बसने की सजा देने का निर्णय किया है।

इस अप्रत्याशित आघात ने मेरे पिता जी की लगभग जान ही नही ले ली। उनकी सामान्य दृढता जाती रही और उनका दुख (सामान्यतः मूक) कटु शिकवे-शिकायतो मे व्यक्त होने लगा। "यह क्या है!" वे आपे से बाहर होते हुए दोहराते, "मेरे बेटे ने पुगाचोव के काले कारनामो मे हिस्सा लिया! हे ईश्वर, कैसे बुरे दिन देखने लिखे थे मेरे नसीब मे! सम्राज्ञी ने उसकी जान बख्श दी! क्या इससे मेरा दुख कुछ कम हो सकता है? मौत की सजा भयानक नही – मेरे एक पूर्वज ने उस चीज की रक्षा करते हुए, जिसे अपनी आत्मा के लिये पावन मानते थे, अपने प्राण दे दिये। मेरे पिता जी वोलीन्स्की और खुश्चेव* के साथ शहीद हुए। लेकिन कुलीन अपनी कसम के प्रति

* अर्तेमी वोलीन्स्की, आन्ना इओआनोव्ना के शासन (१७३०–१७४०) मे एक मन्त्री, जिसने सम्राज्ञी के कृपापात्र और रूसी दरबार के एक नीचतम भाड़े के विदेशी टट्टू बिरोन के विरुद्ध षड्यन्त्र का निर्देशन किया। अन्द्रेई खुश्चेव, एडमिरॉल्टी के एक सलाहकार, षड्यन्त्र मे भागीदार, जिसे वोलीन्स्की के साथ सूली दी गयी। –स०

तुम भी जाओ!" उन्होंने आह भरते हुए कहा। "हम तुम्हारे सुख-सौभाग्य के मार्ग मे रोड़ा नही अटकाना चाहते। भगवान तुम्हे एक बदनाम ग़द्दार के बजाय पति के रूप में कोई भला आदमी दे।" इतना कहकर वे कमरे से बाहर चले गये।

माता जी के साथ अकेली रह जाने पर मरीया इवानोव्ना ने उन्हे अपनी कुछ योजनाएं स्पष्ट की। माता जी ने आसू बहाते हुए उसे गले लगा लिया और भगवान से प्रार्थना की कि उसे अपने इरादो मे कामयाबी मिले। मरीया इवानोव्ना के सफर की तैयारी की गयी और कुछ दिन बाद वह अपनी वफ़ादार पालाशा और सेवानिष्ठ सावेलिच के साथ, जिसे मैंने जबर्दस्ती अपने से अलग कर दिया था और जो अपने को कम से कम इस विचार से तसल्ली देता था कि मेरी भावी पत्नी की सेवा कर रहा है, रवाना हो गयी।

मरीया इवानोव्ना सही-सलामत सोफ़ीया* पहुच गयी और डाक-चौकी पर यह जानकारी पाकर कि सम्राज्ञी और उनके दरबारी इस समय त्सार्स्कोये सेलो मे हैं, उसने वही रुकने का निर्णय किया। उसे बीच की दीवार के पीछे ठहरने के लिये थोडी-सी जगह दे दी गयी। डाक-चौकी के मुशी की बीवी उसी क्षण उसके साथ बतियाने लगी। उसने बताया कि वह दरबार मे आतिशदान गर्मानेवाले की भानजी है और उसने उसे दरबारी जीवन के सभी रहस्यो की जानकारी दे दी। उसने उसे बताया कि सम्राज्ञी आम तौर पर किस वक्त जागती हैं, कॉफ़ी पीती हैं, सैर करती हैं और उस समय कौनसे दरबारी उनके साथ होते हैं, पिछले दिन खाने की मेज पर उन्होंने क्या कुछ कहा, शाम को किससे मिलीं – थोडे मे यही कि आन्ना व्लास्येव्ना की बातचीत ऐतिहासिक महत्त्व की टिप्पणियों के कुछ पृष्ठों के समान थी और भावी पीढ़ियो के लिये बहुत मूल्यवान हो सकती थी। मरीया इवानोव्ना बहुत ध्यान से उसकी बाते सुनती रही। वे बाग मे घूमने गयीं। आन्ना व्लास्येव्ना ने हर वीथी और हर पुल की कहानी सुनाई तथा सैर करने के बाद वे दोनो बहुत खुश-खुश डाक-चौकी पर वापस आई।

---

* त्सार्स्कोये सेलो के पार्क के पीछे फौजी बस्ती, जो १८०८ से त्सार्स्कोये सेलो का भाग है। – स०

"जी, नही। मैं न्याय नही, कृपा-अनुकम्पा के लिये अनुरोध करने आई हू।"

"कृपया यह बताइये कि आप है कौन?"

"मैं कप्तान मिरोनोव की बेटी हू।"

"कप्तान मिरोनोव! उसी कप्तान मिरोनोव की, जो ओरेनबुर्ग प्रदेश के एक दुर्गपति थे?"

"जी, बिल्कुल ठीक।"

ऐसे लगा कि महिला द्रवित हो उठी थी।

"अगर मैं किसी तरह से आपके मामलो मे दखल दे रही हू तो क्षमा चाहूगी," उसने और भी अधिक प्यार भरी आवाज़ मे कहा, "लेकिन दरबार मे मेरा आना-जाना बना रहता है। मुझे बताइये कि आप किस बात का अनुरोध करना चाहती हैं और बहुत सम्भव है कि मैं आपकी मदद कर सकू।"

मरीया इवानोव्ना ने खडी होकर बडे आदर से महिला को धन्यवाद दिया। इस अज्ञात महिला की हर चीज़ बरबस मन को छूती थी और भरोसा पैदा करती थी। मरीया इवानोव्ना ने तह किया हुआ एक काग़ज़ जेब से निकाला और अपनी इस अपरिचित सरक्षिका को दे दिया जो मन ही मन उसे पढने लगी।

शुरू में वह ध्यान और सहानुभूति से पढती रही, किन्तु अचानक उसका चेहरा कुछ बदल-सा गया और मरीया इवानोव्ना, जो नज़रो से ही उसकी हर भगिमा को देख रही थी, उसके चेहरे के कठोर भाव से, जो क्षण भर पहले इतना मधुर और शान्त था, भयभीत हो उठी।

"आप ग्रिनेव के लिये अनुरोध कर रही हैं?" महिला ने रुखाई से पूछा। "सम्राज्ञी उसे क्षमा नही कर सकती। उसने अज्ञानता या भोलेपन से नक्ली सम्राट का साथ नही दिया, बल्कि दुराचारी और भयानक दुष्ट के रूप मे ऐसा किया।"

"ओह, यह झूठ है!" मरीया इवानोव्ना कह उठी।

"झूठ कैसे है!" महिला ने गुस्से से लाल होते हुए आपत्ति की।

"झूठ है, भगवान की क़सम झूठ है! मैं सब कुछ जानती हू, सब कुछ आपको बताती हू। उसके साथ जो कुछ बीती है, वह सब मेरे कारण ही। यदि उसने फौजी अदालत में अपनी सफाई नही दी, तो

अगले दिन मरीया इवानोव्ना तड़के ही जागी, उसने कपड़े पहने और दबे पांव बाग में चली गयी। सुबह बहुत सुहानी थी, शरद की ताजा सांसों से पीली हुई लाइम वृक्षों की फुनगियां धूप में चमक रही थीं। निश्चल चौड़ी झील चमचमा रही थी। अभी-अभी जागे हंस इस ईर्दगिर्द सटकी झाड़ियों के नीचे से निकलकर बड़ी शान से झील में तैर रहे थे। मरीया इवानोव्ना उस प्यारी चरागाह के पास से गुजर रही थी जहां काउंट प्योतर अलेक्सान्द्रोविच रुम्यान्त्सेव की कुछ ही समय पहले की विजयों के सम्मान में एक स्मारक बनाया गया था। अचानक अंग्रेजी नस्ल का एक छोटा-सा कुत्ता भौंकने लगा और उसकी ओर भाग आया। मरीया इवानोव्ना डरकर वहीं रुक गयी। इसी समय एक औरत की प्यारी-सी आवाज सुनाई दी – "डरो नहीं, यह काटेगा नहीं"। मरीया इवानोव्ना को स्मारक के सामने बेंच पर एक महिला बैठी दिखाई दी। मरीया इवानोव्ना बेंच के दूसरे सिरे पर बैठ गयी। महिला उसे एकटक देखती जा रही थी। मरीया इवानोव्ना ने भी कनखियों से उस पर कुछ बार नजर डालकर उसे सिर से पांव तक देख लिया। महिला सुबह के समय का सफेद फ्राक, रात की टोपी और रूईदार जाकेट पहने थी। उसकी उम्र चालीस के करीब प्रतीत हो रही थी। उसके भरे हुए और लाल-लाल चेहरे पर रोब और चैन तथा नीली-नीली आंखों एवं हल्की मुस्कान में अवर्णनीय आकर्षण था। महिला ने ही मौन भंग किया।

"आप तो सम्भवतः यहां की रहनेवाली नहीं हैं?" उसने कहा।

"जी, बिल्कुल ठीक। मैं कल ही प्रान्तीय नगर से आई हूं।"

"अपने परिवार वालों के साथ?"

"जी, नहीं। अकेली आई हूं।"

"अकेली! लेकिन आपकी उम्र तो अभी बहुत कम है।"

"मेरे न तो पिता और न मां ही हैं।"

"आप निश्चय ही किसी काम से आई होंगी?"

"जी, हां। मैं सम्राज्ञी को अपना आवेदन-पत्र देने आई हूं।"

"आप यतीम हैं और इसलिये सम्भवतः अन्याय और ज्यादती के खिलाफ शिकायत करने आई हैं?"

हो रही थी। उसका दिल बहुत जोर से धड़कता और फिर मानो उसकी धड़कन बन्द हो जाती। कुछ मिनट बाद बग्घी महल के सामने जा खड़ी हुई। मरीया इवानोव्ना घबराहट अनुभव करती हुई जीना चढ़ने लगी। उसके सामने दरवाज़े खुलते जाते थे। उसने अनेक सुन्दर और खाली कमरे लाघे–हरकारा उसे रास्ता दिखाता जा रहा था। आखिर एक बन्द दरवाज़े के सामने पहुचकर उसने कहा कि अभी उसके बारे मे सूचना देगा और उसे अकेली छोड़कर भीतर चला गया।

सम्राज्ञी के सामने जाने के ख्याल से उसे ऐसी दहशत महसूस हुई कि वह बड़ी मुश्किल से अपने पैरो पर खड़ी रह पा रही थी। एक मिनट बाद दरवाज़ा खुला और उसने सम्राज्ञी के शृगार-कक्ष मे प्रवेश किया।

सम्राज्ञी शृंगार की मेज़ पर बैठी थी। कुछ दरबारी उन्हे घेरे हुए थे और उन्होंने बड़े आदर से मरीया इवानोव्ना को आगे जाने दिया। सम्राज्ञी ने बड़े स्नेह से उसे सम्बोधित किया और मरीया इवानोव्ना ने उनमे उस महिला को पहचान लिया जिसके साथ कुछ ही मिनट पहले उसने बहुत खुलकर बातचीत की थी। सम्राज्ञी ने उसे अपने पास बुलाया और मुस्कराकर कहा, "मुझे प्रसन्नता है कि मैं अपना वचन निभा सकी और आपका अनुरोध पूरा कर पाई। आपका मामला तय हो गया। मुझे इस बात का यकीन हो गया कि आपका मगेतर निरपराध है। यह पत्र ले लीजिये और स्वय ही इसे अपने भावी ससुर तक पहुचाने का कष्ट कीजिये।"

मरीया इवानोव्ना ने कापते हाथ से पत्र लिया और रोते हुए सम्राज्ञी के पैरो पर गिर पड़ी। सम्राज्ञी ने उसे उठाकर चूमा और बातचीत करने लगी। "मुझे मालूम है कि आप धनी नही हैं," वह बोली, "किन्तु कप्तान मिरोनोव की बेटी की मैं ऋणी हू। आप भविष्य की कोई चिन्ता न करे। आपकी सुख-समृद्धि का दायित्व मैं अपने ऊपर लेती हू।"

बेचारी यतीम को दुलराकर सम्राज्ञी ने उसे विदा किया। मरीया इवानोव्ना उसी बग्घी मे वापस आ गयी। बहुत बेसब्री से उसके लौटने की प्रतीक्षा कर रही आन्ना व्लास्येव्ना ने उस पर प्रश्नो की बौछार कर दी। मरीया इवानोव्ना ने जैसे-तैसे प्रश्नो के जवाब दिये। आन्ना

भी केवल इसलिये कि मुझे इस मामले में नहीं उलझाना चाहता था।"
इसके बाद मरीया इवानोव्ना ने बड़े जोश से वह सब कुछ कह सुनाया जो हमारे पाठकों को मालूम है।

महिला ने बहुत ध्यान से उसकी बात सुनी।

"आप कहां ठहरी हैं?" उसने बाद में पूछा और आन्ना व्लास्येव्ना के यहां ठहरने के बारे में जानकर मुस्कराते हुए बोली –

"हां। जानती हूं उसे। तो अब विदा, किसी से भी हमारी भेंट की चर्चा नहीं कीजियेगा। मुझे आशा है कि आपको अपने पत्र के उत्तर की देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी।"

इतना कहकर वह उठी और बन्द वीथी में चली गयी, जबकि मरीया इवानोव्ना खुशी भरी उम्मीद लिये हुए आन्ना व्लास्येव्ना के पास लौट आई।

आन्ना व्लास्येव्ना ने पतझर के दिनों में तड़के ही सैर को जाने के लिये उसकी लानत-मलामत की, जो उसके शब्दों में, जवान लड़की के लिये हानिकारक था। वह समोवार ले आई और चाय की चुस्कियां लेते हुए दरबार के बारे में अपने अन्तहीन क़िस्से-कहानियां शुरू ही करनेवाली थी कि अचानक दरवाज़े के सामने शाही बग्घी आकर रुकी और शाही हरकारे ने भीतर आते हुए यह घोषणा की कि सम्राज्ञी ने मिरोनोव की बेटी को अपने पास बुलाया है।

आन्ना व्लास्येव्ना अत्यधिक चकित होकर दौड़-धूप करने लगी। "हे भगवान!" वह चिल्लाई। "सम्राज्ञी आपको महल में बुला रही है। उन्हें आपके बारे में कैसे मालूम हो गया? अरे, आप कैसे सम्राज्ञी के सामने जायेंगी? आपको तो शायद दरबारी तौर-तरीक़े भी नहीं आते! क्या मैं आपके साथ चलूं? मैं आपको थोड़ा-बहुत तो समझा-बुझा ही सकती हूं। सफर का फ़्राक पहने हुए भला आप कैसे जायेंगी? क्या दाई के यहां से उसकी पीली पोशाक न मंगवा दूं?" हरकारे ने कहा कि सम्राज्ञी ने मरीया इवानोव्ना को अकेली और जो कुछ पहने हो, उसी पोशाक में आ जाने के लिये कहा है। अब कोई चारा नहीं था – मरीया इवानोव्ना बग्घी में बैठ गयी और आन्ना व्लास्येव्ना की सलाहों तथा शुभकामनाओं के साथ महल की ओर रवाना हो गयी।

मरीया इवानोव्ना को हम दोनों के भाग्य-निर्णय की पूर्वानुभूति

परिशिष्ट

छोड़ा हुआ अध्याय *

हम वोल्गा के तट के निकट पहुंच रहे थे। हमारी रेजिमेंट ने ..गाव मे पहुंचकर रात के लिये वहा पडाव डाल लिया। गाव के मुखिया ने मुझे बताया कि उस पार के सभी गावो ने विद्रोह कर दिया है, कि सभी जगहो पर पुगाचोव के गिरोह घूम रहे हैं। इस खबर ने मुझे बेहद परेशान कर दिया। हमे अगली सुबह को उस पार जाना था। मैं अधीर हो उठा। मेरे पिता जी का गांव नदी के उस पार तीस वेर्स्ता की दूरी पर था। मैंने पूछा कि उस पार ले जानेवाला कोई माझी मिल सकता है या नही। यहां के सभी किसान मछुए भी थे, नावें बहुत-सी थी। मैंने ग्रिनेव के पास जाकर उसके सामने अपना इरादा जाहिर किया—"जोखिम नही उठाओ," उसने मुझसे कहा, "अकेले जाना खतरनाक है। सुबह तक इन्तजार करो। हम ही सबसे पहले उस पार चले जायेगे और कोई जरूरत आ पडे, इसलिये ५० हुस्सार भी तुम्हारे माता-पिता के यहा अपने साथ ले जायेगे।"

किन्तु मैं अपनी बात पर अडा रहा। नाव तैयार थी। मैं दो माझियों को लेकर उसमें सवार हो गया। वे नाव बढा ले चले।

आकाश निर्मल था। चाद चमक रहा था। मौसम शान्त था। वोल्गा मन्द-मन्थर गति से बह रही थी। धीरे-धीरे हिलती-डोलती नाव अधेरे मे काली दिखती लहरो पर तेजी से चली जा रही थी। मैं कल्पनाओ से ओत-प्रोत विचारों मे खो गया। कोई आध घण्टा बीता। हम नदी के मध्य मे पहुच गये थे. अचानक माझी आपस मे खुसुर-फुसुर करने लगे। "क्या बात है?" मैंने सम्भलते हुए पूछा। "मालूम नही, भगवान

---

* सेसर को ध्यान मे रखते हुए 'कप्तान की बेटी' उपन्यास की प्रकाशन के लिये तैयार की गयी पाण्डुलिपि मे यह अध्याय शामिल नहीं किया गया था और पाण्डुलिपि के रूप मे ही सुरक्षित रखा गया। इसलिये स्वय पुश्किन ने इसे 'छोड़ा हुआ अध्याय' कहा है। इस अध्याय मे कुछ पात्रो के नाम भी बदल दिये गये हैं। ग्रिनेव यहा बुलानिन है और जूरिन ग्रिनेव।

ब्लास्येब्ना यद्यपि उसकी बुरी याददाश्त मे नामुश थी, तथापि उसने इसे उसकी प्रान्तीय झेंप-शर्म मानते हुए उसे उदारता से क्षमा कर दिया। मरीया इवानोव्ना पीटर्सबर्ग को देखने के लिये रुके बिना उसी दिन ही गांव वापस चली गयी ..

प्योतर अन्द्रेइच ग्रिनेव की पाण्डुलिपि यहा समाप्त हो जाती है। परिवार मे प्रचलित कथा से यह पता चलता है कि १७७४ के अन्त मे उसे सम्राज्ञी के आदेशानुसार जेल से रिहा कर दिया गया, कि वह पुगाचोव को मृत्यु-दण्ड देने के समय वहां उपस्थित था, कि पुगाचोव ने उसे पहचानकर उसकी ओर सिर झुकाया जो एक मिनट बाद निर्जीव और खून से लथ-पथ हुआ लोगो को दिखाया गया। कुछ ही समय बाद प्योतर अन्द्रेइच ने मरीया इवानोव्ना से शादी कर ली। उनके वंशज सिम्बीर्स्क गुबेर्निया में फल-फूल रहे हैं। . से तीस वेर्स्ता की दूरी पर एक गाव है जिसके दस जमीदार मालिक हैं। वही, एक हवेली के एक भाग मे येकतेरीना द्वितीय के हाथ का लिखा शीशे और चौखटे मे जडा हुआ पत्र रखा है। वह प्योतर अन्द्रेइच के पिता के नाम है। उसमे उनके बेटे को निरपराध बताया गया है तथा कप्तान मिरोनोव की बेटी के दिल-दिमाग की तारीफ की गयी है। प्योतर अन्द्रेइच ग्रिनेव की पाण्डुलिपि हमे उनके पोते से मिली, जिसे यह मालूम हो गया था कि हम उनके दादा द्वारा वर्णित समय पर खोज-कार्य कर रहे हैं। उनके रिश्तेदारो की अनुमति से हमने प्रत्येक अध्याय के लिये उचित आदर्श-वाक्य चुनकर तथा कुछ नामो को बदलने की स्वतन्त्रता लेते हुए उसे अलग से छापने का निर्णय किया।

प्रकाशक

१६ अक्तूबर, १८३६

परिशिष्ट

छोड़ा हुआ अध्याय*

हम वोल्गा के तट के निकट पहुच रहे थे। हमारी रेजिमेंट ने ..गाव मे पहुंचकर रात के लिये वहा पडाव डाल लिया। गाव के मुखिया ने मुझे बताया कि उस पार के सभी गावो ने विद्रोह कर दिया है, कि सभी जगहो पर पुगाचोव के गिरोह घूम रहे है। इस खबर ने मुझे बेहद परेशान कर दिया। हमे अगली सुबह को उस पार जाना था। मैं अधीर हो उठा। मेरे पिता जी का गाव नदी के उस पार तीस वेर्स्ता की दूरी पर था। मैंने पूछा कि उस पार ले जानेवाला कोई माझी मिल सकता है या नही। यहा के सभी किसान मछुए भी थे, नावे बहुत-सी थी। मैंने ग्रिनेव के पास जाकर उसके सामने अपना इरादा जाहिर किया—"जोखिम नही उठाओ," उसने मुझसे कहा, "अकेले जाना खतरनाक है। सुबह तक इन्तज़ार करो। हम ही सबसे पहले उस पार चले जायेगे और कोई जरूरत आ पडे, इसलिये ५० हुस्सार भी तुम्हारे माता-पिता के यहा अपने साथ ले जायेगे।"

किन्तु मैं अपनी बात पर अडा रहा। नाव तैयार थी। मैं दो माझियो को लेकर उसमे सवार हो गया। वे नाव बढा ले चले।

आकाश निर्मल था। चाद चमक रहा था। मौसम शान्त था। वोल्गा मन्द-मन्थर गति से बह रही थी। धीरे-धीरे हिलती-डोलती नाव अधेरे मे काली दिखती लहरो पर तेजी से चली जा रही थी। मैं कल्पनाओ से ओत-प्रोत विचारो मे खो गया। कोई आध घण्टा बीता। हम नदी के मध्य मे पहुच गये थे अचानक माझी आपस मे खुसुर-फुसुर करने लगे। "क्या बात है?" मैंने सम्भलते हुए पूछा। "मालूम नही, भगवान

---

* सेंसर को ध्यान मे रखते हुए 'कप्तान की बेटी' उपन्यास की प्रकाशन के लिये तैयार की गयी पाण्डुलिपि मे यह अध्याय शामिल नही किया गया था और पाण्डुलिपि के रूप मे ही सुरक्षित रखा गया। इसलिये स्वयं पुश्किन ने इसे 'छोडा हुआ अध्याय' कहा है। इस अध्याय मे कुछ पात्रो के नाम भी बदल दिये गये हैं। ग्रिनेव यहा बुलानिन है और ज़ूरिन ग्रिनेव।

जाने," एक ही दिशा मे देखते हुए दोनों ने जवाब दिया। मेरी नजर भी उसी दिशा मे घूम गयी और मुझे अंधेरे मे वोल्गा मे नीचे की ओर बही आती कोई चीज दिखाई दी। यह अपरिचित चीज निकट आती जा रही थी। मैंने माझियों से रुककर उसका इन्तज़ार करने को कहा। चाद बादलो की ओट मे हो गया। बही आ रही छाया-सी और भी अस्पष्ट हो गयी। वह मेरे निकट आ चुकी थी, मगर मैं अभी भी यह नही जान पा रहा था कि वह क्या है। "यह क्या चीज हो सकती है," माझी एक-दूसरे से कह रहे थे, "ये न तो पाल हैं और न मस्तूल " अचानक चाद बादल के पीछे से सामने आ गया और मेरे सामने एक भयानक दृश्य उभरा। एक बेड़े पर सूली तैरती चली आ रही थी और उसके साथ तीन लाशें लटक रही थी। एक विचित्र-सी जिज्ञासा मेरे मन पर हावी हो गयी। मैंने लाशों के चेहरे देखने चाहे।

मेरे आदेश पर माझियो ने उस बेड़े को हुक से रोक लिया और मेरी नाव तैरती सूली से टकराई। मैं कूदकर उस पर गया और मैंने अपने को भयानक खम्भो के बीच पाया। चाद के प्रखर प्रकाश ने इन किस्मत के मारो के विकृत चेहरो को रोशन कर दिया। उनमे से एक बूढ़ा चुवाश था, दूसरा कोई बीस साल का हट्टा-कट्टा रूसी किसान। किन्तु तीसरे को देखकर मैं अत्यधिक आश्चर्यचकित हुआ और दुख से चीखे बिना न रह सका – यह वान्या था, बेचारा वान्या जो अपनी बेवकूफी के कारण पुगाचोव के साथ हो गया था। इनके ऊपर एक काला तख्ता ठोक दिया गया था जिस पर मोटे-मोटे सफेद अक्षरो मे लिखा था – "चोर और विद्रोही"। माझी उदासीनता से लाशों को देखते और हुक से बेड़े को थामे हुए मेरा इन्तज़ार कर रहे थे। मैं नाव पर लौट आया। सूली वाला बेड़ा नदी मे नीचे की ओर बहने लगा। सूली देर तक अंधेरे मे काली-सी झलक देती रही। आखिर वह गायब हो गयी और मेरी नाव ऊचे तथा खड़े तट पर जा लगी

मैंने माझियों को खूब पैसे दिये। उनमे से एक मुझे घाट के निकटवर्ती गाव के विद्रोही मुखिया के पास ले गया। मैं उसके साथ घर मे गया। मुखिया यह सुनकर कि मुझे घोड़े चाहिये, मेरे साथ काफी रुखाई से पेश आया। किन्तु माझी ने धीमे-से उससे कुछ शब्द कहे

स्वचित्र। स्याही। १८२६।

प्योतर व्याज़ेम्स्की (१७६२–१८७८)। रूसी कवि, समालोचक और पत्रकार। जीवन के अन्तिम वर्षों में ज़ार के एक प्रमुख कर्मचारी। तीसरे दशक में पुश्किन और उनसे घनिष्ठ सम्बन्ध रखनेवाले प्रगतिशील साहित्यकारों के निकट रहे।

स्वचित्र। स्याही। १८२६। पुश्किन ने अपने को कज़्ज़ाकों का झबरीला लबादा पहने और हाथ में बर्छी लिये चित्रित किया है। इस चित्र का आधार १४ जून, १८२६ की वह घटना है, जब काकेशिया में यात्रा करते हुए महाकवि को एक फौजी झड़प में हिस्सा लेना पड़ा।

येकातेरीना उशाकोवा (१८०६–१८७२)। मास्को के एक सुसस्कृत तथा कुलीन उशाकोव परिवार की सबसे बड़ी बेटी। तीसरे दशक में पुश्किन इस परिवार में अक्सर जाते थे और उनका बड़ा आदर-सत्कार होता था। पुश्किन और उशाकोव के बीच सुखद और मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे। जलरंग-चित्र। १८३०-४०।

आन्ना ऑलेनिना (१८०८–१८८८)। ललित कला अकादमी के अध्यक्ष अलेक्सेई ऑलेनिन की बेटी। पुश्किन इसे बहुत चाहते थे, उन्होंने इससे विवाह करना चाहा, मगर यह प्रस्ताव ठुकरा दिया गया। रेखाचित्र। १८३३।

बोल्दीनो गाव। नीज्नी नोव्गोरोद गुबेर्निया मे महाकवि के पिता की जागीर। १८३० की पतझर मे पुश्किन पडोस के कीस्तेनेव्का गाव का कब्जा लेने गये जो पिता ने बेटे की शादी के मौके पर उन्हे उपहार मे दे दिया था। बोल्दीनो मे बिताये गये तीन महीनो के दौरान पुश्किन ने पाच 'लघु त्रासदिया', 'बेल्किन की कहानिया', कोलोमना मे एक घर' खण्ड-काव्य, तीस कवितायें और अनेक लेख लिखे।
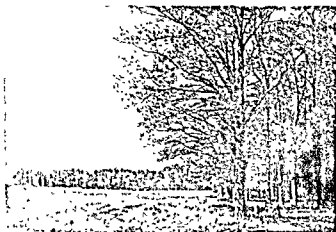
बोल्दीनो के आस-पास की झाकी। 'लूचीन्निक नामक वन जहा महाकवि को सैर करना अच्छा लगता था।
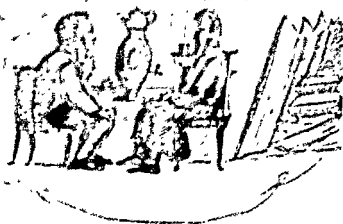
पीटर्सबर्ग। शस्त्रागार। लीथोग्राफ। १८२०-३०।

नताल्या गोलीत्सिना (१७४१–१८३७)। मास्को के गवर्नर-जनरल द्मीत्री गोलीत्सिन की मां। ऊंचे कुलीन समाज की एक विशिष्ट महिला जिसे Princess Moustache (मूछोंवाली प्रिंसेस) का उपनाम दिया गया था। पुश्किन ने 'हुकुम की बेगम' कहानी में बूढ़ी काउंटेस का चित्रण करने के लिये इस महिला के लक्षणों का उपयोग किया।
लघु चित्र। १८१०-२०।

निकोलाई गोगोल (१८०९–१८५२)। महान रूसी लेखक। रूसी साहित्य में आलोचनात्मक यथार्थवाद के जन्मदाता। पुश्किन ने गोगोल की प्रतिभा का ऊंचा मूल्यांकन किया था। "यह है वास्तविक हर्ष-उल्लास, सहज और स्वाभाविक, किसी भी तरह की बनावट और कृत्रिमता के बिना," पुश्किन ने गोगोल के कहानी-संग्रह 'दिकान्का गांव के निकट शामें' की समालोचना करते हुए लिखा था। लीथोग्राफ। १८३४।

देनीस दवीदोव (१७८४–१८३९)। कवि और हुस्सार, जो अद्भुत साहस और निडरता के लिये विख्यात थे। पुश्किन उनके स्वभाव की मौलिकता के लिये उन्हें विशेष महत्त्व देते थे। प० सोकोलोव द्वारा बनाया गया जलरंग-चित्र। १८३६।

पुश्किन। प० सोकोलोव द्वारा बनाया गया जलरंग-चित्र। १८३६।

नताल्या पुश्किना, विवाहपूर्व गोंचारोवा (१८१२–१८६३)। महाकवि की पत्नी। नताल्या बहुत ही सुन्दर थी, उनके समकालीनों ने उनके रूप की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अपनी भावी पत्नी को समर्पित 'सौन्दर्य-देवी' कविता में पुश्किन ने लिखा था

तुम हो निर्मलतम सुन्दरता, तुम निर्मलतम रूप-छटा,
मैंने जो चाहा, सो पाया
स्रष्टा ने है अब तो मेरी तुम्हें बनाया।

अ० ब्र्यूल्लोव द्वारा बनाया गया जलरंग-चित्र। १८३१।

पुश्किन। प० सोकोलोव द्वारा बनाया गया जलरंग-चित्र। १८३६।

नताल्या पुश्किना, विवाहपूर्व गोचारोवा (१८१२–१८६३)। महाकवि की पत्नी। नताल्या बहुत ही सुन्दर थीं, उनके समकालीनो ने उनके रूप की भूरि-भूरि प्रशसा की। अपनी भावी पत्नी को समर्पित 'सौन्दर्य-देवी' कविता मे पुश्किन ने लिखा था

तुम हो निर्मलतम सुन्दरता, तुम निर्मलतम रूप-छटा,
मैंने जो चाहा, सो पाया
स्रष्टा ने है अब तो मेरी तुम्हे बनाया।

अ० ब्र्यूल्लोव द्वारा बनाया गया जलरग-चित्र। १८३१।

पीटर्सबर्ग के निकट त्सारस्कोये सेलो (ज़ार का गांव)। पार्क। १८३१ में पुश्किन ने त्सारस्कोये सेलो में एक बंगला किराये पर लिया। उन्हें "अद्भुत उपवनों" में, जो स्कूल के ज़माने में उन्हें बहुत प्रिय थे पत्नी के साथ घूमना बहुत अच्छा लगता था। मार्तीनोव द्वारा बनाया गया चित्र। १८२०-३०।

अलेक्सान्द्रा स्मिर्नोवा, विवाहपूर्व रोस्सेत कुलनाम (१८०६–१८८२)। सम्राज्ञी की सेविका-सगिनी। पुश्किन की मित्र। पुश्किन इनकी समझ-बूझ और स्वतंत्र चिन्तन को ऊंचा आंकते थे। १८२०-३० के लघु चित्र से।
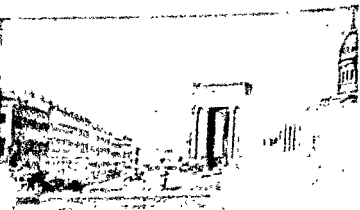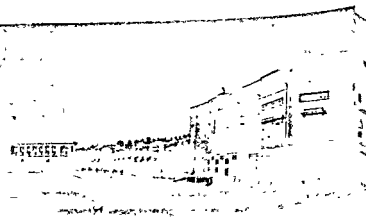
पावेल नाश्चोकिन (१८००–१८५४)। मास्को के एक कुलीन। मौलिक और भावावेशी प्रकृति के व्यक्ति। चौथे दशक में पुश्किन के एक घनिष्ठतम मित्र। जलरंग-चित्र। १८३६।

विस्सारिओन बेलिन्स्की (१८११–१८४२)। साहित्य-समालोचक और पत्रकार रूसी साहित्य में शास्त्रीय समालोचना के जनक। पुश्किन के कृतित्व पर कुछ बहुत ही श्रेष्ठ लेखों के रचयिता। जलरंग-चित्र। १८२०-३०।

नताल्या पुश्किना, विवाहपूर्व गोंचारोवा (१८१२–१८६३)। महाकवि की पत्नी।
व० गाउ द्वारा बनाया गया जलरंग-चित्र। १८४३।

पुश्किन। त० राइट द्वारा बनाया गया उत्कीर्ण चित्र। १८३३।

नताल्या पुश्किना, विवाहपूर्व गोंचारोवा (१८१२–१८६३)। महाकवि की पत्नी।
व० गाउ द्वारा बनाया गया जलरंग-चित्र। १८४३।

येमेल्यान पुगाचोव (१७४४–१७७५)। ८वे दशक मे किसान-क्रान्ति के नेता। पुगाचोव के व्यक्तित्व मे पुश्किन ने बडी दिलचस्पी ली – उन्होने न केवल लेखागार मे सचित सभी दस्तावेजो का अध्ययन किया, बल्कि विद्रोह मे भाग लेनेवाले स्थानो पर भी गये और वहा उन्होने साक्षियो से बातचीत की। इसके परिणामस्वरूप 'कप्तान की बेटी' ऐतिहासिक उपन्यास और 'पुगाचोव का विद्रोह' शोध-ग्रन्थ का सृजन हुआ। 'पुगाचोव का विद्रोह' के प्रथम सस्करण मे प्रकाशित उत्कीर्ण-चित्र। १८३४।

येकातेरीना कारामज़ीना (१७८०–१८५१)। प्रसिद्ध इतिहासकार कारामज़ीन की पत्नी। युवाकाल मे ही पुश्किन अक्सर पीटर्सबर्ग मे कारामज़ीन परिवार मे जाया करते थे। कारामज़ीना के प्रति वे स्नेह और आदर की भावना रखते थे। १८४०-५० का चित्र।

कोन्स्तान्तीन दानज़ास (१८०१–१८७०)। स्कूल के ज़माने मे पुश्किन के मित्र और दान्तेस के साथ द्वन्द्व-युद्ध के समय पुश्किन की ओर से साक्षी। १९वीं शताब्दी के ४थे दशक का रेखाचित्र।

येकातेरीना द्वितीया (१७२९–१७९६)। रूसी साम्राज्ञी जो १७६२ में सिंहासन पर बैठीं। 'कप्तान की बेटी' उपन्यास में "अंग्रेजी नस्ल के कुत्ते के साथ सुबह का सफेद फ्राक', "रात की टोपी और रूईदार जाकेट पहने त्सास्कोये सेलो के पार्क में सैर करती हुई येकातेरीना द्वितीया का जो आधी देखा-सा बिम्ब प्रस्तुत किया गया है, उसकी प्रेरणा सम्भवतः चित्रकार बोरोवीकोव्स्की द्वारा १८२७ में बनाये गये उक्त उत्कीर्ण-चित्र से मिली।

येकातेरीना कारामज़ीना (१७८०–१८५१)। प्रसिद्ध इतिहासकार कारामज़ीन की पत्नी। युवाकाल से ही पुश्किन अक्सर पीटर्सबर्ग में कारामज़ीन परिवार में जाया करते थे। कारामज़ीना के प्रति वे स्नेह और आदर की भावना रखते थे। १८४०-५० का चित्र।

कोन्स्तान्तीन दानज़ास (१८०१–१८७०)। स्कूल के ज़माने से पुश्किन के मित्र और दान्तेस के साथ द्वन्द्व-युद्ध के समय पुश्किन की ओर से साक्षी। १९वीं शताब्दी के ४थे दशक का रेखाचित्र।

२७ जनवरी (८ फरवरी), १८३७ को पुश्किन और दान्तेस का द्वन्द्व-युद्ध।
नाऊमोव द्वारा १८८४ में बनाया गया तैल चित्र।

अलेक्सान्द्र तुर्गेनेव (१७८४-१८४५)। इतिहासज्ञ, विद्वान, लेखक, ऊंचे सरकारी पदाधिकारी। पुश्किन के वरिष्ठ साथी, जो पीटर्सबर्ग से प्स्कोव और स्व्यातोगोर्स्क गिरजाघर तक पुश्किन के शव के साथ गये। लीथोग्राफ़। १८३०।

व्लादीमिर दाल (१८०१-१८७२)। लेखक, विद्वान, डाक्टर। पुश्किन के मित्र।

स्व्यातोगोर्स्क गिरजे में पुश्किन की कब्र। लीथोग्राफ। १८३७।

अलेक्सान्द्र तुर्गेनिव (१७८४–१८४५)। इतिहासज्ञ, विद्वान, लेखक, ऊंचे सरकारी पदाधिकारी। पुश्किन के वरिष्ठ साथी, जो पीटर्सबर्ग से प्स्कोव और स्व्यातोगोर्स्क गिरजाघर तक पुश्किन के शव के साथ गये। लीथोग्राफ। १८३०।

व्लादीमिर दाल (१८०१–१८७२)। लेखक, विद्वान डाक्टर। पुश्किन के मित्र। उन्होंने घायल पुश्किन का इलाज किया।

ओपेकुशिन के खाके के मुताबिक मास्को में बनाया गया पुश्किन का स्मारक। यह स्मारक चन्दा जमा करके बनाया गया और १८८० में इसका उद्घाटन हुआ।

और उसकी कठोरता फौरन मेरी मल्लो-चप्पो में बदल गयी। तीन घोड़ो की बग्घी आन की आन मे तैयार हो गयी, मैं उसमे बैठा और कोचवान से कहा कि वह मुझे मेरे पिता जी के गाव की ओर ले चले।

बग्घी सोये हुए गावों के पास से बडी सडक पर भागी जा रही थी। मुझे एक बात का डर था—कही रास्ते मे रोक न लिया जाऊ। वोल्गा पर रात के समय बेडे और उस पर लटकी लाशों से हुई भेट यदि विद्रोहियों की उपस्थिति को प्रमाणित करती थी, तो साथ ही इस बात का सबूत भी देती थी कि सरकार की ओर से भी जोरदार विरोध हो रहा है। किसी विकट स्थिति के लिये मेरी जेब मे पुगाचोव द्वारा दिया हुआ अनुमति-पत्र भी था और कर्नल ग्रिनेव का आदेश-पत्र भी। किन्तु रास्ते मे कोई नही मिला और सुबह होते न होते मुझे नदी और फर-वृक्षो का वह झुरमुट नजर आने लगा जिसके पीछे हमारा गाव था। कोचवान ने घोडो पर चाबुक बरसाया और पन्द्रह मिनट बाद मैं ... गाव मे पहुंच गया।

हमारी हवेली गांव के दूसरे सिरे पर थी। घोड़े पूरे जोर से सरपट दौड रहे थे। अचानक कोचवान उन्हे सड़क के बीचोबीच रोकने लगा। "क्या बात है?" मैंने बेसब्री से पूछा। "फौजी चौकी है, हुजूर," बहुत जोश में आये अपने घोड़ो को मुश्किल से रोक पाते हुए कोचवान ने उत्तर दिया। वास्तव मे ही मुझे मार्ग-बाधा और लट्ठ लिये सन्तरी दिखाई दिया। किसान-सन्तरी ने मेरे पास आकर टोपी उतार ली और पासपोर्ट मागा।

"क्या मतलब है इसका?" मैंने उससे पूछा। "किसलिये यहा यह बाधा बनायी गयी है? किसकी पहरेदारी कर रहे हो तुम?"

"हुजूर, हम विद्रोह कर रहे हैं," उसने सिर खुजलाते हुए जवाब दिया।

"आपके मालिक लोग कहा है?" मैंने पूछा और अनुभव किया कि मेरा दिल बैठा जा रहा है।

"मालिक लोग कहा है?" किसान ने सवाल दोहराया। "हमारे मालिक लोग खत्ती मे हैं।"

"खत्ती मे, यह कैसे?"

"बात यह है कि गाव-कमेटी के अन्द्रेई ने उनके पैरो मे शिकजे

डाल दिये हैं और वह उन्हे जार-पिता के सामने ले जाना चाहता है।"

"हे भगवान! अरे उल्लू, बाधा को हटा ले। मुह बाये क्या देख रहा है?"

सन्तरी ने झिझक दिखाई। मैंने बग्घी से कूदकर उसके कान पर घूसा जमाया (माफी चाहता हू) और खुद मार्ग-बाधा को हटा दिया। किसान कुछ न समझ पाते हुए एक बुद्धू की तरह टुकुर-टुकुर मेरी ओर देखता रह गया। मैं फिर से बग्घी मे सवार हुआ और हवेली की ओर चलने का आदेश दिया। खत्ती अहाते मे थी। तालाबन्द दरवाजे पर दो किसान लट्ठ लिये खडे थे। बग्घी बिल्कुल उनके सामने जाकर रुकी। मैं कूदकर नीचे उतरा और सीधा उनकी तरफ लपका। "दरवाजा खोलो!" मैंने उनसे कहा। सम्भवत मैं बहुत भयानक लग रहा था। कुछ भी हो, वे दोनो लट्ठ फेंककर भाग गये। मैंने ताला और दरवाजा तोडने की कोशिश की, मगर दरवाजा बलूत की लकडी का था और बहुत बडा ताला तोडना मुमकिन नही था। इसी क्षण एक लम्बा-तडगा जवान किसान नौकरो के घर से बाहर आया और उसने बडी अकड से यह पूछा कि मैं हगामा करने की हिम्मत कैसे कर रहा हू।

"गाव-कमेटी वाला अन्द्रेई कहा है?" मैंने चिल्लाते हुए उससे पूछा। "उसे बुलाओ मेरे पास।"

"अन्द्रेई नही, मैं ही हू अन्द्रेई अफानासियेविच," बडे घमण्ड से कूल्हो पर हाथ रखे हुए उसने जवाब दिया। "क्या बात है?"

जवाब देने के बजाय मैंने उसका गरेबान पकड लिया, खीचकर उसे खत्ती के दरवाजे पर ले गया और दरवाजा खोलने का हुक्म दिया। उसने कुछ ज़िद्द की, मगर "पैतृक" दण्ड ने उस पर भी असर डाला। उसने चाबी निकालकर खत्ती का दरवाजा खोल दिया। मैंने सरपट दहलीज लाघी और अन्धेरे कोने मे, जहा छत मे किये गये छोटे-से सूराख से धीमी-सी रोशनी आ रही थी, मुझे अपने माता-पिता दिखाई दिये। उनके हाथ बधे हुए थे और पैरो मे शिकजे थे। मैंने उन्हे अपनी बाहो म भर लिया और मेरे मुह से एक भी शब्द नही निकल सका। दोनो हतप्रभ-से मेरी ओर ताक रहे थे—सैनिक जीवन के तीन सालो ने मुझे इतना बदल दिया था कि उनके लिये पहचान पाना सम्भव नही था। मा अचम्भे से चीख उठी और [illegible] आसू गिराने लगी।

अचानक मुझे प्यारी और जानी-पहचानी आवाज़ सुनाई दी—"प्योतर अन्द्रेइच ! यह आप हैं !" मैं स्तम्भित रह गया मैंने मुड़कर देखा तो पाया कि दूसरे कोने में मरीया इवानोव्ना भी उसी तरह बधी हुई है।

पिता जी मुझे चुपचाप देखते जा रहे थे, खुद अपने पर विश्वास नही कर पा रहे थे। उनके चेहरे पर खुशी चमक रही थी। मैं झटपट तलवार से उनकी रस्सियो की गाठे काटने लगा।

"नमस्ते, नमस्ते पेत्रूशा," मुझे अपनी छाती से लगाते हुए पिता जी ने कहा, "भला हो भगवान का, तुम्हे देख पाये "

"पेत्रूशा, मेरे प्यारे," मा बोली, "भगवान तुम्हे यहा ले आया! तुम ठीक-ठाक तो हो?"

मैंने उन्हे इस जेल से बाहर निकालने की उतावली की, किन्तु दरवाज़े के पास जाने पर मैंने उसे फिर से बन्द पाया।

"अन्द्रेई," मैं चिल्लाया, "दरवाज़ा खोलो!"

"नही खुलेगा दरवाजा," गाव-कमेटी के मुखिया ने बाहर से जवाब दिया। "खुद भी यही बैठे रहो। हम तुम्हे हगामा करने और सरकारी कर्मचारियो को गरेबान से पकडने का मजा चखायेगे!"

मैं इस आशा से खत्ती मे इधर-उधर नजर दौडाने लगा कि वहा से बाहर निकलने का कोई उपाय है या नही।

"बेकार कोशिश नही करो," पिता जी ने मुझसे कहा, "ऐसा बुरा मालिक नही हू मैं कि मेरी खत्ती मे चोर आसानी से घुस सके और बाहर निकल जाये।"

मेरे आने पर कुछ देर के लिये खुश हो उठनेवाली मेरी मा यह देखकर हताश हो गयी कि सारे परिवार की तरह मुझे भी अपनी जान गवानी होगी। किन्तु मैं जिस समय से माता-पिता और मरीया इवानोव्ना के पास आया था, अपने को अधिक शान्त अनुभव कर रहा था। मेरे पास तलवार और दो पिस्तौले थी और मैं घेरे का सामना कर सकता था। शाम होने तक ग्रिनेव को यहा पहुचना और हमें आज़ाद करवा लेना चाहिये था। मैंने अपने माता-पिता को यह सब कुछ बता दिया और मा को शान्त करने मे सफल हो गया। वे पूरी तरह मिलन की खुशी की तरग मे बह गये।

मैंने मा और मरीया इवानोव्ना को चुपचाप इशारा किया कि वे कोने मे चली जाये, म्यान से अपनी तलवार निकाल ली और दरवाज़े के बिल्कुल क़रीब दीवार से सटकर खडा हो गया। पिटा जी ने पिस्तौले लीं, दोनो के घोड़े चढा लिये और मेरी बगल मे खडे हो गये। ताले मे चाबी डालने की आवाज़ हुई, दरवाजा खुला और गाव-कमेटी के मुखिया का सिर दिखाई दिया। मैंने उस पर तलवार से वार किया, वह वही गिर गया और उसने भीतर आने का रास्ता रोक दिया। इसी समय पिता जी ने पिस्तौल से एक गोली चला दी। हमे घेरे मे लेनेवाले लोगो की भीड गालिया बकते हुए तितर-बितर हो गयी। मैंने घायल को दहलीज़ से भीतर खीच लिया और अन्दर से कुडी चढा दी। अहाता हथियारबन्द लोगो से भरा हुआ था। मैंने श्वाबरिन को उनमे पहचान लिया।

"डरे नही," मैंने अपनी मा और मरीया इवानोव्ना से कहा। "अभी उम्मीद बाक़ी है। और पिता जी, आप और गोली नही चलाइये। हमें आखिरी गोली बचाकर रखनी चाहिये।"

मा चुपचाप भगवान को याद कर रही थी। मरीया इवानोव्ना फ़रिश्ते जैसी शान्ति से उसके पास खडी हुई अपने भाग्य-निर्णय की प्रतीक्षा कर रही थी। दरवाज़े के उस ओर से धमकिया, गाली-गलौज और गन्दी बाते सुनाई दे रही थी। मैं अपनी पहलेवाली जगह पर और भीतर आने की हिम्मत करनेवाले को मौत के घाट उतारने को तैयार खडा था। बदमाश लोग अचानक खामोश हो गये। मेरा नाम लेकर पुकारनेवाले श्वाबरिन की आवाज़ मुझे सुनाई दी।

"मैं यहा हू, क्या चाहिये तुम्हे?"

"हथियार फेक दो, बुलानिन, सामना करना बेकार है। अपने बुजुर्गों पर रहम करो। ज़िद्द करके बच नही सकोगे। मैं तुम तक पहुच जाऊगा!"

"कोशिश करके देखो, गद्दार!"

"न तो खुद बेकार ही भीतर आऊगा और न अपने लोगो को ही जान खतरे मे डालूगा। मैं खत्ती को आग लगाने का हुक्म दे दूगा और फिर देखेगे कि तुम क्या करते हो, बेलोगोर्स्क के डॉन क्विग्ज़ोट। अब तो दोपहर के खाने का वक्त हो गया। तुम इसी बीच फ़ुरसत मे

20*

भड़क उठी, खत्ती मे रोशनी हो गयी और दहलीज़ के नीचे वाले सूराखो मे धुआ निकलने लगा। तब मरीया इवानोव्ना मेरे पास आई और मेरा हाथ अपने हाथ मे लेकर धीरे-से बोली –

"बस, काफी हो चुका, प्योतर अन्द्रेइच! मेरी खातिर अपनी और अपने माता-पिता की जान नही लीजिये। मुझे बाहर जाने दीजिये। श्वाबरिन मेरी बात मान लेगा।"

"हरगिज़ ऐसा नही करूंगा," मैं बड़े ज़ोर से चिल्ला उठा। "आपको मालूम है न कि आपके साथ क्या बीतनेवाली है?"

"बेइज्ज़ती मैं बर्दाश्त नही करूगी," मरीया इवानोव्ना ने शान्ति से जवाब दिया। "किन्तु यह सम्भव है कि मैं अपने मुक्तिदाता और उस परिवार को बचा पाऊ जिसने इतनी उदारता से मुझ यतीम को शरण दी। तो विदा अन्द्रेई पेत्रोविच, अव्दोत्या वसील्येव्ना। आप मेरे सरक्षक ही नही, इससे कही अधिक थे। मुझे अपना आशीर्वाद दीजिये। आप भी मुझे क्षमा करे, प्योतर अन्द्रेइच। आप विश्वास कर सकते हैं कि.. कि..." इतना कहते हुए वह रो पड़ी और उसने हाथों से मुह ढक लिया.. मैं तो पागल जैसा हो रहा था। मा रो रही थी।

"बस, अब यह सब रहने दो मरीया इवानोव्ना," मेरे पिता जी ने कहा। "कौन तुम्हे उठाईगीरो के पास अकेली जाने देगा! यहा बैठ जाओ और चुप रहो। मरना ही है, तो सभी एकसाथ मरेंगे। सुनो, वे और क्या कह रहे है?"

"मेरी बात मानते हो या नही?" श्वाबरिन चिल्ला रहा था। "देख रहे हैं? पाच मिनट मे आप सब जलकर राख हो जायेंगे।"

"नही मानेंगे, नीच!" मेरे पिता जी ने दृढ आवाज़ मे जवाब दिया।

पिता जी के झुर्रियोवाले चेहरे पर अद्भुत उत्साह की सजीवता दिखाई दे रही थी, सफेद भौहो के नीचे चमकती हुई आखे दहशत पैदा कर रही थीं। मुझे सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा –

"अब देर नही करनी चाहिये!"

उन्होंने दरवाज़ा खोला। आग भीतर की ओर लपकी तथा शहतीरो और उनके बीच जमी हुई सूखी काई की तरफ बढ़ने लगी। पिता जी ने पिस्तौल से गोली चलाई और "सब मेरे पीछे आओ!" चिल्लाते हुए दहकती दहलीज को लांघ गये। मैंने मा और मरीया इवानोव्ना

इस बात पर सोच-विचार कर लो। अलविदा, मरीया इवानोव्ना, आपसे क्षमा नही मागूगा – सम्भवत आपको तो अपने सूरमा के साथ अधेरे मे बैठे हुए ऊब महसूस नही हो रही होगी।"

बत्ती के पास सन्तरी तैनात करके श्वाब्रिन चला गया। हम मौन रहे। हममे से हर कोई अपने-अपने विचारो मे खोया हुआ था, दूसरे से उन्हे कहने की हिम्मत नही कर पा रहा था। मैं उस सब की कल्पना करने लगा कि गुस्से मे आया हुआ श्वाब्रिन क्या कुछ कर सकता है। अपनी तो मुझे लगभग कोई चिन्ता नही थी। मैं यह भी स्वीकार कर लेता हू कि अपने माता-पिता के भाग्य से भी मुझे मरीया इवानोव्ना के बारे मे कही ज्यादा फिक्र थी। मैं जानता था कि किसान और नौकर-चाकर मेरी मा को पूजते हैं तथा कडाई के बावजूद पिता जी को भी प्यार करते हैं, क्योंकि वे न्यायप्रिय थे और अपने अधीन लोगो की वास्तविक आवश्यकताओ से परिचित थे। उनका विद्रोह रास्ते से भटक जाना था, कुछ देर का नशा था और उनके गुस्से की अभिव्यक्ति नही था। इसलिये वे जरूर ही उन पर रहम करेगे। लेकिन मरीया इवानोव्ना? बदमाश और बेहया श्वाब्रिन उसके साथ कैसा सुलूक करनेवाला है? इस भयानक विचार पर मैं तो सोचने की भी हिम्मत नही कर पा रहा था। भगवान क्षमा करे, उसे फिर से ज़ालिम दुश्मन को सौंपने के बजाय मैं तो खुद अपने हाथो से उसकी हत्या करने को तैयार था।

लगभग एक घण्टा और बीत गया। गाव मे नशे मे धुत लोगो के गाने गूजते थे। हमारी पहरेदारी करनेवालो को उनसे ईर्ष्या होती थी और वे हम पर झल्लाते हुए कोसने और हमे यातनाये देने तथा मार डालने की धमकिया दे रहे थे। हम यह इन्तज़ार कर रहे थे कि श्वाब्रिन ने जो धमकिया दी हैं, उनका क्या नतीजा निकलता है। आखिर अहाते मे बडी हलचल हुई और हमे फिर से श्वाब्रिन की आवाज सुनाई दी –

"आप लोगो ने सोच-विचार कर लिया? अपनी खुशी से मेरे सामने हथियार फेंकने को तैयार हैं?"

किसी ने भी उसे उत्तर नही दिया। कुछ देर इन्तज़ार करने के बाद श्वाब्रिन ने फूस लाने का हुक्म दिया। कुछ मिनट बाद आग

के हाथ पकड़े और जल्दी से उन्हें बाहर ले गया। पिता जी के कमज़ोर हाथ से घायल हुआ श्वाब्रिन दहलीज़ के करीब पड़ा था। हमारे ऐसे अप्रत्याशित धावे से माल उड़ानेवाली लुटेरों-बदमाशों की भीड़ फिर से हिम्मत बटोरकर हमें घेरने लगी। मैं तलवार के कुछ और वार करने में सफल रहा, किन्तु अच्छा निशाना बाँधकर फेंकी गयी ईंट सीधी मेरी छाती में आकर लगी। मैं गिर पड़ा और एक क्षण को बेहोश हो गया। होश आने पर मैंने श्वाब्रिन को खून से रंगी हुई घास पर बैठे पाया और हमारा सारा परिवार उसके सामने था। मुझे बगलों में हाथ डालकर सहारा दिया जा रहा था। किसानों, कज़्ज़ाकों और बश्कीरियों की भीड़ हमें घेरे थी। श्वाब्रिन के चेहरे का रंग भयानक रूप से पीला था। एक हाथ से वह अपनी घायल बगल को दबाये हुए था। उसके चेहरे पर पीड़ा और क्रोध अंकित थे। उसने धीरे-धीरे सिर ऊपर उठाया, मेरी ओर देखा और क्षीण तथा अस्पष्ट आवाज़ में कहा –

"इन्हें सूली दे दो... सभी को... सिर्फ़ इस लड़की को छोड़कर..."

बदमाशों की भीड़ ने इसी क्षण हमें घेर लिया और चीखते-चिल्लाते हुए फाटक की ओर घसीट ले गयी। किन्तु ये लोग हमें छोड़कर अचानक भाग खड़े हुए। ग्रिनेव और उसके पीछे नंगी तलवारें लिये हुए पूरा दस्ता फाटक को लांघकर अहाते में आ रहा था।

विद्रोही सभी दिशाओं में भागे जा रहे थे, हुस्सार उनका पीछा कर रहे थे, उनके टुकड़े कर रहे थे और बन्दी बना रहे थे। ग्रिनेव ने घोड़े से नीचे उतरकर मेरे माता-पिता को प्रणाम किया और तपाक से मेरे साथ हाथ मिलाया। "तो मैं ठीक वक्त पर पहुँच गया," उसने हमसे कहा। "लो, यह है तुम्हारी मंगेतर!" मरीया इवानोव्ना लज्जारुण हो गयी। पिता जी उसके पास गये और यद्यपि वे मन में बड़ी भाव-विह्वलता अनुभव कर रहे थे, तथापि बाहरी तौर पर शान्त-स्थिर रहते हुए उन्होंने उसके प्रति आभार प्रकट किया। माँ ने उसे गले लगाया, रक्षक-फ़रिश्ता कहा। "हमारे यहाँ पधारिये," पिता जी ने उससे कहा और ग्रिनेव को हमारे घर की ओर ले चले।

श्वाबरिन के पास से गुजरते हुए ग्रिनेव रुका।

"यह कौन है?" घायल की तरफ देखते हुए उसने पूछा।

"यह है इनका मुखिया, इस गिरोह का सरदार," पिता जी ने कुछ गर्व के साथ उत्तर दिया, जिससे यह प्रकट हो गया कि वे पुराने फौजी हैं, "भगवान ने मेरे कमजोर हाथ मे इस जवान बदमाश को दण्ड देने और अपने बेटे की चोट का बदला लेने की शक्ति देकर बडी मदद की।"

"यह श्वाबरिन है " मैंने ग्रिनेव से कहा।

"श्वाबरिन! बहुत खुशी हुई! हुस्सारो! इसे ले जाओ! हमारे चिकित्सक से कहें कि इसके घाव पर पट्टी बाध दे और आख की पुतली की तरह इसकी रक्षा करे। श्वाबरिन को अवश्य ही कज़ान के गुप्त आयोग के सामने पेश करना चाहिये। वह मुख्य अपराधियो मे से एक है और उसकी गवाही महत्वपूर्ण होनी चाहिये।"

श्वाबरिन ने अपनी थकी हुई आखे खोली। उसके चेहरे पर शारीरिक पीडा के अलावा और कुछ नजर नही आ रहा था। हुस्सार उसे चोगे पर लिटाकर ले गये।

हम कमरे मे दाखिल हुए। मैंने अपने बचपन के वर्षों को याद करते हुए धडकते दिल से इधर-उधर नज़र घुमाई। घर मे कोई परिवर्तन नही हुआ था, सब कुछ अपनी पहले वाली जगह पर था। श्वाबरिन ने उसे लूटने नही दिया था और बेहद पतन के बावजूद उसमे तुच्छ लालच के प्रति स्वाभाविक घृणा बनी रही थी। नौकर-चाकर प्रवेश-कक्ष मे सामने आये। उन्होंने विद्रोह मे भाग नही लिया था और हमारे निजात पाने पर सच्चे मन से खुशी ज़ाहिर की। सावेलिच तो विजेता की तरह रग मे था। यहा यह बताना उचित होगा कि लुटेरो के हमले से पैदा हुई घबराहट के वातावरण मे वह अस्तबल मे भाग गया जहा श्वाबरिन का घोडा खडा था, उसने उस पर ज़ीन कसा, धीरे-से उसे बाहर लाया और हल्ले-गुल्ले की बदौलत सब की आख बचाकर उसे घाट पर सरपट दौडा ले गया। वहा उसे वोल्गा के इस पार आराम करती हुई रेजिमेट दिखाई दी। हमारे सिरो पर मडरा रहे खतरे के बारे मे जानकर ग्रिनेव ने फौरन घोडो पर सवार होने तथा सरपट घोडे दौडाते हुए हमारे पास पहुचने का

श्वाबरिन के पास से गुजरते हुए ग्रिनेव रुका।

"यह कौन है?" घायल की तरफ देखते हुए उसने पूछा।

"यह है इनका मुखिया, इस गिरोह का सरदार," पिता जी ने कुछ गर्व के साथ उत्तर दिया, जिससे यह प्रकट हो गया कि वे पुराने फौजी हैं, "भगवान ने मेरे कमजोर हाथ में इस जवान बदमाश को दण्ड देने और अपने बेटे की चोट का बदला लेने की शक्ति देकर बडी मदद की।"

"यह श्वाबरिन है " मैंने ग्रिनेव से कहा।

"श्वाबरिन! बहुत खुशी हुई! हुस्सारो! इसे ले जाओ! हमारे चिकित्सक से कहो कि इसके घाव पर पट्टी बाध दे और आख की पुतली की तरह इसकी रक्षा करे। श्वाबरिन को अवश्य ही कज़ान के गुप्त आयोग के सामने पेश करना चाहिये। वह मुख्य अपराधियो में से एक है और उसकी गवाही महत्वपूर्ण होनी चाहिये।"

श्वाबरिन ने अपनी थकी हुई आखे खोली। उसके चेहरे पर शारीरिक पीडा के अलावा और कुछ नजर नही आ रहा था। हुस्सार उसे चोगे पर लिटाकर ले गये।

हम कमरे मे दाखिल हुए। मैंने अपने बचपन के वर्षों को याद करते हुए धडकते दिल से इधर-उधर नजर घुमाई। घर मे कोई परिवर्तन नही हुआ था, सब कुछ अपनी पहले वाली जगह पर था। श्वाबरिन ने उसे लूटने नही दिया था और बेहद पतन के बावजूद उसमे तुच्छ लालच के प्रति स्वाभाविक घृणा बनी रही थी। नौकर-चाकर प्रवेश-वश मे सामने आये। उन्होंने विद्रोह मे भाग नही लिया था और हमारे निजात पाने पर सच्चे मन से खुशी ज़ाहिर की। सावेलिच तो विजेता की तरह रग मे था। यहा यह बताना उचित होगा कि लुटेरो के हमले से पैदा हुई घबराहट के वातावरण में वह अस्तबल मे भाग गया जहा श्वाबरिन का घोडा खडा था, उसने उस पर ज़ीन कसा, धीरे-से उसे बाहर लाया और हल्ले-गुल्ले की बदौलत सब की आख बचाकर उसे घाट पर सरपट दौडा ले गया। वहा उसे वोल्गा के इस पार आराम करती हुई रेजिमेंट दिखाई दी। हमारे सिरो पर मडरा रहे खतरे के बारे में जानकर ग्रिनेव ने फौरन घोडो पर सवार होने तथा सरपट घोडे दौडाते हुए हमारे पास पहुचने का

आलिंगन कर रही थी। कोई मेरे कान में मानो फुसफुसा रहा था कि मेरे सभी दुर्भाग्यों का अभी अन्त नहीं हुआ है। दिल यह महसूस कर रहा था कि अभी एक नया तूफान आयेगा।

हमारे कूच और पुगाचोव के साथ लड़ाई के अन्त की चर्चा नहीं करूगा। हम पुगाचोव द्वारा तबाह किये गये गावों-बस्तियों में से गुजरे और हमने अनिच्छा से बदकिस्मत लोगों से वह छीन लिया जो लुटेरे छोड़ गये थे।

लोग यह नहीं जानते थे कि किसके आदेशों का पालन करें। शासन तो सभी जगह पर समाप्त हो गया था। जमींदार जगलों में जा छिपे थे। डाकुओं-लुटेरों के गिरोह सभी जगह लूट-मार कर रहे थे। अलग-अलग फौजी दस्तों के अफसर, जिन्हें उस वक्त अस्त्राखान की तरफ भागे जा रहे पुगाचोव का पीछा करने के लिये भेजा गया था, अपनी मर्जी से दोषियों और निर्दोषों को भी सजा देते थे. जहा यह आग भड़की हुई थी, उस सारे इलाके की ही भयानक हालत थी। भगवान न करे कि कभी बेमानी और क्रूरतापूर्ण रूसी विद्रोह को देखना पडे। हमारे यहा जो लोग असम्भव उथल-पुथल की कल्पना करते हैं, वे या तो जवान हैं और हमारी जनता को नहीं जानते या फिर संगदिल हैं जिनके लिये दूसरों का सिर एक दमडी का है और अपनी गर्दन की कीमत एक कौडी है।

पुगाचोव भागता जा रहा था और जनरल इवान इवानोविच मिखेलसोन उसका पीछा कर रहा था। जल्द ही हमें यह पता चला कि उसे पूरी तरह कुचल दिया गया है। ग्रिनेव को अपने जनरल से यह खबर मिली कि नकली सम्राट को गिरफ्तार कर लिया गया है और साथ ही उसे आगे न बढ़ने का आदेश प्राप्त हुआ। आखिर तो मैं घर जा सकता था। मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था — लेकिन एक अजीब-सी भावना मेरी खुशी पर छाया डाल रही थी।

पुश्किन के गद्य पर एक दृष्टि

कथा-साहित्य का सृजन महाकवि पुश्किन के कृतित्व के विकास का नया चरण था।

तीसरे दशक के मध्य मे पुश्किन गद्य की ओर उन्मुख हुए। १८२७ मे उन्होंने 'पीटर महान का सेवक' ऐतिहासिक उपन्यास लिखना आरम्भ किया जो अधूरा ही रह गया।

तीसरे दशक के अन्त मे उन्होने १८१२ के महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध और १८२५ के दिसम्बरवादियो के विद्रोह के विषय से घनिष्ठ रूप मे सम्बन्धित कई गद्य-रचनाओ के अश लिखे और पाण्डुलेख तैयार किये।

१८३० मे पुश्किन ने बोल्दीनो गाव मे एक के बाद एक पाच लम्बी कहानिया लिखी और उन्हें 'बेल्किन की कहानिया' शीर्षक के अन्तर्गत सूत्रबद्ध किया। रूसी साहित्य मे पुश्किन ही ऐसे पहले लेखक थे जिन्होंने रूसी लोगो की विभिन्न सामाजिक श्रेणियो के जीवन और रहन-सहन का चित्रण आरम्भ किया। भूदासो की स्थिति की ओर कवि ने विशेषत बहुत ध्यान दिया। जीवन के अन्तिम वर्षों मे उनके प्रचारलेखो तथा कलात्मक गद्य-रचनाओ – 'गोर्यूखिनो गाव की कहानी', 'दुब्रोव्स्की', 'कप्तान की बेटी' आदि मे किसानो का विषय उनके कृतित्व का मुख्य विषय बन गया।

अत्यधिक स्पष्टता, अभिव्यक्ति की सक्षिप्तता और यथातथ्यता, अलकृत करनेवाले किसी भी प्रकार के रूपको और विशेषणो का सर्वथा अभाव, जल्दी मे बढता हुआ कथानक – ये है पुश्किन की शैली के

दिया है। उसके पोते गोलीत्सिन ने पुश्किन को बताया कि एक बार वह जुए मे हार गया और दादी से पैसे मांगने के लिये उसके पास आया। उसने पैसे तो नही दिये, मगर उसे तीन पत्ते बता दिये "पोते ने पत्ते चले और जीत गया। आगे का कथानक मनगढन्त है।"

पुश्किन के ही कथनानुसार यह लघु-उपन्यास बहुत लोकप्रिय हुआ–"मेरी 'हुक्म की बेगम' का बडा चलन है। खिलाडी तिक्की, सत्ती और इक्के पर दाव लगाते हैं।"

कप्तान की बेटी

चौथे दशक के आरम्भ से पुश्किन ने किसानो के विद्रोह की विषय-वस्तु मे विशेष रुचि ली। इस विषय पर चिन्तन करते हुए येमेल्यान पुगाचोव (१७४४–१७७५) के विद्रोह की ओर उनका ध्यान गया। कवि के मस्तिष्क मे पुगाचोव के विद्रोह और कुलीन अनुयायी के बारे मे उपन्यास लिखने के विचार ने जन्म लिया। जनवरी १८३३ मे पुश्किन ने उपन्यास की पहली योजना तैयार की। शुरू मे उन्होने एक वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्ति मिखाईल अलेक्सान्द्रोविच श्वानविच को उपन्यास का नायक बनाना चाहा। श्वानविच ग्रेनादेर रेजिमेंट मे अफसर था, पुगाचोव के साथ हो गया था और बाद मे उसे साइबेरिया मे निर्वासित कर दिया गया था।

पुश्किन ने ऐतिहासिक उपन्यास 'कप्तान की बेटी' और वैज्ञानिक ग्रन्थ 'पुगाचोव के विद्रोह का इतिहास' पर एकसाथ काम करते हुए लेखागारो की सामग्री का अध्ययन किया और कभी विद्रोह की लपेट मे आनेवाले स्थानो पर जाकर साक्षियो से बातचीत की।

उपन्यास की प्रारम्भिक योजना मे बहुत काफी परिवर्तन हुआ। पुगाचोव के विद्रोह का विषय अधिकाधिक सशक्त होता गया और साथ ही इसकी "रोमानी घटना"–उपन्यास के नायक और दुर्गपति की बेटी के प्रेम की दास्तान–ठोस शक्ल हासिल करती गयी।

उपन्यास धीरे-धीरे लिखा गया और १८३६ की पतझर मे समाप्त हुआ। सेंसर के सामने इसे पेश करते हुए पुश्किन ने २५ अक्तूबर, १८३६ को सेंसर-अधिकारी प० कोर्साकोव को लिखा –"मिरोनोव

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन को इस पुस्तक के अनुवाद और डिजाइन के सबंध मे आपकी राय जानकर और आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर बडी प्रसन्नता होगी। अपने सुझाव हमे इस पते पर भेजे

प्रगति प्रकाशन,
१७, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत सघ।